गीत-काव्य
मे
राष्ट्रीय
भावना

उषा मृणालिनी

प्रकाशक • सुशील प्रकाशन
पुरानी मण्डी अजमर

मूल्य • पन्द्रह रुपये

आवरण • निओ आर्ट सर्विस
अजमर

मुद्रक • रानहस प्रिन्टस
बाबू मोहल्ला अजमर

ममतामयी माँ को

अनुक्रम

प्रकाशकीय



स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय जन मन ने अनेक दिशाओं मे प्रगति की है साहित्य भी इससे अछूता नहीं रह सका है। इस अवधि म विभिन्न साहित्यिक विधाओं में अनेक नवोना तिनवीन कवियों का उदय हुआ है। प्रस्तुत ग्रन्थ मे लेखिका ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् हिन्दी गीत काव्य मे प्रवहमान राष्ट्रीय भावना क विभिन्न स्रोतों को अनेक सन्दर्भों म रखने की चेष्टा की है। वस्तुत राष्ट्रीय भावना आज के युग की सर्वाधिक महत्व पूर्ण आवश्यकता है। इस दृष्टि स विवेच्य विषय का महत्व निर्विवाद है।

पाठकों की सेवा म अपना यह नवीन प्रकाशन प्रस्तुत करते हुए हम अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

स्वाधीनता से पूर्व हिन्दी का कवि जिन परिस्थितियों म जीवन व्यतीत करता रहा था, उनम उसकी अनुभूतियो और कल्पनाओं की अभिव्यक्ति के लिए वसा मुक्त वातावरण उपलब्ध नहीं था जसा एक स्वतन्त्रचेता साहित्यकार के लिए आवश्यक होता है। उन कवियो का बात छोडिए जो राजाओ क आश्रय में पलते थ अथवा जो सासारिक जीवन स विरक्त होकर अपनी भावनाओ की स्वतन्त्र अभिव्यक्ति कर सकते थे। परतु जो कवि न तो सासारिक जीवन से पलायन करना चाहते थे और न किसी के आश्रित रहना चाहते थ उनके सामने काव्य रचना की कई समस्यायें थी। आधुनिक काल क भारतेदु युगीन और द्विवेदी युगीन कवियो ने स्वतन्त्रचेता साहित्यकार का जीवन व्यतीत करना चाहा तो उन्हें एक विशेष दिशा म काव्य-सृजन के लिए विवश होना पडा। इस दिशा स होकर काव्य रचना का जो माग जाता था उसम कवि का तटस्थ अनुभूतिकर्त्ता बनकर सृजन करन का अवकाश बहुत कम था। उस सघष के लिए भी उद्यत रहना पडता था और कभी कभी राष्ट्रीय अनुभूतियों की अभिव्यक्ति करन पर कारागृह की हवा भी खानी पडती था। स्वाधीनता के पश्चात् हिन्दी कवि को जीवन की एक मुक्त दिशा मिली और वह निष्पक्ष, तटस्थ प्रेक्षक के रूप म जीवन का अभिव्यक्ति करन के लिए स्वतन्त्र हुआ। उस नई परिस्थिति न उसके काव्य-सृजन या राष्ट्रीय भावना क जिस मोड पर ला खडा किया उसको स्वतन्त्रता स अब तक लिख गय काव्य क माध्यम से समझ लेना एक महत्वपूर्ण काय है। प्रस्तुत प्रबन्ध म मैंने इसी काय को अपने हाथ म लिया है और स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी गीतकाव्य में राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति का अनुशीलन करके उसके महत्वपूर्ण उपलब्धियो तक पहुचने की चेष्टा की है।

हिन्दी में आधुनिक काव्य पर अनेक दृष्टि स आलोचना और शोध के ग्रन्थ लिखे गय हैं किन्तु स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी गीतकाव्य म राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति पर कोई मौलिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ। इसलिए मेरा यह प्रयास प्राथमिक प्रयास तो है ही साथ ही मौलिक भी है।

राष्ट्रीय भावना

विषय का मूल स्वर है राष्ट्रीय भावना। अतः काव्य एवं गीत के संदर्भ में विस्तृत विवेचन न करके मैं इस संदर्भ में इतना ही कहूंगी कि जो गेय है उसे मैंने गीत के अन्तर्गत माना है। टेक चाहे छोटा न होकर प्रथम दो पंक्तियों की पुनरावृत्ति लिए हुए है। उसका पद्य रूप काव्य है ही। राष्ट्रीय चेतना के आयाम किंचित परिवर्तन के साथ उपेक्षित एवं अपेक्षित होते रहे हैं। युगानुरूप राष्ट्रीय भावना अभिव्यक्त होती रही है। गीतों की प्राचीन परम्परा को चलचित्र एवं रेडियो से भी समुचित प्रोत्साहन मिला है। सन् १९४७ से पूर्व राष्ट्रीय काव्य चरम उत्कर्ष पर पहुंच चुका था तदुपरांत वह धारा मंद पड़ गई और नये परिधान में अभिव्यक्त हुई। किंतु चीन की ओर से घिर आये संकट के बादलों को देखकर गीतकार पुनः ललकार उठा और देश प्रेम की भावना से अनुप्राणित गीतों की रचना हुई। अभी युद्ध विराम से मुक्ति की सांस भी न ले पाये थे कि पाकिस्तानियों के उत्पात काश्मीर में बढ़ गये और १९६५ के अप्रैल में ही भारत पर आक्रमण की योजना बन गई। जुलाई अगस्त में पाक-सैनिक 'मुजाहिद' नाम से काश्मीर में घुसपैठ करने लगे और भारत पर आक्रमण करने वाली सेना का नाम 'जिब्राल्टर फ़ोर्स' रखा गया था। दिनांक २४ अगस्त १९६५ से असली युद्ध प्रारम्भ हुआ और २२ सितम्बर तक अर्थात् ३० दिन रहा। संयुक्त राष्ट्र संघ के कहने पर भारत और पाकिस्तान ने २३ सितम्बर को सुबह साढ़े तीन बजे से युद्ध विराम स्वीकार किया। लोक सभा में युद्ध विराम स्वीकार करने की घोषणा करते हुए स्वर्गीय प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने गद्‌गद् कण्ठ से कहा था "मैं इस सदन और समस्त देश की ओर से अपनी सेनाओं के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूं। उन्होंने अपने अदम्य साहस और वीरता से देश के लोगों में नया विश्वास भरा है" (देखिए 'विजय-वाहिनी के सूत्रधार')

बाबूराम पालीवाल ने उन समस्त वीरों के प्रति अपनी काव्य-श्रद्धा अर्पित की है जिन्होंने पाक-युद्ध के समय वीरतापूर्वक आत्मत्याग किया परन्तु वे गीत न होकर अलग अलग वीरों के नाम एवं गुण के आधार पर काव्य रचना है। अतः मेरे इस प्रबंध में उन्हें स्थान नहीं दिया जा सका।

प्रस्तुत पुस्तक एम० ए० के लिए लिखे गये शोध निबंध का परिवर्धित रूप है। इसमें जो परिवर्तन आये हैं वो कुछ परिस्थितिवश ही हैं। यह शोध निबंध सन् १९६४ के मार्च मास में समाप्त कर दिया गया था। अतः पाक-युद्ध सम्बन्धी कुछ भी सामग्री इसमें न था। चूंकि यह ग्रंथ प्रकाशित अब हो रहा है तो कुछ

आवश्यक गीतों का आकलन करके इसे विस्तार देना पड़ा। स्वतन्त्रता के पश्चात् गीतकारों ने कम सृजन नहीं किया किन्तु पुस्तक रूप में राष्ट्रीय भावना से पूर्ण गीत बहुत कम उपलब्ध हुए। अतः विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री को एकत्र करके ही सन्तोष करना पड़ा। यथासम्भव १९४७ के पश्चात् की सभी वह पत्रिकाएं मेरे लिए अनुसंधान का विषय रहीं जिनमें राष्ट्रीय भावना पूर्ण गीतों की उपलब्धि हो सकती थी। तथापि जो उपलब्ध हुई उनसे ही गीत एकत्रित कर सकी। विषय अधिक विस्तार पा सकता था किन्तु मेरे प्रबंध की सीमाएं थीं जिनका उल्लेख उपसंहार के अन्तर्गत किया है। समस्त सामग्री मैंने स्वयं संकलित की है और अपने ढंग से उसका वर्गीकरण विवेचन तथा मूल्यांकन किया है। जिन ग्रन्थों और पत्र-पत्रिकाओं से सहायता ली गई है उनके नाम प्रबन्ध के अन्त में परिशिष्ट में दिये गये हैं।

मानव अनादि काल से सौन्दर्य एवं आनन्द का उपासक रहा है। स्वभावतः सौन्दर्य आकृष्ट करता है और उससे आनन्द की प्राप्ति होती है। मनुष्य की इन वृत्तियों का संगम अधिक मनुष्य काव्य कला ही करती है। काव्य के द्वारा प्रस्तुत होने वाला शाश्वत सत्य, शिव एवं सौन्दर्य जो अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव कराता है—किसी देश, काल, जाति या समाज विशेष की सम्पत्ति नहीं होती अपितु वह सभी के लिए समान है एवं सभी वाङ्मय में उसकी उपलब्धि होती है। मानव जीवन में इसी कारण काव्य की महत्ता अधिक है। कवि काव्य के माध्यम से अपने मनोद्गारों को स्वरूप प्रदान करता है, पाठक अपने भावों की प्रतिच्छाया उसमें देखकर आनन्द की प्राप्ति करता है। हर्षोल्लास में गुनगुनाने लगता है। गेय तत्त्व से युक्त सरस काव्य का एक अंग है गीत जिसकी गुनगुनाहट हृदय तार को झंकृत कर देती है। सुनने वाला भी भाव विभोर हो झूमने लगता है। नवीन चेतना, नव उल्लास से पूर्ण उत्साह से भरा हृदय कुछ करने को प्रेरित हो उठता है। ऐसी शक्ति है गीत काव्य में।

गीत प्रायः अंग्रेजी 'लिरिक' का हिन्दी रूपान्तर है जिसका मूल अर्थ है वह रचना जो लायर वाद्य के साथ गाया जा सके। सामान्यतः गीतकाव्य कविता के लिए प्रयुक्त वह रूप है जो किसी गीतवाद्य के साथ गाया जाता हो या गाई जा सके। साधारणतया गीत स्वरूप विचारों की अभिव्यक्ति है जो संक्षिप्त होने के साथ भावना का सही स्वरूप लिए मानववाद रस से भरपूर होता है। संगीत के छन्द-बद्ध से युक्त होने के कारण इसे सरल प्रकार गाया जा सकता है। इसमें लय होने के साथ-साथ सम्पूर्ण भावों एवं विचारों का समन्वित किए रहता है। इसका शिल्प विधान भावाभिव्यक्ति, भावना की सुन्दरता, सुकुमारता, सहज स्फुरणों का [illegible] शब्दों का उचित चयन, संगीत की भावना से [illegible] और संक्षिप्तता आदि तत्त्वों पर आधारित रहता है। इसकी रूप-रचना के लिए उपयुक्त रस हैं शृंगार, वात्सल्य एवं शान्त, यद्यपि

वीररस परिपूर्ण ओजस्वी भाषा में सृजित गीत अधिक उत्साहवर्द्धक होते हैं। क्योंकि उनमें भावावेग अधिक रहता है। शृंगार के दोनों पक्षों पर गीत-रचना प्रचुर मात्रा में हुई है तथापि संयोग एवं विप्रलम्भ गीतों की भावना वैयक्तिक स्तर तक ही अभिव्यक्त होती है। भक्तिपूर्ण हृदय में निःसृत गीत भी शान्त रस से परिपूर्ण, वैयक्तिक भावना से सृजित होते हैं। किन्तु वीर रस से ओत प्रोत गीतों की रचना चेतना के स्वर लिए हुए अधिक उदात्त धरातल पर प्रतिष्ठित होती है, जहाँ समष्टि की भावना का प्राधान्य होता है। जन जागरण के लिए वीररस से परिपूर्ण गीतों की आवश्यकता होती है। इस प्रकार के गीतों के लिए संक्षिप्तता आवश्यक गुण नहीं। भावना की पूर्णता या अपूर्णता पर ही गीत का विस्तार अवलम्बित है।

गीत-काव्य का सृजन प्रकृति के मूक सौन्दर्य के प्रथम प्रस्फुटन के साथ हुआ। संसार के प्राचीनतम साहित्य वेदों को भी गीत काव्य ही मानना चाहिए। सामवेद के विषय में तो कोई संशय ही नहीं है क्योंकि वह संगीत प्रधान है। ऋग्वेद भी गेय तथा मुक्तक काव्य है। महाकवि कालिदास की गम्भीरतम मधुर अनुभूति की अभिव्यक्ति की सशक्त रचना है मेघदूत जिसे गीत शैली में लिखा गया है। जयदेव का गीत-गोविन्दम् सबसे अधिक लोकप्रिय संस्कृत का गीतकाव्य है। इतने सरस कोमल पद एवं मधुर, प्रवाहयुक्त गीत उसी पद्धति पर लिखने का प्रयास यदि किसी का है तो मैथिल कोकिल विद्यापति का। राधाकृष्ण की लीलाओं के सरस एवं मनोहारी चित्र खींचे हैं। लोक भाषा में इस गीत-काव्य की रचना प्रशंसनीय प्रयास है। हिन्दी में ब्रजभाषा गीत-काव्य की परम्परा में सूर का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। जयदेव एवं विद्यापति के गीतों का अर्थ चाहे समझ में आए, चाहे न आए वे मन को आह्लाद पहुँचाते हैं परन्तु सूर तथा अन्य ब्रज भाषा के गीतकारों के गीतों के अर्थ समझे बिना उतना आनन्द नहीं आता जितना आना चाहिए। गीतकाव्य की इस परम्परा में एक स्वर और बहुत मधुर, कोमल एवं रसीला मिलता है वह है 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई' गा-गाकर नाच उठने वाली मीराँ का स्वर। उनके गीतों में पावन तन्मयता एवं सरसता है। हिन्दी के श्रेष्ठतम् कवि गोस्वामी तुलसीदास ने भी राम कथा को गीतों में गाकर अपने रसिक पाठकों का मनोरंजन किया था। उनकी विनयपत्रिका, गीतावली एवं कृष्ण-गीतावली, गीतकाव्य-परम्परा की अटूट कड़ियाँ हैं। विनय-पत्रिका के सभी गीत शान्तरस-परिपूर्ण हैं। उनमें विद्यापति जयदेव सूर आदि गीतकारों के जैसा

शृंगार रस के वर्णनों का अभाव है। रीतिकाल में गीतकाव्य की धारा पर्याप्त मंद पड़ गई थी किन्तु आधुनिक काल के प्रारम्भ में हिन्दी के युगान्तरकारी कवि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के सरस गीतों ने फिर उसे तीव्र वेग प्रदान किया। सत्यनारायण कविरत्न ने भी गीतकाव्य की परम्परा में पर्याप्त योग दिया। ब्रजभाषा के गीत काव्य की परम्परा का विकास आधुनिक युग में नई भाषा के नये परिवेश में हुआ। खड़ी बोली में भी सरस गीतों की रचना सम्भव हुई तथा स्थूल से सूक्ष्म की ओर आत्मा परमात्मा का मिलन विरह आदि प्रवृत्तियों ने नवीन विधाओं को जन्म दिया। काव्य के विस्तृत कलेवर में नये वाद के अंकुर उग आए। फलतः छायावाद रहस्यवाद नई भावधारा में गीतों ने जन्म लिया। खड़ी बोली के गीतों में प्रेम मिलन विरह आशा निराशा प्रकृति वर्णन राष्ट्रीयता नव जागरण आदि की भावनाएं पनपने लगीं। छायावाद के जनक व श्रेष्ठ गीतों के गायक जयशंकर प्रसाद जी की रचनाएँ थीं आँसू लहर झरना आदि। उनके नाटकों में भी गीतों को पर्याप्त स्थान मिला। इसके अतिरिक्त कामायनी महाकाव्य में भी गीत काव्य को स्थान दिया है। गुप्तजी जैसे इतिवृत्तात्मक शैली के कवियों ने भी यथास्थान गीतों की प्रतिष्ठा की है। पन्तजी निरालाजी महादेवी वर्मा बच्चन नरेन्द्र प्रेमी आदि अनेक गायकों के मधुर स्वरों में खड़ी बोली का गीतकाव्य गौरवशाली एवं समृद्ध होता गया है। राष्ट्रीय भावनाओं से भरपूर काव्य की रचना करने वालों में बालकृष्ण शर्मा नवीन, सुभद्राकुमारी चौहान माखनलाल चतुर्वेदी सोहनलाल द्विवेदी एवं रामधारीसिंह दिनकर का नाम उल्लेखनीय है। राष्ट्रीय भावना पर आधारित उनके गीत अत्यन्त प्रभावशाली तथा गेयता के गुण से परिपूर्ण हैं। नवीनजी का कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ सुभद्राकुमारी चौहान की झाँसी की रानी माखनलाल चतुर्वेदी की कोकिल द्विवेदी जी की वन्दना एवं दिनकर का हिमालय आदि गीत इस दिशा में पर्याप्त ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। प्रगतिवादी कवियों ने भी श्रमिकों की परिस्थितियों का चित्रण अत्यन्त सुन्दर शब्दों में किया है। ओजमयी वाणी उनके गीतों में सर्वाधिक मात्रा में मुखर मिलती है। निःसन्देह प्रगतिवाद तक आते-आते हिन्दी गीत-काव्य पर अपने विकास की चरम सीमा को स्पर्श कर उठा है। प्रयोगवाद में भले ही उसके लिए स्थान न हो परन्तु राष्ट्रवाद ने कभी उसका साथ नहीं छोड़ा है। हम अब भी एक ओर जहाँ प्रगतिवादी कवि को साम्य के साथ स्वर-लहरी गुनगुनाते देखते हैं वहीं दूसरी ओर राष्ट्रवादी को भी गीत के स्वर में राष्ट्र

प्रेम की अभिव्यक्ति करते देखते हैं—

> जय भारत हे ![1]
> जाग्रत भारत हे !
> स्वर्ग खंड षड्ऋतु परिक्रमित
> आम्र मंजरित मधुप गुंजरित
> कुसुमित फलद्रुम पिक कल कूजित
> उर्वर अभिमत हे ।

---

1 पु० चिदम्बरा ले० सुमित्रानन्दन पन्त प्रका० राजकमल प्रकाशन दिल्ली पृ० सं० ८२ प्र० संस्करण १९५९

जीवन में भावना का स्थान

शैशव से वृद्धावस्था तक हमारी प्रत्येक क्रिया के मूल में कोई न कोई भावना काम करती है। जगत में हम जो कुछ अनुभव करते हैं दुःखात्मक अथवा सुखात्मक वह सब भावना का ही फल होता है। भावना की भूमि में ही उन भावों का विकास होता है, जिनकी प्रेरणा से हम बड़े से बड़े और अच्छे से अच्छे काम करने में समर्थ होते हैं। भावना के अभाव में जीवन में कोई भी कार्य संभव नहीं। जब भावना ही नहीं होगी तब व्यक्ति करेगा ही क्यों ? प्रत्येक क्षण में व्यक्ति कुछ न कुछ अनुभव करता है और वह अनुभूति उसके हृदय में किसी भाव का आविर्भाव करता है। भावना अपने संवेदनात्मक रूप में अनुभूति कराती है और उसका गत्यात्मक रूप शरीर को सामान्य तत्परता प्रदान करता है। बिना गति के जीवन का महत्त्व ही क्या रह जाता है ? गति के लिए भावना का होना अत्यन्त आवश्यक है। भावना ही विचार का रूप धारण करता है। अतः भावना का जीवन में सर्वोपरि स्थान है।

भावना के भेद

जीवन में मानव दो प्रकार के अनुभव प्राप्त करता है—सुखात्मक एवं दुःखात्मक। अतः उसकी भावना भी दो प्रकार की होती है।

१ सुख की भावना
२ दुःख की भावना

जो भावनाएं प्रतिकूल होती हैं उनसे दुःख का अनुभव होता है किन्तु जो भावनाएँ अनुकूल होती हैं उनसे सुख का अनुभव होता है। इन दोनों प्रकार की भावनाओं का अध्ययन जब विस्तृत रूप में किया जाय तो ज्ञात होगा कि उनको भी हम दो मार्गों में विभक्त कर सकते हैं। वह भावना जिससे व्यक्तिगत सुख या दुःख का अनुभव होता है, व्यष्टिपरक भावना होता है।

जब सुख एव दुःख की अनुभूति व्यक्तिगत न रहकर सामाजिक बन जाती है तब उस व्यापक अनुभूति म समष्टिपरक भावना होती है।

व्यक्तिपरक भावनाएँ व्यक्ति म अनुभवो के अनुसार अनेक प्रकार की होती हैं। प्रत्येक भावना का सबध एक क्रियात्मक प्रवृत्ति से होता ही है। यथा क्रोध की भावना होने पर लडाई लडने की प्रवृत्ति होती है इसी प्रकार और भी भावनाए हैं — भय की भावना घृणा की भावना आनन्द की भावना दुःख की भावना ईर्ष्या की भावना एव सौंदय की भावना आदि। किन्तु यह भावनाए अस्थिर होती है तभी हम क्रोध भय अथवा दुःख आदि से शीघ्र मुक्त हो सुख का अनुभव करते हैं। यदि दुःख भय अथवा क्रोध की भावना बहुत दिन तक रहे तो व्यक्ति पागल हो जायेगा। भावना से ही हमे प्रेरणा मिलती है परिस्थिति के अनुसार प्रत्येक भावना का विशिष्ट महत्व है। पर प्रेम का भावना के आधिक्य से मानव जीवन सदा सुखी रह सकता है। यह कहना कठिन है कि सबसे महत्वपूर्ण भावना कौन सी है। वास्तव म जीवन की सफलता के लिए विभिन्न भावनाओ म सामजस्य की आवश्यकता है। परिस्थिति के ज्ञान और उससे उत्पन्न क्रिया के मध्य म भावना आती है। व्यक्ति और समाज के विकास मे भावना का बडा भारी हाथ रहता है क्योंकि हमारी बहुत सी क्रियाए भावना से ही उत्पन्न होती हैं। हम जितना वस्तुओ म प्यार करते है उन सबका हमारी आत्मा स सबध होता है। उनस उत्पन्न भावनाए व्यष्टि-परक भावनाए है।

राष्ट्रीय भावना का महत्व

समष्टिपरक भावनाओ मे हम जिन भावनाओ को सम्मिलित कर सकते है, उनम कतिपय प्रमुख भावनाए इस प्रकार हैं —

१ पारिवारिक भावना
२ क्रांति की भावना
३ धार्मिक भावना
४ सांस्कृतिक भावना
५ राष्ट्रीय भावना
६ अन्तर्राष्ट्रीय भावना इत्यादि।

इस प्रकार की भावनाओं में राष्ट्रीय भावना का अत्यधिक महत्व है। पारिवारिक भावना परिवार का एकता और अखण्डता का विश्वास उपजाती है। परिवार राष्ट्र से बाहर नहा है। क्रांति की भावना भी राष्ट्र को सुखी और समृद्ध बनाने के लिए ही उत्पन्न होता है। अत वह भी प्रत्यक्षत राष्ट्रीय भावना का ही पोषण करती है। धार्मिक भावना मानव को जीवन की एक दृष्टि देती है जिसस परिवार समाज और राष्ट्र सुखी बनता है तथा मानवता का प्रसार होता है। ये सब बातें राष्ट्रीय भावना म ही किसी न किसी रूप म समा जाती हैं। धार्मिक भावना का सबध रूढ़ि धम के पोषण से नही है। वास्तव मे यह भावना मनुष्य को ईश्वर और जीव के प्रति आस्थावान बनाती है। राष्ट्रीय भावना के बिना धार्मिक भावना का विकास उसी प्रकार सभव नही जिस प्रकार पारिवारिक भावना आदि का अस्तित्व राष्ट्रीय भावना के बिना नहा रह सकता। राष्ट्रीय भावना राष्ट्र के निवासियों म परस्पर प्रेम एकता, अखडता, सहानुभूति सहकारिता आदि के भाव जगाती है तथा साथ साथ जीने मरने और जीवन-सघष की प्रेरणा देती है। व्यक्ति के सुख-दुःख का विधान इसी भावना क अनुसार होता है। शासन की सत्ता का गौरव भी यही भावना सुरक्षित रखती है। अत राष्ट्रीय भावना मानव-हृदय की एक सव श्रेष्ठ भाव-सपत्ति है।

राष्ट्रीय भावना की परिभाषा

राष्ट्रीय शब्द राष्ट्र शब्द का विशेषण रूप है। राष्ट्र का शब्द कोष के अनुसार अथ है—वह लोक समुदाय जो एक ही देश म बसता हो या एक ही राज्य या शासन में रहता हुआ एकताबद्ध हो। (नालन्दा कोष पृष्ठ ११२) अंग्रेजी म राष्ट्र शब्द का पर्यायवाची नेशन शब्द है। 'नेशन (Nation) शब्द की व्युत्पत्ति लटिन शब्द नेशियो (Natio) से हुई है, जिसका अथ है 'पैदा होना'। यह इसे वंशीय अथवा नतिक (Ethical) अथ प्रदान करता है। फलत व्युत्पत्ति की दृष्टि से एक राष्ट्र से अभिप्राय वह लोग हैं जिनका विकास एक नस्ल से हो। इस अथ म प्रयोग किये जाने पर राष्ट्र का अथ होता है ऐसे लोग जो रक्त-सबधो द्वारा एक राजनीतिक समाज म परस्पर सम्बद्ध हो।'[1]

---

१ पु० राजनीति विज्ञान क सिद्धांत ले० डॉ० अनूपचन्द कपूर पृ० ५२ सं० १९५८

विदेशी विद्वान बर्गेस (Burgess) ने लिखा है— भौगोलिक एकता वाले एक प्रदेश म बसी हुई नृ-वंशीय एकता (Ethnic Unity) वाली जन संख्या राष्ट्र है ।[२] किन्तु वंश और राष्ट्र दो भिन्न अर्थ वाले शब्द हैं। वस्तुत जो बन्धन लोगों को एक राष्ट्र बनाने के लिए जोड़ते हैं व मनोवैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक हैं। विदेशी शत्रुओं के विरुद्ध सामान्य संघर्ष और मिलकर रहने की इच्छा तथा समस्त समाज की समृद्धि के लिए उनका सामान्य प्रयास-ये विचार लोगों को देश भक्ति की भावनाओं वाला समुदाय बनाते है। यही राष्ट्र शब्द का अर्थ है।'[३] राष्ट्रियता के अर्थ म राष्ट्र शब्द का प्रयोग भी कई विद्वान करते हैं। किन्तु राष्ट्र और राष्ट्रियता म अन्तर है। नेशन (राष्ट्र) और नेशनेलिटी (राष्ट्रियता) दोनो की व्युत्पत्ति नेट्स स हुई है। राष्ट्र का अर्थ है राजनीतिक एकता अर्थात एस लोगो का समुदाय जिनका निजि राजनैतिक अस्तित्व हो। राष्ट्रियता का राजनीतिक एकता स कोई सबध नही है।[४] मिल ब्राइस आदि ने कतिपय बंधनो द्वारा संगठित जनसंख्या को एक राष्ट्रियता माना है। राष्ट्रियता स्वतन्त्रता की इच्छा स राजनीतिक समूह का संगठन है। परन्तु हेज ने राष्ट्र और राष्ट्रियता के बीच राजनीतिक संगठन का अन्तर नही माना है। कोई राष्ट्रियता एकता और राजसत्तापूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करने पर एक राष्ट्र बन जाता है। जहा एक राष्ट्र भिन्न सामाजिक वंश समूहो का बना हो उनम से प्रत्येक समूह को राष्ट्रियता कहा जा सकता है।[५]

श्री वासुदेव शरण अग्रवाल ने राष्ट्र का अर्थ इस प्रकार स्पष्ट किया राष्ट्र का सम्मिलित अर्थ पृथिवी उस पर रहने वाली जनता और उस जनता की संस्कृति है।[६] डा० सुधीन्द्र ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी कविता मे युगान्तर" म लिखा है कि भूमि भूमि वासी जन और जन संस्कृति तीनो के सम्मिलन से राष्ट्र का स्वरूप बनता है। भूमि अर्थात भौगोलिक एकता जन अर्थात जनगण की राजनैतिक एकता और जन संस्कृति अर्थात सांस्कृतिक 'एकता तीनो के समुच्चय का नाम राष्ट्र है।'[७]

---

२ पु० राजनीती विज्ञान के सिद्धान्त ले डा० अनूपचन्द कपूर पृ ५२ स १९५८
३ वही पृ० स ५३
४ वही पृ० स० ५५
५ वही पृ० स० ५६
६ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १८ अगस्त १९६३ पृ० ६
७ पु० हिन्दी कविता में युगान्तर ले० डा सुधीन्द्र पृ० स० ४३

वाजपेयीजी के मतानुसार राष्ट्रीय धारणा स्थूल और संकीर्ण नहीं है, वह सूक्ष्म और व्यापक है। राष्ट्रियता से उनका आशय राजनीति से कभी नहीं रहा। राजनीति से सीधा और तात्कालिक प्रेरणा ग्रहण करने से काव्यात्मक व्यापकता मे बाधा पहुँचती है। [८] सोहनलाल द्विवेदी की प्रशंसा करते हुए उन्होंने लिखा है— यहाँ राष्ट्रियता से मेरा आशय किसी राजनीतिक मत या सिद्धांत विशेष से नहीं है। यहाँ राष्ट्रियता से मेरा मतलब स्वदेश प्रेम की व्यापक भावना से है। [९] राष्ट्रियता की भावना को वे मानवता की उदात्त भूमि पर प्रतिष्ठित करते हैं जहाँ संकीर्णता और सामयिकता आदि के बंधन भस्मसात् हो जाते हैं और एक उच्चतर अनुभूति शेष रह जाती है। [१०]

डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी भी राष्ट्रियता के उन तत्त्वों की प्रशंसा करते हैं जिनसे मानवतावाद का समर्थन होता है। उनके अनुसार प्रजातन्त्र की भावनाओं व विकास के साथ ही राष्ट्रियता की नवीन विचारधारा का जन्म हुआ है।'[११] राष्ट्रियता का अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति राष्ट्र का अंश है और उस राष्ट्र की सेवा के लिए इसको धन धान्य से समृद्ध बनाने के लिए इसके प्रत्येक नागरिक को सुखी और सम्पन्न बनाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को सब प्रकार के त्याग और कष्ट स्वीकार करना चाहिए।'[१२] तथा यह राष्ट्रियता मनुष्य के उच्चतर उद्देश्यों के अनुकूल है मानवतावाद की समर्थक है। द्विवेदीजी ने मानवता अविरोधी राष्ट्रियता का समर्थन किया है परन्तु जहाँ राष्ट्रियता और मानवता में विरोध है वहाँ वे मानवता वाद का ही समर्थन करते हैं। उनका मत है कि राष्ट्रियता एक विशेष सीमा का व्यतिक्रम करने के उपरांत अत्यन्त कुत्सित रूप धारण कर लेती है। यह अपने देश को धन धान्य से समृद्ध बनाने के लिए दूसरे देशों का शोषण करने लगती है अपने देश के प्रासाद संवारने के लिए दूसरे देश की झोंपड़ियाँ जलाने लगती है।'[१३] तभी तो हमारे देश के विद्वानों ने राष्ट्रीय भावना को मानवतावाद से जोड़ कर देखा है।

---

८ पु० हिन्दी की सैद्धांतिक समीक्षा, ले० डॉ० रामाधार शर्मा भूमिका से उद्धृत मन्तव्यानुसार वाजपेयीजी का कथन
९ वही भूमिका से उद्धृत, वाजपेयीजी का कथन
१० वही
११ वही भूमिका
१२ वही भूमिका
१३ वही भूमिका

राष्ट्रीय भावना के मूल तत्व

राष्ट्रियता के मूल तत्वों में निम्नलिखित बातें सम्मिलित हैं—

१ नस्ल की एकता (Unity of Race) — वंशगत एकता राष्ट्रियता का प्रबलतम बन्धन है। वंश का संबंध रक्त के संबंध से है। परंतु आधुनिक काल में देश-परिवर्तन (Migration) और समागम की अवस्थाओं से परिचित होने पर रक्त की शुद्धता का दावा कुछ काल्पनिक जैसा लगता है। किसी भी एक संयुक्त राज्य की जनसंख्या कई नस्लों अथवा मिश्रित रक्त की बनी हो सकती है। विदेशी विद्वान काल्वो (Calvo) अपनी अन्तर्राष्ट्रिय विधान (Inter National Law) नामक पुस्तक में इस बात पर जोर देते हैं कि राष्ट्र का विचार मूल या जड़ में वंश के समुदाय भाषा के समुदाय आदि के साथ जुड़ा हुआ है।[14] किन्तु किसी भी एक राष्ट्र के जनसमूह में एक ही वंश भाषा या धर्म की समानता होना असम्भव है क्योंकि यह चेतना अथवा विचारों की समानता का भाव है। अतः वंशगत एकता को राष्ट्रियता का प्रबलतम बंधन मानना उचित नहीं।

२ भाषा संस्कृति और परम्पराओं की एकता (Unity of Language Culture & Traditions)

विदेशी विद्वान म्योर (Muir) कहते हैं–[15] विभिन्न जातियों और नस्लों को प्रेम सूत्र में बांधने वाली शक्ति केवल भाषा है। बोहेम (Bohem) कहते हैं— हमारी मातृभाषा ने हमारी भाषा को वह शक्ति प्रदान की है कि हमारे समाज का नैतिक और भौतिक अस्तित्व भाषा के बल पर ही टिका हुआ है।'[16] अर्नेस्ट बार्कर मानते हैं कि राष्ट्र और भाषा को अलग अलग समझा ही नहीं जा सकता।[17] तथा राष्ट्रीय एकता के निर्माण में भाषा और साहित्य का भी महत्वपूर्ण योग रहता है। भाषा धर्मों से ऊपर है। एक युग विशेष की जो भाषा था उसे समस्त धर्मावलम्बियों ने अपनाया। राष्ट्र भाषा के पद पर वही भाषा आसीन हो सकती है जिसको वह

---

१४ पु राजनीतिक विज्ञान के सिद्धांत, ले० डा अनूपचन्द कपूर पृ स ५७

१५ वही पृ स ५८

१६ वही पृ स ५८

१७ वही पृ स ५८

सख्यक समझते हों। [१८] यहाँ बहुसख्यक से तात्पय उस जनता से है अथवा उन राष्ट्र-वासियो से है, जो जातिगत भेदभाव लिये हुए भी एक ही भाषा को प्रयोग मे लाते हों। विभिन्न जाति के लोगो द्वारा एक ही भाषा को यवहार म लाना राष्ट्रीय भावना को दृढ़ता प्रदान करना है। भाषा ही तो समस्त धर्मों का आधार रही है। स्वतत्रता प्राप्ति क बाद साहित्य अकादमी सगीत नाटक अकादमी आदि अनेक सरकारी और अध सरकारी सस्थाओ की स्थापना हुई और देश के विविध अचलो की साहित्यिक-सांस्कृतिक परम्पराए सामूहिक रूप म प्रकाश म आइ। एसी सस्थाएँ राष्ट्रीय भावना को अधिक यापक बनाती हैं। विभिन्न सस्कृतियो की एकता भी राष्ट्रीय भावना की दृढता को प्रदर्शित करती हैं।

३ धार्मिक एकता (Unity of Religion)

बर्गेस (Burgess) ने समान धम को राष्ट्रीयता का पोषक तत्त्व मानत हुए कहा है कि अब धार्मिक स्वतत्रता हा जान पर धम इस युग म राष्ट्रीयता का पोषक नही रह गया है। [१९] विभिन्न जाति के लोगो के समुदाय एव विभिन्न धर्मो आपस म मतभेद करते हुए राष्ट्रीय भावना को आघात पहुँचाते थे। किन्तु अब ऐसे मतभेदो की कट्टरता दूर हो गई है। प्रशान्तकुमार जायसवाल ने अपने लेख भावनात्मक एकता एक सुझाव म बतलाया है कि राष्ट्रीय एकता के लिए आवश्यक है कि जातीय और धार्मिक आधारो पर निर्मित सम्प्रदायो को पनपने ही न दिया जाय। भारतीय कहने स न हमारा कोई भिन्न धम रह जाता है और न भिन्न जाति। मानवता हमारा धम हो जाता है और जाति भारतीय। [२०]

४ भौगोलिक एकता (Geograyphic Unity)

रेम्जे म्योर (Ramsay Muir) ने भौगोलिक एकता को राष्ट्रीयता का कारण माना है। [२१] डॉ० रामसुमर्गसिंह ने भारत की राष्ट्रीय एकता नामक लेख म अपने विचारो का प्रतिपादन इस प्रकार किया है— किसी भी राष्ट्र की एकता क कुछ लक्षण होते हैं जिनके आधार पर एक राष्ट्र को

---

१८ पत्रिका जीवन साहित्य लेख भावनात्मक एकता एक सुझाव लेखक प्रशान्त कुमार जायसवाल पृ स १०१ १०२

१९ पु० राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त ले० डा० अनूपचन्द कपूर पृ स ५९

२० पत्रिका जीवन-साहित्य लेख भावनात्मक एकता एक सुझाव ले० प्रशान्त कुमार जायसवाल पृ० स० १०२

२१ पु० राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त ले० डॉ० अनूपचन्द कपूर पृ स ६०

राष्ट्र माना जाता है। पहना लक्षण भूगोल इतिहास और प्राकृतिक स्वरूप। सबधी है। उत्तर मे पूर्व से लेकर पश्चिम तक हिमालय की गगनचुम्बी प्राचीर पूव-दक्षिण और दक्षिण मे बगाल की खाडी हिन्द महासागर तथा अरब सागर। यह भौगोलिक विभाजन कितना प्राकृतिक और सहज है। २२ उत्तर और पूर्व मे सदियो तक मुसलमानो का सल्तनतें रहा और दक्षिण म चोल पल्लव पाडय राष्ट्रकूट आदि वशो का राष्ट्र बना रहा। किन्तु देश की मौलिक एकता की भावना पर इन ठोस किन्तु पार्थिव तथ्यो द्वारा कभी ठेस नही पहुची। २३ भारत की अखडता युगो पुरानी है २४ क्योंकि भौगोलिक विभाजन प्राकृतिक है और राष्ट्रियता के मूल तत्वो मे से यह भी एक आव श्यक तत्त्व है।

५ राजनीतिक प्र रणाओ की एकता (Unity of Political Aspirations)

गिलक्राइस्ट कहते है राष्ट्रियता के लिए राजनीतिक एकता सर्वाधिक महत्वपूर्ण है और यह इतनी महत्वपूर्ण है कि विभिन्न इकाईयो मे से प्राय केवल इसी को ही अत्यावश्यक कहा जा सकता है। २५ राजनतिक प्रेरणाए भिन्न २ रूपा म चल निकली है। राजनीति के क्षेत्र म सभी के अपन अपन मत रहे है और उनकी प्ररणाओ से दल भी बनत रहे हैं तथा क्रातिया हुई हैं। कभी किसी दल के समथक किसी एक विद्वान की प्रेरणा से प्रेरित हो अधिक बलशाली बन जाते है तो कभी किसी अ य दल की शक्ति अधिक हो जाती है। अधिकाश राष्ट्रियताए स्वाधीनता की इच्छा स अपना निजी राज्य चाहती हैं क्योकि विदेशी या कोई भी अन्य शासक प्रजा के कल्याण की अपेक्षा अपने ही राष्ट्र क हितो को ध्यान म रखता हुआ राज्य करता है। विदेशी सरकार का नियन्त्रण तो एकता की विधि को और भी तीव्रगामी बनाता है और अपने राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए प्रजा सगठित हो जाती है तथा राष्ट्रियता की

---

२२ पत्रिका साप्ताहिक हिन्दुस्तान १८ अगस्त १९६३ ले० डा० रामसुभग सिंह पृ २३

२३ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १८ अगस्त १९६३ ले डा रामसुभगसिंह पृ २३

२४ पु राष्ट्रभाषा रजत जयन्ती ग्रन्थ उत्कल प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा कटक प्रका० राष्ट्रभाषा पुस्तक भण्डार पृ० स० १४

२५ Gilchrist of citd P 31

भावना का विकास होता है। एक ही सरकार की अधीनता में रहकर भिन्न भिन्न भावनाओं व दृष्टिकोणों वाले लोगों में भी एकत्व की राष्ट्रीय भावना की प्रवृत्ति विकसित हो ही जाती है। स्वतन्त्र राष्ट्र की कामना के साथ राष्ट्रियता का भी पोषण होता है। समान राजनीतिक प्रेरणाएं भिन्न भिन्न रूपों की जनसंख्या को एकता के बन्धन में बाँध देती हैं और सब भिन्न भिन्न राष्ट्रियताएँ एक ही राष्ट्रियता के सूत्र में परिवर्तित हो जाती हैं।

६ समान हित (Common Interest)

समान आर्थिक एवं रक्षात्मक स्वार्थ एकता के बंधनों को अधिक शक्तिशाली बनाते हैं। राष्ट्रीय भावना का उदय होने पर राष्ट्र के हितों को ध्यान में रखते हुए समानता शब्द भी एक आवश्यक अर्थ रखता है। राष्ट्र में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् सभी के हितों का ध्यान में रखा जाता है। समान हित के लिए आवश्यक है, सबको अन्न का प्राप्ति हो, अर्थाभाव न हो, रक्षा का नियम भी एकसा हो, किसी एक वर्ग के स्वार्थ को ध्यान में रखते हुए रक्षा का नियम नहीं बन सकता। आर्थिक हित राष्ट्रीय एकता का सर्वाधिक पोषक तत्त्व है।

राष्ट्रीय भावना की सीमा

'राष्ट्रियता कोई शाश्वत भावना नहीं है। यह एक परिवर्तनशील दृष्टिकोण है जो समाज के विकास की विभिन्न अवस्थाओं में विभिन्न रूप ग्रहण करता है।'[२६] अतः राष्ट्रीय भावना की सीमा निर्धारित करते समय हम भावना के निर्माणक तत्त्वों पर विचार करेंगे—

अ देश और उसकी परिस्थितियाँ

स्वतन्त्रता से पूर्व राष्ट्रीय भावना का जो स्वरूप था उसमें जो तत्त्व निहित थे वे स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् नहीं रहे। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व राष्ट्रीय भावना में जो तत्त्व मुख्य थे उन पर विभिन्न मत हैं। किसी विद्वान ने किसी प्रमुख तत्त्व को आधार मानकर लोगों को प्रेरणा देने के लिए आन्दोलन चलाया और राष्ट्रीय भावना का प्रसार किया। किसी विद्वान ने अपने नवीन विचारों का लेकर उन्हीं को राष्ट्रीय भावना का पोषक तत्त्व मानते हुए आन्दोलन चलाया। भारत में अंग्रेजों के आगमन से पूर्व राष्ट्रीय भावना का दूसरा ही रूप था, क्योंकि हिंदु-मुस्लिम मतभेद था, किन्तु उसके मूल में

२६ छायावाद युग, ल शम्भूनाथसिंह पृ स ४७

प्रारम्भ से अब तक यही भाव मुख्यत विद्यमान रहा है कि, राष्ट्र स्वाधीन हो दूसरो का अधिकार न हो। देशवासी स्व शासन का अधिकार चाहते रहे हैं। इसी कारण हिन्दुओं का मुसलमानों के प्रति विरोध रहा और मतभेद चलते रहे। वास्तव म मुसलमानों के प्रति विरोध के भाव म हिन्दुओ की राष्ट्रीय भावना की तीव्रता ही थी। चाहे कोई भी जाति हो अपने देश को स्वाधीन देखना चाहती है। विदेशी शासको की नीति के प्रति उसका विरोध होता है, क्योंकि वह समान अधिकार नहा देता है। जातीयता एव असमानता आदि सब विरोधी तत्त्वो के प्रति जो चेतन प्रतिक्रिया होती है वह राष्ट्रीय भावना की ही द्योतक है। देश और उसकी परिस्थितियो के अनुसार ही राष्ट्रीय भावना का रूप परिवर्तित होता रहता है। यदि स्वतन्त्रता से पूव हमारी राष्ट्रियता के शोषण से मुक्ति की प्रयासी थी तो इस समय वह स्वतन्त्रता के रक्षण एव पोषण मे सलग्न है। मुसलमानो के अत्याचारों के प्रति विद्रोह था तो उनमे स्वतन्त्रता प्राप्त करने की प्रयासी थी। जब उनसे मुक्ति मिली तो अग्रेजो के पजों मे जकडी जनता उनकी गुलामी से छुटकारा पाने का प्रयास करने लगी। योगी अरविन्द न कहा है कि भारत माता जमीन का केवल एक टुकडा मात्र नही है वह शक्ति है ईश्वरत्व है। देश प्रेम की भावना के मूल मे यही भाव हैं। अतीत का गौरव वत्तमान का दुख-दद भविष्य की कामनाए उसका तना और डालियाँ हैं। आत्म-बलिदान और त्याग का भावना क्षमा की शक्ति और दश के लिए सहनशीलता तथा उसकी उन्नति के लिए प्रयत्नशील होना मानो इस राष्ट्रीय भावना के फल हैं।[२७] गाधीजी न राजनीति और धम को एक साथ मिला दिया। गाधीजी की राष्ट्रियता ने एक नया रूप लिया जिसके अनुसार स्वतन्त्रता के लिए काम करने के साथ सामाजिक नैतिक और आध्यात्मिक पुनर्निर्माण की आवश्यकता थी।'[२८]

मुसलमानो के पश्चात अग्रेजो का आगमन हिन्दु-मुस्लिम भेद भाव को भूलकर अग्रेजी शासन के प्रति विरोध की भावना को प्रगट करने लगा।[२९]

---

२७ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १८ अगस्त १९६३ ले० कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी पृ ५ लेख भारतीय राष्ट्रियता का स्वरूप और उसकी विशेषताए

२८ वही पृ ५

२९ पु० नया हिन्दी काव्य ले० डा० शिवकुमार मिश्र पृ० २१ ४३

३० वही पृ०सं० ४४

"आधुनिक अर्थों में राष्ट्रियता की भावना का विकास अंग्रेजों के भारत आगमन और उनके द्वारा देश का केन्द्रीय सत्ता के शनैः शनैः पूर्णतः अधिकृत किये जाने के पश्चात् प्रारम्भ होता है। अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार प्रसार तथा देश के विभिन्न भागों के निवासियों के पारस्परिक सम्मेलन ने राष्ट्र सम्बन्धी एक व्यापक दृष्टिकोण को जन्म दिया फलतः राष्ट्रियता की भावना को भी नये आयाम मिले। विदेशी शोषण से विक्षुब्ध जनता की परतन्त्रता की अनुभूति भी राष्ट्रियता की भावना के विकासशील होने में उसे अधिक त्रास देने लगी।'[३०] अतः देश की परिस्थितियों पर राष्ट्रियता की भावना का विकास निर्भर करता है।

आ जाति और धर्म

श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी ने अपने लेख भारतीय राष्ट्रियता का स्वरूप और उसकी विशेषताएं में लिखा है कि पाश्चात्य देशों की तरह दशभक्ति केवल राजनीतिक प्रेरणामात्र न होकर भारतीय मस्तिष्क में यह भावना गहरी धार्मिक प्रेरणा है।'[३१] एक ही देश में अनेक धर्म होते हैं। आवश्यक नहीं कि एक राष्ट्र में एक ही धर्म के समर्थक हों। विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों वाले यदि अपने ही धर्म की उन्नति करते हुए अन्य धर्म के माननेवालों का उपहास करते हैं और उनकी उन्नति में बाधा पहुँचाते हैं तो निश्चय ही एक धार्मिक सम्प्रदाय दूसरे धर्मवाले सम्प्रदाय से द्वेष भावना रखेगा। यही द्वेष भावना राष्ट्र की उन्नति में बाधक सिद्ध होती है। जैसा कि हम इतिहास की ओर दृष्टि डालने पर देखते हैं कि भक्ति-आंदोलन इन्हीं धार्मिक-सम्प्रदायों की द्वेष भावना की प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ था। यदि धार्मिक-सम्प्रदायों में मतभेद न होता तो एकता के लिए भक्ति-आंदोलन ही क्यों हुआ होता?

इसी प्रकार जाति को लेकर भी राष्ट्रीय भावना का विकास हुआ। प्रभात कुमार जायसवाल ने अपने लेख "भावनात्मक एकता एवं सुझाव" में जो सुझाव प्रस्तुत किये हैं उनमें राष्ट्रीय भावना के अन्तर्गत एक अन्य नवीन तत्व का होना आवश्यक बतलाया है। वह तत्व है भावनात्मक एकता का प्रयत्न। उन्होंने बतलाया है कि जातीय और धार्मिक आधारों पर निर्मित सम्प्रदायों को पनपने ही न दिया जाय। हमारे देश में जातीय विभाजन है,

---

३० नया हिन्दी काव्य, डॉ० शिवकुमार मिश्र पृ स ५४

३१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १८ अगस्त १९६३ पृ स ५

जबकि श्रम विभाजन होना चाहिए। अतएव जातीयता के स्थान पर भारतीयता के प्रचार की आवश्यकता है। भारतीयता का प्रचार होने से न कोई हिन्दू होगा, न मुसलमान और न ईसाई आदि। सब भारतीय होंगे। फिर भारतीयों में भिन्न स्वार्थ कैसे ? जबकि सभी राष्ट्रीय एवं भावनात्मक एकता के लिए प्रयत्नशील हैं।[३२]

अतः साराश रूप में हम यह कह सकते हैं कि स्वतन्त्रता के पश्चात् हमारी राष्ट्रियता ने एक नया रूप ग्रहण किया है। हमारी राष्ट्रीय भावना की सीमा भी उसी के अनुसार बदली है। अब हमारी राष्ट्रीय भावना की सीमा मध्यकालीन राष्ट्रीय भावना की उस सीमा से भिन्न हो गई है जिस सीमा में हिन्दू और मुसलमान परस्पर दो राष्ट्र माने जाते थे तथा इस्लाम शासन के विरोध में शिवाजी को उत्तेजित करने वाले भूषण को राष्ट्रीय कवि कहा जाता था। अब हमारी राष्ट्रीय भावना की वह सीमा भी नहीं रही जब अंग्रेजी शासन को कोसना और उसके लिए प्रलय को आमन्त्रित करना ही राष्ट्रीय भावना की पहचान थी। आज तो हमारी राष्ट्रीय भावना धर्म निरपेक्ष स्वतन्त्र भारत के गौरव समृद्धि एकता अखंडता और सुरक्षा के व्यापक भावों को लेकर चलती है। उसी नवीन परिधि में स्वातन्त्र्योत्तर गीतकाव्य में राष्ट्रीय भावना का अनुशीलन प्रस्तुत प्रबन्ध का लक्ष्य है।

---

३२ पाक्षिक जीवन-साहित्य १९६६ लेख भावनात्मक एकता एक सुझाव लेखक प्रशांत कुमार जायसवाल पृ स १ १ १०२

२ भारत में राष्ट्रीय भावना का उद्भव और विकास

राष्ट्रियता कोई शाश्वत भावना नहीं है। यह एक परिवर्तनशील दृष्टिकोण है जो समाज के विकास की विभिन्न अवस्थाओं में विभिन्न रूप ग्रहण करता है।[1] भारत में राष्ट्रियता की भावना अत्यन्त प्राचीन काल से ही विद्यमान थी और किसी न किसी रूप में वह तब से अब तक चली आ रही है। समय जब करवटें लेता है तब सभी कुछ परिवर्तित हो जाता है, फिर विचारों एवं भावों में परिवर्तन आना तो स्वाभाविक ही है। प्राचीन काल में भारत में राष्ट्रियता का एक भिन्न दृष्टिकोण था। वह दृष्टिकोण चक्रवर्ती राजा के साथ जुड़ा था। जवाहरलाल नेहरू ने 'विश्व इतिहास की झलक' नामक पुस्तक में लिखा है कि भारत में भी बहुत पुराने जमाने से ही सारे संसार के 'चक्रवर्ती' राजाओं का जिक्र मिलता है। + + भारत पर हुकूमत करने वाला सारी दुनिया का सरताज है। बाहर के दूसरे लोगों को वे मलेच्छ कहते थे। + + पौराणिक राजा भरत जिसके नाम पर हमारा देश भारतवर्ष कहलाता है ऐसा ही एक चक्रवर्ती राजा माना गया है। अश्वमेध यज्ञ संसार के प्रभुत्व के लिए ललकार थी और उसका एक चिन्ह था। अशोक भी शायद शुरू में चक्रवर्ती राजा बनना चाहता था। भारत में गुप्तवंश के राजाओं की तरह कई ऐसे साम्राज्यवादी राजा मिलेंगे, जिनकी इच्छा चक्रवर्ती बनने की थी।[2] यदि इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखा जाय तो पता चलेगा कि भारत में राष्ट्रीय भावना का उद्भव वैदिक युग से ही हो जाता है जब कि देश की पृथ्वी को देवी के रूप में माना जाता था और उसके देवत्व रूप की उपासना की जाती थी। अथर्ववेद की ४४ वीं ऋचा में पृथ्वी को देवी शब्द से सम्बोधित किया गया है—

देवी दधातु सुमनस्यमाना"

---

१ पु छायावाद युग ले शम्भूनाथसिंह पृ ४७

२ विश्व इतिहास की झलक ले जवाहरलाल नेहरू अनुवाद चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय पृ सं ८५

श्री कन्हैयालाल माणिक लाल मुन्शी ने अपने लेख 'भारतीय राष्ट्रियता का स्वरूप और उसकी विशेषताएं' नामक लेख में लिखा है कि यह प्रत्येक हिन्दू का आवश्यक धर्म हो गया था कि वह जीवन में अधिक से अधिक तीर्थ स्थानों की यात्रा करे और ऐसा करके आत्मिक तथा धार्मिक प्रेरणा प्राप्त करे। भागवत के ५ वें स्कन्ध के इक्कीसवें अध्याय के २०वें श्लोक में भी इसी बात को पुष्ट किया गया है। इस प्रकार देश भर में एकता की भावना बनी थी। केरल के नम्बूदिरीपाद ब्राह्मण बद्रीनाथ के सर्वोच्च पुजारी हुआ करते थे और यही परम्परा आज भी विद्यमान है। ... दक्षिण के रामेश्वरम् मंदिर में भगवान शिव की पूजा के लिए प्रयत्नशील होना मानो इस राष्ट्रीय भावना का ही प्रमाण था। पूर्व में पुरी और पश्चिम में परशुराम कुण्ड उत्तर में अमरनाथ दक्षिण में रामेश्वरम् इस पवित्र भूमि की सीमाएं थी।'[3] इस प्रकार धार्मिक स्थानों की एकता से राष्ट्रीय भावना का स्वरूप स्पष्ट होता है। देशवासियों के हृदय में भारत के अखण्ड और पवित्र होने की भावना बनी हुई थी। पुण्य भूमि भारत को भारतमाता में परिवर्तित करने वाले एक अज्ञात लेखक के स्तोत्र का अंतिम अंश का भाव है कि—

हे दयालु माँ हमें आशीर्वाद दे कि हम हर जन्म में तेरी सेवा अपने तन मन धन और सन्तति द्वारा कर सकें। प्रस्तुत पंक्तियों में जो राष्ट्रीय भावना की तीव्रता है वह वैदिक काल से चली आती हुई परम्परा है और उत्तरोत्तर नवीन रूप में विकसित ही होती गई है नष्ट नहीं हुई। बंकिमचन्द्र चटर्जी ने साहित्य में 'वन्देमातरम्' गीत लिखकर उसी भावना को प्रकट किया। उनके लिए भारतमाता एक पवित्र भूमिमात्र नहीं रह गई थी वरन् वह दस भुजाओं वाली रक्षाकारिणी माता बन गई थी। उनके प्रयास से ही भारत माता केवल हिन्दुओं की एक देवी मात्र न रहकर समस्त भारत वासियों की माँ बन गई। विचारों में यह परिवर्तन भारतीय मस्तिष्कों पर पाश्चात्य राष्ट्रीय विचारधारा के प्रभाव से हुआ। परन्तु पाश्चात्य देशों की तरह भारतीय हृदयों में राष्ट्रीय भावना राजनीतिक प्रेरणामात्र न रहकर गहरी आत्मिक प्रेरणा बन गई। समस्त भारतीय साहित्य में वह इसी रूप में झलकता है।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि हमारा मुख्य स्वर केवल यही होना चाहिए कि यह हमारी महान भारतमाता है। यही देवता है जो जाग्रत

---

३ पत्रिका साप्ताहिक हिन्दुस्तान १८ अगस्त १९६३ पृ० सं० ५

है, हर जगह इसके हाथ पैर और कान हैं और इसी में सब कुछ निहित है।'

योगी अरविन्द भारतीय राष्ट्रियता की भावना के अग्रदूत थे। उन्होंने भारतीय विचारों को नया रूप दिया। उन्होंने कहा— भारतमाता जमीन का केवल एक टुकड़ामात्र नहीं है वह शक्ति है ईश्वरत्व है। देश प्रेम की भावना के मूल में ये ही भाव हैं। अतीत का गौरव वर्तमान का स्पन्दन, भविष्य की कामनाएं उसका तना और डालियां हैं। आत्म बलिदान और त्याग की भावना क्षमा की शक्ति और देश के लिए सहनशीलता तथा उसकी उन्नति के लिए प्रयत्नशील होना मानो इस राष्ट्रीय भावना के फल हैं।

स्वामी रामतीर्थ ने कहा—"मैं ही समस्त भारत हूं, उसकी पूर्व और पश्चिम दिशाएँ मेरी बाहु हैं जिन्हें मैं मानवता के आलिंगन के लिए फैलाये हुए हूं। मैं अपने प्रेम में विश्व व्यापी हूं मैं शिव हूं। यही देशभक्ति की सर्वोच्च साधना है यही सच्ची वन्दना है।' इस प्रकार उन्होंने राजनीति व धर्म को मिलाकर अगाध राष्ट्र प्रेम व्यक्त किया।

गांधीजी की राष्ट्रियता जिस अभिनव रूप में जनता के सम्मुख आई उसमें स्वाधीनता के लिए कार्य करने के साथ साथ सामाजिक नैतिक और आध्यात्मिक पुनर्जागरण की भी आवश्यकता थी।

रवीन्द्रनाथ टगोर की राष्ट्रियता और भी व्यापक रूप में मार्ग प्रशस्त करती हुई आई। वे आध्यात्मिक और नैतिक प्रेरणाओं से समाज का निर्माण चाहते थे। उनके अनुसार भारतीय राष्ट्रियता की भावना अहंकारी और विस्तारवादी नहीं थी। वह लगभग धार्मिक पूजा के तुल्य थी। वह आध्यात्मिक कार्य था जो सेवा भावना के साथ चलता था

बंकिमचन्द्र के वन्देमातरम् गान ने बड़े अधिकार के साथ सर्वत्र प्रभाव डालते हुए नव-जीवन का सन्देश दिया। अतः वन्देमातरम् भारत के पुनर्निर्माण जन-जागरण और विजय का गान बन गया। इस गान को सुनकर वृद्धों के लिए स्वतन्त्रता-संग्राम ईश्वर की सच्ची भक्ति बन गई एवं नवयुवक व नवयुवतियों के मन में भी राष्ट्रियता की भावना तीव्र हो उठी। वे देश की बलिवेदी पर चढ़ने के लिए अधीर हो उठे।

दक्षिण भारत के लोकप्रिय कवि सुब्रह्मण्यम भारती ने बहुत ही उत्तम और परिष्कृत ढंग से भारत माता की स्तुति की। इसका परिणाम यह हुआ कि भारतीय राष्ट्रीयता की भावना बड़ी व्यापक बन गई। इसने हम सबको एक दूसरे से जोड़कर देश प्रेम के बंधनों को पक्का कर दिया। हमारा यह प्रथम कर्त्तव्य हो गया कि हम इस आवाज को जन-कल्याण के लिए हर जगह पहुंचाए।

जन जन के मस्तिष्क में राष्ट्रीय भावना उग्र रूप से उथल-पुथल मचा रही थी। स्वाधीनता संग्राम मे आहुति देने के लिए नौजवान व्यग्र हो रहे थे। अपनी भाषा अपनी संस्कृति और अपने प्रकार का जीवन हो अपने शिष्टाचार एवं आदर्श हो यह दृष्टिकोण लेकर भारतवासी प्राणदान करने को तैयार हुए। स्वराज्य की भावना उनके दिल में घर कर गई।

डा वासुदेवशरण अग्रवाल ने अपने लेख अपनी जनता अपनी पृथ्वी में स्वराज्य की अनुभूति के विषय में लिखा है कि स्वराज्य एक आध्यात्मिक अनुभव है। *उसका आनन्द विलक्षण है। वह एक ऐसा स्वाद है जिसकी* उपमा अमृत से ही दी जा सकती है। यह मनुष्य के मन और शरीर दोनों को ही पुष्ट करता है। स्वराज्य की महिमा में क्या नहीं कहा जा सकता? वैदिक ऋषियों ने सोचा था यतेमहि स्वराज्ये। हम सब मिलकर स्वराज्य की स्थापना में प्रयत्नशील हों। यह एक व्यक्ति का बोझा नहीं है। यह तो सम्पूर्ण राष्ट्र का दायित्व है। जब राष्ट्र जागता है तभी स्वराज्य की स्थिति दृढ होती है। राष्ट्राय जागृयाम वयम्। [४]

राष्ट्र का सम्मिलित अर्थ है पृथ्वी उस पर रहने वाली जनता और उस जनता की संस्कृति। जब ये तीनों स्वर एक सूत्र में मिलते हैं तभी राष्ट्र का जन्म होता है। केवल स्थूल पृथ्वी मिट्टी और पत्थर का ढेर है। उसकी सत्ता तभी सार्थक होती है जब उस पर जनता का निवास हो और जन-समूह या जनता की चरितार्थता तभी है जब उसमें संस्कृति का विकास हो। इसी विकास के लिए भारत की नई राष्ट्रियता प्रयत्नशील हुई। हमने अपनी *पृथ्वी का पूजन किया। उसे पग पग पर देवत्व प्रदान किया। उसके प्रत्येक* पर्वत नदी सरोवर को पवित्र तीर्थ के रूप में प्रणाम किया और जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी के उदात्त घोष से चारों दिशाओं को भर

---

४ पत्रिका साप्ताहिक हिन्दुस्तान १८ अगस्त १९५२ पृ स ५

दिया। मातृभूमि के सम्मान की ध्वनि चारों ओर भर गई। जनता ने भूमि के साथ अपना सम्बन्ध नाना प्रकार से स्थापित किया।" .. पृथ्वी का दोहन केवल आर्थिक सम्पत्ति के रूप में ही नहीं प्राप्त हुआ, किन्तु सांस्कृतिक जीवन के जितने रूप हैं वे सब ही पृथ्वी रूपी गौ के दुग्ध बने। इन सबको ही सम्मिलित रूप में हमने संस्कृति कहा। अब हमारी संस्कृति हवा में नहीं तरती, वह हमारे श्वास प्रश्वास में भर गई है। हम मानते हैं कि संस्कृति ही मानव जीवन की प्राण वायु है। हम मानते हैं कि अतीत के मौलिक सुन्दर एवं रचनात्मक तत्त्वों को लेकर ही हमें नए रूपों का विकास करना चाहिए, तभी निजी संस्कृति का माधुर्य और सौन्दर्य जीवन में निवास करता है।"[५] यह दृष्टिकोण हमारी राष्ट्रीय भावना का नया विकास है।

डा० राममुमर्गसिंह ने 'भारत की राष्ट्रीय एकता' नामक लेख में लिखा है कि— किसी भी राष्ट्र की एकता के कुछ लक्षण होते हैं, जिनके आधार पर एक राष्ट्र को राष्ट्र माना जाता है। पहला लक्षण भूगोल इतिहास और प्राकृतिक रूपरेखा सम्बन्धी है। उत्तर में पूर्व से लेकर पश्चिम तक हिमालय की गगनचुम्बी, प्राचीर पूर्व-दक्षिण और दक्षिण में बंगाल की खाड़ी, हिन्द महासागर तथा अरब सागर यह भौगोलिक विभाजन कितना प्राकृतिक और सहज है। कालिदास भवभूति आदि संस्कृत कवियों और यूनानी तथा अरब यात्रियों में लेकर आधुनिक काल में पाश्चात्य विद्वानों तक सभी ने भारत को एक प्राकृतिक इकाई माना है। सनातन विचारधारा के अनुसार जिसे आज भी देशव्यापी मान्यता प्राप्त है सच्चा और धर्मनिष्ठ भारतीय वही माना जाता है जिसने दक्षिण, पूर्व, उत्तर और पश्चिम में स्थित चारों धामों की यात्रा की हो। वास्तव में इस परम्परा के पीछे एक सूक्ष्म विचार और विवेक निहित था।[६]

यह सच है कि सदियों से हमारे देश में विभिन्न भाषाओं, क्षेत्रीय परंपराओं और रीति रिवाजों का चलन रहा है। किन्तु इन विभिन्नताओं का धरातल और राष्ट्रीय एकता का धरातल सदा अलग अलग रहा है। उत्तर और पूर्व में सदियों तक मुसलमानों की सल्तनतें रहीं और दक्षिण में

---

५ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १८ अगस्त १९६३ पृ ५ श्री वासुदेवशरण अग्रवाल
६ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १८ अगस्त १९६३ पृ० ६

चोल पल्लव पान्च राष्ट्रकूट आदि वंशों का राज्य बना रहा किन्तु देश की मौलिक एकता की भावना पर इन ठोस पार्थिव तथ्यों द्वारा कभी ठेस नही पहुची ।

गाधीजी की कामना थी कि समस्त विश्व म शांति का साम्राज्य हो। विश्व के सभी मानव एक परिवार की तरह रहें और सभी स्वतंत्र हो, परस्पर द्वेष भाव न हो हिंसा न हो। इसीलिए वे सुबह शाम इस मंत्र का जाप करते थे—

सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुखभाग भवेत् ॥

गाधीजी की राष्ट्रीय भावना विशाल दृष्टिकोण लिए और अत्यधिक उदार थी। भारत म अनेकानेक जातियाँ भाषाए धर्म एव सम्प्रदाय चलते रहे हैं फिर भी भारत को राष्ट्र की संज्ञा दी जाती है। इन सब विभिन्नताओं म भी एक ऐसी समता एव एकता है जिसे एक विद्वान के शब्दों म यो कह सकते हैं कि जैसे रगीन धागा विभिन्न प्रकार के फूलो अथवा मणियो को पिरोकर एक सुन्दर हार बना देता है जिसका प्रत्येक फूल या मणि न तो दूसरे से अलग हो सकता है और न केवल अपनी ही सुन्दरता म लोगो को मोहता है बल्कि दूसरो की सुन्दरता से वह स्वय सुशोभित होता है और उसी प्रकार अपनी सुन्दरता म दूसरो को भी सुशोभित करता है। यह केवल कल्पना प्रसूत काव्य भावना हो नहीं वरन् एतिहासिक यथार्थ का प्रत्यक्ष सत्य है जो हमारे अनेकत्व म एकत्व की स्थापना कर समग्र भारत के हृदयो को अपनत्व और अभिन्नत्व के सूत्र म बाधे हुए हैं।

कहने का आशय यह है कि भारत की अखडता युगो पुरानी है। स्नान करते समय एक भारतीय जिस श्लोक का पाठ करता है उसम सम्पूर्ण भारत की नदियो गगा जमुना गोदावरी नर्मदा सिन्धु, कावेरी आदि के जल का स्मरण किया गया है—

गगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती ।[६]
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलऽस्मिन सन्निधि कुरु ॥

गत साठ वर्षों का भारतीय इतिहास राष्ट्रीय भावना के नवीन स्वरूप का लेकर आगे आया जिसम बलिदान एव त्याग की वृत्ति से नौजवानो के रक्त

६ राष्ट्र भाषा रजत जयन्ती ग्रन्थ उत्कल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा कटक पृ० १४

से इतिहास के पृष्ठ रंग गये हैं। स्वतंत्रता यज्ञ मे आहुति देने वाले एव असह्य यातनाओं को सहने वाले वीरो ने राष्ट्रीय भावना को अनेक रूपों में अभिव्यक्ति दी है। राष्ट्र की रक्षा के साथ साथ राष्ट्रोन्नति में सहायक रचनात्मक कार्यों पर भी शक्ति व्यय की गई एव राष्ट्र की सुप्त शिराओं में नवीन रक्त तथा नव चेतना का संचार हुआ।

"आधुनिक अर्थों में राष्ट्रियता की भावना का विकास अंग्रेजो के भारत आगमन और उनके द्वारा देश की केन्द्रिय सत्ता के शनै शनै पूर्णत अधिकृत किये जाने के पश्चात् प्रारम्भ होना है। अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार प्रसार तथा देश के विभिन्न भागों के निवासियों के पारस्परिक सम्मेलन ने 'राष्ट्र' सम्बन्धी एक व्यापक दृष्टिकोण को जन्म दिया फलत राष्ट्रियता की भावना को भी नये आयाम मिले। ७

विदेशी शोषण से विक्षुब्ध जनता की परतन्त्रता की अनुभूति राष्ट्रियता की भावना के विकासशील होने से उस अधिक जाग उठी। स्वाधीनता संग्राम इसी का परिणाम था।[8] वस्तुत राष्ट्रियता इस युग की एक ऐसी प्रवृत्ति स्वीकार की जा सकती है जिसकी चेतना कतिपय अपवादों को छोड़ इस युग के लगभग सारे जीवन में न्यूनाधिक मात्रा में उपस्थित रही है।"[9]

स्वाधीन भारत में राष्ट्रीय भावना को सर्वाधिक विस्तार एव स्थायित्व मिला है। धर्म सम्प्रदाय जातियों वर्गों और वर्णों आदि के समस्त भेद-भाव समाप्त होते जा रहे हैं तथा सुदूर दक्षिण से उत्तर तक और पूर्व से पश्चिम तक भारत के किसी भी कोने में रहने वाला हर व्यक्ति समस्त देशवासियों को अपना भाई मानता है। अब सभी लोग यह अनुभव करते हैं कि देश की हर सम्पत्ति उनकी है देश का हर मान और अपमान उनका अपना मान और अपमान है। कुछ समय के लिए भाषा राज्य-पुनर्गठन आदि के नाम पर परस्पर भेद भाव के जो राष्ट्रिय विकार कुछ लोगों में पैदा हुए थे वे शीघ्र ही घृणित माने गए तथा उन विचारों को आश्रय देने वाले लोगों को राष्ट्र विरोधी समझा गया। आज हमारे जन हृदय की यह सबसे बड़ी भावना है

---

७ नया हिन्दी काव्य डा० शिवकुमार मिश्र पृ ४,
८ वही पृ ४८
९ वही पृ ६५

कि हम सब एक राष्ट्र हैं। चीन के आक्रमण के समय हमारी राष्ट्रीय भावना ने समस्त देश की उसी संगठित आवाज को व्यक्त किया। अपने अपने प्रदेश की अपनी अपनी भाषा को राष्ट्रभाषा घोषित कर राष्ट्र के विश्रृंखलित रूप को ही प्रगट करना है। राष्ट्र भाषा के पद पर एक ही भाषा आसीन हो अन्य भाषाओं को भी समुचित आदर दिया जाय और अलग अलग प्रदेश की भावना को हटाकर समस्त भारत को एक ही राष्ट्र माना जाय। तभी राष्ट्रीय भावना का सही रूप अभिव्यक्त होगा। यद्यपि पंजाब काश्मीर एवं राजस्थान की सीमाओं पर पाकिस्तान का हमला इन विवादों को भुलाकर पुनः राष्ट्रीय भावना का उत्तेजक रूप व्यक्त करने में समर्थ हुआ है। समस्त भारत की जनता एक हो गई। जातिवाद सम्प्रदाय वर्गभेद एवं वर्ण भेद बिल्कुल न रहा। सभी की एक ही आवाज थी भारत की रक्षा। राष्ट्रीय भावना का उग्र रूप बाह्य या विदेशी सत्ता के आक्रमण के समय देखने को मिलता है। राष्ट्रीय भावना एक ही राष्ट्र तक सीमित न रहकर अन्तराष्ट्रीय भी बन गई है जहां मानवता का मूल्यांकन होता है। यही राष्ट्रीय भावना के विकास का चरम उत्कर्ष है।



२ | स्वतन्त्रता-पूर्व राष्ट्रीय भावना एक सर्वेक्षण

हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने १०५० विक्रम से माना है। उन्होंने उसे निम्नांकित चार कालों में विभाजित किया है।

(१) वीरगाथा काल १०५० १३७५
(२) भक्तिकाल १३७५ १७००
(३) रीतिकाल १७००-१६००
(४) आधुनिक काल १६०० से अब तक

१ वीरगाथा कालीन काव्य में राष्ट्रीय भावना —

वीर गाथा काल में भारतवर्ष अनेक छोटे २ राज्यों में विभक्त था, इसलिए प्रत्येक राज्य के कवियों को अपने राज्य के प्रति निष्ठा होती थी। वे अपने आश्रय दाता की प्रशंसा करते थे। राजनैतिक वातावरण का उनकी काव्य प्रतिभा पर भी प्रभाव पड़ता था। जब दो राजा परस्पर लड़ते थे तो उनके आश्रय में रहने वाले कवियों को भी अपने आश्रयदाता को वीर पराक्रमी और न्यायप्रिय सिद्ध करना पड़ता था तथा विरोधी राजा की उग्र निन्दा करनी पड़ती थी। वीरगाथा कालीन काव्य की इस प्रवृत्ति ने भारत को एक राष्ट्र के रूप में स्वीकृति को खण्डित कर दिया था। प्रत्येक कवि का वीरभावना आश्रयदाता के राज्य की सीमाओं के विस्तार और उन सीमाओं में रहने वाली प्रजा की एकता तक ही सीमित थी। भारतवर्ष के अन्तर्गत जो अन्य राज्य थे उनके प्रति कवियों में कोई निष्ठा शेष नहीं रह गई थी। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि जन-जीवन में सांस्कृतिक दृष्टि से जहाँ एक ओर राष्ट्रीय भावना की धारा अखंड रूप में बह रही थी वहाँ दूसरी ओर हिन्दी काव्य में इस काल में राजनैतिक वातावरण के कारण राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति के लिए कोई अवकाश नहीं रह गया था। जनता इस काल में भी देश की चारों सीमाओं पर बने हुए मन्दिरों को अपना तीर्थ मानती थी। समस्त देश की नदियों को पवित्र समझती थी और आसेतु हिमाचल विस्तृत भारतभूमि के

प्रति आत्मीयता रखती थी। किन्तु जयचन्द और पृथ्वीराज जैसे राजाओं की पारस्परिक द्रोहाग्नि से प्रभावित कवि जनता की उस राष्ट्रीय भावना को अपने काव्य में स्थान नहीं दे सके। अतः निष्कर्ष रूप में यदि यह कहा जाय कि वीरगाथाकालीन हिन्दी काव्य वीर भावना प्रधान होते हुए भी राष्ट्रीय भावना से रहित है तो अतिशयोक्ति न होगी।

२ भक्तिकालीन काव्य में राष्ट्रीय भावना —

भक्तिकाल का काव्य आज उन कवियों की प्रतिभा का प्रसाद है जिन्होंने लौकिक जीवन को सुख शांतिपूर्ण बनाने के लिए ईश्वर की आस्था का सन्देश समाज को दिया। इस काल में हिन्दी काव्य उस सांस्कृतिक भावना से अनुप्राणित हुआ जिसमें देश की सनातन अखण्डता और एकता का भाव छिपा हुआ था। सूर के कृष्ण किसी एक राज्य के ही योद्धा राजा या जन-नेता नहीं है बल्कि वे समस्त भारतवर्ष को अत्याचारियों से मुक्त करके जीवन का मधुरता का संरक्षित करते हैं। तुलसी के राम अयोध्या के राज्य तक सीमित नहीं रहते। सेतुबन्ध रामेश्वरम् तक की समस्त भारतीय जनता को राक्षसों के अत्याचारों से मुक्त करते हैं। कबीर ने किसी एक क्षेत्र या वर्ग के समाज की बुराईयों का ही खण्डन और विरोध नहीं किया है बल्कि उन्होंने समस्त भारतवर्ष में फैले हुए जन समाज की रूढ़ियों अंध विश्वासों और कुप्रवृत्तियों पर प्रहार किया है। उनके काव्य में आध्यात्मिक आधार पर देश की अखण्डता का भाव अभिव्यक्त हुआ है। मुल्ला और पंडित को वे समान रूप से फटकारते हैं। जायसी का रत्नसेन भी केवल चित्तौड़ तक सीमित नहीं रहता। समस्त भारत उसकी आत्मीयता से अनुप्राणित होता है। इस काल के अन्य भक्त कवियों ने भी व्यापक और उदार दृष्टिकोण से देश की महिमा और गौरव को पुनः स्थापित किया है तथा सांस्कृतिक चेतना का अखण्ड प्रवाह अपने काव्य से जन जीवन को देकर उसी भावना का पोषण किया है, जिसे आधुनिक अर्थ में राष्ट्रीय भावना का प्रारम्भिक रूप कह सकते हैं।

३ रीतिकालीन काव्य में राष्ट्रीय भावना —इस काल का जन जीवन इतिहास के पन्नों पर विश्रृंखलित दिखाई देता है। मुगल शासन के अत्याचारों से पीड़ित जनता की एकता का भाव खंडित हो गया है किन्तु हिन्दी काव्य में उस एकता को सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया गया है। घोर शृंगारी कवियों ने भी देश की एकता की चेतना को कहीं कहीं वाणी दी है यथा बिहारी महाराजा जयसिंह को शृंगार रस-पूर्ण दोहों से

मनोरंजन करते हुए भी अन्योक्ति के माध्यम से उन्हें यह समझाना नहीं भूलते कि हे राजा ! तू अपनी ही जाति के अन्य राजाओं को मुगल शासन की प्रसन्नता के लिए क्यों मारता है ? वे कहते हैं —

स्वारथ सुकृतन श्रम वृथा देखु विहंग विचार ।
बाज पराये पानि पर तू पच्छी नू न मार ।।

निःसंदेह इन पंक्तियों में शृंगारी कवि बिहारी की राष्ट्रीय चेतना मुखरित हो उठी है। इस काल के प्रसिद्ध कवि भूषण राष्ट्रीय चेतना के सबसे बड़े संदेशवाहक हैं। उन्होंने अपने आश्रय दाता शिवाजी को बार-बार इसीलिए उत्तेजित किया है ताकि वह समस्त भारत को मुगलों के शासन से मुक्त करके राष्ट्र की शक्ति को संगठित कर सकें। इस काल के कुछ अन्य कवियों ने भी राष्ट्रीय भावना को अपने काव्य में स्थान दिया है। बाँकीदास की निम्नांकित पंक्तियाँ इस बात की साक्षी हैं। वे कहते हैं —

आया इंगरेज मुलक रै ऊपर
रागो रे किहिर रजपूति मदा हिन्दू की मुसलमान ।।

चूंकि इस काल में मुसलमानी शासन का अंत और अंग्रेजों के शासन का प्रारम्भ भी हुआ, इसलिए हिन्दी कवियों की राष्ट्रीय भावना में वह परिवर्तन भी मिलता है, जिसका उल्लेख मैं राष्ट्रीय भावना की सीमा के अंतर्गत कर चुकी हूं।

४ आधुनिक कालीन काव्य में राष्ट्रीय भावना—इस काल में हिन्दू और मुसलमान दोनों जातियाँ शासित बन जाती हैं और अंग्रेज शासक हो जाते हैं। इसलिए हिन्दी कवियों की राष्ट्रीय भावना में वह परिवर्तन अत्यन्त तीव्र हो उठा है जिसका आभास रीतिकाल के अंत में मिलने लगा था। आधुनिक काल के प्रारम्भिक हिन्दी कवियों ने मुसलमानों का विरोध छोड़कर अंग्रेजों के विरोध में आवाज उठाई है और उन राष्ट्रीयता के भावों का पोषण किया है जिसमें हिन्दू और मुसलमान दोनों के लिए समान स्थान है। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने सबसे पहले राष्ट्रीय भावना की इस नई दिशा का उद्घाटन किया। उन्होंने देश के सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक पुनरुद्धार के लिए आवाज उठाई। उन्होंने कहा—

'अंगरेज राज सुखसाज सजे अति भारी
पै धन विदेश चलि जात यहै ख्वारी'

वे भारत का दुदशा को देखकर व्यथित होते हैं —

सबके ऊपर टिक्कास की आफत आई
हा ! हा ! भारत-दुदशा न देखि जाई

इनकी प्रेरणा से हिंदी काय म राष्ट्रीय भावना विभिन्न रूपो मे अभियक्त होने लगी। कवियो न समस्त देश की प्रकृति का वभव विभिन्न कविताओ म अत्यत मनोहारी ढग स चित्रित किया और देश के सास्कृतिक गौरव के गीत गाये। मथिलीशरण गुप्त उस दिशा म आग बढते हुए भारत भारती लेकर प्रस्तुत हुए। समस्त देश उनकी भारती के स्वरो से गूज उठा। उन्होने जनता को जगाते हुए अपनी वाणी स यह उद्घोष किया —

हम कौन थ क्या होगए और क्या होगे अभी ?[१]
आओ विचारें आज मिल कर यह समस्याए सभी

उन्होने हि दी कविता को राष्ट्रीय भावना का जो तीव्र स्वर दिया वह देश के कठ कठ म गूज उठा। उन्होने देश म ऐसी आत्मीयता जाग्रत की जिसस लोग बार बार भारत मे जन्म लेने की आकाक्षा करें। उन्होंने लिखा है—

इसी देश म जन्म दो
लो प्रणाम हे नीरज नाम[२]

गुप्त जी ने भारत के प्राचीन राष्ट्रीय गौरव और गरिमा की प्रतिष्ठा करत हुए कहा—

ससार को पहले हमी न ज्ञान भिक्षा दान की
आचार की व्यापार की व्यवहार की विज्ञान की[३]

o o o o o o

है आज पश्चिम म प्रभा जो पूव स ही है गई
हरते अधेरा यदि न हम होती न खोज नई नई[४]

---

१ भारत भारती, मथिलीशरण गुप्त पृ ४
२ यशोधरा मथिलीशरण गुप्त, पृ २
३ भारत भारती वही पृ १६
४ वही पृ २५

गुप्त जी के साथ उनके अनुज सियाराम शरण गुप्त तथा कई अन्य कवियों को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता जिन्होंने राष्ट्रीय भावना को अपने काव्य में विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त किया। माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, बालकृष्ण शर्मा नवीन, प्रसाद, सोहनलाल द्विवेदी, श्यामनारायण पाण्डे, गोपालशरण सिंह, रामधारी सिंह दिनकर, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, सुमित्रा नन्दन पंत, नरेन्द्र शर्मा आदि के नाम इस क्षेत्र में स्मरणीय हैं। बालकृष्ण शर्मा नवीन, सुभद्रा कुमारी चौहान और माखनलाल चतुर्वेदी तो राष्ट्रीय कवियों की उस श्रेणी में सम्मिलित हैं, जिन्होंने हाथ में झंडा लेकर अपनी राष्ट्रीय वाणी को जीवन में व्यवहारिक रूप में उतारा और एक स्वतंत्र भारत-राष्ट्र की स्थापना के लिए कारागृह के सींकचों में भी जिनकी वाणी का स्वर मंद नहीं पड़ा। जयशंकर प्रसाद भारत के अतीत-गौरव का अत्यन्त ओजपूर्ण स्वर में गान करते हुए जहाँ एक ओर यह गाते थे—

"अरुण यह मधुमय देश हमारा[1]
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को
मिलता एक सहारा"

वहाँ नवीन जी स्वाधीनता के अरुणोदय देखने के लिए प्रलय का आह्वान करते थे—

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ
जिससे उथल पुथल मच जाये"

माखनलाल जी की राष्ट्रीय भावना कितनी निर्मल और सात्विक थी, यह इन पंक्तियों में देखिए—

"चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ
चाह नहीं, प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ।
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊँ।
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ॥
मुझे तोड़ लेना वन माली,
उस पथ में देना तुम फेंक।
मातृ भूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक"

---

१ चन्द्रगुप्त, सं० जयशंकर प्रसाद पृ० ८६

सुभद्रा कुमारी चौहान ने झाँसी की रानी का गुणगान करके जन जन के कंठ को वह वाणी दी जिसमें स्वाधीनता की आकांक्षा अत्यन्त तीव्र रूप में मुखर हो उठी। इसी प्रकार हिन्दी के पूर्वोक्त अन्य कवियों ने भी राष्ट्रीय भावना को विभिन्न रूपों में अपने काव्य में अभिव्यक्त किया। जिन लोगों ने देश के लिए बलिदान किया उनका गौरव गान हिन्दी के राष्ट्रीय काव्य का मुख्य विषय बन गया। स्वाधीनता संग्राम के अपराजेय सेनानी महात्मा गांधी के जीवन पर अनेक कवियों ने राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत कविताएं लिखी तथा देश की विभूतियों और नेताओं का भी गुणगान किया। इस प्रकार आधुनिक कालीन हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय भावना की सबसे अधिक व्यापक और विस्तृत अभिव्यक्ति हुई।

निष्कर्ष —

पूर्वोक्त सर्वेक्षण से यह सिद्ध है कि भारतीय जीवन की अनन्तता और एकता का स्वर वीरगाथाकालीन काव्य में एक राष्ट्र का स्वर बनकर चित्रित नहीं हो सका था। भक्तिकाल में उस भक्ति के माध्यम से सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का वातावरण मिला और रीतिकाल तक मुगल शासन के अत्याचारों के कारण उस सांस्कृतिक स्वर को हिंदु राष्ट्रीयता का रूप धारण करना पड़ा। आधुनिक काल में जब हिन्दू और मुसलमान अंग्रेजों की प्रजा बन गये तब हिंदी कवियों की वाणी उस व्यापक राष्ट्रीय भावना को अभिव्यक्त करने में सफल हुई जिसके फलस्वरूप हिन्दी काव्य साम्प्रदायिक संकीर्णता से बाहर आया किंतु इस काल में भी राष्ट्रीय भावना की संकीर्णता का अंग्रेज विरोधी स्वर व्याप्त रह गया था। स्वतंत्रता के पश्चात् लिखे गये हिन्दी काव्य में उसका भी अन्त हो चुका है। स्वातन्त्र्योत्तर हिंदी कवियों की राष्ट्रीय भावना एक बहुत बड़े परिवेश में अभिव्यक्त हुई है। प्रस्तुत प्रबन्ध में मैं उसकी केवल गीत-काव्य में होने वाली अभिव्यक्ति का अनुशीलन और मूल्यांकन प्रस्तुत करूंगी।

४ | स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी गीत-काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ और राष्ट्रीय भावना

१ स्वतन्त्रता का हिन्दी-काव्य पर प्रभाव

राष्ट्रीय कविता के मूल में अतीत के प्रति श्रद्धा, निजत्व से प्रेम, वर्तमान अभावों के प्रति जागरूकता एवं युग-परिवर्तन होता आया है। राष्ट्रीय गीतों के मूल में यही भावना जागृत रहती है। उनमें वर्तमान के प्रति असंतोष, अभावों के प्रति जागरूकता का चित्रण देश, जाति और संस्कृति की सीमाएं तोड़ सम्पूर्ण मानव जाति के विषाद और अभाव की जो चेतना जगा जाती है वह अन्तर्राष्ट्रीय है, सार्वजनिक है, मानवीय है। राष्ट्र भावना में मानवीय दृष्टिकोण का विकास सम्पूर्ण मानव समाज की ओर उन्मुख न होकर अपने देश, जाति या समाज तक सीमित रह गया है। राष्ट्रीयता के उपकरणों में अपने देश के प्रति प्रेम, अपने अतीत की उज्ज्वलता के प्रति मोह, देश के शत्रुओं पर आक्रोश, अपनी अकर्मण्यता पर क्षोभ और विषाद एवं भविष्य निर्माण के प्रति आवेश और उत्तेजना है। इस प्रकार प्रेम, अभिमान, आक्रोश, उत्साह, क्षोभ और ग्लानि के भावों से पूर्ण देशभक्ति के गान हैं। वर्तमान में देश के सामने देश के निर्माण की समस्या है। यह समस्या राष्ट्रीयता के विकास की समस्या है, क्योंकि यदि यह भावना विकसित होती है तो किसान, मजदूर, पूंजीपति, निर्धन, भूमि वितरण आदि की सारी समस्यायें हल हो जायेंगी। गांधीजी का हृदय-परिवर्तन वाला स्वप्न पूर्ण हो जायगा। किन्तु इस की चेतना इन सब की परिपूर्णता के लिए जाति-व्यवस्था पर आश्रित है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय-जीवन की बहुविध अभिव्यक्ति हुई। हमारे इस युग के साहित्य की मुख्य प्रेरणा राष्ट्रीय और सांस्कृतिक है। राष्ट्र-निर्माण की भावना आज की कविता में भी दिखाई देती है। आज के हिन्दी-कवि देश की दुर्दशा एवं वर्ग-वैषम्य जनित परिस्थितियों का चित्रण करते हुए देश के उत्थान की कामना करते

लगे हैं। उनकी राष्ट्रीयता सम्पूर्ण विश्व के मंगल की कामना को आत्मसात् करता हुई अधिक व्यापक एवं उदार रूप धारण करने लगी है। वर्तमान हिन्दी कविता में राष्ट्रीय भावना अनेक रूपों में अभिव्यक्त हुई है जैसे जन्म भूमि के प्रति ममता देश का मस्तक ऊँचा करने वाले महापुरुषों के प्रति श्रद्धांजलि देश प्रेम और आत्मोत्सर्ग स्वर्णिम अतीत का स्मरण राष्ट्र ध्वज का वन्दना वर्तमान अवस्था पर क्षोभ बंगाल का अकाल, देश के दुखी किसानों और मजदूरों का चित्रण साम्राज्यवाद का विरोध और समाजवाद का जयजयकार जातीयता के प्रति उद्गार और राष्ट्रीय बाधाओं को चूर्ण करने की प्रेरणा आदि।

वर्षों की काल रात्रि के बाद देश में स्वातंत्र्य प्रभात का नव जागरण हुआ, किन्तु उसके बाद भी उन्मुक्त भावना का जो अनियंत्रित ताडव नृत्य देखा, उसके कारण मानवता चीत्कार कर उठी। वह अपने उस वसुन्धरा के लाल को खो बैठी जो मानवता का उपासक था जो केवल भारत का ही हितैषी नहीं वरन् अहिंसा और सत्य के द्वारा विश्व हित की निरन्तर कामना किया करता था। ऐसी विषम परिस्थिति में राष्ट्रीय कवियों का दायित्व बहुत अधिक बढ़ जाता है।

पराधीनता की शृंखला में जकड़े हुए भारतवासी निराशा के गहन तिमिर में आलोक किरण ढूँढने का प्रयास कर रहे थे। अनेक नवयुवकों को स्वतन्त्रता की आहुति बन जाना पड़ा। कितने परिवार विघटित होकर समाप्त हो गये सभ्यता क्रन्दन कर उठी संस्कृति अपभ्रंश रूप लेकर नव जागृति का संदेश देने के लिए लालायित हो उठी। स्वतन्त्रता मिल गई और मिल गया भारतवासियों को नया साहस नया विश्वास और नवीन किरण युक्त नया सवेरा। कवियों की लेखनी उठी और निर्माण की स्याही लेकर संस्कृति के पन्ने पर बिखेर दी गई। हृदय के ऐसे उद्गार जिनमें एक और देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति का हर्ष था दूसरे में देश के लिए बलिदान देने वालों के प्रति विषाद। गीतों में नये विचार थे नई भावना थी नई जागृति और नई चेतना थी। राष्ट्रीय भावना अनेक स्रोतों प्रस्थानों अनेक स्वरूपों में कहीं गीतों में प्रत्यक्ष कहीं अप्रत्यक्ष रूपों में सामने आई। परिणाम यह हुआ कि कहीं हिन्दी गीत काव्य में सामाजिक प्रथाओं एवं अनैतिकता के खण्डन द्वारा राष्ट्रीय भावना का सिंचन हुआ तो कहीं सम्प्रदायवाद विरोधी-पोषक तत्वों द्वारा राष्ट्रीय भावना का पोषण हुआ। हिन्दी गीतों में राष्ट्र उद्धारकों

के गुणगान को गाकर राष्ट्रीय भावना को यथा योगदान दिया गया। धार्मिक विषमता सरिता को समता का आवरण पहनाकर भी राष्ट्रीय भावना उदधि का गम्भीर और गहन किया गया।

वर्तमान हिन्दी गीतों में राष्ट्र अहितकारियों के प्रति रोष दर्शाकर राष्ट्रीय भावना के प्रचार में अप्रत्यक्ष योग दिया गया है। यह तो हम स्वीकार करते ही हैं कि स्वतन्त्रता हर्षोल्लास की अनुभूतिशील अभिव्यक्ति के माध्यम से राष्ट्रीय भावना का भावातिरेक मिला है। वहीं-कहीं तो हिन्दी गीतों द्वारा जन समुदाय की सहानुभूति अनुशीलित कर राष्ट्रीय भावना का क्षेत्र विस्तृत व गम्भीर हुआ है।

आज गीतों की इतनी वेगवती धारा बह निकली है कि उसके परिणाम से राष्ट्रीय भावना पयोधि में अनेकानेक लहरें उठ रही हैं। प्रत्येक गीत की चंचल लहर के साथ राष्ट्रीय भावना प्रतिध्वनित हो रही है। राष्ट्रीय भावना युक्त अनेक गीत तारक बनकर आज काव्य के स्वच्छ नील आकाश में जगमगा रहे हैं।

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी गीतकाव्य में भौतिक उपादानों को आधार बनाकर राष्ट्रीय जागरण का संदेश दिया गया है। उदाहरणार्थ राष्ट्र संस्कृति के प्रति आत्मीयता और राष्ट्रीय भावना की प्रधानता दिखाकर राष्ट्रीय सम्पत्ति के प्रति स्नेहोद्गारों द्वारा राष्ट्रीय भावना से गठ व धन करके तथा आर्थिक आधार द्वारा भी कहीं-कहीं सुमनांजलि दी गई है। इतना ही नहीं कहीं देश प्रकृति प्रेम अनुरंजित कर राष्ट्रीय भावना की प्रभा का प्रकाश पुंजित किया है तो कहीं भाषा विभेद का सामंजस्य और भूखण्डता की अखण्डता का आवरण देकर राष्ट्रीय भावना को उद्दीप्त किया है। गीतों द्वारा कवियों ने जन जन में राष्ट्रीय निर्माण की प्रेरणा का फूंकने तथा राष्ट्रीय भावना को सृजनात्मक स्वरूप देने का अदम्य साहस युक्त नया कदम उठाया है। राष्ट्र में जो धर्म विभेद हैं जिसके दुष्परिणाम से राष्ट्रीय भावना में एक दरार सी पड़ गई थी उसको समाप्त करने के लिए साम्प्रदायवाद के प्रति साम्यवाद का अपवाद देकर राष्ट्रीय भावना को एक यान दिया है। राष्ट्रीय भावना का नई दिशा का संकेत मिला और नई पीढ़ी को मिला है नया जागरण। गीतों के द्वारा तथा गीतों को मन्त्र और जन-जन तक पहुँचाकर तब राष्ट्र-सुरक्षा का मन्त्र बनाकर राष्ट्रीय भावना को प्रतिष्ठित किया है। कहीं आतंक का भारत के रत्न

नगे हैं । उनकी राष्ट्रीयता सम्पूर्ण विश्व के मगल की कामना को आत्मसात् करती हुई अधिक व्यापक एव उदार रूप धारण करने लगी है । वर्तमान हिन्दी कविता में राष्ट्रीय भावना अनेक रूपों में अभिव्यक्त हुई है जैसे जन्म भूमि के प्रति ममता देश का मस्तक ऊँचा करने वाले महापुरुषों के प्रति श्रद्धाजलि देश प्रेम और आत्मोत्सर्ग स्वर्णिम अतीत का स्मरण राष्ट्र ध्वज की वन्दना वर्तमान अवस्था पर क्षोभ बगाल का अकाल, देश के दुखी किसानों और मजदूरों का चित्रण साम्राज्यवाद का विरोध और समाजवाद का जयजयकार जातीयता के प्रति उद्गार और राष्ट्रीय बाधाओं को चूर्ण करने की प्रेरणा आदि ।

वर्षों की काल रात्रि के बाद देश में स्वातन्त्र्य प्रभात का नव जागरण हुआ किन्तु उसके बाद भी उन्मुक्त भावना का जो अनियन्त्रित ताडव नृत्य देखा उसके कारण मानवता चीत्कार कर उठी । वह अपने उस वसुन्धरा के लाल को खो बैठी जो मानवता का उपासक था जो केवल भारत का ही हितैषी नहीं वरन् अहिंसा और सत्य के द्वारा विश्व हित की निरन्तर कामना किया करता था । ऐसी विषम परिस्थिति में राष्ट्रीय कवियों का दायित्व बहुत अधिक बढ जाता है ।

पराधीनता की शृखला में जकडे हुए भारतवासी निराशा के गहन तिमिर में आलोक किरण ढूढने का प्रयास कर रहे थे । अनेक नवयुवकों को स्वतन्त्रता की आहुति बन जाना पडा । कितने परिवार विघटित होकर समाप्त हो गये सभ्यता क्रन्दन कर उठी सस्कृति अपभ्रश रूप लेकर नव जागृति का सदेश देने के लिए लालायित हो उठी । स्वतन्त्रता मिल गई और मिल गया भारतवासियों को नया साहस नया विश्वास और नवीन किरण युक्त नया सवेरा । कवियों की लेखनी उठी और निर्माण की स्याही लेकर सस्कृति के पन्ने पर बिखेर दी गई । हृदय के ऐसे उद्गार जिनमें एक और देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति का हर्ष था दूसरे में देश के लिए बलिदान देने वालों के प्रति विषाद । गीतों में नये विचार थे नई भावना थी नई जागृति और नई चेतना थी । राष्ट्रीय भावना अनेक स्रोतों प्रस्रोतों अनेक स्वरूपों में कहीं गीतों में प्रत्यक्ष कहीं अप्रत्यक्ष रूपों में सामने आई । परिणाम यह हुआ कि कहीं हिन्दी गीत काव्य में सामाजिक प्रथाओं एवं अनैतिकता के खण्डन द्वारा राष्ट्रीय भावना का सिंचन हुआ तो कहीं सम्प्रदायवाद विरोधी-पोषक तत्वों द्वारा राष्ट्रीय भावना का पोषण हुआ । हिन्दी गीतों में राष्ट्र उद्धारक

के गुणगान को गाकर राष्ट्रीय भावना को यथा योगदान दिया गया। धार्मिक विषमता सहिता व समता का आवरण पहनाकर भी राष्ट्रीय भावना उदधि का गम्भीर और गहन किया गया।

वर्तमान हिंदी गीतों में राष्ट्र अहितकारियों के प्रति रोष दर्शाकर राष्ट्रीय भावना के भंडार में अप्रत्यक्ष योग दिया गया है। यह तो हम स्वीकार करते ही हैं कि स्वतन्त्रता हर्षोल्लास की अनुभूतिशील अभिव्यक्ति के माध्यम से राष्ट्रीय भावना को भावातिरेक मिला है। कहीं-कहीं तो हिंदी गीतों द्वारा जन समुदाय की सहानुभूति अनुशीलित कर राष्ट्रीय भावना का क्षेत्र विस्तृत व गम्भीर हुआ है।

आज गीतों की इतनी वेगवती धारा बह निकली है कि उसके परिणाम से राष्ट्रीय भावना पयोधि में अनेकानेक लहरें उठ रही हैं। प्रत्येक गीत की चंचल लहर के साथ राष्ट्रीय भावना प्रतिध्वनित हो रही है। राष्ट्रीय भावना युक्त अनेक गीत तारक बनकर आज काव्य के स्वच्छ नील आकाश में जगमगा रहे हैं।

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी गीतकाव्य में भौतिक उपादानों को आधार बनाकर राष्ट्रीय जागरण का सदेश दिया गया है। उदाहरणार्थ राष्ट्र संस्कृति के प्रति आत्मीयता और राष्ट्रीय-भावना की प्रेषणीयता दिखाकर राष्ट्रीय सम्पत्ति के प्रति स्नेहादगारों द्वारा राष्ट्रीय भावना में गठ बन्धन करके तथा आर्थिक आधार द्वारा भी कहीं कहीं सुमनांजलि दी गई है। इतना ही नहीं कहीं देश प्रकृति प्रेम अनुरंजित कर राष्ट्रीय भावना की प्रभा को प्रकाश पुंजित किया है तो कहीं भाषा विभेद का सामंजस्य और भूखण्डों की अखंडता का आवरण देकर राष्ट्रीय भावना का उद्घोष किया है। गीतों द्वारा कवियों ने जन जन में राष्ट्रीय निर्माण की प्रेरणा का फूकने तथा राष्ट्रीय भावना को सृजनात्मक स्वरूप देने का अदम्य साहस युक्त नया कदम उठाया है। राष्ट्र में जो वर्ग विभेद हैं जिसके दुष्परिणाम से राष्ट्रीय भावना में एक दरार सी पड़ गई थी उसको समाप्त करने के लिए सामन्तवाद के प्रति साम्यवाद का अपवाद देकर राष्ट्रीय भावना को एक वाद दिया है। राष्ट्रीय भावना को नई दिशा का संकेत मिला और नई पीढ़ी को मिला है नया जागरण। गीतों के द्वारा तथा गीतों को सहज और जन-जन तक पहुंचाकर एवं राष्ट्र-सुरक्षा का मन्त्र बनाकर राष्ट्रीय भावना को प्रतिष्ठापित किया है। कहीं बालकों को भारत के रत्न

बनाने का उपदेश मिलता है, तो कहीं नवयुवकों को कमठ उत्साही और सवगुण सम्पन्न होने का निवेदन किया है तो कहा नारी को पुरुष के समान अधिकारो की रक्षक कर्तव्य परायणता की मूर्ति आदर्श गृहिणी और चेतना की लक्ष्मी सरोजिनी आदि बनाकर सम्मानित किया है और राष्ट्रीय भावना राष्ट्रीय उत्थान राष्ट्र निमाण का स्वर गुंजरित किया है।

स्वातन्त्र्योत्तर हिंदी गीतो म चेतना जागति व भविष्य की शुभ कामना अभिलाषा और सुखद फल प्राप्ति का भाव मिश्रित है। कहा देशाभिमान युक्त अनुभूति को राष्ट्रीय भावना के साथ आत्मसात किया है। राष्ट्रीय भावना को खडित करने वाले राजनीतिक विघटन के तत्त्व को भी सामरस्य की भावना से रंग मण्डित करके मिश्रित किया गया है। राष्ट्रीय ध्वजा रोहण वदना गाकर अपने देश की महान् विभूतियो सन्तो और त्यागी महापुरुषो का परित्याग आदश आदि बतलाकर भी राष्ट्रीय भावना को जन-जन म भावान्वित करने का प्रयत्न किया है।

२ छायावाद के अवशेष राष्ट्रीय भावना —

मानवतावाद तथा राष्ट्रीयता से छायावाद का सम्बन्ध उसके जन्म काल से ही रहा है। निराला तथा पन्त के काव्य को छोड भी दें जो मानवता तथा राष्ट्रीयता की दृष्टि म अब भी उतना ही प्रौढ और परिपक्व है तो शेष कवियो के काव्य म भी उसे न्यूनाधिक मात्रा म लक्षित किया जा सकता है। यदि एक ओर इन कवियो ने मानवमात्र अथात सम्पन्न मानवता के प्रति अपने असीम प्रेम तथा दृढ निष्ठा को सूचित करते हुए उसकी विजय कामना को उसकी पीडा तथा व्यथा की मार्मिकता से उभारते हुए उससे अपने अखण्ड एकत्व का परिचय दिया तो दूसरी ओर राष्ट्रीयता के स्वरो को भी उतनी आकुलता से वाणी दी है। मानवतावाद तथा राष्ट्रीयता दोनो म ऊपर से देखने पर एक सहज विरोध सा देख पड़ता है वस्तुत इसी कारण इनके काव्य म यह अंशमात्र भी मुखर नहीं होने पाया है कि इनकी राष्ट्रीयता तथा मानवता दोनो की ही आधारशिलाए पर्याप्त एव सहज सामञ्जस्यमयी रही हैं।

३ प्रगतिवाद राष्ट्रीय भावना —

सन् १९३६ के आस पास फैलने वाला समाजवादी प्रभाव और द्वितीय महायुद्ध उसके परिणाम स्वरूप उत्पन्न आर्थिक राजनीतिक सकट महगाई

बेकारी सन् १९४२ की क्रान्ति उसका दमन मजदूरों की ऐतिहासिक हड़तालें, किसानों की जागृति का अभियान और सबसे बढ़कर बंगाल का अकाल आदि के सम्मिलित कारण है जिन्होंने हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को नयी गति दी। उसने जनता को आर्थिक स्वाधीनता के लिए भी सक्रिय रूप से प्रयत्नशील होने को बाध्य किया तथा इन परिस्थितियों ने हमारे साहित्यकारों को भी एक ऐसे पथ की ओर अग्रसर होने को प्रेरित किया जिस पर चलकर वे अपने साहित्य की इन जन मानस की आशाओं आकांक्षाओं को मूर्त रूप दे सकें तथा समाज की प्रगति में साहित्य को एक अनिवार्य साधन तथा माध्यम के रूप में प्रस्तुत कर सकें। इस भावना को लेकर ही प्रगतिवाद का जन्म हुआ।

राष्ट्रीयता एवं देश प्रेम वह प्रमुख प्रवृत्ति है जिसकी अभिव्यक्ति प्रगतिवादी काव्य में विविध रूपों में हुई है। राष्ट्र की आशाओं आकांक्षाओं विपत्तियों एवं उलझनों तथा अपने देश प्रेम को यों तो सभी कालों के कवि किसी न किसी प्रकार अभिव्यक्त करते आए थे परन्तु प्रगतिवादी काव्य में आज अपनी जिस समग्रता में उभरा है देश प्रेम की जो नयी यथार्थ और ठोस अभिव्यक्ति उसमें हुई है कहा जा सकता है कि वैसी किसी भी पूर्व युग में अथवा समकालीन काव्य धाराओं में नहीं हो सकी।

राष्ट्रीय भावना हमें प्रगतिवादी गीतों में निम्नलिखित माध्यमों से मिली है—विदेशी दासता के विरोध के रूप में पूँजीवाद, सामन्तवाद के विरोध के रूप में साम्प्रदायिकता के विरोध के रूप में सामाजिक सुधारों के आग्रह के रूप में और युद्ध विरोध एवं शान्ति आन्दोलनों के प्रश्रय रूप में। प्रगतिवादी गीतों के कवियों ने उन शहीदों के प्रति भी अपनी श्रद्धांजलियाँ अर्पित की हैं जो देश का गौरव बन चुके हैं, साथ ही स्वतन्त्रता की वेदी पर बलिदान हो जाने की भावना को पर्याप्त महत्व प्रदान किया है तथा उसके लिए जनता को जाग्रत किया है। साम्राज्यवादी अत्याचारों के मार्मिक चित्र देने के साथ-साथ साम्राज्यवादी रक्त-पिपासुओं के विरुद्ध भारतीय जनता की रोषमयी फुत्कार उनके गीतों की प्रमुख विशेषता है। उन्होंने अपने गीतों में सामन्तवाद व पूँजीवाद को घातक समझा है और उसका विरोध किया है। उन्होंने केवल पूँजीवाद तथा उसके कारण उत्पन्न वर्ग विषमता के मार्मिक चित्र ही नहीं खींचे हैं वरन् एक नये समाज की स्थापना के लिए अपना अदम्य स्वर भी मुखरित किया है। इसी प्रकार साम्प्रदायिकता का विरोध एवं हिन्दू मुस्लिम एकता

का प्रतिपादन करके भी उन्होने राष्ट्र की वास्तविक आकाक्षा का स्वर प्रदान किया है। इस सम्बन्ध मे जहा उनके गीतो म साम्राज्यवादियो की कूटनीतिक चालो का भण्डा फोड किया है वहा साम्प्रदायिकता के विष का सदा के लिए अन्त कर देने की शपथ भी ली है। कवियो ने यह विश्वास भी प्रगट किया है कि एक दिन इस साम्प्रदायिकता का अन्त अवश्य होगा।

समाज सुधार के जो प्रयत्न प्रारम्भ हुए हैं उन्हे प्रगतिवादी गीतों म गभीरता पूवक अभिव्यक्ति दी गइ है। नारी जाति की स्वाधीनता का समथन अस्पृश्यता की भावना का विरोध समाज मे व्याप्त शोषण धर्मान्धता आदि के प्रति अपनी घृणा प्रदर्शित कर कवियो ने राष्ट्र के प्रति जागरूक दृष्टि का प्रमाण दिया है। मानवता क सहार-युद्धो का विरोध करते हुए देश की शाति प्रिय जनता की आकाक्षाओ को भी प्रगतिवादी कवि ने पूरे उत्साह से प्रदर्शित किया है। व्यापक रूप से चलाये गये शाति-आन्दोलनो म भी उसका सहयोग उल्लेखनीय है।

प्रगतिवादी कवियो का देश प्रेम वस्तुत उनकी राष्ट्रीय भावना तथा राष्ट्रीयता का एक अग है। देश की धरती हो अथवा उसके निवासी उसका अतीत हो अथवा उसका वर्तमान सबको प्रगतिवादी गीतो म समान रूप से स्थान मिला है। धरती कवि के लिए माता के समान है जो उसे धारण करती है। वह उसकी स्तुति मात्र को ही पर्याप्त नही समझता उसके लिए कठोर श्रम की भी माग करता है। उसे गव है कि धरती उन सब वस्तुओ की दात्री है जो देश की सुख समृद्धि के मूल उपादान है और उनके सम्मिलित रूप को ही कवि भारतमाता की पदवी देता है। उसकी भारतमाता की कल्पना पूव युगो की भाँति मात्र भावना पर आधारित नही प्रत्युत ठोस है। कवि की अनुभूति उस समय अधिक मार्मिक हो उठती है जब वह सम्पन्नता के अनेकानेक साधनो के होते हुए भी अपने देश वासियो को अभावो और दरिद्रता म तडपते देखता है और तभी उसे भारतमाता भी धूल म सनी उदास और आनन दीन लगती है। माता की यही दुदशा उसे सघष के लिए प्रेरित करता है। कहा जा सकता है कि देश व धरती के प्रति गीतो म यह दृष्टिकोण अधिक वास्तविक व ग्राह्य है।

जहाँ तक देश के अतीत का सम्बन्ध है प्रगतिवादी गीतो म रूढियो का विरोध करते हुए भी अनेक पौराणिक एव ऐतिहासिक आख्यानो को नव

रूपों में प्रस्तुत किया है। देश की सांस्कृतिक निधि को नाना प्रकार से उद्घाटित किया है उसके गत समय पर गौरव प्रकट किया है। वर्तमान के सम्बन्ध में प्रगतिवादी कवियों की मान्यता है कि अपने श्रम संगठन और संघर्ष से जनता शीघ्र ही वर्तमान विषमताओं का अंत कर सुख और समता से पूर्ण एक नये भारत का निर्माण करेगी।

वस्तुतः प्रगतिवादी गीतों में राष्ट्रीय भावना के पोषक तत्वों तथा राष्ट्रीय भावना को शक्तिशाली बनाने वाली आधार शिलाओं की स्थापना हुई है। राष्ट्रीय भावना को पुष्ट करने में प्रगतिवादी गीतों का इतना अधिक हाथ है कि यदि हम यह कहें कि राष्ट्रीय भावना के मूल में प्रगतिवादी गीतों का रस है तो अतिशयोक्ति न होगी।

स्वतन्त्रता के पश्चात् का हिन्दी गीत-काव्य प्रगतिवादी प्रवृत्तियों की नींव पर ही राष्ट्रीय भावना का विशाल भवन खड़ा करता है। उसमें राष्ट्र के प्रति आत्मीयता का चित्रण जितने रूपों में हुआ है उन सबमें देश की जनता के लिए 'आपत्ति मुक्ति और नव निर्माण का सन्देश निहित है। हिन्दी काव्य की नई कविता" नामक धारा नए प्रयोगों के पचड़े में पड़कर अपने विकास की नई दिशा खोजती हुई जन-जीवन की विराट् भाव भूमि से दूर जा रही थी। किन्तु गीत-काव्य ने राष्ट्रीय भावना का प्रतिनिधित्व करके उसे पुनः जन जीवन से सम्बद्ध करने का महत्वपूर्ण दायित्व निभाया है। भारतीय स्वाधीनता-संग्राम के लिए अनुकूल चेतना प्रसारित करने तथा संघर्ष के लिए बलिदानी भक्ति उत्पन्न करने में इस भावना का स्वतन्त्रता से पूर्व जो योग था स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी गीत-काव्य ने भी उसने स्वतः उस दायित्व का निर्वाह किया है। किसी प्रकार के प्रचार या आन्दोलन की उसके लिए आवश्यकता नहीं पड़ी। यही कारण है कि स्वतन्त्रता के पश्चात् हिन्दी में जितने काव्य या साहित्य की रचना हुई है उसमें राष्ट्रीय भावना का काव्य सबसे अधिक स्थान घेरता है। हिन्दी के जितने काव्य-ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं उनमें से अधिकांश काव्यों में राष्ट्रीय भावना की प्रधानता है। पत्र-पत्रिकाओं में भी गीतों का प्रकाशन अधिक हुआ है उनमें सबसे अधिक गीत राष्ट्रीय भावना परक हैं। हम उन गीतों में राष्ट्रीय भावना की निम्नांकित रूपों में अभिव्यक्ति देखते हैं —

१ स्वातन्त्र्योल्लास की अभिव्यक्ति २ देशाभिमान की अनुभूति
३ राष्ट्रोत्थान की भावना। ४ राष्ट्रोद्धारकों पर गर्व।

५ राष्ट्र ध्वज की वन्दना । ६ राष्ट्र की सस्कृति पर गौरव ।
७ राष्ट्र भाषा प्रेम । ८ राष्ट्रीय सम्पत्ति के प्रति आत्मीयता ।
९ राष्ट्रीय एकता की प्रेरणा । १० राष्ट्र-सुरक्षा के लिए उद्बोधन ।
११ राष्ट्र के लिए बलिदान की भावना ।
१२ सामान्य जनता के प्रति सहानुभूति ।
१३ देश की प्रकृति से प्रेम । १४ जन-श्रम की महत्ता ।
१५ राष्ट्र-निर्माण की प्रेरणा । १६ सम्प्रदायवाद का विरोध ।
१७ राष्ट्र-द्रोहियों की निन्दा ।

पूर्वोक्त रूपो मे अभिव्यक्त राष्ट्रीय भावना के निम्नांकित मुख्य पक्ष माने जा सकते हैं —

(अ) राष्ट्र-स्वातन्त्र्य इसके अन्तर्गत राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति के निम्न स्वरूप लिए हैं —

१ स्वातन्त्र्योल्लास की अभिव्यक्ति
२ राष्ट्र ध्वज की वन्दना
३ राष्ट्रोद्धारको का गुणगान

(आ) राष्ट्र निर्माण —इस वर्ग के अन्तर्गत निम्न स्वरूप सम्मिलित किए हैं —

१ राष्ट्रोत्थान की चेतना
२ जन-श्रम की महत्ता
३ नव निर्माण की प्रेरणा

(इ) राष्ट्रीय-एकता —इस वर्ग मे निम्न सात विभाग सम्मिलित किए हैं —

१ राष्ट्र की सस्कृति पर गौरव २ राष्ट्र भाषा प्रेम
३ राष्ट्रीय सम्पत्ति के प्रति आत्मीयता ४ राष्ट्रीय एकता की प्रेरणा
५ देशाभिमान की अनुभूति ६ देश की प्रकृति से प्रेम
७ सम्प्रदायवाद का विरोध

(ई) राष्ट्र-सुरक्षा —इस वर्ग मे निम्न तीन स्वरूप सम्मिलित किए हैं —

१ बलिदान की भावना
२ राष्ट्र-द्रोहियों की निन्दा
३ सुरक्षा के लिए उद्बोधन

राष्ट्रीय भावना से पूर्ण गीतों का विवेचन निम्न वर्गीकरण के आधार पर अगले प्रकरणों के अन्तर्गत प्रस्तुत करूँगी। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से तथा अनेक गीतों को एक व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत कर विश्लेषण की दृष्टि से मैंने निम्न वर्गीकरण किया है। प्रयास तो यही रहा है कि यथा-सम्भव उन सभी भावनाओं को स्थान दूँ, जिन्हें राष्ट्रीय भावनाएँ कह सकते हैं। तत्पश्चात् भी कोई भावना स्थान नहीं पा सकी है तो क्षमा-याचना के अलावा चारा ही क्या है? अस्तु गीतकारों के विभिन्न स्वर सुनने के लिए नया प्रकरण देखिएगा।



५ राष्ट्र ध्वज की वन्दना । ६ राष्ट्र की संस्कृति पर गौरव ।
७ राष्ट्र भाषा प्रेम । ८ राष्ट्रीय सम्पत्ति के प्रति आत्मीयता ।
९ राष्ट्रीय एकता की प्रेरणा । १० राष्ट्र-सुरक्षा के लिए उद्बोधन ।
११ राष्ट्र के लिए बलिदान की भावना ।
१२ सामान्य जनता के प्रति सहानुभूति ।
१३ देश की प्रकृति से प्रेम । १४ जन-श्रम की महत्ता ।
१५ राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा । १६ सम्प्रदायवाद का विरोध ।
१७ राष्ट्र-द्रोहियों की निन्दा ।

पूर्वोक्त रूपों में अभिव्यक्त राष्ट्रीय भावना के निम्नांकित मुख्य पक्ष माने जा सकते हैं —

(अ) राष्ट्र-स्वातन्त्र्य इसके अन्तर्गत राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति के निम्न स्वरूप लिए हैं —

१ स्वातन्त्र्योल्लास की अभिव्यक्ति
२ राष्ट्र ध्वज की वन्दना
३ राष्ट्रोद्धारकों का गुणगान

(आ) राष्ट्र निर्माण —इस वर्ग के अन्तर्गत निम्न स्वरूप सम्मिलित किए हैं —

१ राष्ट्रोत्थान की चेतना
२ जन-श्रम की महत्ता
३ नव निर्माण की प्रेरणा

(इ) राष्ट्रीय-एकता —इस वर्ग में निम्न सात विभाग सम्मिलित किए हैं —

१ राष्ट्र की संस्कृति पर गौरव
२ राष्ट्र भाषा प्रेम
३ राष्ट्रीय सम्पत्ति के प्रति आत्मीयता
४ राष्ट्रीय एकता की प्रेरणा
५ देशाभिमान की अनुभूति
६ देश की प्रकृति से प्रेम
७ सम्प्रदायवाद का विरोध

(ई) राष्ट्र-सुरक्षा —इस वर्ग में निम्न तीन स्वरूप सम्मिलित किए हैं —

१ बलिदान की भावना
२ राष्ट्र-द्रोहियों की निन्दा
३ सुरक्षा के लिए उद्बोधन

राष्ट्रीय भावना से पूर्ण गीतों का विवेचन निम्न वर्गीकरण के आधार पर अगले प्रकरणों के अन्तर्गत प्रस्तुत करूंगी। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से तथा अनेक गीतों को एक व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत कर विश्लेषण की दृष्टि से मैंने निम्न वर्गीकरण किया है। प्रयास तो यही रहा है कि यथा-सम्भव उन सभी भावनाओं को स्थान दूं जिन्हें राष्ट्रीय भावनाएं कह सकते हैं। तत्पश्चात् भी कोई भावना स्थान नहीं पा सकी है तो क्षमा-याचना के अलावा चारा ही क्या है? अस्तु गीतकारों के विभिन्न स्वर सुनने के लिए नया प्रकरण देखिएगा।

५ | राष्ट्र-स्वातन्त्र्य सम्बन्धी भावों की अभिव्यक्ति

सन् १९४७ में भारतवर्ष अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त हुआ था। भारतवर्ष की स्वतन्त्रता के लिए कितने दुःख उठाये कितने संघर्ष किए, कितने बलिदान हुए तब कहीं तिरंगा राष्ट्रध्वज फहराया और स्वतन्त्रता के उल्लास का अनुभव हुआ। स्वाधीनता संग्राम काल में नेताओं ने संघर्ष किया प्रयत्न किए, जनता ने भी पर्याप्त योग दिया। फलतः जब स्वतन्त्रता आई तो देश में हर्ष की लहर दौड़ गई। हिन्दी कवियों ने अपना उल्लास गीतों में व्यक्त किया। उन्होंने राष्ट्रध्वज की वन्दना तथा राष्ट्रोद्धारकों के गुण गाये। प्रस्तुत प्रकरण में पिछले अध्याय में दिये गए वर्गीकरण के अनुसार प्रथम पर्व राष्ट्र-स्वातन्त्र्य सम्बन्धी भावों का अनुशीलन प्रस्तुत है।

१ स्वातन्त्र्योल्लास की अभिव्यक्ति—वर्षों से पराधीनता की शृंखला में जकड़ी हुई जनता निराशा के गहन तिमिर में आलोक किरण ढूँढने का प्रयास कर रही थी। नौजवानों का रक्त स्वतन्त्रता पाने का बलिदान देने को मचल रहा था। न जाने कितने वीरों ने अपने रक्त से धरा को रंग दिया, कितने वीरों की माँ पुत्र विहीन हुई, कितनी बहनों ने अपने भाइयों को खो दिया, कितनी सधवाओं के सुहाग की लाली पुँछ गई और तब कहीं इतने बलिदानों के पश्चात् जब देश की पराधीनता की शृंखलाएं टूटकर बिखर गई तो जनता हर्ष विभोर हो उठी। स्वतन्त्रता पाने के उल्लास में कवियों ने अनेक रचनाएँ कीं। गीतधारा ने मुक्ति पाकर नवीन स्वरों को मुखर कर दिया और जन जन की जिह्वा पर गीत थिरकने लगे। स्वाधीनता पाने पर हर्ष का जो पारावार उमड़ा तो गीतकार के अन्तःस्रोत ने उस आनन्दानुभूति को गीतों के रूप में लेखनी-बद्ध किया। हर्ष की उस अभिव्यक्ति का स्वरूप नव-नव रूपों में कोमल स्वरों में गीतों के रूप में जनता के सम्मुख आया। गीतकार को एकाएक अपनी आज़ादी का विश्वास नहीं हो पाया—

बरसा पिंजर म बन्दी रह् मैं मुक्त हुआ हू अभी-अभी ।[१]

दु स्वप्न दल बरबादी का
विश्वास नहा आजादी का,

स्वाधीनता का आगमन जन जन म नय जीवन का आगमन सिद्ध हुआ। कवि नतिन न इसा सदभ म नय जाश नये प्राण नय जीवन और नयी शान नया विश्वास तथा स्वाधीन प्रकृति का चचा इस प्रकार की —

जीवन जीवन म एक नया विश्वास जगा[२]
विस्मृत वल्ली औरों म ले इतिहास जगा।
स्वाधीन हुआ गौरव सन्ति भारत महान
उड चला तिरगा नाल विन पर साभिमान।

तुम कहते हो स्वाधीन वतन
स्वाधीन आज तन मन जीवन
स्वाधीन नदी झीलें पहाड
स्वाधीन पवन स्वाधीन गगन।

सभी कुछ परिवर्तित हो गया। नव परिवेश म नव की ही चर्चा हुई। कारण स्वतंत्रता के पश्चात् सभी नवीन अनुभूतियाँ हो रही थी। नये परिधान म दृष्टिगत होने वाली प्रत्यक वस्तु नव उल्लास भर रही थी। स्वातन्त्र्य दिवस की वन्दना म कौन सा गान गाया जाय कवि के लिए समस्या बन गया। अपार हर्ष को व्यक्त करने क लिए उपयुक्त शब्द विधान चाहिए था। हर्षोन्मत्त कवि हृदयेश की अभिव्यक्ति करत हुए—

स्वातंत्र्य जनवरी ! क्या हो वन्दन तेरा[३]
तेरी पूजा म कौन गीत मैं गाऊँ
हर प्राण तुम्हार गौरव म डूबा है
यह गाथा मैं किन छन्दों म दुहराऊँ ?
यह जो हरीतिमा ओढे धरती फूली
यह जो सारगी अम्बर झूम रहा है
यह जो कारा को तोड़ निकल आया है

---

१ पु० मधु की रात और जिन्दगी रच० निरजान पृ० स० ६२
२ पु० धरती के बोल जयनाथ नलिन पृ० स० ३७
३ पु० हिमालय के मोर्चे, रच० आनन्द मिश्र पृ० स० ६०

आजाद पवन खेतों म घूम रहा है-
यह सब तेर स्वागत का साज सजा है
छब्बीस जनवरी ! कौन गीत मैं गाऊ ?

गणत न दिवस को पवित्र त्यौहार क रूप म मानकर प्रकृति की नसर्गिक साज सज्जा को इसी के स्वागत का विधान माना। इतना हा नही छब्बीस जनवरी की अमरता क विषय म तिवारी जी क उद्गार दखिए—

जन परायण राजसत्त तू अमर है [१]
जनवरी छब्बीस शुभ तब तक अमर है
जब तक जनता अमर है भारत अमर है
राजसत्त ! रूपसि !! तू ही अमर है।
रूप अक्षय यौवने ! तू ही अमर है।

स्वाधीनता दिवस का स्वागत करने म भी गीतकार पीछ न रहा और उस श्रष्ठ दिवस के उपलक्ष्य म गाया—

स्वागत भारत के वर विहान ![२]
पन्द्रह अगस्त के मधुमय महान।
आओ फलाओ हिमगिरि पर
हम रश्मिया का सुजान ।
विस्मित हा विश्व देख जिसको
ऐसा चमका दो देश भाल ।
गूँजे अम्बर म कीर्त्ति गान।
ओ वर अगस्त मधुमय महान !

स्वातन्त्र्योल्लास की अभिव्यक्ति का नव-स्वरूप श्री गोपालसिंह नेपाली के गीत मे—

निज राष्ट्र के शरीर के सिंगार के लिए [३]
तुम कल्पना करो नवीन कल्पना करो तुम कल्पना करो।
अब देश है स्वतन्त्र मदिनी स्वतन्त्र है

---

१ पत्रिका योजना रच० रमेश नारायण तिवारी पृ स १५ जनवरी १९६३

२ जयघोष डा रामगोपाल शर्मा दिनेश पृ स ५५

३ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १८ अगस्त १९६२ पृ सं १३

मधुमास है स्वतन्त्र चाँदनी स्वतन्त्र है
हर दीप है स्वतन्त्र रोशनी स्वतन्त्र है
अब शक्ति की ज्वलन्त दामिनी स्वतन्त्र है
लेकर अनन्त शक्तियो सदा समृद्धि की—
तुम कामना करो किशोर कामना करो तुम कामना करो।

राष्ट्र जो अब स्वतन्त्र होकर अपना हुआ है उसी के शृंगार-हेतु गीतकार कुछ उपकरण एकत्रित करना चाहता है। अब देश पृथ्वी मधुमास चाँदनी दीप रोशनी आदि की स्वतन्त्रता प्राप्त कर कवि सत्व समृद्धि की कामना करता है। स्वतन्त्रता के पश्चात् ही नवीन कल्पना करके राष्ट्र की प्रगति का स्वरूप निश्चित किया जा सकता है। १५ अगस्त १९४७ को स्वतन्त्रता दिवस मनाने से पूर्व कितने वीरो ने अपना बलिदान दिया कितने तरुण देश के लिए आत्मत्याग कर अनुपम बलिदान की कहानी कहने के लिए गीतकार की लेखनी को स्वतन्त्र कर गये—

कितने महान बलिदानों की अनुपम साकार कहानी हो।[1]
भारत की तरुण तपस्या की तुम एक ज्वलन्त निशानी हो
तुमम भावी की गति प्रशस्त अभिवादन है पन्द्रह अगस्त !

पन्द्रह अगस्त का अभिवादन किया गया स्वतन्त्रता के उल्लास म गीतकार को प्रतीत हुआ कि स्वाधीनता-दिवस भूमि पर स्वर्ग उतर आया है—

लो स्वर्ग उतर आया भू पर[2]
मिट गया दासता तिमिर-अध
खुल गये राष्ट्र के कठिन बन्ध
कण-कण म नव जीवन भरता
पृथिवी का ज्योतिरूप मुखर

स्वाधीनता दिवस पर घर घर म दीपाञ्जलि ने प्रकाश भर दिया जो गवया नजान था—

दीप जल उठे ! दीप जल उठे ![3]
श्रमिक किसानो की कुटिया म

---

१ हिमालय व पांच रच आनन्द मिश्र पृ स ५
२ नवीना रच गगाप्रसाद पाण्डेय म० प्र १९५४
३ गौरव-गान, रच रामगोपाल शर्मा दिनेश पृ० स ८७

ग्राम-ग्राम में, नगर-नगर में
अंधकार में घने युगों से
उन पुरुषों के डगर डगर में।
ले अभूत आलोक चिरंतन
जगमग जगमग दीप जल उठे
दीप जल उठे ! दीप जल उठे !

बंधन में बंधे गुलामी की जंजीरों में जकड़े वे कृषक जो सबसे अधिक श्रम करते थे और सबसे अधिक गरीब थे वे भी स्वतंत्रता का महत्त्व समझने लगे। इस उपलक्ष्य में उस गरीबी में भी चिर-अंधकार को दूर कर ग्राम ग्राम में दीप प्रज्वलित किये गये जिनका प्रकाश चिरंतन है। मुक्ति का नव गीत गाती हुई विहग-पंक्ति भी हर्ष विभोर होगई—

आज कोकिल ने प्रथम आलाप पंचम में सुनाया।[1]

नवल पल्लव तार पर
मारुत नई वीणा बजाता
मुक्त विहगों का चपल दल
मुक्ति के नव गीत गाता

रूप का नव रंग का नव गंध का नव ज्वार आया ? देश का सभी कुछ नये परिधान में दृष्टिगत हुआ। सभी कुछ नया हो गया जैसे नव का ज्वार आया। सारे बलिदान सफल हो गए मंगल गान आरती से भारती का स्वर गूंज उठा—

सफल हुए बलिदान धरा पर स्वर्ण विहान हुआ।[2]
हर हर पेड़ों से धरती पर मोती झरते।
नये देश में नये रंगीले नये रूप धरते।।
अरुणोदय होगया आरती का स्वर गूंज उठा।
वीणा बजने लगा भारती का स्वर गूंज उठा
आज शहीदों की समाधि पर मंगल गान हुआ।
सफल हुए बलिदान धरा पर स्वर्ण विहान हुआ।।

पराधीनता के अंत के साथ उन सभी आंधियों का अंत हो गया जिनसे देश को हानि पहुँचने की सम्भावना थी। नये आलोक ने नव मार्ग

१ गगिरा रच शंकरलाल माहेश्वरी पृ म २
२ नलन-तार रच रघुवीर नागम मिश्र संवत् २०१०

प्रशस्त किया जो पूर्ण रूपेण मगल मय था। विष घट फूट चुका था और इसान जागृत हो नई राह बनाने म सलग्न होना चाहता था। कवि ने उस सब की मगल कामना था—

नये आलोक के जन देवता का पथ मगल हो।[1]

अरुणामय पथ मगल हो॥
गइ अब डूब शोषण आँधियों की विष भरी छाह
घिरी आकाश म व प्रलय सी इसान की बाह
पुरातन सप फन का कुचलकर उगती नई राह
मनुज की जीत के इस देवता का पथ मगल हो।
किरणमय पथ मगल हो॥

नव-स्वतन्त्रता के साथ नव-जीवन का सौ बार स्वागत करते हुए "गाप्रसाद पाण्डेय का गीत द्रष्टव्य है—

शत स्वागत नव-जीवन हे![2]
नव-स्वतन्त्रता की सुख-सुषमा
अखिल मनुज की गौरव-गरिमा
नव विकास नव-पुलक प्राणप्रद
नव नव भावन ह!!

समस्त मनुष्य मात्र की गरिमा बढ गई और नई पुनः प्राणवान थी। शकुतला सिरोठिया का भावाभिव्यक्ति इस प्रकार की है—

सुहागिन! करल नव शृगार[3]
हप-पुलक से धरती का कण कण करद छविमान।
पायल का रुनझुन गुज स्वतन्त्रता का गान।
सुहागिन! करल नव शृगार

कविवर बच्चन न स्वतत्र हिदुस्तान का आह्वान किया। बापू शहीद क्रान्ति-वीर तिरगा ध्वजा, वदमातरम् गान सभा का अपनी कल्पना म समेटने का प्रयत्न किया—

---

१ "ानि लोक रच नरेश मेहता पृ म ६२
२ नवीना रच गगाप्रसाद पाण्डेय म १९५४
३ पा" दतना हँसा रच शकुतला सिरोठिया

कर रहा हू आज मैं आजाद हिंदुस्तान का आह्वान ।[1]

० ० ० ० ० ० ० ०

है मरा एक दिल म आज बापू के लिए सम्मान
हैं छिडे हर एक दर पर क्रांति वीरों के अमर आख्यान
हैं उठ हर एक घर पर देश गौरव के तिरग निशान
गू जता हर एक कण मे आज वदेमातरम् का गान
हो गया है आज मेरे राष्ट का सौभाग्य स्वण विहान
कर रहा हूँ आज मैं आजाद हिंदुस्तान का आह्वान ।

गीतकार को भय हुआ स्वतन्त्रता मिल जाने के कारण कही बलिदान का भावना समाप्त न हो जाए । कही इतना आनन्द न हो जाए कि पुन देश पर सकट के बादल घिर आय और राष्ट्र वासी उसकी रक्षा करने म असमथ हो । स्वतन्त्रता को अमर बनाने की कामना करते हुए—

इस स्वतन्त्रता की अमर ज्योति की ज्वाला मन्द न हो [2]
प्राणो का स्नेह चढाने की यह धारा बन्द न हो
है अभी अभी कल से उजियाली छाई आगन म
है अभी अभी कल से हरियाली छाई उपवन म
है अभी अभी कल से खुशियाली आई तन मन म
आनन्द मग्न मत बनो कि ऐसे फिर आनन्द न हो ।
प्राणो का स्नेह चढाने का यह धारा बन्द न हो ।

इसी प्रकार और अन्य गीतकारो ने भी हष की अभिव्यक्ति की । हिन्दी गीत काव्य म स्वतन्त्रता के हर्षोल्लास की अभिव्यक्ति अत्यन्त विशद रूप म हुई है । उनम देश की जनता का हृदय बोलता है ।

२ राष्ट्र ध्वज की वन्दना —प्रत्यक राष्ट्र वासी अपन राष्ट्र को स्वतन्त्र रूप म ही देखना चाहते हैं । किसी अन्य राष्ट्र का अकुश उन्हे असह्य है । प्रत्यक राष्ट्र का अपना राष्टीय गान होता है एव अपनी राष्ट्र ध्वज होती है । स्वतन्त्रता दिवस पर लहराती ध्वजा कवि को जिस प्रकार आनन्दित करती है वह उस भावना को शब्दो म बाध कर साकार रूप द देता है । यद्यपि अनुभूति सभी करत है किन्तु गीतकार या कवि के अलावा अन्यो के लिए

---

१ धार के इधर उधर रच हरिवशराय बच्चन पृ स० ३६

२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान सोहनलाल द्विवेदी अक २ अक्टूबर १९६६

वह अनुभूति करने की ही वस्तु रह जाती है, वर्णन की नहीं। तथापि लेखनी द्वारा जिस रूप में कवि अपने शब्दों में उस अनुभूति को प्रगट करता है वह कवि की व्यक्तिगत अनुभूति न रहकर सभी की अनुभूति बन जाती है। वह अपनी स्वतन्त्रता के व शांति के प्रतीक, ध्वज को ऊंचा फहराते देख अपने हृप को प्रदर्शित करता है राष्ट्रीय-गान सुनकर भाव विभोर हो जाता है। राष्ट्र ध्वज की नम्र-स्वर में वन्दना करता है और तिरंगी पताका के नीचे एकत्र राष्ट्र वासी एकता के सूत्र में बंधे विजय घोष करते हैं। प्रत्येक राष्ट्र की ध्वजा उस राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती है। हमारी राष्ट्र ध्वजा में तीन रंग हैं। तीन रंगों को हमारी राष्ट्रीय ध्वजा को "तिरंगा" का सम्बोधन मिला है। तीन रंग क्रमश: केसरिया श्वेत और गहरा हरा है। इन तीनों रंगों की अपनी निजी विशेषता है। तिरंगे झंडे के साथ तीन भावनाएं सत्व तरंगित होती रहती हैं। केसरिया रंग का अर्थ है कि राष्ट्र वीर और शक्तिशाली हो। श्वेत वर्ण का भाव राष्ट्र में शांति और अहिंसा की स्थापना है। हरा वर्ण इस बात का प्रतीक है कि देश धन धान्य से परिपूर्ण हो और भूमि शस्यश्यामला रहे। तिरंगी ध्वजा के मध्य एक चक्र का चिह्न भी अंकित है। इसका अभिप्राय यह है कि तीनों वर्ण प्रतीकों से सम्बन्धित प्रत्येक भाव सत्व गतिशील रहे।

कविवर पंत ने राष्ट्रीय ध्वजा के गौरव के सम्मुख सहस्त्रों भारत वासियों को नतमस्तक कर एकता का भाव चित्रित किया है—

> गगन चुंबि विजयी तिरंग ध्वज[1]
> इन्द्र चापमत है।
> कोटि-कोटि हम श्रमजीवी सुत
> सम्भ्रम सयुत है।
> सब एक मत एक ध्येय रत
> सर्वश्रेय व्रत है।
> जन भारत है।
> जाग्रत भारत है।

राष्ट्रीय ध्वजा की कीर्ति को कवि गिरधर गोपाल प्रकाश की किरणों की भांति विस्तृत कर देना चाहते हैं। तिरंगे झण्डे का रूप का प्रत्येक ओर

---

1 चिदम्बरा स्व० सुमित्रानन्दन पंत पृ० सं० ६१

सारथी मानत हैं क्योकि देश रक्षा और देश पर बलिदान होने की भावना अपने राष्ट्र के प्रतीक को देखकर अधिक तीव्र होता है। उन्होंने तिरंगे ध्वज को नेत्र सास जीवनी और भारती के रूप म स्वीकार किया है। कवि ने इस भावना का अकन करना चाहा है कि इसके बिना हमारा अस्तित्व ही नहीं। यदि हम इसकी रक्षा नहीं कर सकते तो राष्ट्र की रक्षा नहीं कर सकते। यदि राष्ट्रीय ध्वजा के प्रति सम्मान सूचक दृष्टि नही रख सकते तो हम अपने राष्ट्र के लिए भी कुछ नही कर सकते। कवि कहता है—

तिरंगा और ऊंचे और लहराओ ![1]
हमारी शक्ति साहस कामना तुम हो
तुम्ही पाथेय हो प्रण प्रेरणा तुम हो
तुम्ही प्रहरी सहोदर सारथी तुम हो
नयन हो भाग हो गति भारती तुम हो !
नमन लो यह वरद कर और फहराओ
प्रगति के पृष्ठ नित नव जोडते जाओ !

राष्ट्र ध्वज की अर्चना की बात कहते हुए कविवर बच्चनजी इस प्रकार वर्णना करते हैं —

नगाधिराज श्रृंग पर खडी हुई[2]
समुद्र की तरग पर अडी हुई
स्वदेश म सभी जगह गडी हुई
अटल ध्वजा
हरी सफेद
केसरी !

श्री रघुवीर शरण मित्र ने तिरंगे ध्वज की प्रशस्ति अलंकारिक भाषा म इस प्रकार की है —

एक दीप म तीन बत्तियां हरी श्वेत पीली उजियारी ।[3]
एक बूंद के तीन तीन गुण आत्मा एक तिरंगी प्यारी ॥

---

१ पत्रिका साप्ताहिक हिन्दुस्तान ५ मई १९६३ कवि गिरधर गोपाल पृ १६

२ धार के इधर-उधर रच हरिवंश राय बच्चन पृ० स० ५६

३ जमते तारे, रच रघुवीर शरण मित्र प्र स २०२० सवत्

जिस रंग का मिलास होता है बन जाता उस रंग का पानी ।
तीन युगों में लिखी हुई है जीवन की अनमोल कहानी ॥

दिनेशजी ने राष्ट्र ध्वजा के सम्मान सूचक गीतों में अपार जयघोष कर दिया है —

जय चक्र-पताका जय हो ![1]
जय पुण्य-पताका जय हो !
गंगा, यमुना की लहरों में
जय जय स्वर लहरी पुलक उठा
हिमगिरि की अंतर ज्वाला भी
मधुमय स्वर में कुछ किलक उठी
जय बोल उठे भारतवासी
जय चक्र पताका जय हो !
जय राष्ट्र पताका जय हो !!

श्री भरतराम तिरंगे का महत्व राष्ट्र के साथ बताते हुए लिखते हैं

राष्ट्र का रथ चल रहा है ![2]
० ० ० ० ० ०
रक्त रंजित ध्वज तिरंगा
वक्ष पर रवि चक्र थाम
शुभ्र धागों में शहीदों की निशानी
शुद्ध खद्दर में जवानों की जवानी
राष्ट्र रथ के शीश पर
फहरा रहा है
सत्य की जय का सबल संदेश देता
नील नभ की गोद में लहरा रहा है !

कवि सुब्रह्मण्यम भारती ने तिरंगे झंडे की सत्ता की ही अभिव्यक्ति नहीं की बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र को उसे नमन करने के लिए भी संबोधित किया है । उनकी भावना है कि समस्त भारतवासी चाहे वे किसी भी क्षेत्र के नाम से सम्बोधित किए जाते हों और कोई भी भाषा बोलते हों, एक झंडे के

---

१ जयघोष डॉ० रामगोपाल शर्मा दिनेश पृ सं ६४
२ चलो सिपाही चलो पृ सं ५६.

सारथी मानते हैं क्योंकि देश रक्षा और देश पर बलिदान होने की भावना अपने राष्ट्र के प्रतीक को देखकर अधिक तीव्र होता है। उन्होंने तिरंगे ध्वज को नेत्र सांस जीवन और भारती के रूप में स्वीकार किया है। कवि ने इस भावना का अंकन करना चाहा है कि इसके बिना हमारा अस्तित्व ही नहीं। यदि हम इसकी रक्षा नहीं कर सकते तो राष्ट्र की रक्षा नहीं कर सकते। यदि राष्ट्रीय ध्वजा के प्रति सम्मान सूचक दृष्टि नहीं रख सकते तो हम अपने राष्ट्र के लिए भी कुछ नहीं कर सकते। कवि कहता है—

तिरंगे और ऊँचे और लहराओ ![1]
हमारी शक्ति साहस कामना तुम हो
तुम्हीं पाथेय हो प्राण प्रेरणा तुम हो
तुम्हीं प्रहरी सहोदर सारथी तुम हो
नयन हो सांस हो गति भारती तुम हो !
नमन लो यह वरद कर और फैलाओ
प्रगति के पृष्ठ नित नव जोड़ते जाओ !

राष्ट्र ध्वज की अटलता की बात कहते हुए कविवर बच्चनजी इस प्रकार वन्दना करते हैं —

नगाधिराज शृंग पर खड़ी हुई[2]
समुद्र की तरंग पर अड़ी हुई
स्वदेश में सभी जगह गड़ी हुई
अटल ध्वजा
हरी सफेद
केसरी !

श्री रघुवीर शरण मित्र ने तिरंगे ध्वज की प्रशस्ति अलंकारिक भाषा में इस प्रकार की है—

एक दीप में तीन बत्तियाँ हरी श्वेत पीली उजियाली।[3]
एक बूंद के तीन-तीन गुण आत्मा एक तिरंगी प्याली ॥

---

१ पत्रिका साप्ताहिक हिन्दुस्तान ५ मई १९६३ कवि गिरधर गोपाल पृ १६

२ धार के इधर-उधर रच० हरिवंश राय बच्चन पृ० स० ५६

३ जलते तारे रच रघुवीर शरण मित्र प्र स २०२० संवत

जिस रंग का गिलास होता है बन जाता उस रंग का पानी ।
तीन युगों में लिखी हुई है जीवन की अनमोल कहानी ।।

त्रिरंगा ने राष्ट्र ध्वजा के सम्मान सूचक गीतों में अपार जयघोष भर दिया है —

जय चक्र-पताका जय हो ![1]
जय पुण्य-पताका जय हो !
गंगा, यमुना की लहरों में
जय जय स्वर लहरी पुनक उठी
हिमगिरि की अंतर ज्वाला भी
मधुमय स्वर में क्रुद्ध विलक उठी
जय बोल उठे भारतवासी
जय चक्र पताका जय हो !
जय राष्ट्र पताका जय हो !!

श्री भगत जी तिरंगे का महत्व राष्ट्र के साथ बताते हुए लिखते हैं

राष्ट्र का रथ चल रहा है[2]

० ० ० ० ० ०

रक्त रंजित ध्वज तिरंगा
वक्ष पर रवि चक्र थाम

शुभ्र धामों में शहीदों की निशानी
शुद्ध गह्वर में जवानों की जवानी
राष्ट्र रथ के शीश पर
फहरा रहा है

सत्य की जय का सबल सन्देश देता
नील नभ की गोद में लहरा रहा है !

कवि सुब्रह्मण्यम भारती ने तिरंगे झंडे की सत्ता की ही अभिव्यक्ति नहीं की बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र को उसे नमन करने के लिए भी सम्बोधित किया है। उनकी भावना है कि समस्त भारतवासी चाहे वे किसी भी क्षेत्र के नाम से सम्बोधित किए जाते हों और कोई भी भाषा बोलते हों एक झंडे के

---

१ जयघोष डॉ० रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' पृ० सं० ६४
२ चलो सिपाही चलो पृ० सं० ५६

सम्मुख नमन करें। जिससे सम्पूर्ण राष्ट्र एकता की भावना म गु थ जाय और सगठित हो जाय। इन भावनाओं से सबधित गीत दखिय धमयुग २६ जनवरी १९६५ का अक—

३ राष्ट्रोद्धारकों का गुणगान —

स्वाधीनता क पश्चात् लिखे गये हिन्दी गीत काव्य मे राष्ट्रोद्धारको का भी विभिन्न रूपो मे गुणगान हुआ है। कही गौरव का अनुभव किया है तो कही राष्ट्र के लिए बलिदान हुए वीरो व महान पुरुषो का स्मृति म करुणा भी व्यक्त की है। राष्ट्रोद्धारको म महात्मा गाधी का स्थान प्रथम माना जाता है। उनक हृदय को सम्प्रदायवाद ने तो विदीर्ण कर ही रखा था ऊपर से एक हत्यार ने गोली चलाकर उनके हृदय का क्षत वि त कर दिया। कवि रो उठा जन हृदय आत्मग्लानि से भर गया। पर राष्ट की महत्ता का वह प्रतीक लौटाया न जा सका। हिन्दी के प्रमुख गीतकार अचल उनके श्राद्ध-दिवस पर उनका स्मरण करते हुए कहते हैं —

> *आज राष्ट्र के महापथ का सिंहासन है खाली।*[1]
> यह कसा त्यौहार कि लगता इतना सूना-सूना
> कसा यह मुहूत्त जिसमे दुख द्वन्द हो दूना।
> झुका जा रहा क्षुब्ध तिरगा झण्डा आज हमारा
> रुद्ध हो रहा कोटि कोटि कठो म जय का नारा।
> घूम रह खोये खोये से तरुण वीर बलिदानी
> शिथिल करो से डोर ध्वजा का खीच रहे सेनानी
> देख न पडती कही विजय की गौरव की जोवित लाली
> आज राष्ट्र के महापथ का सिंहासन है खाली।

कवि मेघराज मुकुल न भी राष्ट्र पिता की मृत्यु पर शाक प्रकट किया। समन्वय का जो वितान सम्पूर्ण भारत पर तानने का प्रयत्न किया था वह टूट गया और उसका विभाजन हुआ हिन्दुस्तान पाकिस्तान के रूप म। बापू! तुम्हारे बिना इस भारत माँ का शृ गार स्वप्नमात्र रह गया है। युग के सूत्रधार! राष्ट्र का मरुदण्ड टूट गया राष्ट्रीय भावना की जलती हुई दीप शिखा जिससे देश म सकड़ों दीप शिखाए ज्योति प्राप्त कर रही थीं प्रकाश विहीन होकर मद हो गइ—

---

१ विराम चिन्ह रच अचल पृ स ७४

भूगोल थमा आकाश झुका, जब तुम न रहे युग सूत्रधार ।[१]
आँसू पीकर रह गई व्यथा, प्राणों पर छाया तुषार ।।
कर गए किनारा जब अपने तब टूटा सतलज का कगार ।
हिमगिरि की टूटी आन प्रबल दब गया मनुजता का उभार ।।

जब बदला भारत-मानचित्र, गिर गया समन्वय का वितान
तब मेरुदण्ड बन भार वहन कर सके तुम्हीं बापू महान ।।
अब जीवन पद्धति सृजन-स्वप्न ले, माँ कैसे करलें सिंगार ।
भूगोल थमा आकाश झुका जब तुम न रहे युग सूत्रधार ।।

गाँधीजी के अलावा अन्य राष्ट्रोद्धारकों के प्रति भी कवियों ने श्रद्धा गीत अर्पित किए हैं। उनका गौरव गान किया है बलिदान की भूरि भूरि प्रशंसा की है जिसका परिणाम यह राष्ट्र है। क्रांति-अग्नि पहले स्वतन्त्रता के लिए सुलगी थी अब जल रही है राष्ट्र के निर्माण के लिए राष्ट्र की समृद्धि के लिए राष्ट्र की एकता के लिए। कहीं गीतों में वल्लभ भाई पटेल पर अभिमान प्रगट किया गया है, तो कहीं अमर शहीदों को अश्रु अर्घ्य देकर पलकों पर बिठाया गया है। लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के प्रति—

यही प्रसिद्ध लौह का पुरुष प्रबल,[२]
यही प्रसिद्ध शक्ति की शिला अटल,
हिला इसे सका कभी न शत्रु-दल
पटेल पर
स्वदेश का—
गुमान है।

स्वर्गीय श्री गोपालसिंह नेपाली समस्त शहीदों के प्रति अपनी भाव श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए—

बढ़ती चल कतार देश की पुकार पर[३]
धुल गई दो लाखों सपूतों के शिकार पर,
पीछे किया करो सिंगार द्वार-द्वार पर,

१ उमंग रघ मधराज मुकुल पृ स ११
२ पार के इधर-उधर रघ बच्चन पृ सं ५७
३ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १६ अगस्त १९६२ पृ १३

पहले जले दिया शहीद के मजार पर
वे देश पर चढ़ा गए शरीर फूल-सा
तुम वन्दना करो कृतज्ञ वन्दना करो तुम वन्दना करो !

गाँधीजी के युग के पश्चात् नेहरू युग प्रारम्भ हुआ। राष्ट्र-सेवक जवाहरलाल नेहरू का डा० दिनेश ने इन शब्दों मे गुणगान किया—

नेहरू तुम नर की वाणी दे[1]
बदल रहे इतिहास ॥
तुम भय-कम्पित हृदयो का बल
डगमग चरणों का सम्बल हो
लुटे अधर की मुस्कानें तुम
माँ की लज्जा के अचल हो
पहरेदार शांति के ! तुमसे—
रक्षित हर आवास
नेहरू तुम नर की वाणी दे
बदल रहे इतिहास ॥

अमर सेनानी भगतसिंह को कवि मिश्र स्मरण करते हैं —

हमने तुमको पंच बनाया[2]
तुम हम पर अन्याय न करना
ऐसे करना न्याय कि जैसे—
कभी विक्रमादित्य कर गये।
ऐसे न्याय न करना जिससे
शूली पर निर्दोष चढ़ गये।
धरती कभी नहीं भूलेगी--
भगतसिंह जैसों का मरना
हमने तुमको पंच बनाया
तुम हम पर अन्याय न करना ॥

मातृभूमि की रक्षा हेतु शहीद हुई विभूतियो का स्मरण करके कवि जागृति का सदेश देता है —

---

१ गौरव गान डा० दिनेश पृ० स० ६६
२ भूमि के भगवान रव रघुवीर शरण मिश्र पृ० स० १०८

भगतसिंह आजाद, तांत्या के—[1]
बलिदानों की धरती को।
झाँसी की रानी लक्ष्मी के,
मर मिटने की उस मस्ती को॥

निज तन मन, अर्पण करके भी
आँच नहीं आने देंगे हम
मातृभूमि की रक्षा करने,
सर्वस आज लुटा देंगे हम॥

विगत विभूतियों के शौर्य का वर्णन करके कवि उसी माध्यम से जन-सन्देश पहुँचाता है। अचल, बच्चन तथा गिरिजा कुमार माथुर ने देशोद्धारक शहीदों के प्रति हार्दिक सम्मान और गौरव के भाव प्रकट करते हुए भारतवासियों से निवेदन किया है कि उन शहीदों के बलिदानों को हम भूल नहीं जाना चाहिए—अचल जी की भावाभिव्यक्ति—

देश प्रेम के मतवालों उनको भूल न जाना।[2]
महाप्रलय की अग्नि-साध लेकर जो जग में आये।

विश्व बाल शासन के मद जिनके आगे मुरझाये
चले गए जो शीश चढ़ाकर अर्घ्य लिए प्राणों का,
चलो मजारों पर हम उनके आज प्रदीप जलायें

टूट गई बन्धन की कड़ियाँ स्वतन्त्रता की बेला
लगता है मन आज हमें कितना अवसन्न अकेला
पथ चिर तन बलिदानों का विप्लव न पहिचाना।
देश प्रेम के ओ मतवालो उनको भूल न जाना।

जिन्होंने अपना रक्त देकर राष्ट्र को उन्नति की ओर बढ़ाया उन्हें जनता कहीं विस्मृत न कर दे यही डर कवि को था। बच्चनजी ने उनको स्मरण करना अत्यावश्यक समझा जिनके कारण हम सिर उठाकर चलने का अवसर मिला—

---

१ रणभेरी रेल्वे हिन्दी-साहित्य-परिषद् रच० श्री नेमपाल मिश्र कोविद 'पंकज' पृ० सं० २०

२ विराम चिह्न रच० अचल पृ० स० ६६

है आज उचित करना उन वीरों का सुमिरन[1]
जिनके आसू जिनके लहू जिनके श्रम-कण—
से हम मिला है दुनिया म ऐसा अवसर
हम तान सके सीना ऊचो रक्ख गदन
आजाद कठ से आजादी का करें गान
आजादी का दिन मना रहा हिन्दुस्तान।

गिरिजाकुमार माथुर भी उन्ह नही भूले जो —

दुख दद अभाव भोगकर भी झुके नहा[2]
जा अन्यायो से रह जूझने वक्ष तान।
जो मजा भोगते रहे सदा सच कहने की
जो प्रभुता पद वाला स नत हुए नही
जा बिक न रहे पर कृपा न मांगी घिघियाकर
जो किसी मूल्य पर भी शरणागत हुए नहा॥

राष्ट्र पिता का अभिवादन किया पतजी ने—

जय हे[3]
जय राष्ट्र पिता जयजय हे !
० ० ०

नव प्रभात लाए तुम जन प्रांगण मे
जावन के अरुणोदय स हस मन मे
अपराजित तुम रहे अहिंसक रण म
सत्य शिखर क पथ अभय जय जय हे !

नरेन्द्र शमा न गाधीजी की स्मति म गाया —

पद्मनयन याद्धावर[4]
कोटि-कोटि माथ प्रणत !
अगणित उर मुक्त द्वार,
स्वागत जन धन स्वागत !
० ० ० ०

१ धार के इधर उधर डा० बच्चन प्र स १९५७ पृ स ७६
२ शिलापंख चमकीले रच गिरिजाकुमार माथुर पृ १ ४
३ चिदबरा रच सुमित्रानन्दन पत पृ स १८७
४ रक्त-चन्दन रच नरेन्द्र शमा पृ स २

झुकाये मन्त्रमुग्ध
ज्वालाएँ हुई म्लान !
हिंसा के द्वन्द्व ध्वस्त
ठहरे तूफान आज
प्रतिदान प्राण का
रागद्वेष शरणागत !

आनन्द मिश्र ने महान राष्ट्रोद्धारक गांधीजी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए वन्दना की—

विश्व के सबसे बड़े वरदान मेरी वन्दना लो।[2]
क्या तिमिर था पथ पर चलना तनिक दुष्कर हुआ था
जगमगाता क्या शिखर जलना तनिक दुष्कर हुआ था
और तब तुम-सा अभय आशिष दुनियाँ को मिला था
आपदाओं का कलेजा भी जिसे लखकर हिला था
सत्य के सुरभित स्वर संधान मेरी वन्दना लो !
विश्व के सबसे बड़े वरदान मेरी वन्दना लो !

बच्चनजी ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भी स्वतन्त्रता दिलाने वाले राष्ट्रोद्धारकों का गुणगान किया। राष्ट्रोद्धारकों पर गौरवानुभूति किसे भी क्या नहीं ? उनके महत्याग को भुलाना देशभक्त या राष्ट्रकवि का कर्त्तव्य नहीं। यदि हम उनको विस्मृत करते हैं तो कर्त्तव्यच्युत होते हैं। बापू का स्मरण करते हुए—

आज से आजाद अपना देश फिर से।[3]
ध्यान बापू का प्रथम मैंने किया है,
क्योंकि मुर्दों में उन्होंने भर दिया है
नव्य जीवन का नया उन्मेष फिर से !
आज से आजाद अपना देश फिर से !

देशोद्धारकों पर गर्व करते हुए डॉ० दिनेश ने अपने भाव प्रगट किये। गणतन्त्र पर्व पर भी यश गाये—

जन-वल्लभ भाई भारत के[4]
वीरों का गणतन्त्र !

---

१ रक्तचन्दन रच० नरेन्द्र शर्मा पृ० सं० २
२ हिमालय के आँसू रच० आनन्द मिश्र पृ० सं० ४६
धार के इधर-उधर रच० बच्चन पृ० ७
४ जयपथ रच० रामगोपाल शर्मा दिनेश पृ० ६२

लौह-पुरुष प्रहरी पटेल वह
महारुद्र अवतार !

जिसके अन्तर ने सागर सी थी विशालता पाई।[१]
जो साकार हुई थी जिसमें हिमगिरि की ऊंचाई !

गांधीजी की मृत्यु के उपरान्त उनके स्वप्नों को साकार करने वाले थे जवाहरलाल नेहरू। जब वह भी महाप्रयाण कर गये तो कवि को विश्वास नहीं हुआ कि वह भी रूठ गये है। भारत के ही नहीं अपितु समस्त संसार के प्रिय थे शान्तिदूत नेहरू —

कैसे हो विश्वास कि नेता रूठ गया है[२]
कभी नहीं वह लौट यहाँ वापिस आयेगा
नेहरू सा मानव नेहरू सा जन हितकारी
भारत क्या ? संसार कहाँ से अब पायेगा ?

मई १९६४ में नेहरूजी भारत को विलखता छोड़ गये। तत्पश्चात् लाल बहादुर शास्त्री ने भारतवासियों को धैर्य बंधाया। परन्तु भारत के निर्माता और रक्षक शास्त्रीजी भी शीघ्र ही नेहरू से मिलने चल दिए। जाते जाते भी चीन व पाक-युद्ध विजय का स्वर सुनते गए। उसी रक्षक लाल बहादुर के गीत क्या न गाए जाए ?

साधना अनन्य है[३]
देव तुल्य धन्य है
पाक बल प्रवाह से
चीन की निगाह से
देश को बचा दिया
राष्ट्र को बचा दिया
ऐसे उस प्रबुद्ध के
मैं गीत क्या न गाऊंगा।

लाल बहादुर शास्त्री को आज का श्रवण कुमार कहा है। वही श्रवण कुमार जो मातृ एवं पितृ भक्ति के लिए प्रसिद्ध है। कवि ने भारत माँ का श्रवण कुमार कहा है—

---

१ जयघोष रच रामगोपाल शर्मा दिनेश पृ स ६२
२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान २६ मई १९६६ पृ ६ रच श्री रमेश मधुराज
३ वही २७ मार्च १९६६ पृ ३१ रच 'शान्तिस्वरूप कुसुम'

राष्ट्रीय भावना

शान्ति-तीर्थ के तीर नीर में प्रतिबिम्बित प्रिय चित्र[1]

भाग्य विधाता भारत-माता का वह श्रवण कुमार।

केवल अठारह माह प्रधान मन्त्री पद पर काय करके भी वे ऐसे काय कर गये कि जनता लाल बहादुर के लिए रो उठी और प्रत्येक आँख करुणा से भर सजल हो गई। जीवन भर राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिये संग्राम किया, स्वाधीनता के पश्चात् राष्ट्र निर्माण के लिये परिश्रम किया सदैव मृत्यु से ही जूझते रहे और जब मृत्यु हो गई तो अमर हो गए सृष्टि की सारी मानवता बिलख उठी—

आँख कौन सी जो करुणा से अविरल सजल नहीं होता है[2]

आज सृष्टि की सब मानवता लाल बहादुर को रोती है।

तुम प्रसन्न रहते थे दुख म तुम अशांति म शांति-मूर्ति थे

जीवन भर तुम रहे मृत्यु म, और मृत्यु म अमर होगए

उसे कर दिया तुमने संभव जो कि असंभव सा दिखता था,

जो जीवन से नहीं कर सके जीवन देकर उसे कर लिया।

तुमको खोकर जग जीवन की क्षति की पूर्ति नहीं होती है।

आज सृष्टि की सब मानवता लाल बहादुर को रोता है॥

हृदय की धड़कन रुक जाने से उनकी मृत्यु ताशकन्द म ही हो गई। जबकि वे ताशकन्द घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर कर चुके थे। पाकिस्तान के साथ युद्ध चल रहा था वह समाप्त हो गया। लेकिन भारत के एक अनमोल रत्न को भी समाप्त कर दिया। उस विजय का हर्ष भी मनाने न पाये कि भारत की तरुणाई ने अपना नेता खो दिया और पीड़ा म डूबा कवि का हृदय क्रन्दन करते हुए भी श्रद्धा-सुमन न्यौछावर करना न भूला—

आज देश की तरुणाई ने खोया अपना नेता[3]

विजय रो रही बिलख बिलखकर खो निज अभय विजेता,

कोटि-कोटि हृदयों के प्यार लाल बहादुर तुझ पर

पीड़ा म डूबा कवि करता श्रद्धा-सुमन निछावर

अमर रहे तेरे संकल्पों का भू पर उजियारा

एक बहादुर लाल देश का हुआ राम को प्यारा,

---

१ वही पृ १७ नरेन्द्र शर्मा

२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १० अप्रेल १९६६ पृ १४ रच श्री बनारसीदास विद्यालंकार

३ वही ६ फरवरी १९६६ पृ १४ श्री रवि दिवाकर

भारत के इतिहास म शास्त्रीजी का नाम बडे ग्रादर के साथ लिया जायगा जिसका नारा था जय जवान जय किसान—

तुमने नाता जोड लिया है जान वाले !
भारत का इतिहास करेगा गान तुम्हारा ।

तुम भारत सगीत को देशा न गाया
जो तुमने स्वर दिया उसी स साज मिलाया
जो भारत क अग्रदूत जो भाग्य विधाता,
ग्रा र निमल चन्द्र जगत के शाति प्रदाता ।

जय जवान ग्रौ-जय किसान क गाने वाले !
कोटि-कोटि जनता करती जयगान तुम्हारा ![1]

हमार देश की अनेक महान् विभूतिया जिन्होन ग्रायु पयन्त देश की मुक्ति क लिए प्रयास किये परिश्रम किया स्वाधीनता क पश्चात् एक एक करक वह सभी विभूतियाँ विदा होती रही ग्रौर देश म शोक की लहर व्याप्त होती रही । अभी हम चन की सास भी नही ले पाये कि पुन नया सकट सामने आगया । इस प्रकार चीन व पाकिस्तान द्वारा हमार भौगोलिक मानचित्र का विरूप करन का प्रयत्न चलता ही रहा है । हमारी सना क जवानो की दृढता सीमा पर आय सकटो का दूर करने म सलग्न है । ये सीमा प्रहरी अपनी शक्ति से सामना करन म तत्पर हैं । भविष्य म राष्ट्र पुन गुलामी की कडियों म न जकड जाय जिन कडियो को खोलनी कठिनाईयो के पश्चात् तोडा है इसी कारण तनिक भी युद्धाभास होन पर ही समस्त जनता सचत हो जाती है । गीतकार गीतो के माध्यम से जन-जागरण का सदेश देत हैं ।

निष्कर्ष

गीतकारों ने जिन भावनाग्रो को साकार किया व केवल सामयिक आवश की ग्रभिव्यजना नही था । राष्ट्र क प्रति एक निश्चित लक्ष्य को सामने रखकर उनका मुख्य काय था जन-जन का राष्ट्र की सुरक्षा हेतु सदेश देना । परन्तु इस सदेश का विगत के माध्यम से पहुँचाना सरल था । स्वतन्त्रता प्राप्ति पर जो हृप हुग्रा उसका भावपूर्ण चित्रण गीतकारो ने किया

---

१ वही १३ फरवरी १६६६ पृ ५६ हरिकृष्ण पाण्डेय 'हराश

और मवय नवीनता के दर्शन किये । मुक्ति की साँस लेकर सब कुछ उन्मुक्त हृदय से व्यक्त किया । कारागृहो मे जाने की आशका उन्हें भयभीत न कर सकती थी । यद्यपि देश की प्रकृति भी वही थी दोष भी वही थे, धरती भी वही थी, फिर भी कवि को सब कुछ नये परिवेश मे देखने को मिला जिस उसने न जान कब मे उपेक्षित किया था । प्रकृति की ओर देखन की फुरसत तो कवि का स्वतन्त्रता के पश्चात् हुई थी । इमसे पूव स्वातन्त्र्य सग्राम म सलग्न उसकी ओजस्वी वाणी ही प्रधान रही । वर्षो स पराधीन हुआ गीतकार स्वाधीन होकर इतना उन्मुक्त हुआ कि सहज उल्लासमयी वाणी न गीतो का अजस्र धारा बहा दी । सभी कुछ नय परिधान क साथ दृष्टिगत हुआ, लकिन उसकी कत्त यपरायणता सजग रही । वह उन शहीदा व राष्ट्रोद्धारका का भी नही भुला मका जा स्वतन्त्रता का दिवस दखने को जीवित ही न थ । गातकार सभी के प्रति नम्रतापूवक भावाजलियाँ अर्पित करता रहा जो अमर हा चुक थ । राष्ट्र-ध्वज की वन्दना और राष्ट्रोद्धारको का गुणगान किया । इस प्रकार भाव पूण हृदय गीतकार अपन गीता द्वारा अब भा काय कर रहा है ।

राष्ट्र-निर्माण सम्बन्धी भावो की अभिव्यक्ति | ६

स्वतन्त्रता से पूव राष्ट्र जिस जीण शीण स्थिति म था राष्ट्र-वासियो का जिस प्रकार शोषण किया जाता था अधिकारो से वचित रखा जाता था उसम सुधार की आवश्यकता अनुभव हुई। राष्ट वासियो के हृदय में नव चेतना की आवश्यकता थी। समाज का उत्थान ही राष्ट का उत्थान था। मानवता का आदर करना राष्ट्र से प्रेम करना राष्ट्र-वासियों को एक सूत्र में बाधकर सभी को समादर देना पू जी पतियो का विरोध एव शोषितो को सहारा देना मजदूर कृषक हरिजन आदि निम्न वग के समझे जाने वाले लोगो का गल लगाना सभी को समान महत्व देना एव समादर देना आदि समाज की अभिनव चेतना पर ही राष्ट्र का उत्थान निभर करता था। अत आवश्यकता हुई नव चेतना की एव राष्ट्र-वासियो के के सहयोग की। स्वतन्त्रता के नव आलोक मे राष्ट्र की दुरावस्था देखकर, उसको दूर करके राष्ट्रोत्थान की चेतना की आवश्यकता प्रतीत हुई। कवि गीतकार एव लेखक सभी ने राष्ट्र की दुरावस्था के चित्र खीचकर राष्ट्र की प्रगति की कामना करत हुए राष्ट्रोत्थान की चेतना के स्वर मुखरित किए। स्वातत्र्योत्तर हिन्दी गीत-काव्य मे इसको अभिव्यक्ति का स्वरूप स्पष्ट है।

राष्ट्रोत्थान की चेतना —

प्रकृति प्रेम के अमर कवि श्री सुमित्रानन्दन पत ने नव-चेतन कण के वपण की कामना का। जन-मन का दुख इस धरा को अर्पित कर उस विषाद क गजन से जा वपण हो उससे नव चतना के कण का ही वपण हो—

> बरसें नव-चतन-कण [1]
> तुम्हें करू जन मन दुख अपण

---

१ चिदबरा स्व० पतजी पृ० स० २०६

आत्मदान दे महत् धराप्राण,
भू विषाद गर्जन से उसमें,
बरसें नव-चेतन-कण !

राष्ट्र के उत्थान के लिए छूआछूत भेद भाव मिटाना अति आवश्यक था। बच्चन ने इस भेद के अंत की प्रेरणा देकर राष्ट्रोत्थान का मार्ग प्रशस्त किया।

अछूत-छूत भेद जाति ने सहा,[2]
किया मनुष्य औ' मनुष्य में फरक
स्वदेश की
कटी नहीं
कुहेलिका

० ० ० ० ० ०

नयन बने नवीन ज्योति के निलय[3]
नवल प्रकाश-पुंज से जगे हृदय
नवीन सज बुद्धि को कर अभय
सदीर्घ देश
की निशा
समाप्त हो।

श्री गोपालसिंह नेपाली को भय है कि कहीं बन्दी हुई गुलामी की शृंखलायें पुनः न जुड़ जायें, अतः स्वतन्त्रता की भावना कायम रहे तभी राष्ट्रोत्थान की कामना की जा सकती है —

हम थे कभी गुलाम यह न भूलना,[4]
करना पड़ा हमें सलाम यह न भूलना
रोते फिरे उमर तमाम यह न भूलना
था फूट का मिला इनाम यह न भूलना
बीती गुलामियाँ न लौट आएं फिर कभी
तुम भावना भरो, स्वतन्त्र भावना भरो तुम भावना भरो।

राष्ट्र की गुलामी का एक कारण एकता की कमी एवं फूट की भावना थी। इसका परिणाम कहीं भुगतने के पश्चात् भी फिर न भुगतना पड़े—अतः

---

२ धार के इधर उधर रच० बच्चन, पृ० सं० ६७

३ वही पृ० सं० ७०

४ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १६ अगस्त १९६२, पृ० सं० १२

आवश्यक था कि सवप्रथम स्वन्त्रता की भावना को स्थापित किया जाय ग्रन एक स न्देह ना कम हो कम से कम गुलाम ता फिर न बन सकें। तभी स्वतत्र भारत की कल्पना उसक उत्थान की कल्पना का जा सकती थी। पतजी ने सामाजिक चिन्तन की भूमिका को राष्ट्रोत्थान क लिए आवश्यक माना—

एक महान ग्राशा निहारती[1]
जग जीवन से
जड चेतन से।
ग्राज चाहिए सामाजिक चितन
जग को सामूहिक जीवन
भू-स्तर पर उन्नयन
मनुज एक हो कम, वचन, मन।
देवा का धन
धरती का पग्र।

रघुवीर शरण मित्र ने जन-जन को भगवान बुद्ध के जीवन स प्रेरणा ग्रहण करके राष्ट्र निर्माण का माग बताया—

तुम समाज के कणवार हो।[2]
धरती का उत्थान करो॥
तुम्ह बुद्ध की तरह शुद्ध
धरती का हृदय बनाना है
तुमको खोई हुई धरा का
सारा भाग्य जगाना है॥
एसी भक्ति भरो भक्तो म
भक्तों को भगवान करा
तुम समाज के कणधार हो।
धरती का उत्थान करो॥

डा० दिनश न राष्ट्रात्थान का स्वप्न मानवता क चरम विकास क रूप में देखा है और उसकी मशाल निरतर जलती रह एसी कामना का ह—

हमारा जलती रह मशाल[3]

---

१ वाणी रच० पतजी पृ स २२
२ भूमि के भगवान रघुवीर शरण मित्र पृ स ६६
३ जलती रह मशाल डा० रामगोपाल शर्मा दिनेश पृ स ८०

राष्ट्रीय भावना

जब तक धरती पर जीवन है
मानव के तन म यौवन है,
हँसता माता का उपवन है
तब तक रहे फूलती फलती
मानवता की डाल।
हमारी जनता रह मशाल ।।

भारतीय गणतत्र अमर है इस गीत को गाते हुए नए शाय एव बल स नव हृदय को दहलाकर स्वतत्र भारत का मान बढाना है। जो भी भारत का शत्रु बनकर किसी भी प्रकार हानि पहुचाने की चेष्टा करेगा उन मानव शोषक हिसक पापी दस्यु आततायी हठधर्मी पुसपैठिए एव छातायारियो को नष्ट करना है। राष्ट्र का उत्थान तभी सम्भव है जब इन सबको मजा चखाकर राष्ट्र की सुरक्षा की जाये और जन-जन का यही स्वर हो—

भारतीय गणतत्र अमर है, यही गीत अब गाना है,[1]
नए शौय स बल विक्रम से, शत्रु हृदय दहलाना है।
युग युग स वीरो ने गाया उस आज दोहराना है।
जाग उठा भारत स्वतत्र हो उसका मान बढाना है
दस्यु आततायी हठधर्मी घुसपैठिए छातायारी
मानव-शोषक हिंसक पापी इनको मजा चखाना है।
° ° ° °
जन-जन का यह कठ हार स्वर इनको नहीं भुलाना है।

अत स्वतन्त्रता की अमर-ज्योति की ज्वाला कभी मन्द न हो। अत तरुणाई को जय की शहनाई मानकर गीतकार मोहन अम्बर कहते है कि युद्ध हमारे लिए नया नहीं है। जिस प्रकार मरण मे भी अमरता पाता है, जीवन की बलि देकर भी इतिहास म नाम लिखा जाता है और राष्ट्र के लिए बलिदान देकर देश की तरुणाई धन्य हो उठती है, उसी की कामना स राष्ट्रहित साकार हो सकता है—

तू जय की शहनाई।[2]
आ तरुणी तरुणाई ।।

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १३ फरवरी १९६६ पृ म ५७ रच० द्वारिका प्रसाद सक्सेना

२ वही ८ मई १९६६ पृ० १४ श्री मोहन अम्बर

युद्ध हमारे लिए नया हो ऐसी कोई बात नहीं
सुख से हमने सो काटी हो है क्या ऐसी रात कही !
हमने लड़ना सिखलाया है दुनिया के इतिहासो को
धम हमारा अपना पानी देता आया प्यासो को
ऐसा जीवन मरता है पाता मरण अमरता है।
बसे तू भी घुलमिल मेरे देश की तरुणाई।
तू जय की शहनाई !

स्वतन्त्रता के पश्चात् भी खुशहाली न आई तो गीतकार का स्वप्न टूट गया—

प्यारी स्वतन्त्रते स्वागत है कृतकृत्य हुआ यह भारत है[1]
वह शुभ दिन जब आइ था तब खुशिया खूब मनाई थी
आशा उत्साह भरे मन थे तप-त्याग युक्त जन-जीवन थे
समझ सुख-स्रोत बहा देंगे फिर से सतयुग छबि छा देंगे
हो गए न जाने क्स हम अब वह सद्भाव न भाता है—
क्या यही स्वराज्य कहाता है ?

स्वराज्य हुआ किन्तु सद्भाव न रहा। अत स्वतन्त्रता की खुशी भी कायम न रही। आशा उत्साह भी समाप्त होने लगे क्योकि सभी तप-त्याग को छोड़कर स्वार्थी बनने लगे। व्यक्तिगत स्वार्थ ऊंचा उठ गया, राष्ट्र का जनता का हित गौण हो गया। तब राष्ट्र के उत्थान की कल्पना दुष्कर ही थी। अत गीतकार ने सजग किया। राष्ट्र उन्नयन के लिए सद्भाव आवश्यक है। गीतकार का देश भूखे रहकर जन्म दिन मनाना चाहे तो गीतकार की आत्मा सजग किये बिना कस सतोष पा सकती है ? रेशमी झण्डा उड़ाने वालों को पेट की रोटी के लिए स्वार्थी व्यक्तियो को ललकार कर गीतकार कहता है कि उस अघफटे नग्न बदन का ध्यान भी तो रखा जाय—

शीश पर मगल-कलश रख[2]
भूल कर जन के सभी दुख
चाहते हो तो मना लो जन्मदिन भूखे वतन का।
जो उदासी है हृदय पर

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १५ अगस्त १९६४ पृ० १४ डा० हरिशकर शर्मा
२ वही श्री मधुर शास्त्री पृ० १४

वह उमर आती समय पर
गलियो के गद्य-पथ पर-
ध्यान किसका आज लय पर
पेट की रोटी जुडाओ
रेशमी झडा उडाओ

ध्यान तो रक्खो मगर उस अधफटे नगे बदन का ! राष्ट्र का उत्थान आधे व्यक्तियो को भूल रखकर सभव नही। सभी का भरपेट भोजन तन ढकने का वस्त्र उपलब्ध हो तभी स्वस्थ राष्ट्र की प्रगति समव है।

गहरी रात म प्रहरी सोया हुआ है किन्तु देश की दुदशा देखकर गीतकार की आखो मे नीद कहा ? वह बधर के व्यक्तियो को देख तडप उठता है और उन्हे जागृत करने का प्रयास करता है—

रात गहरी ! जाग प्रहरी ! [1]
सो रहा तू देख तारे टूट रहे आँसू बरसते
सो रहा तू देख बधर एक छप्पर को तरसते
सो रहा तू देख वन में फूल-सी सीता पडी है
सो रहा तू जाग जल्दी, देश पर आफत बडी है।
जल रहा है बाग प्रहरी !

गीतकार का प्रयत्न यही है किसी भी प्रकार राष्ट्र का उत्थान हो। जो उपेक्षित हैं नग्न हैं भूखे हैं बेघर हैं उन सभी को आवश्यक वस्तुए प्रदान की जाए। यदि मानवता को भुलाकर राष्ट्र के कल्याण के लिए कुछ व्यक्ति सलग्न हो तो प्रगति असभव है। सभी मिलकर स्वतन्त्रता बनाये रखने म सहयोग दें। अत आवश्यक है सभी को सब सुविधाए दी जायें जिससे व अंग्रेजी शासन की प्रशसा न करके स्वतत्र भारत की प्रशसा करें। गुलामी की भावना समाप्त हो जाय। राष्ट्रोत्थान की चेतना म गीतकार का पूर्ण सहयोग रहा है।

२ जन श्रम की महत्ता —परिश्रम के अभाव में देश की प्रगति असभव है। श्रम के लिए आवश्यकता है जन की। अत जन-श्रम दोनो की महत्ता है। राष्ट्र के उद्धार के लिए, नव निर्माण के लिए राष्ट्र की प्रगति के लिए भुखमरी एव गरीबी दूर करने के लिए आवश्यकता है

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १५ मार्च १९६४, रघुवार शरण मित्र पृ० ११४

जन श्रम की सभी के सहयोग की तभी धरा फलगी फूलेगी। पसीना बहाकर श्रम करके ही राष्ट्र धन धान्य पूरित हो सकता है। अत आवश्यकता है जन-श्रम की।

स्वतन्त्रता के पश्चात् जन श्रम को अधिक महत्व प्रदान किया गया। श्रम शारीरिक हो या मानसिक जन श्रम को महत्ता ना राष्ट्र क निर्माण की नाव रखना है। श्रम की महत्ता श्रमिक के श ा मे गीतकार ने स्पष्ट का है—

मैं श्रमिक श्रम से धरा को ध य कर दूगा ?[1]
पवतो को काट मैं गगा बहा देता
काटकर नदिया नहरें बना देता
मैं अयक उद्योग से निमाण करता हू।
न्मान हू इसान का कल्याण करता हू।।

मैं भुजाओ म धरा का पीर भर दूगा।
म श्रमिक श्रम स धरा को ध य कर दूगा।।
मैं नया निमाण करता हाथ के बल मे
राह म थककर रुकू क्या ? मैं न ह नगा।
उगलियो स मैं बुना करता नया कपडा।।
मोतियो स मैं धरा की गोद भर दूगा।
मैं श्रमिक श्रम स धरा का धय कर दूगा।।

श्रमिक श्रम करके मुस्काता ह और स्व धाराएँ उसके हृदय का प्रफुल्लित कर ती है कि उसका श्रम साथक होगा। पसीना य नहा जायेगा। पवतों का कुचलकर वन बीहडा पर विजय पाकर रगिस्तान को समाप्त कर सवत्र अपन श्रम स धरा को हरा-भरा बनाकर श्रमिक असीम सुख पाता है।

अतर स या कि दिगतर से आई पुकार
मैंने अपने पावो स पवत कुचल दिये
कदमों स रौंद डाला काटा के बन-बीहड
दी ताड ठगों स रगिस्तानों की पसली

[1] भूमि क भगवान रव रघुवीरशरण मित्र पृ स २७
[2] त्रिभगिमा रव बच्चन पृ स ७४

दी छोड पगों की छाप धरा की धरती पर, सुस्ताता हूँ
तन पर फूटा श्रम धारा का सुख पाता हू
जन-श्रम जय पसीने का गुणगान करते हुए ।

गीतकार का निम्न गीत द्रष्टव्य है—

पसीना हू पसीना हू[1]
धरा के भाल पर जगमग जड़ा हो वह नगीना हू ।
पसीना हू पसीना हू ॥

सृजन की पुस्तिका के पृष्ठ बिखरे जोड लाया हू
मनुजता की वही विपरीत धारा मोड लाया हू ।
मरा युग-युग घडा जा पाप का मैं फोड आया हू
हमेशा के लिए मैं हाथ यम के तोड आया हू
पसीना हू मुझे मन्दिर में नया मधुवन खिलाना है ।
भागीरथ हू मुझे भू पर नई गगा बुलाना है ॥
हमेंगे खेत हरियाली नही इनमें समाएगी
धरा नगशाश सजा दुल्हन बनगी मुस्करायेगी ।
गगन के भाग्य के तार घटाम्रा म न डूबेंगे
किसी के पाँव कण्टको म अब न ऊबेंगे ।
भटकते हो नहा क्या रास्ता तुमको मिला अब तक ?
पहुँचना चाहते हो स्वर्ग ? बस मैं एक जीना हू ।
धरा के भाल पर जगमग जडा हो वह नगीना हू
पसीना हू पसीना हू ॥

नये सृजन की दीपावली के शुभ अवसर पर नई उमग म भरकर श्रम के मगल-दीप जलाने चाहिए । आपस में सहयोग देते हुए पुराना अनबन को दूर करके सफलता की उजियाली म पथ प्रशस्त करना चाहिए । भागीरथ के प्रयत्न श्रम स ही गगा शिव की जटाओ स होती हुई पृथ्वी पर आई थी जिसका उद्गम विष्णु के चरण के अगूठे म माना जाता है । यदि ऐसा हो भागीरथ प्रयत्न सभी कर सकें तो धरा धन्य हो जाय—

भारत माँ के राज दुलारा ! युग म नई उमग जगाओ ।[2]
नए सृजन की दीवाली में, श्रम के मगल दीप जलाओ ।

---

१ हिमालय के आँसू आनन्द मिश्र पृ० स० ६८
२ पत्रिका योजना, फरवरी १६६२ रच० जगदीशचन्द्र शर्मा पृ० स० २४

स्वाभिमान की हुँकारो मे नई रागनी म रस भर दो
सहयोगीपन से आपस की अनबन का उन्मूलन कर दो,
सबके चेहरो पर पुलकाए ऊषा की मदमाती लाली
सब अपने जीवन मे पाये नई सफलता की उजियाली।
ओ भागीरथ ! लोक हृदय की धरती पर नव गंगा लाओ[1]
नए सजन का दीवाली म श्रम के मगल-दीप जलाओ।।

भारत के तरुण किसानो को खेतो म धान रोपन क लिए निमन्त्रित करते हुए प्रकृति की अनुकूलता चित्रित की है जहा श्रम का जीवन गान निराला है—

चलो खेतो म रोपें धान हम भारत क तरुण किसान[2]
बरस रहा है पानी झमझम
गरज रही मेघो की माला
साय सॉय कर पवन सुनाता,
श्रम का जीवन-गीत निराला
कॉप रहा तन हसते प्रान चलो खेतो म रोपें धान !

भारत की स्थिति परिवर्तित कर नव निमाण के द्वारा युगो से दबी हुई अभिलाषा की पूर्ति करते हुए सबकी जीवन फुलवारी को महकाने के लिए चाहे लाख बाधाए आयें किन्तु इस श्रम के लिए कोई रोक न सकेगा—

ऐसा नव निमाण करेंगे धरती चमक उठेगी,[3]
युगो युगो स दबी हुई अभिलाषा दमक उठेगी।
हम जुट जायेंगे तन मन स सारी शक्ति लगाकर
सबके जीवन की फुलवारी फिर स महक उठेगी।
हम न रुकेंगे चाहे बाधाए आए गम्भीर
हम बदलेंगे अपने प्यारे भारत की तस्वीर।।

मधुसुदनलाल ने श्रम के पश्चात् उसके निमाण को देखकर गौरव का अनुभव करने वाले श्रमिका का इस प्रकार चित्रण किया है—

फूल रही है नयी शान स मजदूरो की छाती।[4]
लिए कुदाली गैंती निकाला मनु का श्रमठ बेटा

१ पत्रिका योजना फरवरी १९६२ रच जगदीशचन्द्र शमा पृ स २४
२ वही मार्च १९६१ रच हीरादेवी चतुर्वेदी पृ स ३१
३ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १४ जुलाई १९६३ जगदीशचन्द्र शमा पृ ४०
४ पत्रिका-योजना १२ जनवरी १९६४, मधुसूदन लाहा पृ १०

कंधे पर गमछा कटि में अति मैला फटा लंगोटा
सिर पर बीहन का बोरा, आगे बैलों की जोड़ा
मुख से दे टिटकारी, चमकाता चमड़े का सोटा।
प्रतिक्षण धूप गाँव घर वन पर्वत पर चढ़ती जाती।
फूल रही है नई शान से मजदूरों की छाती॥

गीतकार ने विभिन्न भावों की अभिव्यक्ति के लिए आदि मनु जो प्रलय के पश्चात् सृष्टि के प्रथम पुरुष माने गये हैं तथा कुदालो गता गमछा बैलों की जोड़ी आदि विभिन्न उपकरणों का जुटाया है। इसके माध्यम से श्रम का सही स्वरूप चित्रित किया जा सकता है।

श्रम करने में लाज नहीं करनी चाहिए। पुरुषार्थ तो पुरुष का अलंकार है। श्रम से ही देश का निर्माण होता है। बाँध नहरें तालाब नई-नई औद्योगिक शाखाएँ आदि की नींव श्रम के आधार पर ही पड़ी है। मानसिक श्रम हो या शारीरिक दोनों ही सुखदायक एवं फलदायक हैं। राष्ट्र प्रगति करके समृद्धि की ओर अग्रसर होता है। राष्ट्र जितना ही आत्म निर्भर होगा उतना ही सशक्त होगा—

श्रम से समाज को बदलेंगे[1]
धरती पर स्वर्ग बसायेंगे।
हम भूमि नग मानव को
श्रम से भगवान बनाएँगे॥

रघुवीर शरण मित्र के श्रमिक तो धनिक-वर्ग के पूँजीपतियों की तिजोरियों में धन निकलवाने को व्याकुल हैं जो इन्हीं के गाढ़े पसीने की कमाई है। मूलधन से भी अधिक ब्याज लेकर जो खजाना भरा गया है उस पीड़ितों की सहायतार्थ रिक्त कराना चाहते हैं—

नये निर्माण से जग का नया श्रृंगार बदला है।[2]
बदा है पर गत युग का हमारा पर अगला है॥
धधकती धूप में जलता हुआ इन्सान गाता है
पसीने की धरोहर माँगने मजदूर आता है
लगी है मोट भूखों की खजाने मान लो अपने
हमारे ब्याज के बदले खजाने दान दो अपने

---

१ सर्वोदय के गीत डॉ० रामगोपाल शर्मा पृ० म० २
२ भूमि के भगवान रघुवीर शरण मित्र

खुली है आँख पीडित की नया ससार बन्ला है।
नये दिनमान ने जग का नया शृगार बन्ला है॥

योजनाओं के निर्माण के साथ-साथ राष्ट्र की प्रगति एव समृद्धि भी चरण स चरण मिलाकर चलने लगी है। याजनाओं को कार्यान्वित करने मे श्रम का पसीना खच होता है। भारत के तरुणो को गीतकार सजगता का सदेश देता है क्योकि वहा शक्ति से भरपूर उत्साह मे भरे भारत के प्रति अपना कत्त य निभा सकते हैं। समस्त मजदूर कृषक एव तरुण-वर्ग का सहयोग तो अपेक्षित है ही नव-कारखानो के निर्माण के लिये पू जी की भी आवश्यकता है। कारखानो के निर्माण के लिए बुद्धिमान व्यक्तियो की भी आवश्यकता है। इस सार सगठन की एकता से ही जन श्रम सफल हो राष्ट्र का उत्थान कर सकता है।

३ नव निर्माण की प्ररणा —

कवि-हृदय पू जापतियो का विरोध नही करता अपितु उनकी शोषण की भावना एव व्यक्तिगत स्वाथ का भावना का विरोध करता है। यदि पू जी पति अपनी पू जी नवीन उद्योगो के निमाण म लगाता है और बकारी को रोककर नय कारखाना का निर्माण करके उत्पादन बढ़ाने म सहयोग देता है ता राष्ट्र निमाण क सहयोगी पू जापति के प्रति कवि हृदय रुष्ट नहीं है। कवि ता नद मजिल बनाने का नव निर्माण की प्रेरणा देता है। राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा व नव-गीत गाकर व्यक्तिगत स्वाथ को छोड देने के लिए नव निर्माण का प्रेरणा देत हुए गीतकार रामकुमार चतुर्वेदी न कहा कि अभी तक चाँद तारा क ता बहुत गीत गाय गय हैं परन्तु अब हम राष्ट्र निर्माण का समृद्धि क गीत गान हैं—

बहुत गाय गय हैं गीत अब तक चाँद तारो क। [1]
सुबह क गीत गान क लिय तयार हो जाओ॥
सबरा है हिमालय क शिखर अब जगमगाते हैं
कि गगा गुनगुनाती है कि यमुना मुस्कराती है
नए पछी नए आकाश म पर फड़फड़ाते हैं।
नई ही चहचहाहट घाटियों को अब गु जाती है॥
कदम आग बढ़ाने के लिए तैयार हो जाओ।

---

१ नई पीढ़ी नई राह रच रामकुमार चतुर्वेदी प्र स १९६०

बहुत गाय गय है गीत अब तक चा- तारो के ।
सवह क गीत गाने क लिए तयार हो जाओ ॥

राष्ट्र के नव निर्माण के लिए राष्ट्र की स्वतन्त्रता तो आवश्यक है हो साथ ही तन, मन एव घर की स्वतन्त्रता भी आवश्यक है। यही देश की अमर पुकार है और इसके लिए आवश्यकता है अनन्त साधना की। नव समाज के निर्माण हेतु नई प्रभाती गा कर घर घर म अरुणोदय लाने की कामना करते हुए—

आओ नई प्रभाती गाकर ।[1]
घर घर म अरुणोदय लायें ॥
नव समाज निर्माण करें हम
नूतन युग का गान सुनाए
आओ नई प्रभाती गाकर ।
घर घर म अरुणोदय लायें ॥

निर्माण की शहनाई की अभिव्यक्ति गीतकार मयक के शब्दों म—

बज रही निर्माण की शहनाइयाँ[2]
खेत म श्रम कर रहा किसान है,
पूज्य उसका आज हर अभियान है।

० ० ० ० ०

नाचती हैं खेत म परछाईयाँ
सम्पदा को डालकर गलबाहियाँ
यह निशानी है उसी के स्वप्न की
बज रही निर्माण की शहनाईयाँ ।

पूजीपतियो को ललकारते हुए गीतकार माग प्रशस्त करता है पूजी के सदुपयोग के लिए। यदि पूजी का सम वितरण नही कर सकते तो उद्योग धन्धो म तो इसका उपयोग किया ही जा सकता है। जहाँ हजारों बेकार निर्माण म लग जायें तब ही राष्ट्र की प्रगति सम्भव हो सकेगी।

पूजीपति हो तुम भूतल पर ।[3]
नय नय निर्माण करो ॥

---

१ सर्वोदय के गीत डॉ० रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'
२ पत्रिका योजना जून १९६२ चन्द्रगुप्त 'मयक' पृ २७
३ भूमि के भगवान रघुवीर शरण मित्र पृ स ५१

तुम कुटीर उद्योग बनाओ
बकारी का शमन करो
जितना भी धन है सब खाकर।
तुम न अकेले हजम करो ।।
पूजीपति हो तुम भूतल पर।
नये नये निर्माण करो ।।

राष्ट्र निर्माण के प्रगति-पथ म सैकडो आधी तूफानो क आने पर भी चरण गतिशील ही रहने चाहिए। नरेन्द्र अचल ने राष्ट्र निर्माण क प्रयाण-गीत म यही सदेश देने का प्रयास किया है—

बढ चलो बढ चलो यही जनम यहा मरण[1]
चलें हजार आँधिया
न पाव डगमगा सकें।
दुश्मनी प्रहार से
न आँख डबडबा सकें।
शक्ति का पहाड हो नही रुके बढा चरण।
बढे चलो बढे चलो यही जनम यही मरण ।।

वर्षों की दासता स भारत मा का तन तन जजर हो गया। अत राष्ट्र क निर्माण क लिए मा क अन्दर नव-जीवन का सचार करना आवश्यक हो गया। अभावो की जजीरो स जकडे देश को सुख वभव स भरना है इसके लिए कदम मिलाकर चलने की आवश्यकता है—

चलो मिलाकर कदम तुम्हे निर्माण राष्ट्र का करना है।[2]
भारत माँ क जजर तन म अब नव-जीवन भरना है ।।
० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
जकडा है जो देश अभावों की भीषण जजीरो म
उस मुक्त कर सबल बनाकर सुख वभव स भरना है।
चलो मिलाकर कदम तुम्हें निर्माण राष्ट्र का करना है ।।

निर्माणोन्मुखी भारत की प्रगति का एक चित्र इस प्रकार अकित किया है—

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान फरवरी १९६५ नरेन्द्र अचल
२ रणभेरी प्रका रत्न हिन्दी परिषद रच श्री परमचन्द गुप्ता सुमन पृ २३

बदल रहा है धीरे-धीरे सारा हिन्दुस्तान ।[1]
हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ।।

o o o o o o o o

कहीं बाँध तो कहीं नहर है कहीं सड़क निर्माण ।
बिजलीघर निर्माण केन्द्र भी खुलत जन-कल्याण ।।
उन्नति में अब देर न होगी हो सहयोग महान् ।
हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ।।

निर्माण के लिए आवश्यकता है उत्पादन बढ़ाने का नये कारखाना की कुटीर उद्योगों को बढ़ाने की । स्वतन्त्रता के मद में सभी नेतागिरी न करने लग जायें । स्वतन्त्रता का सही सदुपयोग करें । बात-बात पर जुलूस निकाले जाते हैं, नारे लगाये जाते हैं सभाएं की जाती हैं और इस प्रकार के कुछ अनावश्यक प्रदर्शनों से समय बरबाद किया जाता है । योजनाओं को व्यावहारिक रूप देने के लिए आवश्यकता है ठोस कदम उठाने की । व्यर्थ के प्रदर्शनों से कोई लाभ नहीं होने वाला । सभी अपने कार्य में संलग्न रहें तभी देश की रक्षा की जा सकती है, प्रगति की जा सकती है—

जुलूसों और नारों से,[2]
प्रदर्शन या प्रचारों से
न कोई देश जीता है
सभाएँ बन्द कर चल खेत में या कारखाने में ।

o o o o o

गरजता है अगर अम्बर लरजती है अगर धरती
मगर माता नहीं डरती इसी में देश की जय है
हजारों बिजलियाँ टूटें हजारों आँधियाँ आयें
कुदाली का रहा थामे, तुम्हारा ही हिमालय है
निरी बातें बनाने से
महज बैठक जमाने से
न कोई देश जीता है
सभाएँ बन्द कर चल खेत में या कारखाने में ।

---

१ योजना मार्च १९६२ रूप हृदयराम साहू पृ सं १५
२ [illegible] महक उठें रामावतार त्यागी पृ सं १२७ प्र सं १९६५

सृजन चिरजीवी रहे क्योंकि ध्वंस की आयु लघु होती है। इसी आशा के साथ श्रम गंगा घर घर बहानी है तथा क्रांति के इस नये मोड पर सारी थकन भी समाप्त कर देनी है—

ध्वंस आयु का लघु होता है सृजन रहे चिरजीवी[1]
इसी मराम श्रम की गंगा घर घर आज बहा दो !
और क्रांति के नये मोड पर
सारी थकन मिटा दो ॥

नये निर्माण हेतु कोटि-कोटि भुजाएं उठें तो निर्माण अनुपम होगा क्षिप्र गति से होगा और सफल होगा। नव निर्माण से धरा को सजाकर नया आह्वान करें—

कोटि-कोटि भुज उठो नया निर्माण रचाएं आज हम।[2]
श्रम से अर्जित पुण्य उठो यह धरा सजाएं आज हम ॥
खिले फूल शूलों की शय्या तोड चुके मधुमास में
उजियाले ने अंधकार को छिपा लिया इतिहास में
आज ध्वंस ने सदा-सदा के लिये किया विषपान है।
अभिशापों से भरी जवानी ने पाया वरदान है ॥
आजादी के प्रगति चरण को मिला नया आह्वान है।
पीडाओं के आँसू धोकर सजना जीवन-गान है ॥
घोर अतल में सोया नव विश्वास जगाएं आज हम।
सीमाओं को तोड नया इन्सान बनायें आज हम ॥

राष्ट्र-सुरक्षा के लिये सीमा पर तनात जवान जब अपना बलिदान देते हैं तो किसान भी पीछे क्यों रहे ? जिस प्रकार जवान शत्रु की चुनौती स्वीकार करते हैं किसानों को भी उस चुनौती को स्वीकार करना है। औरों के अन्न पर न पलकर अपने देश की उर्वर भूमि में ही इतनी पैदावार करनी है कि हम अन्न के लिए दूसरों के ऋणी न हो जायें और पुनः दासता स्वीकार न करना पडे। जब कि जवानों ने अपने गर्म उबलते रक्त की मांग दी है तब किसानों को भी वहां उन्हीं खेतों में नई फसलें तैयार करनी हैं। कृषक के कदम पीछे क्यों रहें ? राष्ट्र निर्माण में उसका भी सहयोग उतना ही आवश्यक

१ पु० मनुगुंज। मेघराज 'मुकुल' पृ ८१ प्र स १९६७
२ वही पृ म ११

है जितना कि सुरक्षा प्रहरियों का। भूखे पेट न तो निर्माण हो सकता है न ही राष्ट्र की सुरक्षा—

> जवानों ने चुनौती शत्रु की स्वीकार की जैसे।[1]
> किसानों ! यह चुनौती भी तुम्हें स्वीकार करना है।।
> न लेकर अन्न औरों का हमें है मांगना जनी
> युगों की दासता का अब तुम्हें संहार करना है।
> किसानों ! हो तुम्हारे भी कदम पीछे नहीं रण में
> जवानों के कदम पर ही कदम तुमको मिलाना है।
>
> ० ० ० ० ०
>
> जवानों ने बहाया रक्त की जो खाद है जिसमें
> किसानों ! अब वहां तुमको नई फसलें उगाना है।।

राष्ट्र को प्रगति पथ पर अग्रसर होते देखकर कवि हृदय प्रसन्नता से पुलक उठता है। अपने भारत के भाल की चमक से कवि के उर की प्रसन्नता गीतों में वह निकलती है। गीतकार के गान नव निर्माण की प्रेरणा देते हैं।

निष्कर्ष —

हिन्दी गीत-काव्य में स्वतन्त्रता के पश्चात् देश के जीवन में आने वाली निर्माण-सम्बन्धी प्रवृत्तियों की विशद अभिव्यक्ति हुई है। कवियों ने राष्ट्र के एक स्वस्थ स्वरूप की कल्पना करके जन-श्रम का महत्त्व प्रतिपादित किया है। उनके द्वारा नव निर्माण के स्वप्न देखे गये हैं। राष्ट्रीय भावना का यह पक्ष अत्यन्त सशक्त तथा नई परिधि का संयोजन करने वाला है। इस परिधि में भारत को नए पथ पर अग्रसर होने का अवसर मिलता है। अतः हिन्दी कवियों की राष्ट्र निर्माण के लिए व्यक्त आकांक्षा राष्ट्रीय भावना की एक महत्त्वपूर्ण निधि है।

---

[1] साप्ताहिक हिन्दुस्तान ३० जनवरी १९६६ मोहनलाल त्रिवेदी पृ० १२

/

राष्ट्रीय एकता की अभिव्यक्ति | ७

राष्ट्र को एकता के बंधन में बांधने के लिए जाति विरोधों का दूर करके जाति-गत एकता का होना आवश्यक है। अत कवि जातीय एकता की प्रेरणा के गीत गा उठे। एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र से वमनस्य नही होना चाहिए। प्रत्येक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र के प्रति आत्मीयता एव सहानुभूति के भाव रखने चाहिए। अन्य राष्ट्रो के प्रति भी उदार भाव रखने चाहिए अन्यथा एक राष्ट्र अपनी प्रगति के लिए अन्य राष्ट्रो को हानि पहुँचाने की चेष्टा करता है। अत आवश्यकता है भावात्मक एकता की। गीतो के सृजन ने इसे अभिनव मोड दिया और राष्ट्रीय एकता की प्रेरणा के गीत गाये गये। प्रस्तुत प्रकरण के अन्तगत उन गीतो को लेने का प्रयत्न किया है जिनके द्वारा राष्ट्रीय एकता की अभिव्यक्ति होती है। कुल मिलाकर सात वग निश्चित किए हैं—

१ राष्ट्रीय संस्कृति पर गौरव
२ राष्ट्र भाषा प्रेम
राष्ट्रीय सम्पत्ति के प्रति आत्मीयता
४ राष्ट्रीय एकता की प्रेरणा
५ देशाभिमान की अनुभूति
६ देश की प्रकृति से प्रेम
७ सम्प्रदायवाद का विरोध

१ राष्ट्रीय संस्कृति पर गौरव —

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी गीत-काव्य म राष्ट्र की संस्कृति को अनेक रूपो म स्मरण किया है। उसके प्रति गौरव के भाव व्यक्त हुए हैं। अपने राष्ट्र की सांस्कृतिक निधि पर किसको गव न होगा? राष्ट्र प्रेमी गीतकारो ने स्वतन्त्रता पाने के पश्चात् उन निधियो के भी गान गाये जो अत्यन्त प्राचीन थी। प्राचीन कलाकृतियों का निखरने हुए वन प्रान्ति अमूल्य पुस्तकों पर भी गौरवपूर्ण दृष्टि गई और उन अनुभूतियों की अभिव्यक्ति गीतों मे हुई।

गीतकार सजग है—सजग है उसकी कल्पना। वह अपने एक-एक गीत की इंट राष्ट्र के निर्माण नवन में सजा रहा है। गीतकार की लेखनी अथक परिश्रम से एक परिपुष्ट राष्ट्र का रखाओं का अंकन कर रही है। श्री आरसीप्रसाद सिंह अपनी अतीत की संस्कृति के सातों को वर्तमान की वाणी बनाकर कहते हैं—

तुम जागो तो जग अजन्ता और एलोरा की वाणी[1]
वैशाली, नालन्दा जाग बना भारती कल्याणी,
ऋषि मुनियों की त्याग-तपस्या, पुण्य त्रिवेणी तीर जागे।
जलिया वाला बाग जग और साबरमती हिलार जगे।

देश-प्रेम की दीप शिखा के
परवाने तुम जागो तो,
मातृभूमि के पहरेदारो।
हिमवानो तुम जागो तो॥

कृष्ण एवं राम का अवतार पृथ्वी के कल्याण हेतु हुआ था। अत दुष्टों के नाशक इन दोनों को भगवान के रूप में पूजने की परम्परा विद्यमान है। राम एवं कृष्ण के मंदिर पूरे भारतवर्ष में न जाने कितने होंगे। शिवजी ने देवताओं की रक्षा हेतु विषपान किया था। उनको भी बहुत ही पूज्य दृष्टि से देखा जाता है। मराठे वीर शिवाजी एवं राणाप्रताप का प्रताप अभी हिन्दुस्तानी भूले नहीं हैं। इन सभी को स्मृति में लाकर गीतकार ने अभिव्यक्ति की है—

कोटि-कोटि कण्ठों का यह जयकार लो।[2]
तट हृदय में वाण राम का घूमता
कण-कुहर में नाम कृष्ण का गूंजता

आत्मा में शिव के ताण्डव की छाप है
रक्त शिवा, राणा का मन में झूमता।
नवयुग का यह प्रलयंकर हुंकार लो॥
कोटि-कोटि कण्ठों का यह जयकार लो॥

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ७ जुलाई १९६२ आरसीप्रसादसिंह पृ १४
२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १ मार्च १९६१, बद्रीनारायणदास

राष्ट्रीय एकता के लिए भावनात्मक एकता की आवश्यकता है। धार्मिक एकता भी आवश्यक है इस रूप मे कि सभी धर्मावलम्बी एक दूसरे के धम को आदर की दृष्टि से देखें। राम कृष्ण एव शिव समस्त भारत म भगवान् के रूप मे पूजे जाते हैं। इनके गुणगान से इनकी स्मृति से पुन चेतना जाग्रत होती है। जिन्होंने भारत की रक्षा के लिए अपने प्राण त्याग दिय किन्तु गुलामी स्वीकार न की। उन्हीं की शौय गाथाए गाकर गीतकार भारत को पुन सचेत करना चाहता है। भारतीय सस्कृति का एक और स्मृति चित्र द्रष्टव्य है—

जय जनता जय अमर भावना जय गौरव गाथा।[1]
अन्नपूर्ण भुवन विजय-श्री, जय भारत माता॥
इतिहासों की सृष्टि सृष्टि की पुण्य पाँडुलिपि भी
शतरूपा मानव महतारी, जग पूजित प्रतिमा
प्रतियोगिता सभ्यता सवना सत समष्टि सदया।
वीर प्रसविनी सवन्वग अम्बिके विषन्‍ विजया॥
जय जनता जय अमर भावना जय गौरव गाथा।
अन्नपूर्ण भुवन विजय श्री, जय भारत माता॥

बच्चन भी अपने काव्य के वाहन पर विगत सस्कृति को रखे हुए नवीन सस्कृति के लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहे हैं —

मरा कवि गज-गरिमा समझ मरी कविता हो गजगामी।[2]
एलारा एरावत जसे
भार पवताकार उठाए
भारत की प्राचीन कला का
सस्कृति का बे पीठ झुकाए
उसी तरह स नए हिन्द का
नई जिन्दगी नई जवानी
ताकत मस्ती हस्ती बनने की मरी वाणी हो कामी।
मेरा कवि गज-गरिमा समझ मरी कविता हो गजगामी॥

गज शक्तिशाली होता है। अत कवि की कामना है कि उसका अन्तर (कवि) गज गरिमा समझ और कविता गजगामी हो। भारतीय सस्कृति के

१ उमग मघराज मुकुल' पृ स ६
२ आरती और अगारे, डा० बच्चन पृ स २५

श्रेष्ठ प्रतीक अजन्ता एवं एलोरा हैं जो पवनावतार भार को उठाए हुए हैं। इसी प्रकार नये भारत की नई जिन्दगी और नई जवानी शक्तिशाली हो। वाणी यदि कामी बने तो केवल ताकत, मस्ती एवं हस्ती की जिससे कि कविता गजगामी हो। कवि का स्वयं का शौर्य लेखनी प्रसूत होना है जिससे अनेक हृदयों को प्रेरणा मिलती है प्रकृत हृदय शक्ति, अपार बल अनुभव करता है।

परशुराम का शाप एवं शौर्य जगत् प्रसिद्ध है। कवि ने उन्हीं के माध्यम से वर्णन में संस्कृति की सीख देकर देश का शौर्य जगाकर शत्रु को कुचल देने के लिए राष्ट्र का संस्कृति का गौरव गान किया है—

जनता जगी हुई है।[1]
मुख में वेद, पीठ पर तरकस, कर में कठिन कुठार।
सावधान! ले रहा परशुधर फिर नवीन अवतार
जनता जगी हुई है।

वेदों का संस्कृति का आदि काव्य मानते हुए गानकार की अभिव्यक्ति—

तुम वेद पुरातन नहीं-नहीं, [2]
तुम तो संस्कृति के आदि काव्य
मानव प्रयास की प्रचुर राशि।
अनजाने चर्चित सब मूल भाव्य ॥

गंगा यमुना ऋषि आश्रम पर्व आदि धार्मिक भावना की अभिव्यक्ति के साथ एकता की प्रेरणा भी देते हैं। ऋषियों का तो समस्त जगत् मात्र का समभाव से देखना पड़ता था। उनके दृष्टिकोण की विशालता का परिचय अनेक कथाओं एवं पुस्तकों के माध्यम से मिलता है। जीवमात्र की सुरक्षा का ध्यान रखने वाले केवल संत ही होते थे। पर्व के अवसर पर गंगा स्नान कुछ व्यक्ति ही नहीं करते थे समस्त भारत के नर नारी स्नान का पुण्य लूटने के लिए गंगा के किनारे एकत्रित होकर दान आदि भी करते थे। अब भी उसका महत्त्व कम नहीं हुआ है। आज भी एकत्रित होकर गंगा-स्नान करते हैं। मेला लगता है। स्नान के अवसर पर जातिगत भेद भाव नहीं रह जाता सभी धार्मिक भावना के साथ स्नान करते हैं। इस भावना से भी राष्ट्रीय एकता की प्रेरणा सुदृढ़ होती है—

---

१ समाज कल्याण जनवरी १९६०, पृ स — रव रामधारीसिंह दिनकर
२ म—र—र ध नभून्यास सक्सेना, पृ सं ४७ दि म १९३१

उवरा आप सस्कृति भू पर [1]
गगा-यमुना क स्रोत सजल ।
ऋषियो के आश्रम यन माग,
तत्वालोचन चिन्तन विराग
वह आत्मशोध का क्षय माग
पीडित मानवता को विराम
दुस्तर जीवन का पथ सरल
उवरा आप सस्कृति भू पर ।
गगा यमुना के स्रोत सजल ।।

भारत के ग्राम जलवायु की दृष्टि स बहुत स्वस्थ हैं जबकि उनकी दुदशा के अनेक दयनीय चित्र कवियो ने चित्रित किये हैं । कृपको की दुद शा पू जीपतियो द्वारा शोपण किये जाने के कारण हुई । यद्यपि अब उनका स्तर ऊचा करने का प्रयास चल रहा है । भूमि वितरण स भी यह समस्या बहुत कुछ सुलझ चुकी है । सरकार ने अनेकों सुविधाए प्रदान की हैं । वास्तव में जीवन शिल्पी का धाम ग्राम ही है—

यह ग्राम वही यह ठाम वही [2]
जीवन शिल्पी का धाम वही,
अकित हरियाली सन यहाँ
गगा यमुना की रेत यहाँ
कोटा की काली बाढ यहाँ
सावन घन घटा प्रगाढ यहाँ
अधड आये आये तूफान
झझा गाये, भूकम्प-गान
सस्कृति अणु-अणु हो रूपवान ।।

श्री विश्वेन्द्र शर्मा ने भारतीय सस्कृति के गौरव-पूण इतिहास का स्मरण करते हुए कहा है—

माटी मरे देश का चन्दन है ।[3]
कोटि कोटि आज उगी का वन्दन है ।

---

१ मन्वन्तर शम्भूदयाल सक्सेना पृ० ४१

२ वही पृ स० ७८

३ योजना रच विश्वेन्द्र शमा अगस्त १९६२

माटी मेरे देश की चन्दन है ।।

इसके इतिहासों के आखर स्वर्ण के,
राम कृष्ण के भीम युधिष्ठिर कर्ण के,
वाणी में गौतम की गरिमा बोलती
शौर्य-कथाएँ सबकी आँखें खोलती,
बैर किसी से नहीं प्रेम ही धर्म है,
समझा हमने ही दर्शन का मर्म है
हम अनेक में एक बने हैं जो रहे—
कोटि नदी का जल सागर बन भी रहे
कितने तन हों एकमात्र स्पन्दन है ।।
माटी मेरे देश की चन्दन है ।
कोटि नमन्नि आज इसी का वन्दन है ।।

चन्दन को पावन माना गया है । देश की माटी उस चन्दन के समान ही पावन है । अतः उसकी अर्चना में कवि ने गीत गाया । क्योंकि इस देश का इतिहास स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया है जिनमें राम, कृष्ण, भीम, युधिष्ठिर, कर्ण, गौतम आदि सभी की गरिमा व्यक्त हुई है । इन व्यक्तियों की शौर्य-कथाएँ सबकी आँखें खोल देती हैं । प्रेम ही धर्म है । भारतीय दर्शन शास्त्र की महिमा अपूर्व है क्योंकि यहीं के तत्त्वज्ञानी चिन्तकों ने दर्शन का मर्म समझा है । कवि एकता की प्रेरणा देने के लिए व्यष्टि की समष्टि में निहित कर दार्शनिक व्याख्या प्रस्तुत करता है । अनेक होकर भी एक होना वैसा ही है जिस प्रकार कई नदियों का जल एक समुद्र में ही विलय हो जाता है । तन चाहे कितने ही हों परन्तु स्पन्दमान ही महत्वपूर्ण है ।

इस प्रकार ध्वस्त संस्कृति के प्रतीक, अतीत की संस्कृति के माध्यम से गीतकारों ने नये सृजन को शब्द दिए हैं । चेतना दी है और एकता की भावना उद्बुद्ध की है । उनका मन्तव्य एक ही है । उनका सिसृक्षा का उद्देश्य है कि विगत की भाँति आज भी समस्त भारत की संस्कृति एक हो, उसमें विभेद न हो । तभी राष्ट्रीय भावना शक्तिशाली एवं समृद्ध हो सकती है ।

राष्ट्र भाषा प्रेम—

स्वतन्त्रता के पश्चात् हमारे राष्ट्र का संविधान अलग बना सभी कुछ परिवर्तित हो गया किन्तु राष्ट्र भाषा का प्रश्न बनकर खड़ा हो गया । विदेशियों के शासनाधिकार के कारण अंग्रेजी भाषा सर्वत्र अनिवार्य थी । स्वतन्त्रता के पश्चात् भी भारतवासियों पर वह भार स्वरूप लदी हुई थी और उसका बोझ कम नहीं हुआ था । इस थोपी हुई भाषा के बहिष्कार के लिए

-ृ । राष्ट्र भाषा हिन्दी हो इसके नारे लगाये गये इसकी का प्रचार किया गया तब कहीं हिन्दी का राष्ट्र भाषा या गया। राष्ट्र भाषा वही भाषा हो सकती है जिसका जिसे बहुसख्यक सुगमता से समझ सकें। जिसका साहित्य स५ त्य हो। देवनागरी को ही इसके योग्य समझा गया। खड़ी बोली या हिन्दी का शुद्ध स्वरूप आज प्रत्येक राज्य मे स्वीकार किया गया है। यद्यपि अन्य भाषा भाषियो ने उपद्रव भी किये और नासमझी मे राष्ट्र की सम्पत्ति को हानि भी पहुँचाई परन्तु राष्ट्र भाषा का पद हिन्दी के अलावा अन्य भाषा नही ले सकती थी। सर्वाधिक प्रचलित यही भाषा है। इसकी श्रेष्ठता के प्रतीक हैं वे भाषा भाषी जो अपने प्रान्त की भाषा के अलावा भी यदि कोई भाषा जानते हैं तो वह है—हिन्दी। स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी गीत-काव्य मे राष्ट्रीय एकता के लिए राष्ट्र भाषा प्रेम की जो अभिव्यजना हुई है उसमे हिन्दी की गुण गाथा गाकर अन्य भाषाओं के साथ उसके निकट सम्बन्ध को प्रदर्शित किया है—

> प्रौढ़ हुई हिन्दी के सग सग सभी राष्ट्र भाषाए[1]
> गुरु नानक गोविन्दसिंह ने हिन्दी का गुण गाया
> बगभूमि के केशव बकिम ने इसको अपनाया
> खुसरो स इशा अल्लाखाँ तक ने इसे सवारा
> दयानन्द गाँधी गुजर के हिन्दी उनका नारा
> महाराष्ट्र का लोकमान्य आज्ञा न उसे भुलाए—
> प्रौढ़ हुई हिन्दी के सग-सग सभी राष्ट्र भाषाए॥

हमारे राष्ट्र के व उद्धारक जिनके सहयोग से भारत गुलामी से मुक्ति की साँस लेने वाली स्थिति तक आ सका व भिन्न प्रान्तीय होने पर भी हिन्दी को ही मान्यता प्रदान करते थे। सिक्खो के गुरु नानकसिंह एव गोविन्दसिंह ने भी गुरुमुखी को ही महत्त्व नही दिया अपितु हिन्दी का गुण गाया। धर्म प्रचार के लिए अधिक जनसख्या चाहिए। जन-जन की भाषा मे जब तक धर्मोपदेश न दिए जायें तो धर्म-ग्रहण करने वाली जनता बहुसख्यक न होकर केवल वहाँ भाषा विशेष को जानने वाली ही होगी जो धर्म की उस भाषा को समझकर उपदेश या नीति की बातें ग्रहण कर सकें। तभी तुलसी ने उस युग मे भी ऐसी भाषा अपनाई थी जो बहुसख्यक जनता की भाषा था। केवल विद्वज्जनों की पाण्डित्य-पूर्ण भाषा न थी। हिन्दी धीरे धीरे प्रौढ़ होती गई

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ३ जून १९६३ रच० सिद्धिनाथ मिश्र पृ० १८

और इसके साथ साथ सभी भाषाएं समृद्ध होती गई। बंगाल के बंकिम एवं बंकिमचन्द्र ने भी हिन्दी का गुणगान किया। बंकिमचन्द्र का 'वन्दे मातरम्' कितनी प्रसिद्धी पा चुका है जो सब विदित है। इंशाअल्लाखां ने भी गद्य रचना हिन्दी में की जबकि उर्दू में कर सकते थे। स्वामी दयानन्द एवं महात्मा गांधी जो कि गुजरात के थे वे भी हिन्दी का ही नारा लगाते थे। महाराष्ट्र के लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने भी हिन्दी का आदर्श ऊंचा रखा। विभिन्न प्रान्त के इन महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों ने हिन्दी की ही प्रतिष्ठा की, उसी का गुणगान किया। हिन्दी को ही सवारा और प्रौढ़ता प्राप्त हिन्दी को राष्ट्र भाषा के पद पर आसीन किया।

राष्ट्र भाषा हिन्दी हो इसका नारा लगाने वालों का उन साहित्यकारों का भी योगदान नहीं भुलाना चाहिए जिन्होंने राष्ट्र भाषा हिन्दी को इस योग्य बनाया कि वह व्यापक रूप में विशाल क्षेत्र के लिए उपयोगी प्रमाणित हो। जिन साहित्यकारों के सहयोग से हिन्दी आज इस परिपक्व एवं परिमार्जित रूप तक पहुंचा है, हिन्दी का साहित्य समृद्ध हुआ है वे धन्यवाद एवं प्रशंसा के पात्र हैं। भारत के विख्यात डा० रघुवीर ने हिन्दी शब्दकोष प्रदान कर यह सिद्ध कर दिया है कि एक भी शब्द ऐसा नहीं है जो हिन्दी में न हो। कठिन से कठिन अंग्रेजी शब्दों का भी हिन्दी में पर्याय प्रस्तुत कर सराहनीय कार्य किया है।

गीतकार भरत व्यास की कल्पना देखिए उनके गीत में—
अबकी बार राष्ट्र के घर घर हिन्दी की दीवाली हो—

इसके शब्द शब्द दीपक बन
जन-गण मन में मोद भरें
संस्कृति के सुललित श्लोकों से
भारत माँ की गोद भरें

जो कोनों में सुमन खिलाये वह गुलाब की डाली हो।
अबकी बार राष्ट्र के घर घर, हिन्दी की दीवाली हो॥[1]

नवीन भावों से हृदय प्रफुल्लित हो जाता है। हिन्दी की दीपावली मनाने के लिए सब एक होके लिए आगे आयें। राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रति ऐसा अनोखी महान कल्पना एवं श्रद्धा का मिला जुला भाव असीम प्रेम का परिचायक है।

---

१ गीत भरा संसार। भरत व्यास पृ ११

कविवर मथिलीशरण गुप्त अनचाही असहाय बालिका के समान पडी हिन्दी भाषा को उठाकर ऊपर लाये थे। उनके ही कारण हमारी मातृभाषा हिन्दी का प्रारम्भिक और वास्तविक विकास सभव हुआ। अत बच्चनजी ने उनके प्रति आभार प्रदर्शन किया—

> मथिलीशरण हिन्दी के हित आए।[1]
> पडी हुई थी एक बालिका,
> अनचाही असहाय
> अल्पवयस की देख विवश-सी
> कवि-छाती भर आई
> मिथिलापति मथिली कण्व मुनि
> शकुन्तला को जसे
> वसे ही उसको गोद उठाकर घर लाए।
> मथिलीशरण थे हिन्दी के हित आए॥

शकुन्तला एव दुष्यन्त की प्रणय-कथा प्रसिद्ध है। उसी शकुन्तला को कण्व मुनि उठाकर लाये थे जबकि वह लाचारी में बालिका (बच्ची) रूप मे असहाय होकर भूमि पर पडी थी। इस कथा के माध्यम से हिन्दी का स्वरूप स्पष्ट करने का कवि का प्रयास है। मथिलीशरण हिन्दी के हित ही आये थे क्योंकि उनकी समस्त रचनाएँ हिन्दी मे ही हैं।

हमारे गीतकार भाषा के एक सशक्त एव स्वस्थ स्वरूप को देखने के लिए प्रयत्नशील एव सजग हैं। क्योंकि जब तक भाषा की एकता या राष्ट्र की भाषा एक न हो तब तक सम्पूर्ण राष्ट्र का भू खडता अखण्डता के तारतम्य म एकसूत्र हो गुथ नहा सकती। राष्ट्रीय भावना के अन्य पोषक तत्त्वो के साथ गीतकार हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने के लिए सजग एव कमनिष्ठ थे। अत उनका आन्दोलन सफल गया।

जब तक हिन्दी अंग्रेजा दोनों भाषाए अनिवाय रहीं गीतकार बेचैन रहे। उन्हें अंग्रेजी भाषा का यह आधिपत्य स्वीकाय न था। हिन्दी पर अंग्रजी की छाप उन्हें कफन समान लगी। अंग्रेजी का बलिवेदी पर हिन्दी को बलिदान करना उन्हें न भाया। जो अंग्रेजा को सहभाषा बनाय रखना चाहत थ उन्हें कवि की लेखनी ने ललकारा कि यदि हिन्दी राष्ट्र माता बनने के योग्य नहा तो रहने दे लकिन इसका अपमान न कर। कवि का विद्रोह

१ आरती और अगार डॉ० बच्चन पृ० स० ६२

बहुत ही तीव्रता से व्यक्त हुआ है। व्यंग्य बहुत चुभता हुआ एवं करारा है कि माना कि हिन्दी बड़े घर की बेटी नहीं है। यह खेतों की खलिहानों की मजदूरनी है। यह अभागिन दो चार अभागे ऋषियों की माँ है। कुछ अनचीन्हे कवियों की जननी है। तो भी इस प्रजातंत्र युग में दो भाषाओं का प्रयोग करने वालों हिन्दी को सतरंगी चुनरी के बदले कफन प्रदान न करो।

ओ प्रजातंत्र में दो भाषाओं का प्रयोग करने वाले[1]
हिन्दी को सतरंगी चुनरी के बदले कफन प्रदान न कर!
अंग्रेजी की बलिवेदी पर माँ हिन्दी का बलिदान न कर,
अंग्रेजी का सहभाषा का अधिकार दिलाने वाले सुन।
माना कि राजमाता बनने के योग्य नहीं तो रहने दे
रहने दे इसे नौकरानी लेकिन इसका अपमान न कर।

० ० ० ० ०

यह माँ माना यह बेचारी, बेटी है न बड़े घर की,
मजदूरिन है खेतों की खलिहानों की आँगन भर की
यह अभागिन माँ है उन दो चार अभागे ऋषियों की
यह अभागिनी जननी है थोड़े अनचीन्हे कवियों की।

भारत की भाषा कौन सी हो इस पर वाद विवाद हुए उपद्रव हुए। परन्तु गीतकार के लिए यह समस्या कोई समस्या न थी। इस समस्या का समाधान कवि के शब्दों में व्यक्त हुआ है —

यहाँ भारत की भाषा है !![2]
जिसमें जननी जन्मभूमि है स्वर्गादपि महान!
बातें जिसमें इन्सानों से करता है भगवान!
वही भारत की भाषा है,
अर्जुन भरे पसीने से धरती का अर्घ्य चढ़ाता,
खून लगाकर माथे से कहता जो भारत माता,
सबका भरता पेट मगर जो खुद भूखा रह जाता
फिर भी बजती जाती जिसकी टूटी हुई थकान,
दुनिया के सागर से गहरी, इक मोती मुस्कान

[1] साप्ताहिक हिन्दुस्तान १२ सितम्बर १९६५ श्री ब्रजमोहनसिंह ठाकुर पृ० १४

[2] साप्ताहिक हिन्दुस्तान २४ जनवरी १९६५ रामप्रसाद पांडेय 'प्रकाश' पृ ६

उस किसान की भाषा ही भारत की भाषा है।
वही भारत की भाषा है !

हिन्दी विरोधियों के सम्मुख समस्या का समाधान उचित तरीके से प्रस्तुत कर भाषा के लिए न हिन्दी शब्द का प्रयोग किया है न अन्य भाषा का। मात्र इतना ही कहा है जिसमे भारत का किसान बातें करता है स्वयं भूखे रहकर सबका पेट भरता है उसी किसान की भाषा भारत की भाषा है। इस प्रकार अनेक रूपों में राष्ट्र भाषा प्रेम की अभिव्यक्ति का स्वरूप स्पष्ट हुआ है।

३ राष्ट्रीय सम्पत्ति के प्रति आत्मीयता —

गीतकारों ने राष्ट्रीय सम्पत्ति के प्रति अपना अगाध प्रेम प्रगट किया। मुग्ध दृष्टि ने लहलहाते खेतों का हरे भरे वृक्षों का निरीक्षण किया मधुप गुंजन हृदयगम किया। पुष्पों का पुष्पित होना भी देखा एवं पिक कूजन भी सुना। सर्वत्र हरियाली एवं खुशहाली देखकर कवि धरती की माटी को प्रणाम किए बिना कैसे रहता ?

ज्योति भूमि [1]
जय भारत देश
ज्योति चरण धर यहा सभ्यता उतरी तेजोन्मेष

समाधिस्थ सौन्दर्य हिमालय
श्वेत शांति आत्मानुभूति लय
गगा यमुना-जल ज्योतिर्मय
हसता जहाँ अशेष !
ज्योति भूमि
जय भारत-देश !!

भारत की भूमि जिसकी प्रकृति हरी भरी मन भावनी है जहाँ विशाल पर्वत स्थित है और हैं गगा यमुना सी पवित्र नदियाँ। उसी भारत देश की पुण्य भूमि और धरती माता का गीतकार जय बोलता है। देश की माटी प्रणाम-योग्य है उसी के अभिवादन हेतु —

माटी तुझे प्रणाम ![2]
मेरे पुण्य देश की माटी ! तू कितनी अभिराम !

---

१ चिदंबरा सुमित्रानन्दन पन्त म प्र० १९५६
२ रसवन्ती पत्रिका डा० प्रेमप्रकाश गौतम सन् १९६३

तू कितनी अभिराम !!
तुझे लगा माथे से सारे कष्ट हो गए दूर,
क्षण भर में ही भूल गया मैं शत्रु यन्त्रणा क्रूर
सुख-स्फूर्ति का इस काया में हुआ पुनः संचार
लगता जैसे आज युगों के बाद मिला विश्राम !
माटी तुझे प्रणाम !

महापुरुषों के श्रेष्ठ कार्य कलापों को गीतकारों ने अभिव्यक्ति प्रदान की और गर्व व्यक्त किया। देश के लिए तन मन, धन सभी कुछ न्योछावर करने के लिए तैयार, गीत की सरस व्यंजना देखिए—

स्वर्णदान क्या दान देश पर तन मन प्राण निछावर है।[1]
यही भूमि है जहाँ धर्म के लिए सारथी कृष्ण बने
यही भूमि है जहाँ हथेली पर रखते सब सिर अपने
मुकुट हिमालय भारत माँ का उस पर पग धरने वाले !
तुमसे क्या हम नहीं काल से भी आगे बढ़ने वाले
भारत के गौरव हिमगिरि पर सारे गान निछावर हैं।।
स्वर्ण-दान क्या दान देश पर तन मन प्राण निछावर हैं ।।

हिमालय के लिए कितने ही कवियों ने यशोगान किया है। यह भारत का गौरव है और इसी कारण समस्त गीत इस पर न्योछावर हैं। इस भूमि पर अधर्म का बोलबाला ज्यादा न रहा। अधर्मी धर्मी व्यक्तियों द्वारा नष्ट कर दिये गये। भारत की भूमि अन्याय भार नहीं वहन कर सकती। उसके लिए नीति धर्म न्याय मान्य है अनीति अधर्म अन्याय का स्थान नहीं। पाण्डवों को भूमि न देकर अत्याचार करके अपमानजनक का आह्वान देने वाले दुर्योधन एवं कौरव-वंश के सौ पुत्रों को ही युद्ध में पराजित किया उन्हीं कृष्ण ने जिनको आज भगवान मानकर पूजा जाता है। न्याय एवं धर्म के युद्ध में कृष्ण सारथी बने पर भी न हिचकिचाए और नीति का उपदेश देकर अर्जुन को धर्मोपदेश दिया। यही भारत की भूमि जहाँ देवताओं व राक्षसों का जन्म हुआ राक्षसों का संहार भी हुआ। राम एवं कृष्ण ने दुष्ट एवं राक्षस-वृत्ति वालों का दमन करके शान्ति का साम्राज्य स्थापित किया था। शौर्य की कमी कभी भी यहाँ नहीं रही। भारत को माँ का सम्मान दिया जाता रहा है और

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ७ अप्रैल १९६३ चन्द्रगुप्त। ओझा पृ० ४०

भविष्य में भी यही सम्मान बना रहे इसके लिए साहित्यकार पूरा योगदान देते रहेंगे। भारत के वीरों की शौर्यकथाएं आज भी कही जाती हैं—

यह गांधी का देश यहां तो गौतम की धरती है[1]
यही शिवा राणा प्रताप की यश धारा बहती है॥
यहां बहादुर बच्चों ने शेरों के दांत गिने थे
यों कितनी ही अमर कथाएं युग वाणी कहती है
उसी वीरता के अभाव को तोड़ेंगे जंजीरें।
हम बदलेंगे अपने प्यारे भारत की तस्वीरें॥

वे गाथाएं जो युगों से कही जाती रही हैं उनकी मौखिक या लिखित परम्परा आज भी विद्यमान और सक्रिय है। जब-जब देश पर विपत्ति के बादल मण्डराये हैं उन्हीं शौर्य गाथाओं के माध्यम से उत्साहप्रद प्रेरणा देने का प्रयास किया गया है। उस युग की वीरगाथाएं कितना कथाएं कहती हैं उसे सुनकर ही वीरों के हृदय उत्साहपूर्ण हो रणक्षेत्र हेतु तत्पर हो जाते हैं। गांधी गौतम शिवाजी राणा प्रताप हमारे राष्ट्र के अग्रणी हैं। इनमें पूर्ण आत्मावना रहते हैं गीतकार और समयानुकूल इनका शौर्य-गाथाओं को गीतों में गाया है।

मोहन जोदड़ो हड़प्पा की प्राचीन सभ्यता के अवशेष आज भी उस युग की उन्नति की कथा कहते हैं। उसी संस्कृति के विषय में—

जो इधर मोहन जोदड़ो पड़ा
पास ही हड़प्पा स्वर्ण जड़ा
चिर गौरव विन्ध्य महान खड़ा

सबसे अपना वैभव बिखरा युग युग ने जिसका गान किया।
अपने मन्वन्तर में हमने अपनी संस्कृति को प्राण दिया॥

गंगा यमुना अजन्ता एलोरा तीर्थ-स्थान सारनाथ सांची का स्तूप तथा स्थापत्य कला की अन्य वस्तुओं के सम्बन्ध में गीतकार ने गौरव प्रगट कर उनकी रक्षा के लिये मार्ग किया है उनकी सुरक्षा की चेतना भरी है। यह गीतकार की राष्ट्रीय सम्पत्ति के प्रति की परिचायक भावना है। सूर मीरा कबीर जो गान गाकर चले गये उसी की स्मृति में गीतकार की लगनी—

पर्वतों के शिखर से बुलाता तुम्हें भारती।[3]
मन्दिरों के शिखर से बुलाता तुम्हें आरती॥

० ० ० ०

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ८ जुलाई १९६ जगदीशचन्द्र वर्मा पृ ४०
२ गौरव गान भाग १ नन्द पृ ?
३ गौतम शरद मिश्र पृ सं ६१

सूर, मीरां कबीरा, जिस गा गए शान से,
वे जिसे सींचकर ले गए थे बियाबान से
जा मिली कण्ठों में बनी प्यार की धूप में
जिन्दगी की धरोहर वही गीत रूप में ।।

राष्ट्र की सम्पत्ति के लिए हमारे गीतकारों ने जिस स्नेह का आत्मीय पूर्ण प्रदर्शन किया है वह नाना प्रकार के भावों को लेकर गीतों में स्पष्ट हुआ है। उनके इस गीतों में समस्त भारतवासियों को अपनी संस्कृति के प्रति प्रेम करने की प्रेरणा निहित है। उनकी सजगता भावनात्मक एकता के परिपोषण के लिए है। अंतिम तथ्य यही है—किसी भी प्रकार से राष्ट्रीय भावना का परिष्कृत रूप स्पष्ट करना।

४ राष्ट्रीय एकता की प्रेरणा —

राष्ट्र को एकता के बंधन में बाँधने के लिए जाति विरोधियों का दूर करके आलिंगन एकता का होना आवश्यक है। अतः जातीय-एकता और प्रेरणा के भी गीत गाये गये। सामाजिक संगठन में भेदाभेद के दुष्परिणाम स्वरूप भावात्मक एकता में जो सबलता आ गई है उस विघटन तत्त्व का गीतकार सहन करने में असमर्थ रहा। गीतकार की अभिलाषा है कि ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य एवं शूद्र में भेद भाव न हो। क्योंकि सभी मानव हैं। एक ही सृष्टिकर्त्ता की सन्तान हैं। वर्ण भेद-सम्बन्धी विचारों को मिथ्या बताकर उसके विषाक्त प्रभाव को दूर करने का प्रयास किया है—

वृथा मत लो भारत का नाम[1]

० ० ० ०

भारत एक भाव जिसको पाकर मनुष्य जगता है।
भारत एक जलज जिस पर जल का न दाग लगता है।।

भारत शब्द से ही एक भू की कल्पना आती है और एक भाव समूचे राष्ट्र के प्रति उभरता है। भारत से एक राष्ट्र का बिम्ब बनता है। समाज की एकता ही राष्ट्र की एकता है। इसीलिए आपसी फूट को समाप्त कर समूचे एक राष्ट्र की स्थापना के प्रयत्न में संलग्न है गीतकार—

आओ भाई हम सब मिलकर ज्योति जलाएं ज्ञान की।[2]
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य, शूद्र हैं सब संतति भगवान की ।।
आज हटा दो मानव मन से भेद भाव के नारों को।

१ शान्तिनाथ रामधारीसिंह दिनकर पृ २४
२. भावना मई, १९६२, भवानीशंकर पचारिया

आज करो तुम श्रम की इज्जत छो॰ के मिथ्या चारो को ।।
आओ अर्थी आज जलाए फूट फाट अज्ञान की ।
आओ भाई हम सब मिलकर ज्योति जलाए ज्ञान की ।

जातीय एकता का प्रयत्न करते हुए कविवर बच्चन ने अपने एक गीत की कुछ पक्तियो म समस्त देशवासियो से कहा है कि अज्ञानवश हम जाति विभेद को अपनाकर विवेकहीन बन गये हैं। इसके परिणाम स्वरूप समाज की शक्ति विभाजित हो गई पर त अब तो सब को मिलकर एक सूत्र में बध जाना चाहिए—

समस्त देश की बस एक टेक हो [१]
समस्त छिन्न भिन्न जाति एक हो
विमूढता जहाँ वहा विवेक हो
यही प्रभाव
शब्द शब्द ?
म भरो ।।

भारत भूमि पर बसने वाले असख्य व्यक्तियो को एक साथ मिलने की प्रेरणा देते हुए गीतकार प्रजातन्त्र की जय का नारा लगाने मे प्रयत्नशील है —

ओ असख्य जन भारत भू के [२]
मिलकर एक साथ हो लो।
प्रजातन्त्र की जय बोलो ।।

जातीय एकता की प्रेरणा के गीत लिखने म पतजी भी पीछे नही हैं —

स्नेह भाव दो [३]
राष्ट्र वग से निखरे मानव
जाति-वर्ण के क्षय हो दानव
नव प्रकाश भव का हो अनुभव
रहे न मन भौतिक तमसावृत्त
स्नेह भाव दो ।।

---

१ धार के इधर उधर डा॰ बच्चन, पृ म ६६
२ निरकारदेव सेवक साप्ताहिक हिन्दुस्तान २ फरवरी १९६४ पृ ३५
३ वाणी पतजी प्र म १९५८

देश-देश के अतिथियों को भारत के जन-गण का स्वागत करने के लिए निमन्त्रण देता गीतकार सभी को एक होने की प्रेरणा भी देता है। भारत की एक ही आवाज़ हो—मानवता ! जहाँ हिन्दु मुसलमान, सिक्ख, पारसी जन बौद्ध ईसाई आदि सभी मतभेद भुलाकर एक साथ रह। भारत पुरातन की वेदी है। यही सब एक साथ मिलकर आत्मीयता प्रगट करें यही गीतकार का अभिलाषा है—

देश-देश के पाहुन ! भारत के जन गण का स्वागत लो।[1]
पूरब की इस परम पुरातन वेदी पर सब साथ मिलो॥
इस पर बसते हिन्दु-मुस्लिम
बौद्ध जन सिख ईसाई
और पारसी यह सभी हैं
आपस में भाई भाई।
भारत कहता मानवता के साँचे में सब लोग ढलो।
देश-देश के पाहुन भारत के जनगण का स्वागत लो।
पूरब की इस परम पुरातन वेदी पर सब साथ मिलो॥

इस प्रकार मानवता का स्वर सबसे ऊँचा हो तभी एकता सभव है। राष्ट्रीय चेतना की अनुभूति को तीव्र करने का प्रयास गीतकारों का है। देश हीरे की कनी है—

घर नगर हर भृकुटि प्रत्यंचा तनी[2]
देश सारा बन गया है छावनी !
जो श्रमिक हैं खान में वे भी सिपाही हैं
खेत या खलिहान में वे भी सिपाही हैं
दफ्तरों का मेज पर जो निरत रहे दिन भर।
व्यस्त जो दूकान में वे भी सिपाही हैं॥
बोझ कितना भी हो न टूटेगी मगर।
एकता की तार गई है अरगनी॥
० ० ० ०
देश मेरा एक हीरे की कनी।

---

१ त्रिभंगिमा, डॉ० बच्चन प्र स १९६१

२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ७ नवम्बर १९६५ श्री गिरीश सक्सेना गिरीशायन पृ ३१

३ वही १० जनवरी १९६६, डॉ० बच्चन, पृ स २६

जातिवाद वग विभे" उस समय तो अवश्य ही दूर हट जाता है जब हमारे राष्ट्र पर अ"य दुश्मनी मानने वाल राष्ट्र का हमला होता है। उस आक्रमण मे सक" के समय एकता की अरगनी तन जाती है। प्रत्यक कृषक श्रमिक दफ्तरी दूकान"ार सभी सिपाही है। उ"ह भी सहयोग दना चाहिए तभी एकता का सही स्वरूप प्रगट हो सकता है। ह" नागरिक दश की सुरक्षा के समय सिपाही है तभी राष्ट्र की नीव द" समभी जा सकती है। सभी भारत के बेटे है भारत ही उनकी सच्ची माँ है —

> भारत-माता के बेटे हम चलते सीना तान के।[1]
> औरो की धरती के ऊपर आँख नही हम रखते है
> पर अपनी पर औरो का अधिकार नही सह सकते हैं।
> आज बता देंगे हम कितने पक्के अपनी आन के।
> भारत माँ के बे" हम चलते सीना तान के।।

भारत देश "याय प्रिय है। वह अ"य देशो की धरती पर आँख भी नही उठाता परन्तु जब अ"य दे" उस पर बुरी दृष्टि डालता है तब वह सहन नही कर पाता इसलिए एकता ही राष्ट्र की सुरक्षा के समय काम म आती है फूट नही। काश्मीर को भारत से अलग करने के लिए पाक घुसपैठिए साधारण पोशाको म घुसकर नागरिको का म"कान "ग और उत्पात प्रारम्भ कर "िय तो गीतकार भी एकता का बिगुल बजाय बिना न रह सका—

> एकता दश की थाती ह[2]
> आवाज विजय की आती है
> अब पीछे कभी न मुडना है
> हर एक शत्रु से लडना है
> सरह" का प्रश्न सुलगना है
> घायल जवान तब जगता है।
> अपना आगन भगडे म है
> यह लोकतत्र खतरे म है।।

काश्मीर-समस्या म सरह" का प्रश्न ख"ा होगया। "श की एकता ही "स समय आवश्यक थी। लोकतत्र खतरे म है "सकी आशका गीत म "यक्त हुई और विजय की आवाज क लिए एकता का स्वर भी आवश्यक हो गया।

---

१ साप्ताहिक "िन्दुस्तान २ जनवरी १९ ५ शा"बप्रकाश गुप्त पृ १८
२ वही १६ जनवरी १९६६, रामप्रकाश अग्रवाल पृ १४

डोलता भूगोल नक्शा हिल रहा है आज,
हौंसला अन्याय का आगे नहीं बढ़ता।
सत्य का ही सूर्य अम्बर पर चढ़ेगा नित्य
बादलों की चादरों से वह नहीं डरता,
मथ चुके हम सागरों को सर्प से खेल।
विष पचाकर जानते हम अग्नि भी पीना ॥
सो नहीं सकता कि प्रहरी जागता हनुमान
खोज लाएगा सजीवन द्रोण पर्वत से,
प्रात से पहले जगेंगे मूर्च्छित लक्ष्मण?
वीर तो सोते नहीं विश्राम ही करते,
ज्योति हम आकाश की भी खींच लायेंगे।
जानते सौ बार मरकर भी पुन जीना ॥

गीतकार की सर्वथा नवीन अनुभूति हृदय में नवीन भाषा की उत्पत्ति में सहायक है। हमारे मानचित्र को गलत सिद्ध करने में संलग्न है पाकिस्तान एवं चीन। भूगोल डोल रहा है नक्शा हिल रहा है लेकिन अन्याय का हौंसला आगे नहीं बढ़ता क्योंकि सत्य की ही विजय होनी है। गीतकार का विश्वास अडिग है कि हर प्रहरी जागता हुआ हनुमान है जो घायल मूर्च्छित वीरों के लिए लाएगा पवन से सजीवनी बूटी ला देगा और प्रात काल होने से पूर्व ही जवान अँगड़ाइयाँ लेता हुआ उठ जायेगा। उसने तो रात्रि का मात्र विश्राम ही किया है। एक अन्य व्यंग्य द्रष्टव्य है—

अम्बूबी आवाज बीन की,[1]
शायद यह मां चाउ चीन की!
० ० ० ० ०
जब-जब भारत माँ ने टेरा
होकर एक नौजवान हेरा ॥

एक ध्वजा के नीचे आकर जन-गण-मन गान जगा है
आज एकता की दवा के अधरों पर वरदान जगा है,
आल्हा ऊदल का ममभाने दिल्लीपति चौहान जगा है
गांदिक के मस्तिष्क हुमायूं कर्णवता का ध्यान जगा है

[1] साप्ताहिक हिन्दुस्तान ३ अक्टू० १९६५ श्रीमती शान्तवती सक्सेना पृ १४

मजहब से भी बडा वतन है, यह सच्चा ईमान जगा है !
चुने गए जो दीवारो म
जाग उठे हैं गुरुद्वारो म

सिक्खो की तलवार जगी है शास्त्री का सम्मान जगा है । प्रस्तुत गीत मे अय्यूब के द्वारा भारत पर आक्रमण किये जाने पर सदेह व्यक्त किया है कि शायद यह चाल भी चान की है । लेकिन जब भी विदेशी आक्रमण हुआ है भारत की एकता अटूट रही है । जब भी भारत माँ ने सुरक्षा के लिए आवाज लगाई है मा के वीर लाल एक पुकार पर वमनस्य मतभेद सब भुलाकर अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित हो दौडे चल गये हैं । एक तिरगी ध्वजा के नीचे सभी एकत्रित हुए हैं । एकता की देवी के अधरो पर वरदान जागा है। धम से भी बडा देश है यह भी स्पष्ट है । शास्त्री जी के सम्मान का प्रश्न उठ खडा हुआ है । अत आवश्यकता है एकता की । देश की जय बोलता हू । प्रस्तुत गीत म भी हमलावरो का एहसान मानते हुए गीतकार उन भारत के सपूतो को सचत करता है जो सुरक्षा से उदासीन निद्रादेवी की गोद म विश्राम कर रहे थे —

वडा एहसान है उन हमलावरो का[1]
हमे जो आज सोते से जगाया है
हमार देश न अपने सपूतो के
पसीने को लहू को आजमाया है
पहन कपडे विचारक के महज उपदेश देन की
मुझ फुरसत नहा है मैं गत्रो को जगमगाकर
देश की जय बोलता हू ।

हमारे देश ने कितनी बार अपने सपूतो के पसीन एव लहू को आजमाया है । केवल विचारक वनकर उपदेश देने का समय नही है । समय है काय का व्यवहार म परिणित काय का विचारो का समय नही । देश की जय बोलकर भारत के सपूतो को एकता वद्ध किया है ।

वीर नौजवान देश के तुम्हे भारती पुकारती[2]
धावनाएँ के निनाद के लिए आरती पुकारती !

गीतकार रामकुमार चतुर्वेदी की भावना की तीव्रता भी स्मरणीय है —

---

१ अपने मस्तक उठे रामावतार त्यागी पृ० १२६
२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान विद्यावती पचरत्न १२ सितम्बर १६६५ पृ० १४

रोना मत मर लिए देशवासी मरे,[1]
स्वर्गारोहण करता हूँ मैं क्षण में निर्भय
मजबूती से तुम थामे रहो तिरंगे को,
हर ओर सुनाई दे केवल भारत की जय
जिसकी रक्षा को जिया, चला अंगारों पर
मरते मरते भी गीत उसी के गाता हूँ,

कैसे बतलाऊँ तुम्हें किरण की घड़ियों में
तोपों टैंकों नभयानों के कोलाहल में,
यह शक्ति कौन थी जो मुझको थी चला रही?
किसने था जादू फूँक दिया मेरे बल में?

केवल तिरंगे को मजबूती से थामकर एकता के सूत्र में आबद्ध रहें और दिग्दिगन्त में भारत की जय सुनाई दे। इतनी ही गीतकार की आशा है आकांक्षा है। मृत्यु में भय नहीं है अपूर्व शक्ति-संचार के कारण भय को स्थान कहाँ? निर्भीकता का एक उद्धरण देखिए जिसमें गीतकार ने अभिलाषा व्यक्त की है—तूफानों से हाथ मिलाने की, ज्वालाओं का कवच पहनने की। विजय-गीत गाने वाले वीर की भुजाएँ अपार शौर्य से भरपूर हैं उन्हीं पर गर्व है कि अब इनकी परीक्षा-काल समीप है।

तूफानों से हाथ मिलाकर[2]
ज्वालाओं का कवच पहनकर,
अब मैं विजय-गीत गाऊँगा!

जब-जब वीर भुजाएँ अपनी,
अरि के शोणित में धोता है
वह तो प्रबल परीक्षा-युग है,
संकट-काल नहीं होना है,
मेरे साथ चलो गाओ तब
हैदर की हँसती कुटिया तक
अपने वीरों के करतब को
औ उस कश्मीरी जनता को चित्र दिखाकर सुनवाऊँगा
अब मैं विजय-गीत गाऊँगा!!

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ३१ अक्टू० १९६५ श्रीराम कुमार चतुर्वेदी पृ० १४
२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान २४ अक्टू० १९६५ श्री मधुर शास्त्री पृ० १९

विजय-गीत सुनाने के लिए उद्धत गीतकार की उमंग एकता का संदेश देती है। इसी एकता व विश्वास पर विजय की आशा निश्चित है। एक जब त्याग के लिए तयार होता है तो प्रेरणा पाकर अन्य व्यक्ति भी त्याग के लिए उत्सुक ओजपूर्ण चेतना का गीत सुनकर आगे कदम बढ़ाते हैं। राष्ट्र की सुरक्षा के लिए सबसे अधिक आवश्यकता है एकता की संगठन की।

५ देशाभिमान की अनुभूति —

देश की हर चीज से प्रेम उसकी प्रकृति से स्नेह देश में घटित होने वाले सुकृत्यों पर अभिमान प्रत्येक वस्तु पर गौरव सभी कुछ अपने दृष्टि-पथ पर रखकर उनका मूल्यांकन विवेचन अभिव्यक्ति इत्यादि सभी को गीतकार अपने शब्दों में बांध देना चाहता है।

गीतों को सांचे में ढालकर देश की वस्तुओं के गौरव को लोकव्यापी बनाने का श्रेय है गीतकार को। यही है गीतकार का कर्त्तव्य एवं सच्चा राष्ट्र प्रेम। जब तक हमारे हृदय में राष्ट्र के प्रति सम्मान आदर और गौरव की भावना का अभाव रहेगा राष्ट्रीय एकता के तत्वों का पोषण होना तो दूर, अपितु हानि की संभावना अधिक है। राष्ट्र के अभिमान की भावना देशवासी के हृदय में राष्ट्रोन्नति के तत्त्वों का पोषण करती है। इस प्रकार राष्ट्रीय भावना अधिक क्षिप्र गति से देशवासियों को सजग एवं जागरूक बनाने में सहयोग देता है। भारत-वन्दना भारत के अभिमान को द्विगुणित करती है—

> हे जन्मभूमि भारत! हे कर्मभूमि भारत!![1]
> हे वंदनीय भारत! अभिनन्दनीय भारत!!
> जीवन-सुमन चढ़ाकर हम अर्चना करेंगे।
> तेरी जनम जनम हम वंदना करेंगे।
> हम अर्चना करेंगे!!

भारत भूमि के प्रति श्रद्धा का अभाव इस प्रकार गौरवपूर्ण वन्दना नहीं कर सकता। गीतकार को कर्मभूमि जन्मभूमि भारत पर गौरव है। तभी जीवन पुष्प तक चढ़ाने के लिए तत्पर हैं। जन्म जन्म तक अर्चना वन्दना के लिए तयार गीतकार देशाभिमान की अभिव्यक्ति करता है।

मातृभूमि के प्रति स्वाभिमान की अभिव्यक्ति सतियों की न्यौछावर का स्मरण तथा सन्तों मुनियों और ऋषियों का गुणगान करते हुए—

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १८ अगस्त १९६३ आरसी प्रसादसिंह पृ० ६

मरी मातृभूमि मन्दिर है।[1]
स्वाभिमान का बलिवदी पर
सतियाँ लाख हुई योछावर,
सन्तो, ऋषियों मुनियों वाली
भारत भूमि शिवर है,
मरा मातृभूमि मन्दिर है।

देश के प्रत्यक प्राणी का दवता तल्य मानते हुए राम और कृष्ण के चरित्र का भी यशोगान किया है—

मरी मातृभूमि मंदिर है।
राम कृष्ण जसे चरित्र क
चालीस कोटि दवता जिसक
सबका मत्र न सबका व्रत
जहाँ द्वय नतशिर है।
मरी मातृभूमि मन्दिर है॥

मातृभूमि का मन्दिर क समान पूज्य एव पवित्र मानकर चन्दन क साथ ही भारत की जनता दीप का मना दी है जहाँ अंधकार का स्थान नहीं। यदि भारत की खुशहाली पर किसी न खूनी आँख उठाई तो—

जो सब गाता है[2]
कोई अंधकार की चादर मरी ओर बढ़ाए ना
जनता दीप है य
इससे प्यार मुझको
कोई मरी खुशहाली पर खूनी आँख उठाए ना
मरा देश है य
इससे प्यार मुझको॥

हरीश मादानी न अपने गीत म सकेत दिया है कि यदि मैं हँसू गा तो चालीस करोड़ प्राणी मुस्करा देंग यदि मैं अपने श्रम-परिश्रम एव लगन स मातृभूमि का शस्य श्यामला हरि भरी कर दूँ तो मरा मन मुदित होगा। यही सन्त प्रत्यक्ष अर्थात रात दिन का—

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ५ जनवरी १९६० पुष्पा अवस्थी पृ० १४
२ शान्तिलाल वीरेन्द्र मिश्र पृ ६६

मैं हसू अगर तो चालीस कोटि देवो का देश हँसेगा।[1]
मेरा देश कि जिसकी धरती सोना उगले
डाल फूल से आभा छिटके मणियाँ उछले
मत्त समीरण के डोल म हसती फसलें देख
कोकिल गाये और मोर मुदित हो मचले
यह नीली पीली हरी चूनरी ओढ़ धरा दुल्हन सी लगती।
मैं भी पचरगी पगडी पहन सजू तो मेरा देश सजेगा।।
मैं हसू अगर तो चालीस कोटि देवो का देश हँसेगा।।

गीतकार बहुत ही भावुक अवस्था म इतना सुन्दर चित्रण करने म समर्थ हुआ है। ओजपूर्ण नही होने पर भी गीत के भाव देशाभिमान की अनुभूति स भरपूर है। धरती प्रकृति पक्षी आदि सभी का मनोमुग्धकारी चित्रण किया है ता एकता का स्वर भी दूर नहीं। गीतकार के हसने का व्यक्तिगत महत्त्व नही क्योकि चालीस कोटि देवो का देश भी हसेगा इसीलिए पचरगी पाग स सजने पर देश भी शोभायमान होगा। क्योकि राष्ट्र का सम्मिलित स्वरूप गीतकार के सम्मुख है। भूमि भूमिवासी जन और जन सस्कृति जिनके सम्मिलन स राष्ट्र का स्वरूप बनता है व कवि के कल्पना लोक म विद्यमान है। उसी का प्रतिबिम्ब सजीव करने का प्रयास किया है। गीतकार मिलिन्दजी तो स्वय ही भारत बनने का गीत गा रहे है—

मैं भारत हू, मैं भारत हू!
शस्य श्यामला, रत्न गर्भ भू[2]
अगणित खानें विस्तृत सागर
मेरे वन भरी सरिताए
मेरा हिमगिरि मेरा अम्बर
क्षुधा रोग दारिद्रय-अग्नि म
फिर भी मैं जलता अविरत हू।
मैं भारत हू! मैं भारत हू!!

भारत का शस्य श्यामला पृथ्वी रत्न की खानें विस्तृत सागर विशाल वन अनेक सरिताए हिमगिरि और अम्बर सभी कुछ गीतकार का अपना है क्योंकि उसका राष्ट्र अपना है वही भारत है। उदात्त भावना का चित्रण किया है। मातृभूमि के प्रति तीव्र अनुभूति प्रदर्शित की है—

१ मधुर गान हरीश मादानी पृ सं ५
२. बलिपथ के गीत जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द पृ० १०६

जननी स्वर्गादपि गरीयसी जन्मभूमि कल्याणी हे ।[1]
जय हे । जय हे । जय जय-जय हे ।

० ० ०

शांति विजय का शंख बजाए साँझ उठाए ध्वज फहराए
प्रिय दर्शिनी मंगलवर्षिणी हे जन्मभूमि जयदानी जय हे !

एक हाथ में खड्ग प्रखरतर
एक बीन पर जगा रहा स्वर,
खींच रहे रथ सप्त सिंधु के
नील अश्व अरुणाभ डगर पर

सत्य स्वयं सारथी बना है गुण गा धन्य हुई रसना है ।
अभयदायिनी मुक्तिवाहिनी, जन्मभूमि फलदानी जय हे !

किसी भी उपकरण को लेकर अनेक माध्यम से एक ही प्रयास रहा है—देश की वस्तुओं पर गौरव की अनुभूति । हिमगिरी की विशालता, ऊचाई देशाभिमान का वस्तु है । षड्ऋतुएं प्रकृति का सौन्दर्य, परिवर्तित रूप स्वस्थ जलवायु सभी पर गौरव किया जा सकता है ।

शांति-दूत जवाहरलाल नेहरू ने जो वसीयत की थी उसे उनकी मृत्यु के उपरान्त पूर्ण किया गया और उन आदर्शों का विवरण गीतकार ने शब्दों में बाँध लिया ।

मेरी भस्मी को भारत के खेतों पर बिखरा देना
जिस मिट्टी की मेरी काया उसमें मुझे मिला देना ।
थोड़ी सौंप देना गंगा को भर तुम मुट्ठी भर फूल
नहीं धार्मिक ख्याल कहीं कुछ मेरी इस इच्छा के मूल
जुड़ी हुई गंगा यमुना से बचपन की वह मीठी याद,
मैंने रंग बदलते देखे उनके हर मौसम के बाद
निज परम्पराएं पौराणिक गाथाएं कितने इतिहास—
घुले मिले उनके पानी में गीत कहानी औ विश्वास

० ० ०

गिरा पसीना जहाँ किसानों का, तुम उसमें मिला देना ।।[2]

---

१ धर्मयुग १८ अगस्त १९६३ गिरिधर गोपाल
२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १४ नवम्बर १९६५ श्रीनरदेव पृ १४

देश प्रेम की तीव्र अनुभूति की अभिव्यक्ति हुई है। ऐसी अनोखी वसीयत थी नेहरू की जिसके मूल म धार्मिक भाव न थे किन्तु देश के लिए असीम प्यार था। कृषक उनके अति निकट थ उन्ही के खेतों म उनकी भस्मी का विखराव हो ऐसी आकाक्षा करके नेहरू का देश प्रेम अमर हो गया। देश की धरती के लिए जो कुछ त्याग न किया जाय थोडा है। देश की धरती को सभी कुछ समर्पित करने को तत्पर—

मन समर्पित तन, समर्पित[1]
और यह जीवन समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती तुझे कुछ और भी दू।

मन एव तन धरती को समर्पित करने के पश्चात् बचता ही क्या है? इसस अधिक मूल्यवान कुछ नही है फिर भी प्राणो का समर्पित करने के पश्चात् भी कवि का हृदय सतुष्ट नहीं होता वह और भी कुछ देना चाहता है। परन्तु दे क्या? विष को हसकर पीने का प्रयत्न करते हुए एक अन्य गीतकार का गीत—

भव सकट हर, विष हस पा लू।[2]
देश प्रेम हित मर लू जी लू॥
अमर रहे यह ताज
मैं सनिक हू मरा तन-मन।
बलि के पावन काज॥

पके धान स यौवन वाली भारत माता का जीवन उवर है। इसी कारण वह भारत क सपूतो की जननी है और केवल उवरा ही नही बल्कि शक्तिशालिनी भी है—

समतल उमर जीवन जिसका[3]
वह मरी है भारतमाता
पके धान सा यौवन जिसका।
वह मरी है भारतमाता॥
मर्यों के आचल म निमरा वच शक्ति है बधी रात दिन।
हल के फाल जहाँ पृथ्वी का मृण्मय कषण करें रात दिन॥

---

१ मन महक उठ रामावतार त्यागी पृ १८२।
२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान २ जनवरी १९६६ दिग्विजयसिंह उपाध्याय रत्नम पृ० ३७
३ अनुगूज मधराज मुकुन पृ १५

अस्तु विविध प्रकार स देशाभिमान की अभिव्यक्ति हिन्दी के गीतो म हुई है। गीतकार का दृष्टिकोण विशाल होना है। यद्यपि गीत का आकार सीमित होता है किन्तु गीतकार यथा समव राष्ट्र के गौरव की वस्तुओ का अपनी लेखनी स सजाता है सवारता है और सकेत करता है। तीव्र भावानुभूति उत्तरोत्तरण का उच्च भावभूमि पर होती है और राष्ट्र क प्रति गव की भावना का स्पष्ट सकेत करती है।

६ देश की प्रकृति से प्रम —

प्रकृति प्रागण म विकसित हरियाला एव रग बिरग पुष्प किस मुग्ध नही कर लेन ? फिर गीतकार का हृदय तो स्वभावत भावुक एव कोमल होता है। सौन्दय से अभिभूत हृदय का उन्माद शब्दा द्वारा किस प्रकार अभिव्यक्ति पा सकता है ? उज्वल वर्णी चाँद सितार लहराता सागर, भरते हुए उन्मत्त झरने मत्त समीर उन्नत शिखर मुस्काते कमल व कुमुदिनी विहसता मधुमास नीलाकाश तथा षडऋतुए इनका परिवतन एव नव-नव रूप धारण करने वाली प्रकृति किस आकर्षित न करती होगी ?

राष्ट्रीय भावना की परिपुष्टता के लिए गीतकारा ने अपना शस्य श्यामला मातभूमि उच्च पवत, उषा की लालिमा प्रभात की छटा साध्य सुषमा एव कल-कल करती नदिया का मनाहारी वणन किया है। डॉ० दिनेश ज्योत्स्ना को शाति बनाकर बिखर देना चाहत हैं। भोर की किरणो को विश्व क प्रांगण म अमरता देकर प्रसारित करना चाहत हैं। हिमालय पवत को भारत का मस्तक मान कर जन जन का सन्देश देत हुए—

> ओ नव विहान क अरुण-पार !
> जय भारत ! हे जग हृदय-हार !!
> हिम शुभ्र हिमाचल वर-किरीट
> चमके बनकर गौरव सुवेग,
> ज्योत्सना शाति बनकर बिखरे
> हो विमल विश्व क्षण में दिनेश
> फिर कर अमरता का प्रसार।
> जय भारत। हे जग—हृदय हार॥

डॉ० बच्चन ने काँगड़ा की घाटी का वर्णन करत हुए गीत म प्रकृति प्रेम का परिचय इस प्रकार दिया है —

१ गौरव-गान, डॉ० दिनेश पृ० ११

आज कागडा की घाटी का, राग बहे छाती मे।[1]
औ बहता है न्यास जहाँ ले–
शत शत निभरना ले
करते बात उसाँसे भरते
गाते गीत निराले,
गजन करते पाषाणो पर
जो उनका पथ रोके

लडत तट मिलते पनघट से निज गति मदमाती म।
आज कागडा की घाटी का राग बसे छाती मे॥

बच्चन जी ने प्रकृति सौन्दय को भरपूर दृष्टि से निहारा और उसका वणन भाव विभोर होकर किया जहाँ भरने उसाँस भरते प्रतीत हुए। उन्ही मे निराले गीत गाकर प्रकृति के प्रस्फुटित सौन्दय की अभिव्यजना की है। पतजी की सिन्धु के लिए अभिव्यक्ति देखिए —

नीलांजन नयना।[2]
उन्मद सिन्धु सुधा-वर्षा यह
चातक प्रिय वयना!
नभ म श्यामल कुन्तल छहरा,
भिति म चल हरिताचल फहरा
लेटी क्षितिज-तले, अर्धोत्थित
शलमाल अपना!!
बकुल मुकुल से कबरी गुम्फित,
श्वास केतकी रज स सुरभित
भू-नभ को बाहा म बाँधे
इन्द्रधनुष वसना।

प्रकृति के चितेरे, अमर प्रेम के गायक कोमल भावो की अभिव्यक्ति म सिद्धहस्त पन्तजी का निम्न प्रकृति चित्र बहुत सुन्दर अभिराम एव उपयुक्त चित्रित हुआ है। एक अन्य गीत द्रष्टव्य है —

---

१ आरती और अगार डा० बच्चन पृ० ८६ पृ० स० १९५८
२ चिम्बरा सुमित्रानन्दन पत पृ० स० १९५६

जय जय भारत जन मन अभिमत,[1]
जन गणतन्त्र विधाता ।
गौरव भाल हिमालय उज्जवल ।
हृदय हार गंगाजल ।
कटि विन्ध्याचल सिन्धु चरण-तल
महिमा शाश्वत गाता ।

हिमालय विन्ध्याचल गंगाजल सिन्धु सभी की महिमा का गान प्रकृति प्रेम का परिचायक है । इनका रूप शाश्वत है, इसकी महिमा में कितने गीत गाये हैं—

आज बहुत गाने का मन है ।[2]
दूर-दूर तक हरियाली के
चंचल सागर लहराते हैं
बल्लरियां ऊपर उठती हैं
तरुवर नाचे झूम जाते हैं
मन भर भर आता है मेरा,
शब्द नहीं वह गान जिसको
मुक्त पवन पर पंख खोलकर,
यही चाह पंछी गाते हैं ॥
जो उमंग सरिता की धुन है
जो उमंग सागर का धन है,
आज बहुत गाने का मन है ॥

प्रकृति सौन्दर्य का तीक्ष्ण प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित है । प्रकृति के अपार सौन्दर्य के विस्तार को देखकर गीतकार झूम उठता है । उसके हृदय से स्वतः रागिनी निकलने लगती है । गीत जिह्वा पर नृत्य करने लगते हैं । वाणी का जादू कलम से कागजों पर रंगीन चित्र बनाने में संलग्न हो जाता है और कवि को लगता है— आज बहुत गाने का मन है । विस्तृत हरे भरे खेत लहराता चंचल सागर पत्तों वल्लरियों के भार से नत मस्तक तरुवर एक साथ

---

1 भारत के लोकप्रिय हिन्दी कवि सुमित्रानन्दन पंत सं० वन्दन पृ० नं० १६६०

2 हिमालय के आंसू आनन्दमिश्र पृ० १४ प्र० सं० १६६१

इतना सौंदय उमगित गीतकार इस सौ न्य की अभिव्यक्ति के लिए श ब्द कहाँ से लायें ? इस विशाल सौंदय भडार की श ब्दों द्वारा अभि यक्ति नही हो सकती। पक्षी-कूजन उमगित सरिता का मनहर गान सब कुल मिलाकर सृष्टि के प्रकृति-सौंदय की नसर्गिक आभा से मुस्कराते रहते हैं। समस्त हिमाचल प्रदेश इस सौंदय राशि से भरपूर है—

अश्व की वल्गा लो अब थाम दिख रहा मानसरोवर-कूल !! १
गौर कन्धो पर ग्रथि टाल,
पूछते हसा के ये बाल
स्वग से दिखती है ये भील
हिमालय लगता होगा लाल
तुम्ह वे य । पत्नियां देखा करेंगी गीत सुना अनुकूल !!

राष्ट्र की प्रकृति पर गव अनुभव करते हुए मनोभावो को शब्दा के साचे मे ढाला है। विहसते मधुमास का नव सन्देश देते हुए श्री शवाल सत्यार्थी कहते हैं —

मधुमास विहसता आया लो नया सदेशा लाया। २
है पूव दिशा म उदित अनाबी लाली
खेतो म हसती हरी मन्मरी वाली
फूल सरसो पर छाई सुपमा पीली
दे दी कोयल ने तानें मधुर रसीली
आमो पर सुदर स्वण मजरी फूली
जिसकी शोभा को देख प्रकृति पथ भूली
अम्बर ने सतरगो से
नव वन्दनवार बनाया
मधुमास विहसता आया ।।

मधुमास आने पर प्रकृति का रूप परिवर्तित हो जाता है। उसी नव परिवतन की ओर इगित करता कवि स्वस्थ यौवन से भरपूर प्रकृति का स्वच्छ चित्र चित्रित करता है। सरसो की पीली सुपमा स्वण आम्र-मजरी सप्तरगा अम्बर का वन्दनवार सभा मोहक दृश्यावली प्रस्तुत करते हैं। नव

---

१ दूसरा तरिमप्तक नरेश कुमार महता पृ १२६
२ योजना माच १६६२ शवाल सत्यार्थी पृ १६

कल्पना के सहारे अभिनव रूप चित्रित किया है। प्रकृति को विविध रंगों में रंगकर गीतकारों ने प्रकृति प्रेम के उन्मुग्ध सजीव बिम्ब प्रस्तुत किए हैं।

७ सम्प्रदायवाद का विरोध —

राष्ट्रीय भावना की तीव्रता का परिणाम है सम्प्रदायवाद का विरोध। राष्ट्रगत एकता वर्ग भेद एवं जातिगत भेदों के मानते हुए संभव नहीं। जातिभेद एवं वर्ग भेद राष्ट्र की शक्ति का बटवारा कर देता है। समस्त सृष्टि का रचयिता एवं नियन्ता एक ही है। सभी मानव रक्त की लालिमा में पूर्ण हैं। जब रक्त एक जैसे रंग का है सृष्टिकर्ता एक है तब तो मानव मानव में भेद क्या? यह भेद भाव तो राष्ट्र की पराधीनता का मूल कारण है। राष्ट्र की एकता के लिए सम्प्रदाय का विरोधी गीत आवश्यक है। राष्ट्रीय भावना के विकास को परिपुष्ट करता है सम्प्रदायवाद का विरोध। मानवता ही सब धर्मों में श्रेष्ठ मानस उच्च उदात्त भाव भूमि पर प्रतिष्ठित होने योग्य ही है।

राष्ट्रीय भावना के विकास की स्थिति का बोध करने के लिए सम्प्रदायों का उन्मूलन आवश्यक है। भारतीयों की आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक जागृति ने देश को राष्ट्रीयता के प्रति जागरूक किया है और स्वदेश एवं स्वदेशी के प्रति अनुराग बढ़ाया। ब्रह्म ज्ञान का-गान गाकर राष्ट्रीयता का प्रचार किया। हमारे गीतकारों को ब्रह्म समाज से समाज के उच्च स्तर में बौद्धिक और धार्मिक चेतना की प्रेरणा मिली और आर्य-समाज से जागरण का सन्देश। थियोसॉफीकल सोसायटी रामकृष्ण मिशन ने भी हमारे, गीतकारों को सम्प्रदायवाद एवं धार्मिक विद्वेष के विरोध में नवीन दिशा एवं नूतन चिंतन दिया। इन्हीं वरदानों से अनुप्राणित बच्चन ने अपने गीतों में धर्म-भेद और सम्प्रदायवाद को अभिशाप मानकर अभिव्यक्ति की —

> मगर चला प्रसाद धर्म गाय का।[1]
> प्रसार सम्प्रदाय-सम्प्रदाय का ॥
> उठट न सके अभी नया बरस,
> चढ़ा अभी
> स्वदेश पर
> पिशाचिका !

सम्प्रदायवाद का विरोध करते हुए डॉ० दिनेश का स्पष्ट एवं मुक्तिगमन प्रश्न —

---

१ पार के इधर उधर डॉ० बच्चन ६७ सं० प्र० १९५७

मैं मस्जिद के द्वार गया ?
तो मदिर क्यो नाराज है ?
राहे नई बनाने वालो !
मजिल से भटकाने वाला !!
रुको तुम्ह ललकार पूछता—
एक नही क्या जग का मालिक ?
जिसके सिर पर ऊची-नीची–
सब दुनिया का ताज है
मैं मस्जिद के द्वार गया—
तो मदिर क्यो नाराज है ?[1]

वह जीवन जो वग भे क पचडो म पड गया है तब उस विभक्त जीवन को गीतकार किस प्रकार नमन करे ?

किसको नमन करू मैं भारत किसको नमन करू मैं ?[2]
वहा नहीं तू जहाँ जनो स ही नुजो को भय है
सबको सबस त्रास सदा सब पर सबका सशय है
जहा स्नेह के सहज स्त्रोत स हटे हुए जन गए हैं
झडा या नारो के नीचे बटे हुए जन-गए हैं
कसे इस कुत्सित विभक्त जीवन को नमन करू मैं ?
किसको नमन करूँ मैं भारत ! किसको नमन करू मैं ?

भारत की स्वतत्रता के जो स्वप्न देखे थे उन पर आधारित भारत का जो चित्र मस्तिष्क म विद्यमान था वह रेखाए स्वतत्रता के पश्चात् मलिन हो गइ। उन अस्पष्ट रेखाओ का धूमिल चित्र वह न था जो कवि ने देखा था। क्षुब्ध हृदय की व्यथा गीतो म इस प्रकार अभिव्यक्त हुई—भारत वहाँ नही है जहाँ मनुष्य को मनुष्य स ही भय है। सभी एक दूसरे को शकित दृष्टि से निहार एक दूसर का त्रासदायक समझते हैं। सहज-स्नेह के स्त्रोत से हटकर जीवन-नया भाग बट रही है। इस विभाजन को कुत्सित मानकर इस विभक्त जीवन को नमन करन का गीतकार तयार नही।

इसी विभाजन क कारण हमन अपन राष्ट्र पिता बापू को खो दिया और भविष्य म भी न जान कितन जीवन नष्ट हो जायगें। जब तक हिन्दु मुसलमान

१ जयनाथ डा दिनेश पृ० २१ प्र० म० १६६१
२ नीलकुसुम रामधारीसिंह दिनकर पृ ८३ प्र म १६५४

भेद भाव दूर न होगा राष्ट्र पर संकट की बदली घिरती रहेगी। भारत की स्वतन्त्रता के साथ ही जिन्ना ने पाकिस्तान अलग बनाने का प्रस्ताव रखा तथा राष्ट्र की अखंडता नष्ट हो गई। हिन्दू मुस्लिम आपस में ही लड़ने मरने लगे। स्वातन्त्र्य-संग्राम जाति संग्राम युद्ध-स्थल बन गया। मुक्ति की साँस शांति से ले भी न सके कि पाकिस्तान अलग बना और हिन्दु मुसलमान इन दंगों में फिर मारे गये। जब-जब भी युद्ध होता है, उपद्रव होते हैं व्यर्थ में ही न जाने कितनी जिन्दगियों का बलिदान हो जाता है। इस पाक-विभाजन के कारण ही काश्मीर समस्या उत्पन्न हुई। चीन के हौंसले बढ़ गये और भारत पर आक्रमण कर दिया। राष्ट्रीय एकता की भावना को ठेस पहुँची और गीतकारों ने प्रयास किया इस भेद भाव को समाप्त करने का—

किसको बापू की नहीं आ रही आज याद ? [1]
किसके मन में है आज नहीं जागा विषाद ?
जिसके सबसे ज्यादा श्रम-यत्ना से आई—
आजादी, इसका ही खा बैठा है प्रसाद,
जिसके शिकार हैं दोनों हिन्दू मुसलमान।
आजादी का दिन मना रहा हिन्दोस्तान॥

स्वातन्त्र्य-लाभ पर तुषारपात हुआ और बापू का असामयिक निधन सबकी आँख गीली कर गया। शोक की लहर सर्वत्र दौड़ गई। वही बापू जिन्होंने राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए सबसे अधिक प्रयत्न किए स्वतन्त्र देश में सुख से रहने भी न पाये। कवि का विक्षुब्ध हृदय आक्रोशपूरित हो उठा।

अस्तु सम्प्रदायवाद का विरोध करते हुए अनेक गीतों की रचना इस विषय पर हुई। परन्तु अब भी भारत में अनेक सम्प्रदाय पनप रहे हैं। प्रत्येक प्रान्त अपनी भाषा अपनी जाति और अपने राज्य को स्वतन्त्र रखने की कल्पना करता है। मिशनरी अलग अपनी सत्ता कायम करना चाहते हैं। उन्हें अपना अलग देश चाहिए जिस प्रकार पाकिस्तान बना और इसी के आधार पर काश्मीर को अलग करना चाहते हैं। भीतर ही भीतर इस विष की जड़ें पनपती रही हैं। परन्तु जब बाह्य-सत्ता का आक्रमण होता है तो समस्त विवाद कालिमा धुल पुछ जाती है। पाकिस्तान के आक्रमण के समय भी भारत निवासी मुसलमानों ने जिस तत्परता से सहयोग दिया उनका नाम इतिहास में सदैव के लिए स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा। उनकी

---

१ धार के इधर-उधर, डॉ० बच्चन पृ० ७८, प्र० सं० १९५०

निन्दा की और विरोधी शक्ति कुचलने के लिए ओजस्वी काव्य की रचना की।

१ बलिदान की भावना

राष्ट्र पर घिर आई सकट की बदली को चीरने के लिए दुश्मनों के छक्के छुडाने के लिए नौजवानो का रक्त उबलने लगा। कोमल स्वर लहरी म गीतो का सृजन करने वाले गीतकारो के स्वर पौरुष वर्ण एव ओज पूर्ण हो गये। राष्ट्र सुरक्षा के लिए उद्‌बोधन-गीतो की हुँकार ललकार कोमल न रही। ओजपूर्ण गीतों के सृजन ने उत्साह नव-स्फूर्ति एव सक्रियता के भाव भरे। इतनी कठिनाईयो एव सघर्षो के पश्चात् मिली स्वतन्त्रता को गवाने के लिए राष्ट्र-वासी तयार न थे। गम्भीर गजना अधकार को चीरती हुई, दुश्मनो के हृदयो को हिलाने वाली एव नौजवानो को उत्साहित करने वाली सिद्ध हुई। बलिदान की भावना राष्ट्रीय भावना के पोषण का सबसे महत्वपूर्ण एव त्यागपूर्ण तत्त्व है। बलिदान की भावना बलि प्रथा के रूप म विकसित एव पोषित होती रहे। अभिप्राय यह है कि परतन्त्रता का जो कलक लगता है वह जल, अश्रु श्रम बल आदि के धुलाने से भी नहा धुलता है। उस कालिमा के विवाद को धोकर उज्ज्वल करने के लिए शहीदो के अविरल रक्त प्रवाह की आवश्यकता है। इसी कारण बलिदान को बलि की प्रथा का रूप देने की आकाक्षा है —

देश मे बलि की प्रथा रहे[1]
जो कलक धुल सके न जल से
आँसू से श्रम-सीकर बल से
उस छुडाने को शहीद का अविरल रक्त बहे
देश में बलि की प्रथा रहे ॥

गीतकार बलिदान करने के लिए ही सचेत नहीं करत अपितु स्वय भी बलिवदी पर चढने को आतुर हैं।

मेरे देशवासी ![2]
बलिवेदी पर मैं भी हू
बलिवेदी पर तुम भी हो
तुम मेरे इस हेम भाल पर
मुक्ति-रूप कुकुम भी हो

---

१ त्रिभगिमा डा० बच्चन पृ स ११५ प्र म १९६२

२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १७ नवम्बर १९६२ वाल्म मिश्र

सुनगी मिट्टी का ढेरी
अब न जरा भी कर देरी
कल तक रक्षा करता था मैं
अब तू रक्षा कर मेरी
मेरे देशवासी !

बलिदान की वेदी पर चढ़ने के लिए प्रस्तुत गीतकार देरी नहीं चाहता। बलिदान की भावना और प्रेरणा के लिए गीतकार माध्यम चाहता है ऐसा सशक्त जिससे बलिदान देने के लिए हिचकिचाहट न हो। सुभाषचन्द्र बोस झाँसी की रानी चन्द्रशेखर आज़ाद आदि अनेक वीरों का स्मरण करके भावों को उदात्त बनाने में गीतकार संलग्न है —

सावधान मानवता के दुश्मन ! मैं सजग जवान हूँ [1]
मैं सुभाष का खून चन्द्रशेखर की जलती ज्वाला हूँ
मातृभूमि के लिए युद्ध में मैं अलमस्त उजाला हूँ
झाँसी की तलवार नहीं सोने वाली

द्वार खुला पर पहरे की तलवार नहीं सोने वाली ।।
बलिवेदी पर चढ़ने वाला मैं शोणित का दान हूँ।
सावधान मानवता के दुश्मन मैं सजग जवान हूँ ।।

प्रकृति द्वारा बादलों की वर्षा का बलि का संदेश देने वाली नायिका बलिपथी जवानों के प्रति सजग है —

ओ वर्षा के श्यामल बादल ! [2]
तुमसे यह अनुरोध हमारा,
अनगिन बूँदों की रिमझिम में
अग्निबाण अरि पर बरसाना
बलिपथी जा खड़े वहाँ पर
उनका तुम भी हाथ बटाना
पौरुष का हरियाला सींचे,
आज तुम्हारी रस की धारा

१ भूमि के भगवान, रघुवीरशरण मित्र पृ० सं० १०
२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १५ अगस्त १९६१ सुमित्रा कुमारी सिन्हा पृ० १४

ओ वर्षा के श्यामल बादल
तुमसे यह अनुरोध हमारा

मानवता के दुश्मनों का संहार करने के लिए प्राणोत्सर्ग को तत्पर वीर होली का त्यौहार प्राणों की आहुति देकर मनाना चाहता है—

खेलो आज प्राण की होली ![1]
हिमगिरि से उन्नत ललाट पर वर लो बन्धु
विजय की रोली !

जाने दो वसंत की ज्वाला
केसरिया तन मन मतवाला
छक सर्वस्व त्याग की हाला
भर लो अमर कीर्ति से झोली
खेलो आज प्राण की होली !

प्राण की होली खेलने वालों के लिए मातृ भूमि का अधिकार सबसे अधिक है। आज़ादी की रक्षा के लिए शीश चढ़ाने वाले का मातृ भूमि पर पहला अधिकार है। वे जो प्राणोत्सर्ग कर शहीद हो गये उसी अमर-सेनापंक्ति में नाम लिखाने को तत्पर वीर बलिवेदी पर चढ़ जाने के लिए आकुल हैं जिससे कि पहला शीश उसी का चढ़े ताकि मातृ भूमि की रक्षा हो सके—

मातृ भूमि की सेवा का[2]
पहला अधिकार हमारा है
आज़ादी की रक्षा में हम
अपना शीश चढ़ा देंगे
अमर शहीदों की सेना में
अपना नाम लिखा देंगे
बलिवेदी पर चढ़ जाने को—
पहला शीश हमारा है।

गीतकार मातृ भूमि पर बलि हो जाने की कथा सुनाने को तत्पर हैं—

मुण्ड मुण्ड पर नाच रहे वे शिवशंकर हो कामी। [3]
मातृभूमि पर बलि जाने की कथा सुनो भारतवासी !!

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १ मार्च १९६३ चन्द्रप्रकाशसिंह पृ० १८
२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १८ अगस्त १९६६ बद्री विशाल तिवारी पृ० ९
रणभेरी ... हिन्दी परिषद यशोदानन्दन शर्मा विमल पृ० १५

आलोक विजय का अन्तिम अभियान तो बाकी ही है। तन और धन देश के लिए न्यौछावर कर दो जीवन का सर्वस्व लुटा दो तभी तो बलिदान, पूर्ण कहलायेगा।

आलोक विजय का अन्तिम [1]
अभियान अभी बाकी है॥
कोई तन देता कोई
धन अर्पण कर देता है
माता की झोली कोई
कंचन से भर देता है
जीवन सर्वस्व लुटा दे
बलिदान अभी बाकी है
आलोक विजय का अन्तिम।
अभियान अभी बाकी है॥

बलिदानों की परम्परा में अतृप्त गीतकार बलिदानों के पश्चात् भी और बलिदान चाहता है। पूजा को भगवान बहुत हैं परन्तु धरती को तो इंसान की आवश्यकता है। बलिदानों के पुष्प खिले हैं परन्तु अभी और बलिदान चाहिए—

बलिदानों के पुष्प खिले पर—[2]
अभी और बलिदान चाहिए॥
धधक रहा है धरा भूख से मेघों की जलधार कहाँ है?
यह कैसा सुहाग की वेला दुल्हन का शृंगार कहाँ है?
मन्दिर में आरती हो रही, पर समाधि ने कान न खोले।
गाते गाते गीत थके हम, पर हमसे भगवान न बोले॥
पूजा को भगवान बहुत पर
धरती को इंसान चाहिए
बलिदानों के पुष्प खिले पर
अभी और बलिदान चाहिए॥

स्वतन्त्र भारत की जय बोलने के लिए प्राणों की बाजी लगानी पड़ती है। धरती की रक्षा हेतु वीर जवानों को सीमा पर सजग प्रहरी का

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ५ अप्रैल १९६४ आरसी प्रसाद सिंह पृ० १
२ जलते तार रघुवीर शरण मित्र पृ० ५५ सं० प्र० संवत् २०१०

काय करना पड़ता है तब कहीं शांति के दुश्मनों का मुकाबला किया जाता है। गीतकार प्रसन्न है कि घमंड में चूर दुश्मन खुद ही मरने को आगया है। भारतमाता प्राणों का बलिदान मांगती है—

> तेरी जय भारत की जय है रख ले ना माता की आन। [1]
> अपनी धरती की रक्षा हित बढ़ जा रे तू वीर जवान
> आज शांति के दुश्मन तेरी धरती पर मंडराये हैं
> हो घमंड में चूर सभी वे मरने को आये हैं
>
> o o o
>
> भारतमाता माँग रही है तेरे प्राणों का बलिदान।
> अपनी धरती की रक्षाहित बढ़ जा रे तू वीर जवान।।

भारत की धरती ने कितने ही वीरों का शोणित-दान लिया है और बलिदानों से भरपूर यह धरती वीरों से रिक्त कभी नहीं हुई। बलिदानों से ही सीमा रक्षा होती है। वे पुष्प जो इस धरती पर पुष्पित होते हैं मानो इसी बहाने से मौन धरा वीरों से मुस्काती है। यह धरती बलिदानों से ही है —

> यह धरती बलिदानों से ।[2]
> वीरों के अरमानों से ।।
>
> बलिदानों से सीमा रक्षा बलिदानों से होती जय
> तप से सिद्धि मिला करती है तप से सुरभित होती वय
> स्वतन्त्रता बलिदानों का निधि अरमानों का पानी है
> फूलों के मिस मौन धरा यह वीरों से मुस्काती है
>
> दीपक हैं परवानों से।
> यह धरती बलिदानों से।।

मरने को त्यौहार मानकर बलिदान की बेला का स्वागत करते हुए, गीतकार निःसंकोच प्राण निछावर की शौर्य-कथा कहता है। भारत में मातृभूमि की रक्षा हेतु प्राण तक देने में कोई भी भारतवासी भयभीत न हुआ। अस्थियों के वज्र रिपु की छातियों का भेदन करें कण्ठ-स्वर में धार को भेंटें गम रक्त पुनः सपूतों की फसल साजे माँ का रूप अलंकृत रहे और पुनः तलवारें म्यान में बाहर आ जायें। अर्थात् युद्ध के लिए सब तैयार

१ अनुग्रह मेघराज 'मुकुल' पृ ५६ प्र स १९६७
२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान २४ अक्टूबर १९६५ रघुवीरशरण मित्र पृ ३५।

हो जायें । पुनः भारत के लाडले सपूतों के शीश का मेला लगा है उसका व्यापार हो—

चलो फिर आगई बलिदान की वेला[1]
हमारा मरण भी त्यौहार बन जाए
हमारी अस्थियाँ के वज्र, रिपु की छातियाँ छेदें
हमारे कण्ठ-स्वर तम के समूचे काफिले भेदें
हमारा गर्म लोहू फिर सपूतों की फसल सींचे
अखंडित रूप माँ का नाक फिर तलवार की खींचे
लगा फिर लाडलों के शीश का मेला ।
हमारे शीश भी व्यापार बन जाएँ ॥

गीतकार की अभिव्यक्ति कितनी उच्च भाव भूमि पर हुई है । शीश का मेला, शीश का व्यापार और मरण-त्यौहार आदि में भारत के सपूतों के बलिदान की कहानी चित्रित हुई है । शीश देना प्राणों का उत्सर्ग बहुत ही सहज कार्य हैं, भारत के जवानों के लिए । उनकी वीरता का प्रदर्शन निर्भीकता का दर्शन प्रस्तुत गीत में उपलब्ध है ।

जब हवाएं प्रतिकूल चलने लगती हैं तो संघर्ष आवश्यक हो जाता है । भारत में प्रतिकूल जितनी बार भी हवाएं चली हैं भारतीय सैनिक भी घबराए नहीं हैं । निरन्तर चलते रहने से हिन्द का दीपक नहीं बुझेगा । केसरिया काश्मीर को हस्तगत करने के लिए जब पाक ने शीश ऊंचा किया तो इस प्रतिकूल समीर से संघर्ष करने को भारतीय जवान सजग हो गये । गीतकार ने सृजन किया—

इन प्रतिकूल हवाओं में भी, चलते जाना ओ हमराही ।[2]
तुम यदि चलते रहे निरन्तर दिया हिन्द का नहीं बुझेगा ॥
केसरिया कश्मीर न देंगे चाहे हों लाखों कुर्बानी
यह शहीदों का रक्त-तिलक है आजादी फौलादी पानी
या तूफाँ अभी कुछ कम है शब है बाकी न पल स्याहा ।
रहे लगन की लौ नित ऊपर दिया हिन्द का नहीं बुझेगा ।

आजादी के लिए फौलादी पानी शब्द की उपयुक्तता स्पष्ट है । हजारों लाखों की कुर्बानी लेकर जो आजादी आई वह कितनी फौलादी होगी ?

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १६ जनवरी १९६६ था प्राण गुप्त पृ १८
२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान २४ अक्टू०, १९६५ देवराज गुप्त पृ १०

किननो के रक्त की प्यासी थी निष्ठुर थी यह ग्राजादी ? जीवित बलिदान देते हुय अपने रक्त की रोली स भारत माँ की माँग भरेंग तभी काश्मीर के नये भवन म प्राण की इट लगाने पर काश्मीर हमारा रहगा ।

शाति भिखारिन नही बनेगी १
हम सब जीवन भेंट करेंगे
ये जिन्दा बलिदान रक्त रोली
से माँ की माँग भरेंगे
काश्मीर के नये भवन मे
हम प्राण की इट लगानी है ।।

हमारे भारत की शाति भिखारिन नही बन सकती क्योकि समस्त भारतवासी जीवन की भेंट चढाने को तयार हैं । बलिदान की प्रेरणा के गीता का सृजन हो चुका है और होता रहगा परन्तु देश बलिदान देने स पीछे नही हटेगा । भारत कभी बलिदानों से नहा घबरायेगा क्योकि बलिदान की परम्परा अखड है । भारत भूमि के जवान सदव निर्भीकता स बलिदान देने को तत्पर रहग । गीतकारों की कलम कभी इन गीतो का सृजन करने से नही थकेगी कभी निष्प्राण नही होगी । सदव बलिदानो की गुण गाथा गाकर अमर शहीदो की स्मृति म अनुप्राण्य चना बलिदान की प्ररणा देने म सफल होती रहेगी । यही सजग गीतकार का कत्त य है ।

२ राष्ट्र-द्रोहियों की निन्दा —

स्वय क व्यक्तिगत स्वाथ क लिय जा राष्ट्र का अहित करते है व सभी राष्ट्र द्रोही हैं । ऐसे लोग राष्ट्र के हित की अपना यक्तिगत हित की कल्पना में समष्टि को हानि पहुँचाते हैं । राष्ट्र की उन्नति की चिता न कर शोषण करत हुए उसे अवनति की आर ले जाते हैं व थोडे से स्वाथ क लिए राष्ट्र स्वाधीनता को भी खतरे म डाल दत हैं क्योंकि उन्ह देश म मोह नहा है । राष्ट्र उपन्वा को बडा बनान म सहयोग देने वाल राष्ट्र की सम्पत्ति का हानि पहुँचाने वाल सरकारी वस्तुआ का नष्ट भ्रष्ट कर जनता के जावन का दुखि बनेवाल राष्ट्र द्रोही हैं । भ्रष्ट भाव कुआछूत और स्वाथ क द्वारा जा व्यक्ति राष्ट्र का अहित करत हैं उन राष्ट्र-द्रोहियो की निन्दा करना स्वाभाविक है । गीतकार उनक विचार-परिवतन हेतु इन घातक तत्त्वा का नष्ट करन क लिए उनकी निन्दा करता है जिसस व अपन कत व्य क प्रति जागरूक हो ।

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ३१ अक्टू० १९६५ पुष्पा राही पृ १८

मनुष्यता के शृ ग पर चढे चलो।[1]
उमग की मशाल ले बढ़े चलो॥
भेद भाव, पक्षपात छोड दो
राष्ट्र-एकता को नया मोड दो
आज की विपत्तियाँ बता रहीं,
देशद्रोहियों का साथ छोड दो।
हर परिस्थिति से तुम भिडे चलो।
उमग की मशाल ले बढे चलो॥

भेदभाव पक्षपात करनेवाले देशद्रोहियों का साथ छोड दें तभी राष्ट्रीय एकता सम्भव है। राष्ट्र अहितकारियों से क्रुद्ध गीतकार की आकांक्षा है—स्वतन्त्रता मिल जाने से ही हमारा राष्ट्र समृद्ध एव उन्नत नहीं हो सकता। उसके लिए राष्ट्र-अहित के ये सब कारण, वे सब भावनाएं समाप्त कर देनी होंगी, जिसके परिणाम स्वरूप राष्ट्रीय एकता में बाधा उपस्थित होती है। स्वार्थ घृणा कपट प्रपच छल जातीयता प्रान्तीयता आदि का अन्त करने के लिए कवि का आग्रह है जिससे स्वतन्त्रता का सही एव स्वस्थ स्वरूप सामने आये—

स्वतन्त्रता मिली मिला नवीन मान है[2]
० ० ० ०
न पर बदल सके कि तुम महान् हो सके,
स्वतन्त्र देश के महाभिमान हो सके
दगा फरेब, स्वार्थ से न मुक्त हो सके
घृणा, कपट प्रपच छल वियुक्त हो सके
अभी न घूस की बाजार बन्द हो सकी
अभी न चोर बारद्वार बन्द हो सके
अभी न चोरियाँ गई जिरोरियाँ गई
अभी न स्वार्थ से भरी तिजोरियाँ गईं,

व्यक्तिगत स्वार्थ का ही अन्ततः परिणाम है कि भारत के गाँव दुःख-दारिद्रय से घिर तड़प रहे हैं। सच्चाई ईमानदारी मानवता आदि गुणों का ह्रास हो रहा है—

---

१ योजना १२ जनवरी १९६८ मन्न विरक्त पृ स १३
२ यथार्थ और कल्पना उदयशंकर भट्ट पृ० ५२

सौ-सौ प्रतीक्षित पल गये,[1]
सारे भरोसे छल गये
किरणें हमारे गाँव मे खुशिया नही लाइ
अपना समय भी खूब है
भोला सृजन जाय कहाँ ?
छल हृदय तो स्वाधीन है
ईमान पर पहरा यहाँ ॥

स्वतन्त्रता के उल्लास म भारत का जो नया रूप नया स्वप्न देखा था वह सारा विश्वास छला गया स्वप्न टूट गया कल्पना छिन्न भिन्न हो गई। कारण कि मानव ईमानदार न रह गया। कवि ने भी करारा व्यग्य किया है कि ईमानदारी पर यहाँ पहरा है। हृदय के आधीन तो छल कपट हो रह गये हैं। स्वतन्त्रता की किरणें हमारे गाव म खुशिया न ला सकीं। शोषण तब भी होता था अब भी हो रहा है। कम और ज्यादा का प्रश्न है तो कम तो हुआ है परन्तु कुछ घूसखोरो न व्यक्तिगत स्वार्थ से प्रेरित होकर जन साधारण की खुशियाँ छीन ली हैं। उन राष्ट्र द्वेषियो की निंदा करके कवि उन्हे सचेत करना चाहता है जिससे वे राष्ट्र के प्रति अपने भूले हुए कर्त्तव्य के लिए सजग हो जायें—

यह भारत की आर्य महत्ता जाग रही है[2]
सुन लो कान खोलकर मानव स्वार्थी दुर्बलताओं
असुरो की दुर्द्धर्ष शक्तियो और गुप्त छलनाओ
बच न सकेगी प्रभु की अग्नि घनी यह जाग रही है।

मानव की स्वार्थपूर्ण दुर्बलताओ को धिक्कारते हुए कवयित्री ने सचेत किया है कि भारत की आर्य महत्ता जाग रही है। जब जब भी आसुरी प्रवृत्ति के व्यक्ति छल कपट से राष्ट्र की हानि पहुँचाने की चेष्टा करते हैं तब तब दैवी प्रवृत्ति का महान पुरुष अवतरित होता है ऐसी धारणा परम्परा गत है। उसी की आशा पर नया विश्वास रखकर असुरो की दुर्द्धर्ष शक्तियो एव गुप्त छलनाओ को धिक्कारा है—

बुझती हुई राख म अब भी।[3]
दबे हुए अगार सजग हैं॥

---

१ कादम्बिनी नारजग गग पृ० ७४ स० नवम्बर १९६३
२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान २८ अप्रल १९६३ विद्यावती कोकिल
३ ५५ की श्रेष्ठ कविताए, बनवारीसिंह रग प्र० म० ६७ ६८

ध्वस्त दासत्व देश का—
पर अभी शोषण का बंधन
प्रभुता के हाथों में अब भी
जीवन के श्रम का मूल्यांकन
यद्यपि मंगल-मंगल अचेतन।
फिर भी बलिदान सजग हैं॥

देश की दासता ध्वस्त हो गई किन्तु शोषण का बंधन फिर भी बाकी रह गया। लेकिन उस शोषण को समाप्त करने के लिए अब भी शक्ति है। यद्यपि स्वातन्त्र्य संग्राम समाप्त हो चुका युद्ध के चिह्न मिटने लगे विनाश की अग्नि राख के ढेर में परिणित हो गई परन्तु प्रज्वलित अग्नि के शेष अंश अब भी उस राख के ढेर में अंगारों के रूप में छिपे हैं। वे अब भी सजग हैं। भारत के सपूत निष्क्रिय नहीं हो गए बल्कि अब भी चेतना के अंश बाकी हैं। जीवन के श्रम का मूल्यांकन अब भी सही रूप में न होगा तो कब होगा? अब तो हमारा राष्ट्र स्वतन्त्र ही है।

४ सुरक्षा के लिए उद्बोधन —

जब राष्ट्र समृद्ध होता है तो राष्ट्रीय भावना समृद्धि और एकता के विभिन्न पथों से गुजरती है। जब राष्ट्र स्वतन्त्र ही न होगा तो राष्ट्रीय भावना केवल आजादी के मार्ग पर विकसित होती है। आजादी के स्वप्न को यथार्थ में परिणत करने के लिए एक प्रमुख भावना कार्य करती है—राष्ट्र स्वतन्त्र हो। अन्य पहलुओं पर विचार करना उस समय गौण होता है। इतनी तत्परता से पाई हुई स्वतन्त्रता कहीं फिर परतन्त्रता एवं दासता के चंगुल में न फंस जाय इसीलिए गीतकार अपने गीतों से राष्ट्र रक्षा के लिए जागरण का काम कर रहे हैं। प्रत्येक देशवासी को कदम-कदम पर सजग करते हैं कि कहीं देश पर पुनः शत्रुओं का आधिपत्य न हो जाए।

स्वतन्त्रता के पश्चात् जब जन जीवन में अराजकता बढ़ गई और देश की एकता उपेक्षा की दृष्टि से देखी जाने लगी। राष्ट्रीयता तथा जन जागरण की भावना भावुकता में लुप्त होती हुई व्यक्तिगत स्वार्थ में अटक गई थी उसी समय एक सवेरा हुआ उत्तर की पहाड़ियों में आततायी चीनी घोखा दे रहे थे लुक आए। तुरन्त ही राजनीतिज्ञों ने आपसी मतभेद दूर कर दिए। भाषा की समस्या ठण्डी पड़ गई। विद्यार्थी मजदूर कृषक एवं अन्य वर्ग के सभी व्यक्ति सब कर भाव भूलकर, हड़तालें करना

छोडकर राष्ट्र की सुरक्षा के लिए तयार हो गय। प्रेम के मुख को एक आघात पहुँचा और ससार भर को सशकित कर देने वाली स्थिति उत्पन्न हो गई। इस सकट कालीन एकता के समय म भारत अपने जन जागरण के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचा जिससे भारतीय राष्ट्रीयता केअभिनव रूप को बल मिला। वह भावना जो स्वातन्त्र्य सग्राम के पश्चात् प्राय लुप्त हो गई थी जो पुन नए आयामो के साथ उभरी। भारत के प्रहरी सुप्त थ और व इस नय आक्रमण से स्वप्निल निद्रा को त्याग कर चेतना की अगडाई ले उठ खडे हुए। कवि नपाली की स्वर लहरी सवत्र चेतना के प्राण फूकती भारत म व्याप्त हो गई—

भारत के जवानो !¹
भारत के जवानो !!

भारत से तुम्हे प्यार तो बन्दूक उठालो।
इन चीनी लुटेरो को हिमालय से निकालो॥
भारत के जवानो !
भारत के जवानो !!

युद्ध वाद्य के साथ जागृति के सुरक्षा के उद्बोधन के गीतों का स्वर प्रमुख रूप से मुखरित हुआ। हिन्द के जवानो को आगे बढ़ने का आदेश देते हुए—

बढ़े चलो बढ़े चलो बढ़े चलो ए हिन्द जवान !
लक्ष्मी की सन्तान हो तुम
वीर शिवा की आन हो तुम,
राणा का अभिमान हो तुम
नेताजी की जान हो तुम
सजग हो जाओ वीर जवान,
बढ़े चलो बढ़े चलो बढ़े चलो ऐ हिन्द जवान !!

आगे बढ़ने का सन्देश शिवाजी की आन को स्मरण कराते हुए दिया नेताजी के शौर्य को स्मृति में लाकर दिया इस प्रकार वीर जवानो को सजग कर आगे बढ़ने का सन्देश प्रसारित किया। समस्त साथी तयार हो जायें—

---

१ धमयुग ६ जनवरी १९६३ गोपालसिंह नेपाली

२ रणभेरी आनन्दपाल मिश्र कोविद पकज प्रका० रेल्वे हिन्दी परिषद् पृ० १७

अब हो जाओ तयार साथियों देर न हो[1]
दुश्मन ने फिर बारूदी बिगुल बजाया है,
न मौसम फिर इसी नये चमन के फूलों पर
सर कफन बाँधने वाला मौसम आया है।

प्रस्तुत पंक्तियाँ जवानों को रण अभियान के लिए तत्पर करती हैं। दुश्मन का बारूदी बिगुल पुनः बजने लगा है और यह मौसम ही युद्ध का मौसम आ गया है। अतः सर पर कफन बाँध लो। सर पर कफन बाँधने से गीतकार का अभिप्राय है कि मरण के लिए तयार हो जाओ। यदि युद्ध प्रांगण में मर भी गये तो चिन्ता न होगी क्योंकि मरने की सम्पूर्ण तयारी के साथ सिर पर कफन भी बाँधा है। मानव को जागृति का संदेश देते हुए दुश्मनों के सीना चीरने का संदेश भी दिया गया है—

भोर की किरणें जगातीं आज मानव जाग रे![2]

o o o o o

कस कमर ले खड्ग कर में अब निकलकर तान सीना
भोंक दे अपनी कटारी दुश्मनों की खाल सीना
हो विजय फहरे ध्वजा और हो मिलन फिर गोल सीना
गूंज उट्ठे गगन सारा जग सराहे लोन सीना
शूर की सन्तान है, अब क्रूरता मत पास ला रे!

दुश्मनों की हार हो और विजय ध्वजा पुनः लहराये जगत् में भारत की वीरता की धूम मच जाय। इस प्रकार जब जब भी गीतकार कलम उठाता है स्वतः सुरक्षा-उद्बोधन स्वर लिपिबद्ध होता जाता है। वीर जवानों से गीतकार आशा करता है कि वे देश प्रेम का बिगुल बजायेंगे। शत्रुओं के दल पत्तों के समान थरथराने लगें ऐसे रण का साज सजाने की आकांक्षा है—

आओ वीर जवानो! आओ[3]
देश प्रेम का बिगुल बजाओ!
काँप उठें पत्तों-सम अरि-दल
ऐसे रण के साज सजाओ॥

राष्ट्र पर आई विपत्ति को देखकर निरंकारदेव 'सेवक' ने समस्त भारतवासियों से आग्रह किया कि भेद भाव को भूलकर राष्ट्र रक्षा के लिए

---

१ कविताएं १९६४ नीरज पृ ५१
२ रणभेरी दीनदयाल शर्मा वियोगी पृ १६
३ रणभेरी २ ओमप्रकाश शर्मा 'प्रकाश' पृ १८

तयार हो जाओ। राष्ट्र संकट में है और संकट काल में शृंगार शोभा नहीं देता। संकट के समय शृंगार नहीं रण अभियान किया जाता है -

उठो ! साथियो !! समय नहीं है यह शोभा शृंगार का¹
आज चुकाना है ऋण तुमको अपनी माँ के प्यार का
प्राण हथेली पर रख रखकर चलना है मैदान में
फर्क नहीं आने देना है देश जाति की शान में
सबके आगे एक प्रश्न है सीमा के अधिकार का
उठो साथियो !! समय नहीं है यह शोभा शृंगार का ॥

जिस माँ ने जन्म दिया उसका वह ऋण यदि प्राणों को देकर भी चुकाना पड़े तो भारतवासी सदैव तयार हैं। इसके ये आदर्श हैं। माँ के प्यार का ऋण चुकाना वे जानते हैं। देश और जाति की शान में अन्तर नहीं आना चाहिये चाहे प्राण चले जायें। सीमा के अधिकार का प्रश्न युद्ध का संकेत लेकर उपस्थित हुआ है। इसका उत्तर शक्ति के आह्वान द्वारा ही दिया जा सकता है—

हर शक्ति हिमालय बन जाए²
कस कमर करें अभियान देश
हम सबका तन मन प्राण देश
मरु देश रहे जीवन जाए।
हर शक्ति हिमालय बन जाए ॥

देश ही हमारा तन मन एवं प्राण है। इसकी रक्षा के लिए शक्ति हिमालय-सी विशाल सुदृढ़ बन जाय जिसमें टकराकर शत्रु चूर चूर हो जाये। जीवन भले ही चला जाय किन्तु देश पर आँच न आये। भारत का वह समय आ गया है जब युद्ध मन की ज्वाला होने में नगाड़े अन्तर तक पहुँच कर प्रभाव डाल चुकी है। धरती का सुहाग सती के समान भस्म हो गई है। अतः सत्य की हत्या ज्वाला न हो शिव अपना तीसरा नेत्र खोल दें। क्रोध में जब शिव ने तपस्या भंग करने वाले कामदेव को देखा था तो तीसरे नेत्र की क्रोधाग्नि में वह भस्म हो गया था। इसी कथा के माध्यम से कवि ने संदेश दिया है—

समय आ गया आज कि भारत³
लिए युद्ध मन की ज्वाली

---

१ योजना जनवरी १९६३ निरंकारदेव सेवक
२. समाज कल्याण जनवरी १९६३ नरेन्द्र शर्मा पृ ५
३ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १६ मार्च १९६४ हरिकृष्ण प्रेमी पृ १

शंकर से भी कहो तीसरा नेत्र आज दें वह भी खोल
हत्या आज सत्य की होती, पीड़ित है भूपाल, सगाल,
फिर भी है समाधि में शंकर, क्या न उठा है आसन डाल ?
क्या न छाइन्त हैं प्रलयंकर अब ताडव के तीव्र बोल ?
सती समान भस्म हो गई है, धरती का सुख होता !

शंकर को सृष्टि का संहारकर्ता मानने की परिपाटी प्राचीन है। परन्तु उसी परिपाटी को स्मरण कर गीतकार शंकर से आज भी अनुरोध करता है कि वह तीसरा नेत्र खोल दें, अब तक भी शंकर की समाधि नहीं टूटी है। इसके लिए गीतकार को आश्चर्य हो रहा है। युद्ध के समय शिव का ताण्डव नृत्य तांडव वाला के साथ प्रारम्भ क्यों नहीं हो जाता ?

हमारे देश की सीमा का उल्लंघन करके चीनी जब भारत की सीमा में प्रवेश करने लगे तो इस आपद्-कालीन समय में भी जो व्यक्ति निष्क्रिय थे उन पर गीतकार ने व्यंग्य किया। जो इस संकट के समय भी कदम से कदम मिलाकर राष्ट्र की सुरक्षा के लिए तैयार न हुए स्वर से स्वर मिलाकर संगठित नहीं हुए आक्रोशपूर्ण हृदय उन्हें धिक्कार उठा—

जो फूल चमन पर संकट देख रहा सोता।[1]
मिट्टी उसको जीवन भर क्षमा नहीं करती ॥

जो दुष्ट बवंडर का सत्कार नहीं सकता
उसकी नौका धार के पार नहीं तरती

दुनियाँ में कोई अधिक देश से बड़ा नहीं
धरती पुरखों की पुण्य धरोहर होती है
रहता हो चाहे कहीं देश अंतर आता
हर व्यक्ति उसी आत्मा का सच्चा मानी है
जो काम देश के आया देश मुसीबत में।
कहते भी पुत्र उसे शरमाती है धरती ॥

जो देश के काम नहीं आता उसे देश की धरती का पुत्र नहीं कहा जा सकता। धरती उसे पुत्र कहने में लज्जा का अनुभव करती है जो माँ की लाज नहीं बचा सकता सुरक्षा का दायित्व नहीं ले सकता ऐसे कायर व्यक्ति को धरती पुत्र कहकर नहीं पुकार सकती।

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १८ अगस्त १९६ रामावतार त्यागी

आक्रमण के सकट-काल म गीतकारो की भावना एव कल्पना म एक भीषण शौय-ज्वार सा आ गया। कलम ने उद्बोधन के गीता की सृष्टि की और शब्द नत्य करने लग। वीरो क हृदय म मस्तिष्क म एक ही रागिनी बज रही थी युद्ध म जीत की। किसी भी प्रकार चीनी लुटेरो को हिमालय स खदेडना था—

> आजाद अमर हिन्द का है ताज हिमालय[1]
> देखो ता कौन छीनता है आज हिमालय
> जो ताज पहनना है तो भारत के जवानो
> तुम चान की तलवार स तलवार बजा लो
> इन चीनी लुटेरो को हिमालय स निकालो !!
>
> भारत के जवानो !
> भारत के जवानो !!

वीरा को ललकार कर शौय प्रदान करन के लिए गीतकार उन स्वरो का सधान करता है जो वीरा के वीरत्व का जगा दे राष्ट्र सुरक्षा के लिए सजग कर दे —

> कौन है वह स्वर कि जिसस वीर रस का राग जागे ![2]
> कौन डमरु निनाद है जिसस कि शिव का नाग जागे ?
> कौन सा वह होम है जिसस समर की आग जागे ?
> कौन है वह पव जिसम वीरवर का भाग जागे ?
> बढ चला आ वीर ! तुमको विजय श्री की शपथ है।
> बढ चला आ वीर ! तुमको हिम शिखर का शपथ है॥
>
> वह शपथ-पथ की आरता है !

समा म गीतकार ने एक ही स्वर साजने का प्रयत्न किया है—जिसस वीर रस का राग जाग ऐसा स्वर जिसम शिव का नाग जागे ऐसा डमरु निनाद जिसम युद्ध का अग्नि प्रज्वलित हो ऐसा होम जिसम वीरवर का भाग्य जाग ऐसा पव एक ही भावना है एक ही लक्ष्य है—राष्ट्र-सुरक्षा के लिए तत्परता। उन हमलावरों का बन्द एहसान है जिन्होन आज सोये हुए भारत को जगाया है।

---

१ धमयुग ६ जनवरी १९६३ गोपालसिंह नेपाली पृ १५

२ धमयुग २६ जनवरी, १९ ६, पृ स० ८ रामकुमार वमा

मशीनें धड़धड़ाकर देश की जय बोलता हूं।[1]
बड़ा एहसान उन हमनावरों का है,
हम जो आज सोते से जगाया है
हमारे देश न अपने सपूतों के
पसीने को, लहू को आजमाया है,

भारतीय सैनिकों के लिए प्रयाण गीत लिखा है डॉ० बच्चन ने —

भारत माता के बेटे हम चलते सीना तान के।[2]
धर्म अलग हों जाति अलग हों, वर्ण अलग हो भाषाएँ,
पर्वत, सागर-तट, वन, मरुथल मैदानों से हम आए,
फौजी वर्दी में हम सबसे पहले हिन्दुस्तान के,
भारत माता के बेटे हम, चलते सीना तान के।
जो वीरत्व विवेक समर में हम सैनिक दिखलायेंगे,
उसकी गाथायें भारत के गाँव नगर घर गायेंगे,
पीढ़ी-दर-पीढ़ी गूजेंगे बोल हमारे गान के,
भारत माता के बेटे हम चलते सीना तान के।

समर में वीरत्व के साथ विवेक की भी आवश्यकता है। भारत माँ के लाडले चाहे भिन्न-धर्मी, भिन्नवर्णी, भिन्न भाषी क्यों न हों परन्तु फौजी वर्दी में सब हिन्दुस्तान के हैं। भारत माँ के बेटे सीना तानकर ही चलते रहे हैं और चलते रहेंगे। चीन के पश्चात् पाकिस्तानी युद्ध भेरी बजाने लगे। कवि हृदय उनकी इस तुच्छ हरकत पर मुस्करा उठा—पर्वत से सागर कितना भी टकराये किन्तु पर्वत कभी नहीं हिलता। उसी प्रकार भारत भी हिमालय पर्वत के समान अटल है। पाकिस्तानियों का आक्रमण यहाँ के जवानों को विचलित नहीं कर सकता। हिमालय से भी ऊँचा है देशाभिमान। शत्रु का मिथक का उपमा देकर कवि ने दान में युद्ध-दान का प्रेरणा दी है। गीतकार का हृदय पाकिस्तान की याद से विक्षुब्ध हो उठता है क्योंकि पाकिस्तान शत्रु ही था। भारत ने उससे अधिक व्यय ही की !

सागर चाहे टकराये, किन्तु पर्वत होता न चलायमान[3]
यह सारा पाकिस्तान उठे, क्या तुम विचलित होगे जवान ?
हिम शैल भले ऊँचा हो उससे ऊँचा है देशाभिमान
जब शत्रु बन गया है भिक्षुक, दे दो तुम उसको युद्ध-दान,

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान २० जनवरी १९६३ रामावतार त्यागी
२ वही २८ नवम्बर १९६५ डॉ० बच्चन पृ० १३
३ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ३१ अक्टू० १९६५, डा० रामकुमार वर्मा पृ० ६

यह शीघ्र न थमने वाला है ऐसा है प्राणों का उफान।
तूफानो की है क्या बिसात इतना ऊचा है आसमान ॥

काश्मीर भारत म अलग नही हो सकता। चाहे पूरा शरीर गोलिया से छिद जाये साँसें रुक जायें तन कट जायें परन्तु काश्मीर को भारत से पृथक नही कर सकते—

छिद जाय गोलिया से यह तन रुक जाय साँस का यह समीर।
चाहे यह तन कट जाय, कटेगा नही हमारा काश्मीर ॥

गाधीजी का समाधि राजघाट की पावन माटी की सौ-सौ बार शपथ खा कर वीर जवान प्रतिज्ञा करते हैं कि अब वे पुष्पाजलि न देकर शीश चढायेंगे। पुन राष्ट्र पिता महात्मा गांधी की सतानो ने सिर पर कफन धारण किया है। निर्माण ने महानाश के आमन्त्रण को सहज ही स्वीकार कर लिया है। रण बाला का वरणकर परिणाम की चिन्ता न करते हुए आशा और विश्वास के साथ राष्ट्र की सुरक्षा म सभी सलग्न हैं। हमारी विजय-पताका सदा लहराती रहगी। चाहे कोई भी देश आक्रमण करे, भारत सदव विजय गीत गाता रहेगा।

राजघाट की पावन माटी सौ सौ बार शपथ तेरी [1]
पूना क बन्ले अब तुम पर और के मुण्ड चढायेंगे
सिर पर कफन लपेट लिए हैं फिर तेरी सतानो न
महानाश क आमत्रण का स्वीकारा निर्माणा ने
श्रमवाना क साथ आज हम रणबाला भी वरते है
परिणामो की चिन्ता तेरे पूत भला कब करते हैं ?
युग क भ्राता ! राह देखना उद्भट जब भी लौटेंगे।
विजय-पताका हागी कर म खाली हाथ न आयेंगे ॥

क्षितिज पर पुन विनाश का बन्ली घिर आई भारत की बिजली वाली तलवार फिर स चमकगी। साधारणत बन्ली स जल-वर्षण होना है किन्तु इस सकट की बन्ली स काश्मीर की घाटी पर रक्त का वर्षा होगी। गानदार हिन्दुस्तान क वश का आवाज लगाता है और पुकारकर कहता है कि समरागण क पगाम आरहे हैं। स्वप्नदर्शी नेता म पुन अगार प्रज्ज्वलित हो जायें। हिन्दुस्तान का वश राष्ट्र का सुरक्षा में पूर्ण सहयोग दने को तयार हो जाय—

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ३१ जनवरी १९६६ धानकवि वरागी पृ ६

छिड़ गई विनाश का दामन आज शिविर पर छिन जाना ।[1]
अब फिर से चमकी भारत की बिजली वाली तलवार ॥
पानी नहीं रह बचा कश्मीर का पानी पर
जिसने पूछ डाले दुश्मन शाह फिर से दुश्मन के
ललकार ! आज सदा हिन्दुस्तान के वीरों का—
उनका कहना कि फिर पैगाम आ रहे हैं सेनानी के
हड़ दल ना छाती ऊपर और हिमालय का मस्तक
ऊँचे मस्तकों आँखों में जब फिर से भारत के प्यार
अब फिर से चमकी भारत की बिजली वाली तलवार ॥

पाकिस्तानियों द्वारा बर्बरता से सारा पंजाब दहल उठा था। भारत का पावन स्वतन्त्र देश कश्मीर का मनोरम स्वर्गतुल्य भूमि इन कृतियों से कलंकित हो गया। भारतीय जवान आक्रमणकारी दुश्मन पर टूट पड़े। प्रतिशोध रूप की ज्वाला धधक उठी। कालिदास ने हिमालय को नगाधिराज कहकर उसका गौरवगान किया था। आज वही हिमालय बार-बार से सुरक्षा के लिए पुकार रहा है। भारत की उत्तर-सीमा का सजग प्रहरी समग्र संस्कृति का पालक अपने गौरव पर प्रहार होते देख पुकार उठा है कि भारतीयों उन्हें अपने दायित्व का ध्यान रखना है और इतना ध्यान रखना है कि भारत की सीमा जरा सा भी कम नहीं होना चाहिये।

कालिदास ने नगाधिराज कह जिसका गौरवगान किया है
वह हिमाद्रि अब बार बार से हमें पुकार रहा था !
संस्कृति का पालक सजग भारत की उत्तर-सीमा का
मानदण्ड पृथ्वी का बनकर सदियों से है सुकर खड़ा
एक समय जिसकी पूजा में पुजी भुजाएँ वही भारत
उसके गौरव पर प्रहार है, जागो रे अभिमन्यु भारत ![2]

° ° ° ° ° °

हम पर है दायित्व कि हम सीमाओं में विश्वास करें।
फिर से कंचन देश बने फिर से जनता का न प्यार करे ॥

माँ अब रक्त माँगती है उसका मात्र वचन आया है। जयचन्द एवं मीरजाफर के कारण भारत का जो विनाश हुआ था उसी कहानी का पुनः इतिहास में न लिखा जाना है। तलवार कर दुश्मन का नाश करने का समय

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान — सितम्बर १९६५ ज्ञान नारायण पृ १४
२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ७ नवम्बर १९६५, मनमोहन चतुर्वेदी पृ ७

यह शीघ्र न थमने वाला है ऐसा है प्राणों का उफान।
तूफानो की है क्या बिसात इतना ऊचा है आसमान॥

काश्मीर भारत से अलग नही हो सकता। चाहे पूरा शरीर गोलियो से छिद जाये सांसें रुक जायें तन कट जायें परन्तु काश्मीर को भारत से पृथक नही कर सकते—

छिद जाय गोलिया से यह तन रुक जाय सांस का यह समीर।
चाहे यह तन कट जाय, कटेगा नही हमारा काश्मीर॥

गांधीजी की समाधि राजघाट की पावन माटी की सौ सौ बार शपथ खा कर वीर जवान प्रतिज्ञा करते हैं कि अब वे पुष्पाजलि न देकर शीश चढायेंगे। पुन राष्ट्र पिता महात्मा गाधी की सतानो ने सिर पर कफन धारण किया है। निर्माण ने महानाश के आमन्त्रण को सहज ही स्वीकार कर लिया है। रण यात्रा का वरणकर परिणाम की चिता न करते हुए आशा और विश्वास के साथ राष्ट्र की सुरक्षा मे सभी सलग्न है। हमारी विजय-पताका सदा लहराती रहेगी। चाहे कोई भी देश आक्रमण करे भारत सदैव विजय गीत गाता रहेगा।

राजघाट की पावन माटी सौ सौ बार शपथ तेरी[1]
फूल न वे बरसे अब तुम पर और के मुण्ड चढायेंगे,
सिर पर कफन लपेट लिए हैं फिर तेरी सतानो ने
महानाश के आमत्रण को स्वीकारा निर्माणो ने
श्रमयात्रा के साथ आज हम रणयात्रा भी करते हैं
परिणामो की चिता तेरे पूत भला कब करते हैं?
युग के त्राता! राह देखना उद्भट जब भी लौटेंगे।
विजय पताका हाथो कर मे खाली हाथ न जायेंगे॥

क्षितिज पर पुन विनाश की बदली घिर आई भारत की बिजली वाली तलवार फिर से चमकेगी। साधारणत बदली से जल-वर्षण होता है किन्तु इस मकर की बदली से काश्मीर की घाटी पर रक्त की वर्षा होगी। गीतकार हिन्दुस्तान के वंश की आवाज लगाता है और पुकारकर कहता है कि समरांगण के पगाम आ रहे हैं। स्वप्नदर्शी नेता मे पुन अगार प्रज्वलित हो जायें। हिन्दुस्तान का वंश राष्ट्र की सुरक्षा में पूर्ण सहयोग देने को तैयार हो जाय—

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ३१ जनवरी १९६६ बालकवि बैरागी पृ ९

फिर कोई विनाश का बादल आज क्षितिज पर घिर आया।[1]
अब फिर से चमकेगी भारत की बिजली वाली तलवार॥
पानी नहीं लहू बरसेगा, काश्मीर की घाटी पर,
जितने फूल जलेंगे उतने लाश गिरेंगे दुश्मन के,
गीतकार ! आवाज लगा हिन्दुस्तान के बेटों को–
उनको बता कि फिर पयाम आ रहे हैं समरांगण के,
उठे वज्र सी छाती लेकर और हिमालय सा मस्तक
उठ स्वप्नदर्शी आँखों मे अब फिर से भरकर अंगार
अब फिर से चमकेगी भारत की बिजली वाली तलवार !!

पाकिस्तानियों द्वारा बम वर्षा से सारा पंजाब झुलस उठा। सतलज का पानी उबलने लगा काश्मीर की मनोरम स्वर्गतुल्य भूमि बम वृष्टि से क्षत विक्षत हो गई। भारतीय जवान आक्रोश मे भरकर दुश्मन पर टूट पडे। उनसे प्रतिशोध लेने की ज्वाला धधक उठी। कालिदास ने हिमालय को नागाधिराज कहकर उसका गौरव गान किया था। आज वही हिमालय जोर जोर से सुरक्षा के लिए पुकार रहा है। भारत की उत्तर सीमा का सजग प्रहरी, रक्षक संस्कृति का पोषक अपने गौरव पर प्रहार होते देख पुकार रहा है कि हे भारतवासियो अब तुम्हे अपने दायित्व का ध्यान रखना है, और इतना मीठा प्यार करना है कि शीश भी चला जाये तो दु ख नही होना चाहिये।

कालिदास ने नागाधिराज कह जिसका गौरव गान किया[2]
वह हिमाद्रि अब जोर जोर से हमें पुकार रहा देखो !
संस्कृति का पोषक, संरक्षक भारत की उत्तर सीमा का
मानदण्ड पृथ्वी का बनकर सदियों से है संकट झेला
एक साथ जिसकी पूजा में गुंजा भजाएँ बजी आरती
उसके गौरव पर प्रहार है जागो री असिन्धु भारती !

○ ○ ○ ○ ○ ○

हम पर है दायित्व कि हम सीमाओं में विश्वास भरें।
सिर से कफन बाँध लें, सिर दें इतना भी न प्यार करें॥

माँ जब रक्त माँगती है उसका आज वक्त आ गया है। जयचन्द एवं मीरजाफरों के कारण भारत का जो विनाश हुआ था उसी गलती को पुन इतिहास में न लिखने देना है। तलवार कर दुश्मन को नष्ट करने का समय

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान २६ सितम्बर, १९६५, श्याम मारिल्ल पृ १४
२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ७ नवम्बर १९६५, माखनलाल चतुर्वेदी पृ ७

आगया है। जनतन्त्र के दीवाने एक दो नहीं है पूरे चालीस करोड हैं। शत्रु के आगमन पर चढती जवानियां शृंगार में संलग्न हैं क्योंकि खून की रवानी का त्यौहार मनाना है —

वह वक्त आगया है
जब रक्त माँगती मां वह वक्त आगया है ![1]
वे जाति धर्म दल की बातें बिसर चुकी हैं
इतिहास से हुई जो गलती सवर चुकी है
जयचंद एक भी हम घर में न रहने देंगे
चंगेज एक भी हम घर में न घुसने देंगे
तलवार चलेंगे !
वह वक्त आगया है !!
शृंगार हो रहा है चढती जवानियों का
त्यौहार हो रहा है खूं की रवानियों का
हम एक दो नहीं हैं जनतन्त्र के दिवाने
चालीस कोटि दौडे हैं शत्रु को मिटाने

देश की जवानी का बांकापन देखिए—

यह मेरे देश की बाँकी जवानी है ![2]
सभी हमलावरों को बात
इतनी सी बतानी है
कि बनकर काल जागी
देश की मेरे जवानी है
कि इसका वार कोई
तनिक भी रीता न जाएगा
धरेगा पाँव सीमा पर जो
वह जीता न जाएगा
पहरुआ शांति की बनकर,
खडी मेरी जवानी है
इसे अपने लहू से राष्ट्र की प्रतिमा सजानी है
यह मेरे देश की बाँकी जवानी है !

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान २० फरवरी १९६६ शिवबहादुर सिंह भदौरिया पृ १८
२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ८ जनवरी १९६६ रवि भिवारे पृ० १४

क्षितिजा की रखाए अखड रह इसी प्रयत्न म चाहे सीमा की आग देता तक आजाए तुलसी का बिरवा बारू ी आग स भले ही जल जाए परन्तु मातृभूमि का ारुण क्लेश पुकारकर कहता है कि वीर जवाना ! राष्ट्र की रक्षा के लिए तयार हो जाओ ।

जाग तुझ दश न पुकारा !१
वीर वय ने पुकारा !!
सीमा की आग भले मतो तक आ जाए
तुलसी का बिरवा बारूद मल खा जाए
पर अखड रखनी है क्षितिजा की रेखाएँ
आँचल का दूध भल हाटा म बिक जाए
गुदडी के लालो को
हीरे प्रवालो को
मातृभूमि के दारु क्लेश न पुकारा !
जाग तुझ दश ने पुकारा !!

किसी भी प्रकार अपने रक्त को बहाकर भी राष्ट्र की अखडता बनाये रखनी है राष्ट्र री प्रतिमा सजानी है । चाह कोई भी हो जो दुश्मन भारत पर खूनी आख उठायेगा भारत के सपूत उसे नष्ट करके ही दम लेंगे ।

निष्कष—

इस प्रकार अनेक गीतकारों ने सुरक्षा के लिए गीत लिखे है । जब भी भारत पर बाह्य आक्रमणकारिया ने हमला किया है उस समय देश का प्रत्येक व्यक्ति सजग सचत एव सक्रिय रहा है । गीतकारा ने गीतो द्वारा विभिन्न माध्यमा से राष्ट्र सुरक्षा की प्रेरणा क भाव प्रसारित किए हैं । परतु सुरक्षा का उद्बोधन उसी समय उपयुक्त स्थान पा सका है जबकि राष्ट्र पर बाह्य आक्रमण हुए हैं । शांतिकाल म गीतकारा न इस भावना की आवेशपूण अभि व्यजना नही की । सुरक्षा गीत भारतवासियो को प्रेरणा देते है उत्साहित करते हैं और राष्ट्र की सुरक्षा के प्रहरी और भी तत्परता दुश्मना का सामना करते हैं । चीन के आक्रमण के समय राष्ट्रद्रोहियो की निन्दा की गइ बलिदान की सुप्त भावना को सक्रिय करने म सहयोग दिया एव सुरक्षा के लिए प्रेरित किया । कच्छ अभियान काश्मीर समस्या के कारण होन वाल उत्पात, पाक-युद्ध इन सभी प्रमुख अवसरों पर गीतकारो ने शृ गार, रस पूण गीता की रचना समाप्त कर उन्ही स्वरो का आह्वान किया जिनम सुरक्षा

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १६ जनवरी १९६६ श्री, भारतभूषण पृ० १४

के लिए उद्‌बोधन किया गया था बलिदान के लिए प्रेरित किया था। बारूदी बिगुल का घोष गूंज रहा था। रणचण्डी का आह्वान किया जा रहा था। राणा प्रताप शिवाजी झांसी की रानी लक्ष्मी बाई आदि वीरतापूर्ण कृत्य करने वालों के नाम पर वीर भाव को जाग्रत करने का प्रयास हो रहा था। यद्यपि राष्ट्र सुरक्षा के सम्बन्धी गीतों में सामायिक आवश्यकता की अभिव्यजना होती है तथापि बाह्य सत्ता के आक्रमण के समय प्रमुख स्वर भी यही होता है। इस समय अन्य पक्ष गौण हो जाते हैं जबकि राष्ट्रीय भावना सम्बन्धित किसी भी तत्त्व को लें तो ज्ञात होगा कि समय समय पर सभी आवश्यक है। राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति के विभिन्न स्वर समयानुकूल कम या ज्यादा मात्रा में अभिव्यजना पाते हैं। राष्ट्र की एकता का स्वर सदैव गूंजता रहे यही अन्य भावनाओं के मूल में है।



९ | बालक और राष्ट्रीय भावना

आज का बालक ही भावी युग का निर्माता है, अतएव बालकों में राष्ट्रीय भावना के अंकुर विकसित एवं पोषित करने में माता-पिता का सहयोग होना चाहिए। बालक सबसे अधिक माँ एवं पिता द्वारा अनुशासित होने के कारण उनके सम्पर्क में रहता है। जिसका सम्पर्क सबसे अधिक होगा उनसे बालक सबसे अधिक प्रभावित होगा। बालकों में स्वयं कार्य करने की अपेक्षा अनुकरण करने की प्रवृत्ति अधिक होती है। इसी मूल प्रवृत्ति के कारण वह अच्छा बुरा सभी कुछ अनुकरण के आधार पर कार्यान्वित करता है। यदि बालकों को केवल अनुशासित किया जाये तो उनके व्यक्तित्व का विकास सही ढंग से नहीं हो सकता। प्रारंभ से ही कुंठाओं के जन्म ले लेने पर बालक का व्यक्तित्व अनुशासित के द्वारा सचालित होने के कारण दुर्बल होगा। स्वतन्त्र रूप से कार्य करने की क्षमता का अभाव रहेगा। जबकि हमारे स्वतन्त्र राष्ट्र के निर्माण के लिए हमें चाहिए सुदृढ़ व्यक्तित्व।

सीमा की रक्षा के लिए चाहिए निर्भीक व्यक्तित्व। भय का स्थान ही नहीं होना चाहिए। स्वयं कार्य करने की क्षमता वाला प्रत्युत्पन्नमति युवक चाहिए। ऐसा युवक-वर्ग जिसके द्वारा राष्ट्र में नव निर्माण होगा, स्वतन्त्रता कायम रहेगी सीमा की रक्षा होगी यह सब तब ही हो सकता है जब बालकों के समुचित विकास पर ध्यान दिया जाये। क्योंकि आज का बालक ही कल का नवयुवक होगा जिसकी भुजाओं व शौर्य पर राष्ट्र की एकता निर्भर रहेगी। जिस प्रकार विशाल भवन की सुदृढ़ नींव के लिए मजबूत ईंट, पत्थर गारा आदि के साथ ही साथ भवन निर्मित करने वाला बुद्धिमान इंजीनियर चाहिए जिसकी देख रेख में भवन निर्माण होगा। इंजीनियर की बुद्धि का प्रभाव तो भवन पर निश्चित् पड़ेगा। उसकी नींव का सुदृढ़ता इंजीनियर की कार्य क्षमता एवं निरीक्षण-शक्ति पर निर्भर करता है। ठीक इसी प्रकार बालक की भावनाओं का विकास तथा व्यक्तित्व का निर्माण माता-पिता के सहयोग पर निर्भर करता है। उचित निरीक्षण एवं सहयोग द्वारा बालक का व्यक्तित्व सही दिशा पाकर,

आत्मबल से पूर्ण बन सकता है ।

प्राय कहा जाता है कि मां का दूध न लजाना । उसके भीतर यही भावना निहित है कि बालक ने यदि वीर मां का दूध पिया है तो वह मां का दूध न लजायेगा । यदि कायर मा का दूध पिया है तो हीन काय करके मां के दूध की लाज न रख सकेगा । इससे स्पष्ट है कि मा का प्रभाव बालक पर पडता है । बालक के विकास म मां का पूरा हाथ रहता है । दूध न लजाने की बात बालक से विकसित होने वाले युवक को याद रहती है । इस प्रकार स्पष्ट है कि मां और पिता एव बालक तीनो का परस्पर सहयोग सम्पर्क आवश्यक है । यदि बालक पर समुचित ध्यान दिया जाये तो मां बाप के सरक्षण म वह अपना सही मार्ग ढूढने म समर्थ होगा तथा सबल व्यक्तित्व का निर्माण होगा । राष्ट्रीय भावना के अकुर भी उसके व्यक्तित्व के विकास के साथ-साथ पनपते जायेंगे हरे भरे रहेंगे और राष्ट्र के भावी कर्णधार सुयोग्य माता पिता के सरक्षण म तयार होगे ।

मानव के व्यक्तित्व का विकास सामाजिक परिवेश म होता है । व्यक्तित्व के विकास म मुख्य दो घटक होते हैं ।

(१) जन्म जात स्वभाव (२) वातावरण

जन्म जात स्वभाव म मानव की शारीरिक बनावट बुद्धि एव स्वाभाविक भावनात्मक तथा मूल प्रवृत्यात्मक विशेषताए रहती हैं । वातावरण म जलवायु, भोजन परिवार स्कूल समाज की रूढियां परम्परा प्रचलित साहित्य कला सगीत धर्म आदि का समावेश होता है । बाल्यावस्था म माता पिता के व्यवहार के अनुसार बालक के व्यक्तित्व का विकास भिन्न भिन्न रीति म होता है । यदि बालक के माता पिता बालक को कठिन परिस्थितियों म जूझने उसम युद्ध करने और उस पर विजय प्राप्त करने का अवसर देते हैं तो एसा बालक आत्म प्रदर्शन करने वाला स्वतत्र व्यक्तित्व लिए हुए स्वावलम्बी निर्भीक एव स्वतत्रता प्राप्त करने वाला बनता है । यदि बालक के व्यक्तित्व का विकास इसके विपरीत माता पिता के सरक्षण म इस प्रकार होता है कि उसकी रक्षा का भार एव कार्यभार माता पिता ही उठाते हैं तो वह बालक भी परावलम्बी एव आत्म विश्वासहीन बनता है । वातावरण का बालक के व्यक्तित्व के विकास म बहुत बडा हाथ होता है । भय व आतक का वातावरण बालक को हीन डरपोक एव मन्द बुद्धि वाला बनाता है जबकि प्रेम प्रोत्साहन एव आनन्दमय वातावरण का प्रभाव इसके विपरीत होता है । इस प्रकार बाल्यावस्था म माता पिता तथा सम्बन्धियों के व्यवहार का गहरा प्रभाव व्यक्तित्व के निर्माण पर पडता है ।

इसी प्रकार गिरोह आदि बनाकर नेता बनने की प्रवृति का भी बालक के व्यक्तित्व के विकास में योगदान होता है। हाँ बालक का सामाजिक परिवेश क्षेत्र सीमित है और वह बाद में विस्तृत होता है। सब प्रथम शिशु अपने परिवार के अन्य सदस्यों की चेष्टाओं गति विधियों से मूक बनकर सीखता है। तब यही चेष्टाए और प्रयत्न परिवार के सदस्यों के सहयोग से धीरे धीरे बोला अथवा भाषा का रूप ले लेती हैं। बालक अपने आस-पास होने वाले परिवर्तनों परिवेश में घटित क्रियाओं के अनुकरण पर सीखता है। यह अनुकरण प्रथमतः परिवार द्वितीय पड़ौस तृतीय पाठशाला से परिपोषित होता रहता है। इन समीतियों, संस्थाओं एवं समाज के विस्तृत पर्यावरण से प्रभावित बालक समाज हित में क्रिया शील होता जाता है। इस प्रकार की भावनाओं को बालक शनै शनै अपनाता रहता है। एतदर्थ बालक के हृदय और मस्तिष्क में राष्ट्रीय भावना को अनुप्रणित करने में सामाजिक परिवेश का विशेष एवं महत्वपूर्ण योग रहता है। बालक शिक्षार्थी है और समाज उनका शिक्षक है। यदि समयानुकूल बालक को राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत परिवेश मिलता रहे तो यह कहा जा सकता है कि बालक अपने राष्ट्र के हित के लिए सदैव विचारशील रहेगा और कर्मशील बनने का प्रयत्न करेगा।

बालकों में राष्ट्रीय भावना की प्रतिक्रिया तब उस समय होती है जबकि देश में कोई राष्ट्र विरोधी क्रिया स्थान न रही हो या कुछ समय पूर्व ले चुकी हो अथवा कुछ समय पश्चात् स्थान लेने की संभावना हो। इन्हीं परिस्थितियों के आंचल में राष्ट्रीय भावना के स्वप्न और कर्म फलते फूलते हैं। संकट कालीन स्थिति में अथवा देश के विरोधी प्रतिद्वन्द्वियों के घात प्रतिघातों से बालक की राष्ट्रीय भावना समाज के परिवेश को देखकर प्रबल रूप में मुखर हो उठती हैं। ऐसे समय में बालक अपनी अनुकरण प्रवृत्ति के कारण उन गतिविधियों से प्रभावित होकर समाज के अन्य सदस्यों को अपना पथ-प्रदर्शक मानकर उनका अनुगामी बन जाता है। यद्यपि बालक की उन चेष्टाओं क्रियाओं एवं भावनाओं से समाज अथवा राष्ट्र को कोई प्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त नहीं होता और न लाभ ही होता है, तथापि आजकल का बालक कल का वीर मनिक कहलाता है। बालक की शैशवावस्था से युवावस्था तक मस्तिष्क की पर्यायों में राष्ट्र की भावना को अप्रत्यक्ष, अपरिपक्व से परिपक्व भाव सवाधन मिलता रहता है। तत्पश्चात् बालक अपने कर्म में राष्ट्र हित की भावना को अपना एक अंग समझकर चलता है। कर्म में राष्ट्रीय भावना के अंकुर को यदि पूर्ण रूपेण हरा भरा एवं दृढ़ बनाना है तथा पुष्पित फलित

होते देखना है तो बालक मे राष्ट्रीय भावना के अकुर को पनपने एव शक्ति शाली बनाने म उचित सरक्षण एव सहयोग की आवश्यकता है।

बालको म राष्ट्रीय भावना का पक्ष सूक्ष्म तो होता ही है साथ ही अप्रबल भी होता है। फिर भी राष्ट्र के प्रति बालका स लेकर वृद्धो तक म सदव राष्ट्रीय भावना का जागरण राष्ट्र क प्रति चतनता और कायशीलता आवश्यक है। इसी कारण विशेष को लकर गीतकारो न राष्ट्रीय भावना को बालको के मस्तिष्क एव हृदय म जाग्रत बनाय रखने का प्रयास किया है। परिणामत बालको ने भी राष्ट्रीय भावनायुक्त गीतो की रचना की है जिसम राष्ट्र के प्रति श्रद्धा आदर निर्माण त्याग, बलिदान एकता सगठनता एव विश्व-बधुत्व तथा मानवता की भावना का परिचय दिया है। यद्यपि बालको का मौलिक रचनाए कम ही हैं परन्तु प्रयास सराहनीय है और भविष्य मे प्रगति की सभावना है। हमारे कुछ गीतकारो ने अपने राष्ट्रीय भावना युक्त गीतों म बालको की राष्ट्र के प्रति मनोवृत्ति और भावनाओ को उभारकर स्पष्ट रूप म प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। परिणामस्वरूप बालक-वग उन रचनाओ को पढ़कर राष्ट्र के प्रति सजग कमशील और जागृत हो उठता है —

श्री रामरिख मनोहर बच्चो के उत्साह को बढ़ाने म सहयोग देते हुए उनका शक्ति का निदशन कराते है। देश म घटित प्राचीन घटनाओ की पुनरावृत्ति कर उनका स्मरण कराकर उनके उत्साह को त्रिगुणित करते हैं —

जमाने को झुका देंगे हमार देश क बच्चे।[1]
वतन का कृग चुका देंगे हमारे देश क बच्चे॥
न यह समझो मरहठो की गुरिल्लामार सोई है
न यह समझो कि वीरो का विकट हुकार साई है।
जगा है सिह सतानें लिए है तिक्त किरपाणें
न यह समझो कि मर देश का तलवार सोई है।
जुग बाजा जिता देंगे हमार दश क बच्चे।
तुम्ह पाजा बना देंगे हमार दश क बच्चे॥

और मनुष्य गुम सौ बातों का एक बात बनात हुए कहत हैं कि प्रत्यक बालक सिपाही बन गया है और देश का रक्षा म तत्पर उन नन्हे वीर

---

१ पत्रिका-पराग अक जुलाई १९६१ पृ ८

बालकों के हाथों में बदूकें भी हैं —

हिमगिरी स आवाज उठी है[1]
हर बालक बन गया सिपाही
पर स्वय बन चले राह मे।
हाथा म बदूकें उठाइ ॥

भारत की परम्परागत परिपाटी रही है—कहानी सुनाने की। रात्रि के समय परिवार के वृद्ध यक्ति अथवा माताए अपने बालका को अनेक प्रकार की कहानिया द्वारा परिचित कराते हैं उनस जो देश की रक्षा के लिए प्राणोत्सग कर सदव के लिए अमर हो गए एव जिनका नाम इतिहास के पृष्ठा पर स्वण ररा मे अकित है। किन्तु वही सुनी हुई कहानियाँ बालक की विस्मृति को पुन स्मृति म परिवर्तित कर स्फूर्ति का सचार कर देती हैं। देखिए —

वह अब तक केवल वीरो की[2]
माँ स सुनता रहा कहानी
वह प्रसन्न है क्याकि मिलेगी।
उम मौत जानी पहिचानी ॥

बालक की चाह है अपनी भारत माता के दुश्मन से लडने की। वह कामना रखता है विश्व-बधुत्व की—

भारत माता क दुश्मन स[3]
अम्मा सदा रहू मैं लडता।
विश्व शाति हित आगे आगे,
निमय सदा रहू मैं बढता ॥

गणतन्त्र दिवस पर राष्ट्रीय गीत म जन गण मन के बोल बालक का मन अभिभूत कर लेते हैं। इस पावन एव मगल त्योहार को मनाने म सानन्द बालक २६ जनवरी का अभिनन्दन करता हुआ अपने गान से दिग दिगन्त गुजरित कर देता है। देखिए—

---

१ पत्रिका पराग अक जुलाई १९६३ पृ ४४

२ रच मनुज गुप्त, पत्रिका पराग अक जुलाई १९६३ पृ ८४

३ ल विजय मणिमाला, धमयुग ९ फरवरी १९६४ पृ ८०

आज नया विधान है।[1]
दिशि दिशि गूंजा गान है।
जन, गण मन का
अभिनन्दन का
यह पावन त्यौहार है।
यह मगन त्यौहार है॥

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता दिलाकर राम राज्य की कल्पना की थी। उसी स्वप्न को पूर्ण करने के लिए बालक भी तत्पर हैं। उनका सहयोग भी आवश्यक समझा गया है—

राष्ट्र पिता बापू के सपने[2]
ये सपने हम सबके अपने
क्यों कर रहे अधूरे ?
उन्हें करेंगे पूरे
यह सबको स्वीकार।
यह मगन त्यौहार॥

बालकों का क्या कर्त्तव्य है ? यह भी बालक जानते हैं और स्वतंत्रता के पश्चात् की नवीन जनता को वह सब योग्य बनाना चाहते हैं।

अपना कर्त्तव्य निभायेंगे।[3]
जाग जनता को जगायेंगे
नया चेतना धरती के
हर कोने तक पहुँचायेंगे॥

भारत के बालक निराले हैं। वीर-बहादुर बालक हैं जो हिम्मत हारना नहीं जानते। भारतवासी यह न समझें कि बालक तो हिम्मत के कच्चे हैं बल्कि उनमें तो शस्यश्यामला भूमि के बलिदानों की क्या बात है।

हम भारत के बच्चे हैं[4]
वीर बहादुर सच्चे हैं
बालक हैं तो यह न समझना।
हम हिम्मत के कच्चे हैं॥

---

१ [illegible] धर्मयुग २ जनवरी १९६४ पृ ५५
२ [illegible] धर्मयुग जनवरी १९६४ पृ ५५
[illegible] [illegible] धर्मयुग १२ जनवरी १९६४ पृ ६
४ [illegible] फरवरी १९६४ पृ ३८

हमने जन्म लिया भारत की शस्य श्यामला धरती पर
बलिदानों की कथा लिखा है इसकी धरती धरती पर,

० ० ० ०

अंगारों पर चलते चलते हम फूलों से हंसते हैं
हम भारत के बच्चे हैं वीर बहादुर सच्चे हैं।

बालकों का अपने नन्हे किन्तु दृढ़ कदमों पर अटूट विश्वास है—

कदम बढ़ाएंगे हम अपने[1]
मंजिल आगे मुस्काएगी।
हम धरती की धूल—
चांद तारों को पाकर आएगी।

हम हैं नन्हे मुन्ने लेकिन
बड़े बड़े अरमान हमारे
दिशा दिशा को दुहराते हों।
होंगे एक दिन गान हमारे॥

बालकों में राष्ट्रीय भावना का अंकुर उनके विकास के साथ विकसित होता जायगा पनपता जाएगा और फिर एक दिन विशाल तरुवर का रूप धारण कर लेगा तब —

अंकुर हैं हम अभी धरा की—
गोदी में सुख से लेटे हैं।
बरगद बनकर छाया देंगे—
आखिर बापू के बेटे हैं।

जन्मभूमि के प्रति जो अगाध प्रेम, सब श्रद्धा है वह गीतों में मुखर हो गई है। राष्ट्र की जय का नारा लगाते हुए—

एक बार फिर से जय बोलो[2]
प्यारे हिंदुस्तान की।
जिसकी मिट्टी सोना देती,

---

१ देवव्रत देव' सा हि १२ नवम्बर १९६१ पृ ३२
२ रमाकांत दीक्षित सा० हि० १६ फरवरी १९६४ पृ ३६

धरती है वह भगवान की।
दया धम की शिक्षा मिलती।
जन्म भूमि इसान की ।।
एक बार फिर से जय बोलो
प्यारे हिन्दुस्तान की ।

आज के न ह मु ने अपने को किसी बडे वीर नेता एव राष्ट्र निर्माणक म कम नही समभत हैं क्योंकि व भारत मा की आखा क तारे जो हैं —

हम नन्हे मु ने भारत माँ की आँखा के तारे हैं[1]
अधियारी म नई रोशनी बाले दीप दुलार हैं

० ० ० ०

शांति और समता क सच्चा गू जते बान नारे हैं।
हम नन्ह मुन्ने भारत माँ की आँखा क तारे है।

तिरगे भडे का लहराते देखकर बच्चों का मन राष्ट्र एव भडे के प्रति श्रद्धा स भर जाता है। एक बालिका की जिज्ञासा देखिए—राष्ट्रीय भडे को तिरगा भडा क्या कहते हैं ? जबकि इसम चार रग है। केसरिया हरा सफेद और साथ-साथ नीला भी है। अगर केसरिया रग हिन्दुग्रा का हरा रग मुसलमानों का सफेद रग इसाइ और पारसी आदि सम्प्रदाया का है तो नीला रग सिख धम का प्रतीक नहा है ? वह मा अपने सिर पर नीले रग की पगडी बाधत हैं। अतात तम्न क भडे का रग भी ता नीला है। केसरिया रग साहस और बलिदान का हरा रग वीरता और विश्वास का और सफेद रग शांति और सत्य का प्रतीक है। यह भावना राष्ट्राय एकता की ओर सकेत करती हैं। तिरगे भडे के प्रति अटूट मोह का एक दृश्य देखिय—

एक तिरगा टापी अम्मा[2]
औ फौजी वर्दी पहनादा।
दकर अब बदूक हाथ म
अम्मा मनिक मुझ बना दा।।

तिरगे भडे का आजादी का स्मक मानकर उसके प्रति गौरव प्रकट करत हुए —

---

१ दवदूत न्वं मा० हि ६ फरवरा १९६४ पृ ३६
२ विजयमणिलाल धमयुग ६ फरवरी, १९६४ पृ ५०

सदा तिरंगा आजादी का रक्षक बनकर लहर ।[1]
जब तक तन म सांसें बाकी—
ललकारें दुश्मन को,
चप्पा—चप्पा धरती लेने
करें निछावर तन को,
हम कायर कमजोर नहीं हैं और न गूंग बहर ।

गणतन्त्र दिवस एक नवीन स्फूर्ति नवीन चेतना, एव राष्ट्रीयता का उल्लास पावन लिए आता है । इस पावन पव पर प्रत्येक प्राणी म नवचेतना जागत होना स्वाभाविक ही है मानो पृथ्वी पर स्वग ही उतर आया हो ।

हर गाव-गाव हर गली-गली[2]
जस हो स्वग उतर आया ।
हर साल अनोखा छटा लिए
यह राष्ट्र पव जब जब आया ।

पुण्य दिवस फिर वही आज दखो आया है ।
मन म नई उमग नशा सा छाया है ॥

बालक क मन म अपने देश के प्रति अभिमान है और इस पृथ्वी पर उगन वाली फसल पर तथा देश की प्राकृतिक छटा पर भी । श्री प्रसाद का गीत जो स्वय बालक की अनुभूति को अपन गीतो म स्पष्ट करते हैं —

सूरज की सोने की किरणें बिखराता है मेरा देश[3]
हरी भरी सु दर फसलो म, मुस्काता है मेरा दश ।

मेरा दश बडा सुन्दर है
सागर पवत माला-का
लम्बी नदियाँ चौडी नदियाँ
इनसे बना निराला सा ।

तरह तरह क रूप रग है तरह तरह के इसके वेश
सूरज की सोन की किरणें बिखराता है मेरा देश ।

---

१ सुरेश कुमार सुमन सा० हि० १२ मई, १६६२ पृ ३८
२ सुधाकर दीक्षित पराग जनवरी १६६४, पृ ४७
३ श्री प्रसाद सा हि २४ नवम्बर, १६६३ पृ ३७

हाथ म बदूक लेकर लडने को उद्यत बालक अपने देश के गुणगान गाता है। इसी तरह के भावा की सुदर लडी को देखिए कवियत्री सराजिना कुलश्रष्ठ के निम्न गीत मे—

मां मुझको बन्दूक थमा दें।[1]
मैं भी लडने जाऊगा ॥
मेरा देश बडा सुदर है
हरी भरी यह धरती है।
बहती नदियाँ उछल उछलकर।
इसको धन से भरती हैं ॥
इसके वभव को मैं अपने
श्रम स और बढाऊगा।
मां मुझको बदूक थमा दे
मैं भी लडने जाऊगा ॥

बालक का बन्दूक थामने का आग्रह कवल आग्रह ही नही है बल्कि वह देश क प्रति अपन कत्त य को भी भली भाँति समझता है। उसका न हा दिल यह भी समझता है कि जो नता अपने देश क प्रति कत्तव्य को पूरा करने क लिए अपने जावन की बाजी तक लगा गय वे भी किसी दिन बालक ही तो थ? तब भला व क्यो नहा अपन का भारत भाग्य विधाता समझ—

इक दिन बालक ही तो थ य[2]
नानक गौतम गांधी।
ऐसे हो साधक बन रोकें
बर भाव की आंधी।
जीवन पथ की बाधाग्रा म
हम जूझना आता।
हम बालक युग-निर्माता हैं
भारत भाग्य विधाता।

य नहे बालक मरन का लकर भी घबरात नहीं हैं। बालक भारतवप का मानवता पर गव करत हैं—

---

१ सरोजिनी कुलश्रष्ठ धमयुग २८ नवम्बर १९६ पृ ८

२ प्रशोक कुमार शमा धमयुग, १ सितम्बर १९६१ पृ ५०

देश हमारा हमको प्यारा भारतवर्ष महान्[1]
हर बच्चा अंगारा है जय जननी हिन्दुस्तान।
भारतवर्ष महान्।
हर विपदा को हंसकर सहते जायेंगे
धरती के कण कण में दीप जलायेंगे
भारत का बच्चा बच्चा ध्रुव तारा है
सत्य अहिंसा अमर रहे यह नारा है।
गांधी की गौतम की इस धरती पर हमे गुमान
आन बान के धनी अग्नि राणा की हम संतान
भारतवर्ष महान्।

देश में सुख शांति का साम्राज्य रहे। बालक की इस विशाल राष्ट्र भावना को विकसित करते हुए सरला जोशी का गीत, बालकों के उत्साह को व्यक्त करते हुए—

बस लोरी में थोड़े से वे स्वर भी भरलें[2]
जिनमें ताण्डव को भी गति मिल जाय।
डम डम डम डम डम डमरू बाज उठा मेरा
रिपु के सिर पर पड़ने को पग भी अकुलाए।।

बालकों की उमंग का एक गीत प्रस्तुत है—
बच्चे बच्चे के प्राण में शीश कटाने का है चाव[3]

o o o o

हम सर्वस्व लुटा देंगे है देश हमें प्राणों से प्यारा।
लोहा गने चलो चीन ने भारत के तप को ललकारा।
यह बालकों का देश बालकों में भी है पुरुषत्व अपार।।

सब देशों में शांति हो ऐसी कामना करते हुए छिपकर युद्ध करने वालों के प्रति बालक की घृणा—

सब देशों में अमन चमन हो[4]
मुझको सबसे—प्यार है।

---

१ वन्यास धर्मयुग ३ नवम्बर १९६३ पृ० ५०
२ सरला जोशी धर्मयुग १० नवम्बर पृ० ५०
३ श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी' पु०—चला सिपाही चला पृ० ३४
४ देवराज 'दिनेश' पु०—चला सिपाही चला पृ० ४१

पर जो छिपकर युद्ध छेड़ते हैं
उन सबको धिक्कार है ।।
सह न सकूंगा मैं चीनी धमकी
जोर—जुल्म की तानाशाही
मैं हूँ नन्हा वीर सिपाही ।।
चाचा मैं हू वीर सिपाही ।
आज़ादी के पथ का राही ।

नो सुशील दीक्षित बच्चा का उत्साह बढाते हुए कहते हैं—

आज़ादी का मूल्य प्राण है ।[1]
हस—हस हम चुकाना है ।।
सीमा पर आक्रमण बहुत
हो चुका न देखा जायेगा
भारत की रक्षा को
बच्चा बच्चा खून बहायेगा ।
आज हड़पना चाह रहा
अरि सिक्किम और भूटान है ।।
खून शत्रु का मागता ।
फिर स हिन्दुस्तान है ।

बालका को नारा लगाना विशेष प्रिय है । श्री बाल स्वरूप राही' का गीत द्रष्टव्य है जिसम आज़ादी क लिए अपना शीश चढ़ाने को तयार बालक धरती का कण भर भी नहीं देना चाहता । उन्हें अपनी जीत पर अटल विश्वास है ।

माथों की भेंट चढ़ायेंगे[2]
फिर माँ न हमें पुकारा है ।
आज़ाद रहो या मर जाओ
अब यही हमारा नारा है ।
बच्चा बच्चा जाएगा मर देंगे न मगर धरती कण भर ।
आखिरी हमारी ही होगी यदि पहली जीत तुम्हारा है ।।

अनायास जब कोई राष्ट्र अन्य राष्ट्र पर आक्रमण करता है तो चूकि आक्रमण करने वाला राष्ट्र तयारी के साथ हमला करता है और जीत क

---

१ सुशील दीक्षित पु०—चनो सिपाही चना पृ ८४
२ बालस्वरूप 'राही' चना सिपाही चना पृ० ४५

सेहरा उसके शीश पर बंध जाता है। किन्तु यह क्षणिक अस्थायी जीत अन्य राष्ट्र के सजग होने पर हार में भी परिवर्तित हो सकती है। भारत के नौनिहाल इसी विश्वास को लेकर बढ़ रहे हैं कि यदि पहली जीत दुश्मन की हो भी गई तब भी आखिरी जीत भारत की ही होगी। पाकिस्तान ने आक्रमण करने के लिए 'पटन टैंक सेबर जट' आदि अनेक प्रकार के शक्तिशाली शस्त्र परराष्ट्र से ऋण-स्वरूप लिये किन्तु वीरता किससे उधार लेते? भारत के पास सबसे शक्तिशाली अस्त्र था 'वीरता' का। अन्य अस्त्र शस्त्रों के साथ वीरता एवं बुद्धिमत्ता का सम्मिश्रण था। यही कारण है कि उचित प्रयोग वीरता एवं शस्त्र चलाने की निपुणता के कारण ही भारत विजयी रहा। आजाद रहो या मर जाओ अब यही नारा हो प्राणों का मोह अवशेष न रह जाय तभी सच्ची वीरता का प्रदर्शन हो सकता है। भारतवासी राष्ट्र की रक्षा के लिए तत्पर हैं किन्तु बालकों का उत्साह भी कम नहीं। शीश की भेंट चढाने को तत्पर बालक आजादी की रक्षा में संलग्न होना चाहते है। वे खेल-खिलौने आदि छोडकर सिपाही बनने को प्रस्तुत हैं। भारत-माता के अधरों की मुस्कान लौटाने के लिए दुश्मन का सामना करने के लिए समस्त साथियों को एकत्र करते हुए वीर बालक की अनुभूति—

> खेल खिलौने छोडो साथी! आज सिपाही बन जाना है।[1]
> दुश्मन हमको चिढा रहा है
> भूल गया है भाई चारा
> खट्टे करदें दांत कि उसके
> किया बहुत अपमान हमारा
> भारत माता के अधरों से गई हंसी को लौटाना है।

राष्ट्र की प्रगति की कामना शांति के समय की जाती है। युद्ध के समय राष्ट्र की सुरक्षा का चिंतन करते हैं और मुख्य स्वर सीमा की रक्षा का होता है। परन्तु जब युद्ध की आंधी लौट जाती है तब नव-निर्माण की गुंजन की प्रगति की आकांक्षा से रचनात्मक कार्य किए जाते हैं।

> देश की किस्मत नई हम ही गढेंगे।[2]
> आंधियों के सिर झुकाते हम बढेंगे।।

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान श्री नारायणलाल परमार, अंक १० अक्टूबर १९६५ पृ ३९

२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १५ अगस्त १९६६ श्री देवव्रत जैन पृ ३६

पर जो छिपकर युद्ध छेड़ते हैं
उन सबको धिक्कार है ।।
सह न सकूंगा मैं चीना धमकी
जोर—जुल्म की तानाशाही
मैं हूँ नन्हा वीर सिपाही ।।
चाचा मैं हूं वीर सिपाही ।
आज़ादी के पथ का राही ।

श्री सुशील दीक्षित बच्चों का उत्साह बढ़ाते हुए कहते हैं—

आज़ादी का मूल्य प्राण है ।[1]
हंस—हंस हम चुकाना है ।।
सीमा पर आक्रमण बहुत
हो चुका न देखा जायेगा
भारत की रक्षा को
बच्चा बच्चा खून बहायेगा ।
आज हड़पना चाह रहा
अरि सिक्किम और भूटान है ।।
खून शत्रु का मांगता ।
फिर से हिंदुस्तान है ।

बालकों को नारा लगाना विशेष प्रिय है । श्री बाल स्वरूप राही[2] का गीत द्रष्टव्य है जिसमें आज़ादी के लिए अपना शीश चढ़ाने को तयार बालक धरती का कण भर भी नहीं देना चाहता । उन्हें अपनी जीत पर अटल विश्वास है ।

माथों की भेंट चढ़ायेंगे
फिर मां ने हमें पुकारा है ।
आजाद रहो या मर जाओ
अब यही हमारा नारा है ।

बच्चा बच्चा जाएगा मर देंगे न मगर धरती कण भर ।
आखिरी हमारी ही होगी यदि पहली जीत तुम्हारी है ।।

अनायास जब कोई राष्ट्र अन्य राष्ट्र पर आक्रमण करता है तो चूं कि आक्रमण करने वाला राष्ट्र तयारी के साथ हमला करता है और जीत के

---

१ सुशील दीक्षित पृ०—चलो सिपाही चलो पृ ८४
२ बालस्वरूप राही चलो सिपाही चलो पृ० ४५

सहरा उसके शीश पर बंध जाता है। किन्तु वह क्षणिक अस्थायी जीत अन्य राष्ट्र के सजग होने पर हार में भी परिवर्तित हो सकती है। भारत के नौनिहाल इसी विश्वास को लेकर बढ़ रहे हैं कि यदि पहली जीत दुश्मन की हो भी गई, तब भी आखिरी जीत भारत की ही होगी। पाकिस्तान ने आक्रमण करने के लिए 'पैटन टैंक सेबर जेट' आदि अनेक प्रकार के शक्तिशाली शस्त्र परराष्ट्र से ऋण स्वरूप लिये किन्तु वीरता किससे उधार लेते? भारत के पास सबसे शक्तिशाली अस्त्र था 'वीरता' का। अन्य अस्त्र शस्त्रों के साथ वीरता एवं बुद्धिमत्ता का सम्मिश्रण था। यही कारण है कि उचित प्रयोग वीरता एवं शस्त्र चलाने की निपुणता के कारण ही भारत विजयी रहा। आजाद रहो या मर जाओ अब यही नारा हो, प्राणों का मोह अवशेष न रह जाय तभी सच्ची वीरता का प्रदर्शन हो सकता है। भारतवासी राष्ट्र की रक्षा के लिए तत्पर हैं किन्तु बालकों का उत्साह भी कम नहीं। शीश की भेंट चढ़ाने को तत्पर बालक आज़ादी की रक्षा में संलग्न होना चाहते हैं। वे खेल खिलौने आदि छोड़कर सिपाही बनने को प्रस्तुत हैं। भारत-माता के अधरों की मुस्कान लौटाने के लिए दुश्मन का सामना करने के लिए समस्त साथियों को एकत्र करते हुए वीर बालक की अनुभूति—

> मन-खिलौने छोड़ो साथी! आज सिपाही बन जाना है।[1]
>
> दुश्मन हमको चिढ़ा रहा है
>
> भूल गया है भाई चारा
>
> खट्टे करदें दांत कि उसने
>
> किया बहुत अपमान हमारा
>
> भारत माता के अधरों पर गई हंसी को लौटाना है।

राष्ट्र की प्रगति की कामना शांति के समय की जाती है। युद्ध के समय राष्ट्र की सुरक्षा का चिंतन करते हैं और मुख्य स्वर सीमा की रक्षा का होता है। परन्तु जब युद्ध की आंधी लौट जाती है तब नव निर्माण की सृजन की, प्रगति की आकांक्षा से रचनात्मक कार्य किए जाते हैं।

> देश की किस्मत नई हम ही गढ़ेंगे।[2]
>
> आंधियों के सिर झुकाते हम बढ़ेंगे॥

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान श्री नारायणलाल परमार अंक १० अक्टूबर १९६५ पृ ३६

२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १५ अगस्त १९६६, श्री देवव्रत ज्योति पृ ३६

भोर लाएँगे गुंजन की हम सुहानी
हम कहेंगे नए युग की नव-कहानी
प्यार की धारा हम जग में बहानी

प्रगति के ऊँचे शिखर पर हम चढ़ेंगे।
आँधियों के सिर झुकाते हम बढ़ेंगे ।।

भारतवर्ष के सुपुत्र इस अणु युग में भी मन में शांति रखकर जा रहे हैं। भारत के वीर बालक पथ पर बढ़ते जायेंगे। चाहे चट्टानें या अन्य अवरोध मार्ग में आयें लेकिन वे हँसकर उन पर चढ़ने को तैयार हैं। वे बचपन से ही वीरता का पाठ पढ़ते हैं क्योंकि कल के भारत की आशा भी तो यही बालक हैं। इन्हीं पर भारत की उन्नति निर्भर करती है। ये ही भावी भारत के विश्वास हैं तूफानों से डरने वाले ये बालक नहीं—

हम भारत के वीर सिपाही[1]
अपने पथ पर बढ़ते जाते
जितनी चट्टानें पड़ती हैं
उन पर हँसकर चढ़ते जाते

जहाँ मुस्कराए हम मिलकर उसी समय का नाम सवेरा।
बिजली घर के पले हुए हैं हमसे भीता दूर अँधेरा ।।

देश हमारा प्यारा भारत
हम सब इसके बेटे हैं
इस अणु युग के भीतर भी हम
मन में शान्ति समेटे हैं

° ° °

हम कल के भारत की आशा हम कल के विश्वास हैं।
तूफानों से नहीं डरेंगे हम कल के इतिहास हैं ।।

यद्यपि बालक तन के सुकुमार होते हैं और लड़ने के अयोग्य माने जाते हैं। किन्तु शत्रु की तलवार पर बालक स्वयं को सुकुमार तन वाला नहीं मानते बल्कि फौलादी अंगार सदृश हैं। वे विकास के अग्रदूत हैं और सर्वोदय के आधार हैं। नव निर्माण के लिए प्रस्तुत सजग बालकों का स्वस्थ चित्र शर्माजी के शब्दों में इस प्रकार चित्रित हुआ है—

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ५ सितम्बर १९६५ नरेन्द्र चंचल पृ ६

फूलों म हसमुख बच्चे हम कलियों स सुकुमार हैं[1]
शत्रु हम ललकारे तब हम फौलादी अगार है
श्रम के द्वारा हम स्वदेश म भरते हैं नव तरुणाई,
नव निर्माण लिया करते हैं या तेजी से अगड़ाई
स्वावलम्ब का बिगुल बजा है सजग हुई है सुविधाए
माप सकेगा कौन हमारे मलनान की गहराई ?
हम विकास के अग्रदूत सर्वोदय के आधार हैं !
शत्रु हम ललकार तब हम फौलादी अगार हैं !!

जिस घर म बच्चे नही होते कहते है उस घर म रौनक भी नही रहती। सम्भवत बच्चा से ही घर की शोभा होती है क्यांकि यही देश का सच्चा धन कहलाते हैं—

बच्चा स घर की शोभा है[2]
यही देश का सच्चा धन है
माता और पिता का अपना
हर बच्चा अनमोल रतन है।

क्योंकि आज के बच्चे ही कल के होने वाले शक्तिशाली युवक हैं। यही भारतवर्ष की तकदीर हैं। भारत के भाग्य विधाता बच्चे ही भारत माता की झोली भरेंगे। इन बच्चा म ही गांधी हैं जो सारे ससार म सत्य और अहिंसा के बल पर तूफान ला सकते हैं। इन्ही बच्चा म नेहरू हैं जो भारत को शांति का उपदेश देकर स्वग बना सकते हैं। भगतसिंह जसे वीर भी इन्ही बच्चों के समूह म मौजूद हैं जो अन्यायों की जड मिटा सकते हैं। आजादी इन्हीं बच्चों म है जो शत्रु के दांत भी खट्टे कर सकती है। दुश्मनों के दिलों को थर्रा देने वाली शक्ति भी इन्ही बच्चो में निहित है। इन बच्चों म ही सुभाष जसे क्रान्तिकारी वीर छिपे हैं जो समय पर सब वीरों को सगठित कर जयहिन्द का नारा लगाते हुए राष्ट्र म जागृति की लहर फला सकते हैं।

गीतकार को भी युग का चारण कवि बनकर बलिदानी परम्पराए देनी हैं। बन्दूकों की ज्वालाए और तलवारों को धार देनी है। केवल वाणी के पुष्प ही समर्पित नहीं करने हैं देश की धरती को अपना स्वाभिमानी मस्तक भी देना है। वीरों की शौर्य गाथाओं के गीत देकर गीतकार बच्चा के शौय

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १४ नवम्बर १९५५ जगदीशचन्द्र शर्मा पृ ६१
२ वतन हमारा श्रीकृष्ण सरन स प्र १९६५ पृ स १४४

को द्विगुणित करने मे सहायक होता है। आगे बढ़ने का सन्देश देते हुए श्री किशोरी रमण टण्डन कहते हैं—

> बढ़े चलो बढ़े चलो बढ़े चलो ![1]
> पहाड़ हो अगर खड़ा
> समुद्र हो अगर अड़ा
> हो खौफ कितना ही बड़ा
> बढ़े चलो बढ़े चलो बढ़े चलो !

निरन्तर बढ़ते रहना प्रगति सजगता एव सक्रियता का चिह्न है। मार्ग मे कितनी ही बाधाए आयें आगे बढ़ने के लिए कितने भी सघर्ष करने पड़ें परन्तु बढ़ना आगे ही है पीछे नही हटना है। माँ नन्हे शिशु को सुलाने के लिए लोरी गाती है। लोरी के गीत-द्वारा निम्न सदेश देती है—

> नन्हा लाल बड़ा हो जाय[2]
> गोरी बहू ब्याह कर लाय
>
> निंदिया! मणिया वाली।
> निंदिया! गुड़िया वाली।।
> धीरे धीरे पलकन छाना रग रग रग समाना
> शील लगन साहस सच्चाई का सपना दे जाना
> आँसू दबे पिछड़े तन मन पर पीड़ा समझाना
> बड़ा बनाना भले न इसको पर इसान बनाना

इस प्रकार शील लगन सच्चाई एव साहस का पाठ पढ़ाकर इसान बनाने की कामना करती हुई माँ नन्हे बालक को अपनी राह आप बनाने की सामर्थ्य देती है। लोरी के माध्यम से वीरों की गाथाए सुनाकर उत्साह का भाव भरने मे माँ सहायक होती है क्योकि बालक का स्नेह माँ पर अधिक होता है। माँ की रक्षार्थ एव बलिदान के लिए तत्पर बालक बड़ा होकर जन्मभूमि भारत माँ की रक्षा करने मे समर्थ होता है। राष्ट्र के लिए राष्ट्र के नौजवानों को शहीद होना है इसका पाठ वे बालपन से ही पढ़ते आये हैं। यही बचपन का पाठ आगे चलकर उन्हे प्रेरणा देता है राष्ट्र की

---

१ बालवाणिकी पत्रिका १९६५ स० जगदीश माथुर रच किशोरी रमण टण्डन पृ० ३५

२ वही रच० अकिंचन शर्मा पृ ८९

सुरक्षा की राष्ट्र की प्रगति की और नव-निर्माण की। नन्हें मुन्ने राही भी देश के सिपाही बनने को तत्पर हैं और जयहिन्द' का नारा बुलन्द करना चाहते हैं। बालक म ऐसे भाव भरने का श्रेय माँ को है शिक्षक को है और है वातावरण को, जिसम बालक पलता है रहता है और बड़ा होता है। इस देश को जितनी कठिनाइयो के पश्चात् स्वतन्त्रता प्राप्त हुई यह एक लम्बी कहानी है। स्वतन्त्रता यज्ञ म आहुति देने वाले वीरो क रक्त से इसका इतिहास लिखा है। सघर्षों के तूफान स जब राष्ट्र की नाव को बचा लिया तो इस राष्ट्र के बच्चो का कर्त्तव्य बढ गया। मझदार म पडी नया को किनारा तो मिल गया परन्तु पुन यह नया मझधार म न चली जाये इसकी जिम्मेदारी बालको पर ही है। राष्ट्र की नया को किनारे से ही लगी रहने देने म बालको का सहयोग आवश्यक है क्योकि यही कल के नेता है और यही देश के रक्षक रहेंगे।

अस्तु गीतकारो ने अपने गीतो के माध्यम से बालको की मनोवृत्ति एव अनुभूति की अभिव्यक्ति स्पष्ट की है। बालक अनुकरण करता है और इसी अनुकरण की प्रवृत्ति के कारण उस पथ पर अग्रसर होता है जिस पर घर परिवार के एव राष्ट्र क व्यक्ति चल रह होते है। उपयुक्त वातावरण सस्कार एव अनुकरण की प्रवृत्ति क आधार पर ऐसे बालको का समूह तयार किया जा सकता है, जहाँ राष्ट्र निर्माण राष्ट्र सुरक्षा सम्ब धी भावो को सक्रिय करने म योग्य शिक्षकों का हाथ हो। बालको म उत्साह की कमी नही होती है बल्कि आवश्यकता है सही मार्ग-दर्शन की। स्कूलो म बालचर स्काउट ए सी सी आदि की शिक्षा भी राष्ट्रीय भावना को परिपुष्ट करती है। खेल खेल म हाथ व दूक उठाना सिपाही बनने की आकांक्षा प्रगट करना हवाई जहाज चलाने की नकल करना नेतागिरी करना आदि बालक की वीर मनोवृत्ति क परिचायक है। लोरी म भी ताण्डव की गति वाले शब्दो की आवाज बालक क वीर भाव को मुखर करती है। आजादी वीरता आदि शब्दो के भाव समझने वाले बालक राष्ट्र को स्वतन्त्र बनाय रखने की कामना करते हैं। आक्रमण के समय अपनी समग्र चेतना के साथ सोचना चाहिए कि किन किन साधना स देश की रक्षा सम्भव है। नौजवान पुरुष महिलाए एव बालक सभी क साथ यह सकट काल आह्वान का काल होता है। जन्मभूमि की रक्षा करना किसी एक या कुछ व्यक्तित्व का ही कर्त्तव्य नही है। यह तो प्रत्येक का अनिवार्य कर्त्तव्य है। बालको का ही नही सभी का प्राण सुभाषचन्द्र बोस का जय हिन्द का नारा होना चाहिए। भगतसिंह चन्द्रशेखर आजाद' एव सुभाषचन्द्र बोस आदि के ओजस्वी आह्वान इस युग मे भी कर्त्तव्य क प्रति सजग एव

सक्रिय करते हैं। आजादी प्राणों से भी प्यारी एवं मूल्यवान है। भारत के प्रत्येक नागरिक का एक विश्वास होना चाहिए 'एक हृदय है भारत जननी'। प्रत्येक बालक के हृदय में यही भावना विश्वास के प्राण फूंकेगी जिससे राष्ट्रीय एकता को सम्बल मिलेगा। एकता कभी खण्डित न होगी क्योंकि नई पीढ़ी उसकी अखण्डता को बनाये रखने में सक्षम होगी समर्थ होगी। देश का बच्चा बच्चा दुश्मन के प्रति विद्रोह के भाव रखता हुआ सभी साथियों को संगठित करने के लिए ललकारता है इसके मूल में प्रत्यक्ष त्याग एवं बलिदान की भावना है। एन० सी० सी० नेशनल डिसीप्लिन स्कीम, गर्ल्स गाइड फर्स्ट एड नर्सिंग और फिजिकल ट्रेनिंग सभी विद्यालयों में आरम्भ की गई है। छात्र एवं छात्राएं इस अनिवार्य शिक्षा के कारण समुचित रूप से तयार हो रहे हैं। राष्ट्र की प्रगति इनके उचित विकास एवं भावनाओं पर निर्भर करती है। युद्ध एवं शांति दोनों ही समय में किस प्रकार का कार्य उचित होगा एवं अनुचित होगा इसका पर्याप्त ज्ञान बालकों को विद्यालय एवं वहाँ से मिलने वाली अनिवार्य ट्रेनिंग द्वारा हो जाता है। यह राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्र प्रगति का चिह्न है। देश का हर बच्चा अनुशासन की भावना से ओत-प्रोत हो राष्ट्र के उत्तरदायित्व को समझ एवं कुशलतापूर्वक उस कार्य भार को सम्भालने के लिए अपने व्यक्तित्व का उचित विकास करते हुए शक्तिशाली बने यही आकांक्षा है। लाल बहादुर शास्त्री का दिया हुआ नारा जय जवान जय किसान सदैव गूंजता रहे।

नारी और राष्ट्रीय भावना | १०

भारतीय नारी सृष्टि के प्रारम्भ से ही गुणो की आगार रही है। नारी की आकर्षण शक्ति सदव ही कवियो एव लेखको की लेखनी आकर्षित करती रही है। प्रारम्भ से ही कवियो एव लेखको ने नारी के विभिन्न रूपो प्रभावो एव शक्ति को साहित्य म अभिव्यक्त किया है। नारी का रूप-वर्णन नारी का मनोविश्लेषण एव उसकी मीमासा, कवियो का प्रिय विषय रहा है। नारी म पृथ्वी के समान क्षमाशीलता का गुण पाया जाता है। साहित्य कारो ने उसे क्षमा समुद्र की जसी गम्भीरता विशालता गहराई एव अनन्तता की भी अभिव्यक्ति दी है। सूय के समान तेजस्वी नारी का चन्द्रमा के समान शीतल स्वरूप भी चित्रित हुआ है। नारी-हृदय म कितन गुणों की सृष्टि साहित्यकारो ने की है वह विभिन्न साहित्यिक विधाओ के अन्तर्गत दृष्टिगत होती है।

नारी-स्वभाव कोमल और कठोर दोना प्रकार का ही है। वह करुणा दया पवित्रता शाति प्रम और ममता की सजीव मूर्ति है। अवसरानुकूल वह प्रचण्ड रूप भी धारण कर लेती है। वह जननी है इसीलिए वात्सल्यमयी करुणामयी त्यागमयी स्नेहमयी एव ममत्वमयी है किन्तु आपत्ति आने पर सघषमयी रणचण्डी भी है। य दोनों विरोधी प्रतिरूप नारी के चरित्र के व गुण हैं जिसने पुरुष क जीवन को पूण एव सफल बनान के लिए मातृत्व का भार वहन किया है गृहस्थी सुचारु रूप से चलाई है, राष्ट्र पर आपत्ति आने पर राष्ट्र को भी पूण सहयोग दिया है। राष्ट्र की सुरक्षा के लिए भा नारी तत्पर रही है। स्वय भी युद्ध म सक्रिय सहयोग देकर सनिकों का जोश द्विगुणित किया है। नारी सदव पुरुष की प्रेरणा बनकर आई है। बाल्यावस्था स लेकर मृत्युपय त वह परिवार की सरक्षिका रही है। भारतीय सस्कृति की अमूल्य निधि है नारी। नारी श्रद्धा की पात्रा रही है। जगज्जननी के रूप म मातृभूमि की पूजा माँ का प्रतिरूप मानकर की जाती है। माँ का रूप ही हृदय म उदात्त भावों की गरिमा भर दता है। माँ ही परिवार

की जन्मदात्री है एवं उसकी संरक्षिका है। नारी में ही यह शक्ति है कि वह मातृत्व का भार वहन कर और राष्ट्र को स्वस्थ और बुद्धिमान शिशु का उपहार दें जो राष्ट्र के भावी भाग्य विधाता बन सकें। ससार के सभी महापुरुषों के जीवन निर्माण में उनकी माताओं का विशेष हाथ रहा है। शिशु को वीर पुरुषों की गाथाएं लोरियों के रूप में सुनाकर सुलाने वाली माँ वीरता का पाठ पालने में ही पढ़ा देती है। बालक की सहज जिज्ञासु प्रवृत्ति को शांत करने के लिए वीरों की गाथाएँ सुनाती हैं और देश प्रेम के भाव जाग्रत करती हैं। आगे चलकर ये ही बालक विद्यालय एवं विश्वविद्यालय से उचित शिक्षा प्राप्तकर राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य पूर्ण करते हैं और यथा सभव राष्ट्र की प्रगति में सहायक बनते हैं। वस्तुत नारी जननी ही नहीं शिक्षिका भी है। अत राष्ट्रीय भावनाओं का सृजन करने में नारी का बहुत सहयोग रहा है। प्रत्येक जीवन के क्षेत्र में नारी का सहयोग आवश्यक है। नारी के बिना परिवार की कल्पना ही नहीं की जा सकती। परिवार के बिना समाज एवं समाज के बिना राष्ट्र की कल्पना नितान्त निराधार है। अतएव नारी की शक्ति की व्यापकता सराहनीय एवं महत्त्वपूर्ण है। नारी के बिना राष्ट्र की संभावना नहीं और राष्ट्र के बिना राष्ट्रीय भावना की उत्पत्ति असंभव है। अकेली नारी ही नहीं नारी के साथ पुरुष का सहयोग भी वाछनीय है। परन्तु नारी की भूमिका पुरुष की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण रही है।

नारी का इतिहास और एक सर्वेक्षण—

साहित्य का प्रमुख विषय सम्भवत नारी ही है। नारी पर सर्वाधिक काव्य सृजन हुआ और यही विषय बड़े बड़े महाकाव्यों की प्रेरणा बना रहा। सर्वाधिक रचनाएं शृंगार रस से परिपूर्ण उपलब्ध होती हैं। संयोग एवं विप्रलम्भ का आधार और प्रमुख विषय नारी ही रहा है। शृंगार को रसराज माना गया है और सूर का शृंगार-वर्णन रसराज की कोटि तक पहुँच गया था ऐसा अनेक विद्वानों ने प्रमाणित किया है। नारी का आकर्षण शक्ति का युग-युग से साहित्य में वर्णन होता आया है। प्राचीन काल के साहित्य में नारी को महत्वपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित किया गया था। वैदिक युग के साहित्य में भी उर्वशी के उन्मादक प्रभाव का चित्रित किया गया था और उसके आकर्षण में बंध पुरुरवा ने उर्वशी के वियोग में आत्महत्या करने का प्रयत्न किया था स्वयं को हिंस्र भेड़िया के सम्मुख डालकर। आदि कवि वाल्मीकि कृत रामायण में जनक-सुता सीता का जो सौन्दर्य दीप्तिमान हुआ उससे प्रभावित भारतवर्ष के अनेक प्रांतों के नरेश धनुष-यज्ञ में सीता-स्वयंवर में आ

उपस्थित हुए थे। महर्षि वेदव्यास की रचना महाभारत में द्रौपदी के एक कटु हास्य ने कौरव पाण्डवों के मध्य युद्ध के बीज बो दिये थे। वही अनेक वीर योद्धाओं के नाश का कारण हुआ। अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु ने माँ के गर्भ में ही व्यूह प्रवेश सीख लिया था और अल्पवयस्की उस वीर ने कौरवों द्वारा रचित सुदृढ़ व्यूह का भेदन किया था। संस्कृत साहित्य में नारी के वर्णन का व्यापक प्रभाव दृष्टिगत होता है। वासवदत्ता, शकुन्तला एवं दमयन्ती आदि के विभिन्न रूप विस्तृत रूप से अभिव्यक्त हुए हैं। उनके सौन्दर्य का आकर्षण एवं विभिन्न भाव भंगिमाओं का रूप चित्रित किया गया। नारी का साधना पवित्रता, स्थिरता एवं अलौकिक रूप विशद् रूप से काव्य में मुखर हो उठे। गद्य-साहित्य में भी महाश्वेता एवं कादम्बरी जैसी नारियाँ अवतरित हुई हैं।

प्राचीन भारत में, सरस्वती के पावन मन्दिर में नारी को भी अर्चना करने का अधिकार था। शिक्षा का चरमोत्कर्ष उस युग में ही देखने को प्राप्त होता है क्योंकि नारी एवं पुरुष समकक्ष थे—समान अधिकार प्राप्त थे। वाद विवाद में शास्त्रार्थ में नारियाँ सक्रिय भाग लेकर पुरुषों से बाजी जीत लेती थीं और विजय का सेहरा नारी के शीश पर सुशोभित होता था। आध्यात्मिक शिक्षा के द्वार नारी एवं पुरुष के लिए समान रूप से खुले हुए थे। नारी उच्च कोटि की दर्शनशास्त्री होती थी जबकि नारी का उच्छृंखल रूप कहीं नहीं मिलता है। उच्च शिक्षिता एवं सर्वप्रकारेण योग्य नारी पवित्रता की दिव्यमूर्ति थी। नारी को हेय दृष्टि से नहीं देखा जाता था। नारी का स्वतन्त्र रूप इस युग में अधिक मुखर हुआ। केवल गृहस्थी की गाड़ी चलाना या मातृत्व का बोझ उठाना ही नारी का धर्म नहीं था। वैदिक काल में भी नारी का साहित्य सृजन में सहयोग रहा था। उन्होंने ऋचाओं का सृजन किया। वे तत्वदर्शी दार्शनिक एवं चिन्तक के रूप में भी सक्रिय रहीं। काव्यमय भावुक हृदय की नारी सत्यम् शिवम् एवं सुन्दरम् की स्रष्टा रहीं। गार्गी मैत्रेयी, मदालसा आदि नारियाँ इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। समय परिवर्तनशील होता है युग करवट लेता है और सब कुछ परिवर्तित हो जाता है। मनुष्य का रूप बुद्धि विचार एवं भावनाएं सभी में एक परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। मानदण्ड बदल जाते हैं, मूल्यांकन नये सिर से प्रारम्भ किये जाते हैं। उसी प्रकार युग-परिवर्तन के साथ नारी भी परिवर्तित हुई। उसके साथ ने परिवर्तन की व्यास को पहचाना और ग्रहण किया। वैदिक कालीन नारी का वरदान स्वरूप भाग्य अतीत के गर्भ में विलीन होता गया। उसकी विद्वत्ता स्वतन्त्रता निर्भीकता और उच्च सम्मानपूर्ण स्थान सभी

की जन्मदात्री है एवं उसकी मर्यादा है। नारी में ही यह शक्ति है कि वह मातृत्व का भार वहन कर और राष्ट्र को स्वस्थ और बुद्धिमान शिशु का उपहार दें, जो राष्ट्र के भावी भाग्य विधाता बन सकें। संसार के सभी महापुरुषों के जीवन निर्माण में उनकी माताओं का विशेष हाथ रहा है। शिशु को वीर पुरुषों की गाथाएं लोरियों के रूप में सुनाकर सुलाने वाली माँ वीरता का पाठ पालन में ही पढ़ा देती है। बालक की सहज जिज्ञासु प्रवृत्ति को शांत करने के लिए वीरों की गाथाएं सुनाती हैं और देश प्रेम के भाव जाग्रत करती हैं। आगे चलकर ये ही बालक विद्यालय एवं विश्वविद्यालय से उचित शिक्षा प्राप्तकर राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य पूर्ण करते हैं और यथा संभव राष्ट्र की प्रगति में सहायक बनते हैं। वस्तुत नारी जननी ही नहीं शिक्षिका भी है। अत राष्ट्रीय भावनाओं को सजग करने में नारी का बहुत सहयोग रहा है। प्रत्येक जीवन के क्षेत्र में नारी का सहयोग आवश्यक है। नारी के बिना परिवार की कल्पना ही नहीं की जा सकती। परिवार के बिना समाज एवं समाज के बिना राष्ट्र की कल्पना नितान्त निराधार है। अतएव नारी की शक्ति की व्यापकता सराहनीय एवं महत्त्वपूर्ण है। नारी के बिना राष्ट्र की संभावना नहीं और राष्ट्र के बिना राष्ट्रीय भावना की उत्पत्ति असंभव है। अकेली नारी ही नहीं नारी के साथ पुरुष का सहयोग भी वांछनीय है। परन्तु नारी की भूमिका पुरुष की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण रही है।

नारी का इतिहास और एक सर्वेक्षण—

साहित्य का प्रमुख विषय सम्भवत नारी ही है। नारी पर सर्वाधिक काव्य सृजन हुआ और यही विषय बड़े बड़े महाकाव्यों की प्रेरणा बना रहा। सर्वाधिक रचनाएं शृंगार रस से परिपूर्ण उपलब्ध होती हैं। संयोग एवं विप्रलम्भ का आधार और प्रमुख विषय नारी ही रहा है। शृंगार को रसराज माना गया है और सूर का शृंगार-वर्णन रसराज की कोटि तक पहुँच गया था ऐसा अनेक विद्वानों ने प्रमाणित किया है। नारी की आकर्षण शक्ति का युग-युग से साहित्य में वर्णन होता आया है। प्राचीन काल के साहित्य में नारी को महत्वपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित किया गया था। वैदिक युग के साहित्य में भी उर्वशी के उन्मादक प्रभाव का चित्रित किया गया था और उसके प्रेमाकर्षण में बंधे पुरुरवा ने उर्वशी के वियोग में आत्महत्या करने का प्रयत्न किया था स्वयं को हिंस्र भेड़ियों के सम्मुख डालकर। आदि कवि वाल्मीकि कृत रामायण में जनक-पुत्री सीता का जो सौन्दर्य दीप्तिमान हुआ उससे प्रभावित भारतवर्ष के अनेक प्रान्तों के नरेश धनुष-यज्ञ में सीता-स्वयंवर में आ

उपस्थित हुए थे। महर्षि वेदव्यास की रचना महाभारत में द्रौपदी के एक कटु हास्य ने कौरव पांडवों के मध्य युद्ध के बीज बो दिये थे। वही अनेक वीर योद्धाओं के नाश का कारण हुआ। अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु ने माँ के गर्भ में ही व्यूह प्रवेश सीख लिया था और अल्पवयस्क उस वीर ने कौरवों द्वारा रचित सुदृढ़ व्यूह का भेदन किया था। संस्कृत साहित्य में नारी के वर्णन का व्यापक प्रभाव दृष्टिगत होता है। वासवदत्ता, शकुन्तला एवं दमयन्ती आदि के विभिन्न रूप विस्तृत रूप में अभिव्यक्त हुए हैं। उनके सौन्दर्य का आकर्षण एवं विभिन्न भाव भंगिमाओं का रूप चित्रित किया गया। नारी की साधना, पवित्रता, स्निग्धता एवं अलौकिक रूप विराट् रूप से काव्य में मुखर हो उठे। गद्य साहित्य में भी महाश्वेता एवं कादम्बरी जैसी नारियाँ अवतरित हुई हैं।

प्राचीन भारत में, सरस्वती के पावन मंदिर में नारी को भी अर्चना करने का अधिकार था। शिक्षा का चरमोत्कर्ष उस युग में ही देखने को प्राप्त होता है क्योंकि नारी एवं पुरुष समकक्ष थे—समान अधिकार प्राप्त थे। वाद विवाद में, शास्त्रार्थ में, नारियाँ सक्रिय भाग लेकर पुरुषों से बाजी जीत लेती थी और विजय का सेहरा नारी के शीश पर सुशोभित होता था। आध्यात्मिक शिक्षा के द्वार नारी एवं पुरुष के लिए समान रूप से [illegible] थे। नारी उच्च कोटि की दर्शनशास्त्री होती थी [illegible]
रूप कहीं नहीं मिलता है। उच्च शिक्षिता एवं [illegible]
नारी पवित्रता की स्निग्धमूर्ति थी। नारी का [illegible]
था। नारी का स्वतंत्र रूप इस युग में अधिक [illegible]
की गाड़ी चलाना या मातृत्व का बोझ उठाना [illegible]
वैदिक-काल में भी नारी का साहित्य सृजन में [illegible]
ऋचाओं का सृजन किया। वे तत्त्वदर्शी [illegible]
सक्रिय रहीं। काव्यमय भावुक हृदय की [illegible]
की स्रष्टा रहीं। गार्गी, मैत्रेयी, [illegible]
समय परिवर्तनशील होता है, युग [illegible]
जाता है। मनुष्य का रूप, बुद्धि [illegible]
दृष्टिगोचर होता है। मान[illegible]
दिये जाते हैं। इसी प्रकार [illegible]
उसके मान्य में परिवर्तन [illegible]
वर्तमान नारी का [illegible]
उसकी विभिन्न [illegible]

गहन तिमिर म आच्छादित होने गय । पुरातनकाल म नारी को जो उच्च स्थान प्राप्त था वह युग क साथ-साथ समाप्त हुआ । जिस नारी को पुरुषो क समान अधिकार प्राप्त थ जो क्वल जन्मदात्री नारी के रूप म ही चित्रित नहीं हुई थी अपितु सामाजिक राजनतिक एव धार्मिक कार्यों म भी सक्रिय रूप स समानभागी था वही नारी आज भाग्यचक्र स पराधीनता की शृखलाओ म जकडी जान लगी । याज्ञवल्क्य की सहधर्मिणी मत्रयी और कात्यायनी न आध्यात्मिक धन क समक्ष सासारिक धन तुच्छ है सिद्ध करक समाज म अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया था । मनुस्मृति म स्त्रियो क सम्ब ध म स्पष्ट ही वह विचार व्यक्त किए गए है कि जहाँ स्त्रियो की पूजा होती है वहा देवता निवास करते हैं जहा उनकी प्रतिष्ठा नही होती वहा सब क्रियाए निष्फल हो जाती है । अनेक कल्याणो की भाजन स्त्रियाँ पूजनीय हैं य गृह की ज्योति हैं प्रजापति न प्रजा की उत्पत्ति एवम् विस्तार के लिए इनकी सृष्टि की है य गृह लक्ष्मी क रूप म मान्य हैं ।

प्राचीन काल म यज्ञ आदि जो धार्मिक अनुष्ठान किए जाते थे उनम पत्नी का सहयोग अत्यावश्यक था । अन्यथा धार्मिक कृत्य पूर्ण नही समझ जाते थ । रणक्षेत्र म नारी की कुशलता का भी परिचय प्राप्त हुआ है । दवासुर सग्राम म ककेयी न अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय दकर दशरथ को आश्चय म डाल दिया था । प्राचीन काल म नारी अपन व्यक्तित्व के प्रति सजग थी । स्वतन्त्र अस्तित्व को बनाय रखने म नारी को पुरुषो का भी सहयोग प्राप्त था । नारी की स्वतन्त्रता का एक उदाहरण उस युग की स्वयवर प्रथा है । जीवन साथी का इच्छानुसार चयन करने की स्वतन्त्रता उस प्राप्त थी । स्वय का व्यक्तित्व बनाने के लिए उसे उचित वातावरण भी प्राप्त थ । नारी अपन जीवन का भला-बुरा हित-अहित स्वय समझन म समथ थी । अपनी योग्यता बुद्धिमत्ता एव विवेकपूर्ण चिन्तन के बल पर ही समाज म अपना विशिष्ट स्थान बनाया था । अपने पति को सत्परामर्श दकर अच्छे परिवार की प्रतिष्ठापना म नारी का प्रत्यक्ष सहयोग रहा था । पुरुषो को प्रेरणा देने म नारी ने सक्रिय सहयोग भी दिया । प्रत्येक क्षेत्र म नारी न अपना अधिकार सहित उच्च स्थान बनाया । व पुरुष की सहचरी थी दासी नही स्वतन्त्र थी परतन्त्र नही । सद्गृहिणी होने के साथ ही साथ विदुषी एव शास्त्रार्थ करने वाली विजयिनी भी थी । बिना गृहिणी क गृह की कल्पना केवल निराधार है—

न गृह गहमित्याहु गृहिणी गृहमुच्यते
गृह हि गृहिणी हीनम् अरण्य सदृश मतम् ।

बिना गृहिणी के गृहस्थी नहीं चल सकती। गृह हो भी तो गृहिणी के अभाव में वन के समान लगता है। नारी के मनोभावों एवं नारी प्रेम का चित्रण करने में कुशल काव्य शास्त्रियों का पूर्ण सहयोग रहा है। नारी के प्रेम का चित्रण करने में कवियों का मन खूब रमा है। सर्वप्रथम भरतमुनि ने नारी को नायिका पद पर आसीन किया। विभिन्न भेद उपभेद द्वारा गुणों की चर्चा की। ऐसा रूप प्रस्तुत किया गया जिस पर विस्तृत रूप से कभी चर्चा नहीं हुई थी। आगे चलकर अन्य कवियों ने भी नायिका भेद प्रस्तुत किये। अनेक ग्रन्थों में नायिका भेद विस्तृत रूप से चर्चा का विषय बना रहा और कवियों ने इस पर बहुत कुछ लिखा भी है। हिन्दी के भी अन्य कई कवियों ने नायिका के हाव भाव-कटाक्ष एवं नख शिख' का वर्णन किया। उनके ग्रन्थों में इनकी विस्तृत रूप से चर्चा की गई। अनेक स्वतन्त्र ग्रन्थ की रचना केवल नारी के इन अंग प्रत्यंगों के वर्णन को लेकर हुई। नायिका भेद की संख्या इतनी बढ़ गई कि नारी के भेद दो हजार से भी ऊपर तक पहुँच गए। भारतीय आचार्यों द्वारा इन भेदों का विषय मीमांसा का विषय रहा। नारी का रूप विस्तृत चर्चा का विषय बना। काव्य में मुख्य रूपेण नारी के रूप वर्णन का विषय ही प्राधान्य रहा। परन्तु नारी को जो स्थान एवं सम्मान वैदिक युग में प्राप्त था वैसा बाद के युग में नहीं मिल सका।

रामायण युग में नारी छाया की भाँति पुरुष की अनुचरी रही। पुरुषोत्तम राम ने उसकी स्थिति सुधारने के लिए एक पत्नी व्रत का आदर्श स्थापित किया था। परन्तु महाभारत युग में आकर तो उसका पतन पराकाष्ठा तक पहुँच गया। उदाहरण स्वरूप द्रौपदी को पाँच पतिवाली चित्रित किया गया शल्य ने अपनी बहिन को बेचा गांधार नरेश ने द्रव्य के लोभ में अपनी पुत्री को अन्धे की पत्नी बनने को विवश किया। द्रौपदी को भरी सभा में जूए के दाव पर लगाने के पश्चात् हार जाने पर विवस्त्र करने पर विवश किया दुःशासन ने चीर-हरण किया। पाँडु जैसे पुंसत्वहीन पुरुष ने अपनी पत्नी को दुराचार की आज्ञा दी। कुल में पली नारियाँ विधाता के हाथों की कठपुतली मात्र बनकर रह गई। उनका स्वतन्त्र अस्तित्व लुप्त हो गया। व्यक्तित्व का कोई महत्व न रह गया। पुरुष नारी का शासक बन गया। ऐसा शासक जिसके हाथों नारी निर्जीव कठपुतलीमात्र रह गई। नारी के अधिकारों का हनन हुआ और उसकी पवित्र त्यागमूर्ति का तेजस्वी रूप पूजनीय न रहा। उसके आदर्शों का कोई मूल्य न रहा। उसे उन सभी अधिकारों से वंचित किया गया जिनके द्वारा वह याज्ञवल्क्य (?) प्राप्त कर सकती थी शास्त्राध्ययन में भाग न ले सकती थी अपनी इच्छानुसार जीवन-साथी चुनने का अधिकार रखती

थी। गृहस्थ जीवन ही नहीं अपितु अन्य क्षेत्रों में भी जीवन बिताने की वह अधिकारिणी थी। वह सब लुप्त हो गया और रह गई वह केवल पुरुष के चरणों की दासीमात्र! भारत की परतन्त्रता के साथ भारतीय नारियों की परतन्त्रता का भी श्रीगणेश हो गया। उनके उच्चआदर्श सेवा की भावना त्याग एवं बलिदान की भावना उनके लिए कालान्तर में अभिशाप बन गये। सौभाग्य दुर्भाग्य में परिवर्तित हो गया। नारी की इच्छा का महत्त्व नहीं रह गया। पुरुष की कठोरता ने उसकी प्रेम भावना पर भी अंकुश लगा दिया। घृणा एवं तिरस्कार पाकर नारी उपेक्षिता हो गई। निर्दयी पुरुष ने उसे अपने कठोर नियन्त्रण में रखना उचित समझा और पुरुषों के निरंकुश शासन ने उसको बेड़ियों के बंधन कठोरतम कर दिये।

वही नारी जो अपने पति की प्रेरणा बनकर सबसे आगे रहती आई थी सुचारु रूप से गृहस्थी की गाड़ी भी चलाती थी और सरस्वती के पावन मंदिर में अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर शास्त्रार्थ में भी समान रूप से भाग लेती थी जिसने मण्डन मिश्र की अर्द्धांगिनी के रूप में पति की पराजय से विक्षुब्ध होकर शंकराचार्यजी से वेद वेदाङ्गों के तत्वों पर शास्त्रार्थ किया था। ऐसी सम्मानपूर्ण नारी के दुर्दिन आगये। नारी का स्वतन्त्रता का अपहरण किया गया। पग पग पर नारी को तिरस्कृत करने के प्रयत्न हुए। उसे घर की ऊंची दीवारों में कैद करने का प्रयास किया गया। शिक्षा से वंचित रखने की चेष्टा की गई। नाना प्रकार से असह्य यन्त्रणा देकर उपेक्षित किया गया।

इनके दुष्परिणाम शीघ्र ही दृष्टिगत हुए। अनेक कुप्रथाओं को जन्म देने का श्रेय पुरुषों को ही है। उनके उच्छृङ्खल रूप एवं अनैतिक आचरण के कारण नारी का महनीय गरिमामय उदात्त स्वरूप प्रायः समाप्त होने लगा। विवाह बहुत कम उम्र में होने लगे। बाल विवाह के कारण सुकुमार बालिकाएं पूर्ण वयस्क हुए बिना ही पत्नी का पद ग्रहण करने को विवश थी। परिणाम स्वरूप कम उम्र में ही उन्हें मातृत्व का बोझ उठाना पड़ता था। इसमें उनकी मृत्यु भी प्रसव काल में ही हो जाती थी या रुग्ण हो जाती थी। अस्वस्थ बच्चों का जन्म होता था जिससे नारी शीघ्र ही प्रौढ़ावस्था को पहुँचने लगती थी। कभी-कभी तो वधू वर से उम्र में बहुत छोटी होती थी। ऐसे बेमेल विवाह के कारण उन अल्पवयस्क नवयौवनाओं को सधवा बनने का सौभाग्य भी अल्पकाल तक के लिए ही प्राप्त होता था। पति शीघ्र ही बूढ़ा हो जाता था जबकि बालिका पूर्ण वयस्क होने की स्थिति में होती थी। ऐसे में जब उसकी सुहाग लालिमा पुंछ जाती थी तो उसे कठोर नियन्त्रण में रखा जाता था। न वह अच्छा खा सकती थी न अच्छा पहन ही सकती थी। उसकी परछाई भी

शुभ-कार्यों में वर्जित थी। उस पर अनेक निषेधात्मक नियम लागू किये जाते थे। जिस उम्र में विवाह जैसा शुभ कार्य सम्पन्न होना चाहिये था वह उम्र उसके वैधव्य की होती थी, जो रोते कलपते तरसते बीतती थी। बुजुर्गों की डाँट फटकार एवं यन्त्रणाएं उसके जीवन को नरक बना डालती थीं। व्यंग्य वचनों से ऊबकर विधवा नारी या तो आत्महत्या कर लेती थी या उसका नैतिक पतन हो जाता था। क्योंकि समाज में खुलकर उसे विवाह करने की अनुमति प्रदान नहीं की गई थी इससे चोरी छिपे भ्रष्टाचार को ही बढ़ावा मिलता था। जो विधवाएं सच्चरित्र बनी रहना चाहती थीं पुरुष-वर्ग छल कपट से उसे पाने का यत्न करते थे। पुरुष के जाल में फंसी नारी को कहीं भी सुख नहीं था। पुरुषों के लिए इतने कठोर नियम नहीं थे बल्कि अनेक स्त्रियों से अपने अनैतिक सम्बन्ध बनाये रखने के लिए स्वतन्त्र थे। पुनर्विवाह की आज्ञा भी उन्हें थी। स्त्रियों के लिए पर्दा आवश्यक था। पर्दे की कठोर कैद में नारियाँ अनेक रोगों की शिकार हो जाती थीं। पत्नी की सेवा सुश्रुषा पति के लिए आवश्यक न थी। वह तो उपेक्षिता मात्र थी। पति की सेवा करना पत्नी का मुख्य धर्म माना गया था।

समाज द्वारा बहिष्कृत नारियों का एक अलग वर्ग स्थापित हुआ। चूंकि समाज के अन्दर छिपे भ्रष्टाचार का खुला स्वरूप नारी द्वारा ही उद्घाटित हो सकता था नारियाँ ही तिरस्कृत होती थीं। पुरुषों के अनैतिक आचरण का पाप भार वही ढोती थीं। अवैध सन्तान की माँ ही अपमानित होती थी। उस अवैध सन्तान के पिता का कोई अपराध नहीं माना जाता था। फलतः नारी को ही चरित्रहीन कुलटा एवं कुल-कलंकिनी कहकर घर से निष्कासित कर समाज से बहिष्कृत किया जाता था। वे स्त्रियाँ जो इस अवस्था में आत्महत्या करना पाप समझती थीं जीवित रहना चाहती थीं। परन्तु रहने के लिए उनका स्थान कहाँ था? समाज एवं परिवार के गृह पर मानव के नियम बन्द हो चुके होते थे। ऐसी अवस्था में उन नारियों ने जीवित रहने एवं पेट भरने के लिए अनेक पुरुषों को आमन्त्रित करना प्रारम्भ किया। उन्हें वेश्या कहा गया। वेश्यावृत्ति के कारण घर की दीवारों में कैद नारियों का जीवन और भी दुष्कर हो गया। स्वच्छन्द वेश्यावृत्ति करने वाली स्त्रियों के पास सभी वर्गों के पुरुष जाने लगे। शादी-ब्याह के अवसर पर तो घर घर भी मजलिस जमती। नाचने वालियों को बुलाया जाता। वेश्याएं नाचने एवं गाने में प्रवीण होती थीं। मुजरों करने में हजारों रुपए जाती थीं। शराब के दौर चलते थे और सम्मानयुक्त नारियाँ घर की कैद में पड़ी तड़पती रहती थीं। इस प्रकार पुरुषों

द्वारा निर्मित नये नियमों ने नारी-जाति को निम्न श्रेणी म ना खड़ा किया जिससे समस्त नारी जाति का अपमान हुआ। पुरुष स्वच्छन्द उद्दाम वासनाओं के शिकार एवं उच्छृंखल हो गये। नारी जाति को पतन के मार्ग पर चलाने का समस्त श्रेय पुरुष जाति को है। पुरुषों की निरंकुशता ने नारी जाति का अधःपतन किया। स्वकीया का मान घट गया परकीया का मान बढ़ गया। पुरुषों के मामान अत्याचारों को नारी ने सहन किया। अशिक्षा पर्दा प्रथा बाल विवाह, बाल विधवा एवं वेश्यावृत्ति आदि सभी कुरीतियों की जड़ पुरुष थे। इन सभी कुप्रथाओं के मूल में पुरुष था। पुरुष का कहा मा कोई भी अपराध नहीं माना जाता था। जबकि सब बुरे एवं अनैतिक कार्यों की जड़ पुरुष था। पुरुषों के उद्दाम आवेग की लपट में नारी झुलसकर रह जाती थी। पाप की सजा जिस कार्य का दी जाती है वह केवल नारी के सिर मढ़ा जाता था। पुरुषों को समाज में वही सम्मान प्राप्त होता था लेकिन नारी लांछित की जाती थी। प्रताड़ित नारी कुमार्ग पर चलने चलते पुरुषों के कुप्रयत्नों से कुमार्ग पर चल पड़ती थी। पुरुषों को सब प्रकार के कार्यों की छूट थी जबकि नारी को कहीं स्थान न था। अत्याचारों को सहन करनेवाली नारी की सहनशीलता का भी कभी तो अन्त होना ही था।

जिस प्रकार भारत देश वर्षों पराधीनता की शृंखलाओं में जकड़ा रहा नारी भी उसी प्रकार बन्दिया में जकड़ी रही। जिस प्रकार भारतमाता ने अनेक अत्याचार सहन किये नारी माँ ने भी बहुत अत्याचार सहन किये। अनेक कष्टों एवं संघर्षों के पश्चात् भारत में जागृति की लहर आनी थी और नारी जाति का भी पुनरुद्धार होना था तो वह हुआ भी।

युग परिवर्तित होता रहा और होता रहेगा। उन्नति एवं पतन सदैव होते आये हैं एवम् होते रहेंगे। परिवर्तन इस सृष्टि का शाश्वत नियम है। ह्रासोन्मुख जीवन भी प्रगति की आशा के सहारे प्राणवत रहता है। परिवर्तन न हो तो व्यक्ति जीवन से ऊब जाय। समय चक्र निरंतर गतिशील रहता है। मानव जीवन भी सदैव गतिशील एवं सक्रिय रहता है। गति बिना निष्क्रिय जीवन प्राणविहीन होगा। गति एवं सक्रियता जीवन के आवश्यक गुण हैं। समय के साथ भाग्य जीवन परिवर्तित हुआ और परिस्थितियों ने एक आश्चर्यजनक परिवर्तन ला दिया।

पुरुष वर्ग की विलासिता के अंतिम दिन समीप आ गये। स्वेच्छाचारी निरंकुश पुरुषों के अत्याचारों का दमन करने के दिन आ गए। नारी का परकीया या व्यभिचारिणी रूप मुक्ति पाने का प्रयास करने लगा।

विषम स्थिति समता को पहुंचने की प्रयासी हुई। इतने दिनों से विद्रोह की अग्नि में जलने वाली नारी के खुलकर विद्रोह करने का समय समीप आने लगा। प्रतिशोध की भावना ने नारी के रौद्र रूप को स्पष्ट रूप से जागृत किया। अत्याचारों की सीमा सहनशक्ति से पर हो गई थी। अब उसका अंत भी आवश्यक था। सहनशक्ति भी एक सीमा के पश्चात् जवाब देने लगती है। उस समय नारी सब प्रकार से भय विमुक्त हो निर्भीक एवं सुदृढ़ कदमों से चलकर आगे बढ़ती है। उसके कदम लड़खड़ाते नहीं हैं।

देश में राष्ट्रीय भावना के उत्थान के साथ नारी के उत्थान की ओर भी देश के नेताओं का ध्यान गया। फलतः उन्होंने अनुभव किया। कुरीतियों पर दृष्टिपात करने वाले अनेक समाज सुधारक थे। उन महापुरुषों ने इन कुप्रथाओं का अन्त करने का दृढ़ निश्चय किया। 'सन् ३६ के पश्चात् राष्ट्रीय आन्दोलन की तीव्रता व सामान्य जनता की उसमें प्रदर्शित निष्ठा ने इस प्रकार के भारतीयों के मानसिक ढांचे को बुरी तरह झकझोर दिया। पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली व संस्कृति के प्रति प्रतिक्रिया तो काफी पूर्व प्रारम्भ हो चुकी थी पर इस काल में वह पर्याप्त व्यापक रूप लेकर प्रकट हुई, परिणामतः लोगों में राष्ट्रीय गौरव की भावना ने गहराई से स्थान पाया। सामयिक काव्य में पाश्चात्य शिक्षा व संस्कृति में रंगे ऐसे युवक व युवतियों को लक्ष्य करके अनेक व्यंग्य कविताएँ लिखी गई। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् पाश्चात्य प्रणाली में व्यापक परिवर्तन करने के हेतु राष्ट्रीय सरकार ने अनेक प्रयत्न किये। भारत की विदेश नीति के फलस्वरूप विदेशों में भारत का गौरव बढ़ा। फलतः लोगों में राष्ट्रीय सम्मान की भावना और भी बलवती हुई। स्थिति में पर्याप्त सुधार भी हुआ।'[1] पाश्चात्य ढंग से मिलने वाली शिक्षा प्रणाली नवजागृति में सहायक हुई। अन्य देशों की गति विधियों से परिचित भारतीय क्रांति करने के लिए संगठित होने लगे। गुलामी की शृंखलायें अब असह्य हो गई। उनको तोड़ने का शिक्षित वर्ग प्रतीत हुआ, क्योंकि जागृति की चिनगारी ने मानस मंथन कर उसमें स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए अग्नि प्रज्जवलित कर दी थी। सन् ३६ के पश्चात् राष्ट्रीय आन्दोलन में नारियों ने भी महत्वपूर्ण भाग लिया। यह नारी-जागृति का ही परिणाम था कि नई शिक्षा के फलस्वरूप अन्य वर्गों के साथ साथ नारी जाति भी जागी उसमें शिक्षा की लोकप्रियता भी बढ़ी। सन् ३७ में होने वाले चुनावों में भी नारियों ने भाग लिया और विजयी भी हुई। चुनावों के पश्चात् बनने वाले

---

१ नया हिन्दी काव्य डॉ० शिवकुमार मिश्र पृ० ३३, प्र० सं० १९६२

काग्रेसी मन्त्रि मडलो म उन्होंने महत्वपूर्ण पद भी सभाले। उच्च और मध्य वर्ग की नारियो तक ही यह जागृति सीमित न थी निचले वर्गो की स्त्रिया ने भी आगे बढ़कर मजदूर किसान आन्दोलनो म भाग लिया। यह नारी-जागृति का ही परिणाम था कि नारी जाति की समस्या सन् ३६ के पश्चात् विशेष रूप से उभरी। इस समस्या को भी सामाजिक दृष्टि से ही नही वरन् सास्कृतिक दृष्टिकोण से भी देखा गया। अपने सामाजिक रूप म नारी जाति की समस्या ने नारी के सदियो से होने वाले शोषण एव समाज व्यवस्था म उसकी गर्हित स्थिति के प्रति लोगो का ध्यान आकर्षित किया तथा सरकार व समाज स नारी के सामाजिक अधिकारो की माग की।[1]

पति के मरने पर आग्रहपूर्वक पत्नी को भी चितारोहण करने को कहा जाता था जिसे सती प्रथा कहते थे। इस प्रथा के अनुसार आकाक्षा न होने पर भी स्त्री को आग्रहपूर्वक जलकर भस्म होने को कहा जाता था। एच्छिक रूप स सती होना और अनच्छिक रूप से सती होना दोनो ही बातें एक हैं। दोनो म ही मानवता का ह्रास निहित है। ऐसी नृशस बर्बरतापूर्ण हत्याओ की रोकथाम के लिए राजा राममोहन राय आगे आये। उन्होंने इस कु प्रथा को दूर करने का बीडा उठाया। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पर्दा प्रथा एव बाल विवाह को रोकने के सक्रिय प्रयत्न किए। उन्होंने कन्या गुरुकुलो की स्थापना की। शिक्षा नारी जाति के लिए आवश्यक है इसका प्रबन्ध भी किया गया। समान अधिकार की अधिकारिणी नारी जाति को ऊचा उठाकर उनके अधिकारो के प्रति उन्हें सचेत किया। उन्होंने अपने सद् प्रयत्नो से पर्दा प्रथा एव बाल विवाह को रोकने म सफलता भी पाई। ऋषि दयानन्द सरस्वती की अनुपम देन थी—स्त्रियो मे सामाजिक चेतना। तत्पश्चात् गाधीजी भी आजीवन नारी जाति के हितो का सुरक्षा म रत रहे। भारतीय सविधान म पुरुषो के समान अधिकारो की अधिकारिणी नारी जाति गाधीजी की इस अनुपम भेंट को कभी विस्मृत नही कर सकती। नारी पुरुषो के समान सभी अधिकारो का उपयोग कर सकती है। केवल नारीत्व ही उसे उसके अधिकारो से वचित कराए ऐसा भारतीय सविधान और स्वतन्त्र भारत का नियम नही। नारी का नारीत्व जो अभिशापित हो गया था समान अधिकारों की दीप्ति से जगमगा उठा जिससे नारी को पुन चेतना का वरदान मिला। पतन का युग समाप्त हुआ और नारी की उन्नति का अध्याय प्रारम्भ हुआ। शृखलाए टूट चुकी थी। नव जागृति ने समस्त

---

१ नया हिन्दी-काव्य डा० शिवकुमार मिश्र पृ० ३४

नारी जाति को नव प्रेरणा दी। उत्थान-पतन दोनों चलते ही रहते हैं। आज पतन का युग नहीं जबकि हम उत्थान के युग में जी रहे हैं। पुरुष के समकक्ष नारी पहुंच रही है और संविधान में नारी के अधिकारों को भी पर्याप्त स्थान दिया गया है।

केवल कतिपय कानून जो नारी जाति के सामाजिक अधिकारों की गारंटी करें—पर्याप्त नहीं समझे गये, वरन् नारी की स्थिति के प्रति लोगों के मानसिक ढांचे में परिवर्तन आवश्यक समझा गया। स्वस्थ एवं प्रगतिशील विचारों का पुरुष वर्ग नारी-समस्या को इसी आयाम से देख रहा था। महात्मा गांधी ने इस प्रश्न को भी सामाजिक से अधिक सांस्कृतिक महत्व दिया। जहां उन्होंने पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति का अंधानुकरण करने के लिए नारी जाति को फटकारा वहां पुरुष वर्ग से भी अपील की कि वह अपने मानसिक ढांचे में ऐसे परिवर्तन करे जो नारी को मिलने वाले सामाजिक अधिकारों को बिना किसी उलझन के आत्मसात् कर ले। विधवा विवाह, कन्यावृत्ति, बाल विवाह, अशिक्षा, पर्दा-प्रथा, परिवार, प्रेम विवाह, नारी समस्या के इन सारे आयामों को लेकर ही इस युग का नारी आन्दोलन गतिशील हुआ और इसमें सन्देह नहीं कि अपने संघर्षों के फलस्वरूप नारी जाति अपने अधिकारों की प्राप्ति करने में बड़ी सीमा तक समर्थ भी हुई। स्वतन्त्रता के पश्चात् नारी की स्थिति में और भी सुधार हुआ। भारतीय संविधान, हिन्दू कोड बिल जैसे अनेक कानूनों, आल इंडिया वीमेंस कान्फ्रेंस, नेशनल कौंसिल आफ वीमन जैसी संस्थाओं ने नारी जाति की सामाजिक स्थिति पर्याप्त संतोषजनक कर दी।[1]

वर्तमान युग समस्त नारी जाति के सम्मान का युग है। नव सन्देश वाहक यह युग नवस्फूर्तिदायक है। नारी के लिए पर्याप्त क्षेत्र है और उसके विकास की दिशाएं उन्मुक्त हो गई हैं।

स्वतन्त्रता के पश्चात् नारी को शिक्षा का अमूल्य उपहार वरदान स्वरूप प्राप्त हुआ है। नारियों का उत्तरदायित्व समाज के प्रति बढ़ गया है। उसके कंधों पर परिवार का ही बोझ नहीं है अपितु वह समाज के प्रति भी कर्त्तव्य की भावना से अनुप्राणित है। भारतीय स्त्री शिक्षा पर ब्रिटिश शासन काल से ही बल दिया गया था। परिणामतः पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति का प्रभाव भी नारी पर पड़ा। नारी की प्रगति में, ये पाश्चात्य

---

1 नया हिन्दी-काव्य डॉ० शिवकुमार मिश्र पृ० ३५

अंधानुकरण बाधक बन कर आया। मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ होने के लिए भारत की संस्कृति को, उसके गौरव को विस्मृत करना हानिकारक है। मानसिक दासता से पूर्ण मुक्ति तभी मानी जायेगी जब पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण न करके भारतीयता को जीवित रखने में समर्थ हों। भारतीय महिलाओं का योगदान भारत के लिए गौरव की वस्तु है।

भारतीय महिलाओं में सर्वप्रथम सरोजिनी नायडू का स्मरण किया जाता है जो कि उत्तर प्रदेश के गवर्नर पद पर प्रतिष्ठित हुई थी। श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित विदेशी राजदूत के पद पर आसीन हुई थी। आज नारी किस क्षेत्र में पुरुषों से पीछे है? सभी क्षेत्रों में उसकी प्रतिभा दर्शनीय है। राजनीतिक, सामाजिक तथा अन्य क्षेत्रों में भी उसका उच्च स्थान है। नारी लेखिका, गायिका, समाजसेवी, कवियत्री, अभिनेत्री, नर्तकी, विदुषी आदि रूपों में पर्याप्त सफल हुई है। समस्त नारी वर्ग—नये सम्मान, नये गौरव एवं नयी दृष्टि से पूजनीय है।

स्वाधीनता संग्राम में आहुति देने वाली नारियों के बलिदान एवं त्याग को विस्मृत नहीं किया जा सकता। नारी परिवार को सम्भालते हुए भी सार्वजनिक कार्यों में पूर्ण रूपेण सक्रिय सहयोग दे रही हैं। प्रसाद जी की नारी भावना का उदाहरण दृष्टव्य है—

नारी! तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत नग पग तल में
पीयूष स्रोत सी बहा करो जीवन के सुन्दर समतल में।

वस्तुतः नारी को पुनः श्रद्धापूर्ण दृष्टि से देखा जाने लगा है। नारी *के पतन को देखकर ही राष्ट्रीय कवि गुप्तजी की लेखनी से निम्न पंक्तियाँ* निःसृत हुई थी—

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आंचल में है दूध और आँखों में पानी।

परन्तु नारी का अबला कहने का युग अब समाप्त हो गया है। सन् १९५८ में माउंट आबू में एन सी सी कैम्प की समस्त छात्राओं के सम्मुख स्व जवाहरलाल नेहरू ने कहा था—'हमें अपने शब्द कोष से अबला' शब्द ही हटा देना चाहिए। वास्तव में नारी अबला क्या है? शक्ति स्वरूपिणी साक्षात् दुर्गा माँ नारी सबला है। अबला कैसे हो सकती है?

बालक एवं बालिकाओं द्वारा समान विषयों का अध्ययन नारी की प्रगति का सूचक है। नारी ने, शिक्षा के क्षेत्र में स्वतन्त्रता के पश्चात्, इन २० वर्षों में बहुत उन्नति की है। पुरुषों के समान नारी भी उच्चशिक्षित

हो रही है। सव प्रथम भारत की महिला इजिनियर है—उर्मिला गोयल ! आज के युग म कितनी महिलाए डाक्टर, शिक्षिका, वकील एव जज बनकर अपनी प्रतिभा स पुरुषवग को चमत्कृत कर रही हैं। विजयलक्ष्मी पडित के अन्तर्राष्ट्रीय कार्यों से समस्त विश्व की महिलाओ का मस्तक ऊँचा ह। श्रीमती इदिरा गाँधी प्रधानमत्री के पद पर काय करने वाला प्रथम भारतीय महिला हैं। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का वीरतापूर्ण इतिहास किसे याद नहीं है? श्रीमती महादेवी वर्मा 'आधुनिक भारत की मीरा' सवश्रेष्ठ कवियत्री के पद पर आसीन हैं। नारी को केवल वासनापूर्ति का ही साधन नहीं माना गया है। आज के युग म नारी का दायित्व बहुत बढ़ गया है। वह 'योनि' मात्र स ऊपर उठकर शुद्ध मानवी क रूप म प्रतिष्ठित हुई।"[1]

नारी विज्ञान के क्षेत्र म भी उन्नति कर रही है। राष्ट्र के प्रति नारी जागरूक है। स्वतन्त्रता स पूव का भारतवष का इतिहास त्याग, सघष एव बलिदानों से भरपूर चित्रित हुआ है। पुरुषा के साथ-साथ नारी का त्याग भी कम महत्वपूर्ण नहीं था। पुरुषों ने मातृभूमि का रक्षाथ अपन प्राणा की आहुति दी तो नारिया ने जौहर की ज्वाला म भस्म होकर अमूल्य बलिदाना का भी परिचय दिया। परन्तु एक उदाहरण एसा भी है जिसन स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर हसत-हसत प्राणात्सग किया। स्वतत्रता सग्राम का श्री गणेश झाँसी की रानी महारानी लक्ष्मीबाई के द्वारा हुआ था। ब्रिटिश हुकूमत का विरोध करने का साहस थोडे से रणबाँकुरों के साथ ही किया और उनकी वीर सखियों ने भी उस यज्ञ में अपनी आहुति दी। भारतीय नारियों को उनके आदश का उनक बलिदान का ध्यान सदव याद रहेगा। सन् १८५७ का स्वतन्त्रता युद्ध विस्मृत करने की वस्तु नही। २५ माच १८५८ को झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के साथ घमासान युद्ध प्रारम्भ हुआ और रानी ने अग्रेजों के दाँत खट्टे कर दिए। रानी की रणचातुरी देखकर विदेशी भी आश्चय चकित रह गये। सुभद्रा कुमारी चौहान क शब्दों में—

> रानी थी या दुर्गा थी, स्वयम् वीरता का अवतार
> देख मराठे पुलकित होते जिसकी तलवारा क वार।

देश को स्वतन्त्रता का अमर सन्देश देन वाली रानी स्वय बलिवेदी पर चढ गई और भारतीय पुरुष एव महिलाओ के लिए आदश माग प्रशस्त कर गई। रानी द्वारा जाग्रत क्रांति अग्नि की लहर धीरे धीरे समस्त भारत में

---

१ नया हिन्दी-काव्य डॉ० शिवकुमार मिश्र, पृ ३४

याप्त हो गई और उसका परिणाम प्रत्य । हुआ सन् १६६७ म १८ अगस्त को। सुभद्राकुमारी चौहान ने उनकी यशोगाथा को अपने काव्य म स्थान दिया।

बढ़ जाता है मान वीर का रण म बलि होने से
मूल्यवती होती सोने की भस्म यथा साने से।

वस्तुत नारी वग को उनसे चेतना के नय आयाम मिले जिसका अनु करण कर राष्ट्रीय भावना का उद्भव और विकास हुआ। राष्ट्रीय भावना का बीजारोपण तो हो ही गया था। उसके अकुरो को पनपने मे समय लगा। अब तो राष्ट्रीय भावना का वृक्ष नारी जाति क हृदय म हरा भरा पूण विक-सित होकर नवफल प्रदान कर रहा है।

विद्यालय एव विश्वविद्यालय म छात्राओ के लिए बुलबुल गाइड ए सी सी एव एन सी सी की शिक्षा प्रारम्भ कर दी गई है। एन डी एस. आई अनुशासन की भावना के साथ साथ राष्ट्रीय एकता का पाठ भी पढाते हैं। राष्ट्रीय भावना स ओत प्रोत गीतो को कठस्थ करवा कर उन्ह छात्राओ स गाने के लिए कहा जाता है। नस की ट निग लेकर कितने रोगियो की सेवा का काय नारी जाति कर रही है। हवाईजहाज चलाने एव उनस पराशूट की सहायता से उतरने की शिक्षा लेने म भी नारी पीछे नही रही है। मातृ भूमि की रक्षा करने के लिए नारी सदव उद्यत रही है। जिस देश के बालक वृद्ध, नारी और पुरुष राष्ट्र की बलिवेदी पर अपने स्वार्थों को तन मन एव धन से न्यौछावर कर देत हैं वह विश्व मे महानशक्तिशाली राष्ट्र समझे जाते हैं। भारतवष वीरता क लिए सदव प्रशसित रहा है।

हिन्दी काव्य मे नारी—

भारतीय काव्य म मुख्यरूपेण नारी का शृ गारिक रूप म चित्रण किया गया है। नारी के स्वतन्त्र अस्तित्व एव सजग व्यक्तित्व का विकास आधुनिक हिन्दी काव्य म मिलता है। इसस पूव व्यक्तित्व की विशिष्टता का विकास प्राय उपलब्ध नही होता है। नारी के अग प्रत्यगो का विभिन्न उपमाओ द्वारा सौदय-निरूपण ही अधिक हुआ है। नायिका भेद, नख शिख वणन सयोग विप्रलम्भ आदि नारी वणन के विषय बने। नारी के चरित्र की उच्चता के दशन प्राय नही मिलते।

रासो काव्यो की नारियाँ यौवन से भरपूर एव सौन्दयमय हैं। उनका सौदय अन्य नरेश या राजकुमारो का आमन्त्रित करता है वीरतापूवक हरण करने के लिए। तत्पश्चात् व भोग की वस्तु बनकर आकषण समाप्त होने

पर उपेक्षिता बन जाती हैं। वीर पति के हृदय में निवास करते भी देरी नही और निकलते भी देरी नही होती। अनेक पत्नियां, दासियो के कारण एक पत्नी का कोई महत्व नही कोई मूल्य नही।

भक्ति-कालीन काव्य की नारी राधा के रूप मे अवतरित हुई। विद्यापति तो इससे पूर्व राधा के नायिका रूप के उद्दाम यौवन का संकेत अपने गीतो में करते ही है। राधा प्रणय विभोर हो प्रियतम के संकेत की प्रतीक्षा करती हुई अधीर बैठी रहती हैं। कृष्ण संकेत करते हैं—

नन्द क नन्दन कदम्ब क तरु तर, धिरे-धिरे मुरली बजाव।
समय संकेत निकेतन बइसल बेरि बेरि बोलि पठाव॥

सामाजिक नियन्त्रण स मुक्त, धार्मिक भावनाओ स स्वतन्त्र है इस युग की नारी। गुप्त प्रणय को स्थान नहीं। इधर सूर की राधा का सर्वांगीण विकास नहा होता। वह क्रमश विकास की सीढ़ियां पर पाव रखती हुई अन्तिम सोपान तक पहुचती है। बूझत स्याम कौन तू गोरी ? म जिज्ञासु भाव स्पष्ट है और बालिक राधा का चातुर्य पूर्ण प्रत्युत्तर " काहे को हम ब्रज तन आवति, खेलत रहति आपनी पौरी"। तत्पश्चात् प्रणय का प्रथम आभास उस समय होता है जब कृष्ण गया दुह रहे हैं तो एक धार बतन तक जाती है तो दूसरी राधिका के मुख को भिगोती है। राधिका प्रणयानुभूति करते हुए भी रूठी हुई रहती है धार कहो जाती है देखते कहो हो। बस पूर्वानुराग की यही झाँकी धीरे धीरे पराकाष्ठा तक पहुचती है। परन्तु धार्मिक एव सामाजिक बाधाए राधा को कृष्ण के वियोग म मद मद जलाती हैं।

रीतिकालीन कवियो की नायिका का सुख क्षणिक है। सौन्दर्य-लौ के मंद होते ही वह विलास के योग्य नही रह जाती। बाल विवाह के प्रचलन के कारण अविवाहिता प्रेयसी के प्रेम चित्र उपलब्ध नही होते।

द्विवेदी युग की राधिका समाज सेविका के रूप म चित्रित हुई है। वह विश्व हित की कामना स अभिभूत अन्य सब राधाओ स उच्च कोटि की राधा बनकर अवतरित हुई है। चूंकि गांधीजी का प्रभाव इस युग म प्रमुख रूप स छाया हुआ था अत राष्ट्रीय भावना से पूर्ण नारी का चित्र मुखरित हुआ है। नारी म जिन गुणो की अपेक्षा स्वतन्त्र भारत कर रहा है, वही गुण काफी मात्रा म द्विवेदी युगीन राधा म दृष्टिगत होते हैं। विश्वबंधुत्व एव विश्वहित की कामना लेकर जीने वाली समाज सुधारक के रूप म राधा समष्टि की उदात्त भावभूमि पर प्रतिष्ठित हुई है।

पद्मिनी का जौहर" की ज्वाला म प्राणा की आहुति देना इतिहास की विशिष्ट घटना है। नारियों की वीरता का श्रेष्ठ उदाहरण है झाँसी की रानी महारानी लक्ष्मीबाई का बलिदान।

रानी दुर्गावती झलकारी बाई एव हाडा रानी की सनाएँ प्रसिद्ध नारियो के वीरतापूर्ण उदाहरण हैं। राष्ट्र क लिए सचेत नारी ने केवल वीर शिशु ही उत्पन्न नहीं किए अपितु स्वातन्त्र्य-सग्राम म उसका अभूतपूर्व योगदान रहा और देश की रक्षा के हेतु प्राणोत्सर्ग करना भारत की वीर नारी क लिए कठिन काय नही है।

क्रान्ति-काल से कवियो ने राष्ट्रीयता की भावना स प्रेरित नारी को वीर प्रसविनी के रूप म देखना प्रारम्भ कर दिया था। गांधी-युग म नारी का उन्मुक्त स्वस्थ दृष्टिकोण दृष्टिगत होता है। द्विवेदी युगीन सुभद्रा कुमारी चौहान ने ओजपूर्ण काव्य रचना की—

बुन्देले हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी
खूब लडी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

वीरो का वसन्तोत्सव कसा होना चाहिए ? इस पर भी काव्य रचना की—

वीरो का कसा हो बसन्त ?

नवयुवको को स्वतन्त्रता के लिए मर मिटने का आह्वान किया। बहिन रूप म राखी बाँधकर देश के नवयुवक भाइयो को चुनौती दी—

आते हो भाई ? पुन पूछती हूँ—
विषमता के बधन की है लाज तुमको ?
तो बदी बनो देखो बन्धन है कसा
चुनौती यह राखी की है आज तुमको।।

पुरस्कार नामक कविता मे भावाभिव्यक्ति द्रष्टव्य है—

आज तुम्हारी लाली स मा के मस्तक पर हो लाली।
काली जजीरें टूटें काली जमुना म हो काली।।
जो स्वतन्त्र होने को है पावन द्वार उन हाथो का।
स्वीकृत है माँ की वेदी पर पुरस्कार उन हाथो का।।

इस प्रकार सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य म राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति हुई। जागरण एव चेतना के गीत गाये गये।

प्रगतिशील साहित्य की रचना ने उपेक्षित वग का निरलकृत चित्र

चित्रित किया। चन्द्रकिरण सोनरिक्सा की निम्न पंक्तियों में राष्ट्र की एकता की भावना व्यक्त हुई है—

दुनिया के मजदूर भाईया, सुन लो एक हमारी बात।
सिर्फ एकता में ही बसता इस दुनिया के सुख का राज॥

महादेवी वर्मा के काव्य का प्रमुख स्वर था वन्दना। हृदय की असीम वेदना उनके काव्य में मुखर हुई। आशा एवं उल्लास का भी चित्रण हुआ है—

मुस्काता संकेत भरा नभ
अलि! क्या प्रिय आने वाले हैं?
विद्युत के चल स्वर्ण-पाश में बंध हँस देता रोता जलधर।
अपने मृदु मानस की ज्वाला, गीतों से नहलाता सागर।
दिन निशि को देती निशि दिन को
कनक रजत के मधु प्याले हैं॥

जहाँ हिन्दी काव्य में नारी का चित्रण केवल कवियों के ही वश का था वहीं काव्य के उस एकच्छत्र कार्य क्षेत्र में नारी ने भी अपना अधिकार जमाया। नारी हृदय की वेदना, प्रणय, मिलन, विरह एवं सुख-दुख सभी भावों की अभिव्यक्ति स्वयं नारी ने काव्य के अन्तर्गत की। स्वतन्त्रता के पश्चात् तो अनेक उदीयमान प्रतिमाएं काव्य क्षेत्र में अवतरित हुई हैं।

स्वतन्त्रता से पूर्व ही नारी ने काव्य के माध्यम से हृदयगत भावों की अभिव्यक्ति करना प्रारम्भ कर दिया था। परन्तु स्वतन्त्रता के पश्चात् तो कितनी कवयित्रियाँ लेखिकाएं जन्म ले चुकी हैं। केवल गृहस्थी की शिक्षा पर ही नहीं लिखा है अपितु समस्त कुरीतियों को दूर करने का प्रयास करते हुए समस्त नारी जाति को उद्बुद्ध किया है। गृह विज्ञान, पाक-विज्ञान सिलाई कढ़ाई आदि की निपुणता के साथ शिक्षण के क्षेत्र में भी उनका पूर्ण सहयोग एवं चातुर्य दृष्टिगत होता है।

नारी और राष्ट्रीय भावना—

राष्ट्रीय भावना युगानुसार परिवर्तित होती रहती हैं। युद्ध एवं शांति इन दोनों कालों में राष्ट्रीयता के स्वरूप का परिवर्तन होता है। राष्ट्रीयता की भावना का विकास नये आयामों को लेकर हुआ है। राष्ट्रीयता का स्वरूप सभी देशों एवं सभी कालों में एक जैसा निश्चित नहीं होता परन्तु इससे मिलती जुलती भावना की अभिव्यक्ति सभी काल एवं देशों के इतिहास में हुई है।

समस्त आर्य-जाति की रक्षार्थ राम का रावण से युद्ध राष्ट्रीय भावना से अनुप्राणित था। सोमनाथ की रक्षार्थ नरेशों का संगठन भी इसी भावना का द्योतक है। महाराणा प्रताप द्वारा अकबर की आधीनता की अस्वीकृति देशाभिमान की अनुभूति से परिप्लावित है। चित्तौड़ की पद्मिनी का अन्य राजपूत बालाओं के साथ जौहर-व्रत" राजपूती मर्यादा या आन का रक्षक होते हुए भी देश के लिए बलिदान की भावना से भरपूर है। गुरु तेगबहादुर एवं हकीकतराय का बलिदान चाहे धर्म की रक्षार्थ हुआ था। किन्तु सबके मूल में भावना एक ही थी जाति की रक्षा, धर्म की रक्षा अर्थात राष्ट्र की रक्षा। नारियों की राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति सन् १८५७ के गदर के समय से मिलती है। शनैः शनैः नारी प्रगति पथ पर अग्रसर होती गई और राष्ट्रीयता की भावना भी नये आयामों की दिशा में विकसित हुई। नारी पुरुष की पथगामिनी, अनुगामिनी नहीं अपितु कदम मिलाकर चलने वाली सहचरी के रूप में प्रस्तुत हुई है।

श्रीमती इन्दिरा गाँधी विजयलक्ष्मी पंडित तारकेश्वरी सिन्हा एवं पद्मजा नायडू राष्ट्र के प्रमुख पदों पर कार्य करती हुई राजनैतिक क्षेत्र में अवतरित हुई हैं। अभी भी पूर्ण जागरण नहीं हुआ है। कुछ नारियाँ अपने अधिकारों एवं कर्त्तव्य के प्रति सजग हैं तो कुछ कर्त्तव्य विमुख हैं। समस्त नारी वर्ग की सक्रियता आवश्यक है तभी राष्ट्र पूर्णरूपेण उन्नति कर सकेगा।

आज का गीतकार नारी हृदय की समस्त भावनाओं को जागृति का स्वर देकर उन्हें प्राणवान बनाना चाहता है सक्रिय बनाना चाहता है। राष्ट्र की एकता, सुरक्षा एवं नव निर्माण के लिए प्राचीन भारत की गौरव गाथा को भी स्मृति में लाना अत्यावश्यक है। जौहर की ज्वाला में भस्म होने वाली अमर नारी के प्रति गीतकार गौरवानुभूति करता है। नारियों की मर्यादा की रक्षा का यह उत्सर्ग बलिदान की भावना से अनुप्राणित करता हुआ प्रत्येक नारी को उसके आत्म सम्मान की रक्षा के लिए सजग करता है। लक्ष्मीबाई का महत्वपूर्ण बलिदान नारी-वर्ग की चेतनता एवं सजगता की ओर अग्रसर करता है—

> लोहा लेने चलो। चीन ने भारत के तप को ललकारा।[1]
> देश पद्मिनी का यह भारत अधिक प्राण से है सम्मान
> जौहर की ज्वाला में जलकर यहाँ नारियाँ रखती आन

१ चलो सिपाही चलो, हरिकृष्ण प्रेमी, प्र० सं० १९६३ पृ० सं० ३४

यह लक्ष्मीबाई का भारत प्राण लुटाना खेल समान,
अंतिम रक्त बिंदु तक भी, रखेंगे भारत का मान,
अमर नाम होता है जिसने समर भूमि में जीवन वारा।
लोहा लेने चलो ! चीन ने भारत के तप को ललकारा ॥

स्वतन्त्रता के पश्चात् होने वाला चीन आक्रमण ऐसा आक्रमण था, जिसने राष्ट्र की सुप्त सीमा रक्षा की भावना को जागृत किया। गीतकारों ने उन महान नारियों का स्मरण किया, जिन्होंने प्राणोत्सर्ग को खेल के समान समझा था। उन्हीं वीर पद्मिनी एवं लक्ष्मीबाई का यह भारत है। यहाँ की नारियों की वीरता पुरुषों को भी बलिदान-हेतु संगठित करने लगी। भारत की नारियाँ जब इतना वीर हैं तो उन्हीं नारियों के सपूत कितने वीर होंगे। वीर प्रसविनी माँ शिशु को पालने में ही वीरता का पाठ पढ़ाती है और अपने तप त्याग एवं बलिदान से भारत के सपूतों में बलिदान की प्रेरणा के लिए उत्साह के भाव भरती है। अंतिम रक्त बिंदु तक भी भारत की शान बनाये रखने में नारी सहयोग देती है। समरभूमि में बलिदान करने वाली नारियाँ अमर हो गई हैं। चीन से टक्कर लेने के लिए सभी को उद्बोधन देते हुए गीतकार सजग थे। चीन ने भारत की वर्षों की साधना और तप को चुनौती दी थी। अतएव चीन से लोहा लेना या युद्ध करना आवश्यक था।

केवल प्राणोत्सर्ग नारी की कामना नहीं। नारी युद्ध प्रांगण में अपनी रण-चातुरी प्रदर्शित करती है। वह कोमल एवं सुकुमार अंगों वाली ही नहीं तलवार से युद्ध करने वाला बलिष्ठ नारी भी है। संकट काल में युद्ध क्षेत्र में तलवार भी चलाती है—

माँ दुर्गा का देश, यहाँ नारियाँ चलाती हैं तलवार ॥[1]

माँ दुर्गा शक्ति स्वरूपिणी देवी के रूप में भारत में पूजी जाती है। नारी में भी उसी शक्ति स्वरूपा माँ की वीरता की भावना के भाव भरे हैं। उसी शक्ति के कारण वह तलवार जैसा शस्त्र चलाने में समर्थ है। यद्यपि यह युग तलवारों का युग नहीं है। पैटन टैंक सबर जैट तथा एटम बम का युग है। जहाँ तलवारों की वीरता का कोई अर्थ नहीं। अनेक व्यक्तियों के संहार के लिए एक बम की वर्षा ही काफी होती है। तथापि कवि का आशय नारी जाति को जागृति का स्वर देने का है। उस युग

---

१ चला सिपाही चला, हरि कृष्ण प्रेमी पृ ३४

म तलवार का महत्त्व था नारियो ने उसी शस्त्र को चलाया। इस युग म जिन शस्त्रो का प्रधानता है उनका प्रयोग भी आज की नारी सीख रहा है। मानवता वादी राष्ट्रीय भावना स अनुप्राणित नारी सभी व्यक्तियो क दुखो म दुखी होती है। मानवमात्र की पीडा से भर आने वाला हृदय गीत का सजन करने म सहायक होता है—

जो सबके दुख से भर आये उन आँखो का बिन्दु बनूगी।
+ + + + +
जो मरथल की तपन घटाये उस घनका जल बिन्दु बनूगी।
जो काटो पर राह बनाये
मैं ऐसे चरणो को पूजू
जो जन जन की पीर सुनायें
मैं उसकी लारी बन गूजू
जो सबकी पीडा दुलराये उसी गीत का छन्द बनूगी।[1]

काँटो पर राह बनाने वाला के साथ नारी भी कदम मिलाकर चलने को आतुर है। मानव की पीडा से पीडित होने वाली नारी की उच्च भावना मानवतावाद का समथन करती है।

राष्ट्र की प्रगति के लिए राष्ट्र की एकता आवश्यक तत्त्व है। एकता भावना की हो राष्ट्र की हो जाति की हो और धम की हो। आपसी वम नस्य भुलाकर ही नूतन राष्ट्र का निर्माण एव उसकी रक्षा सभव है। स्वतन्त्रता की प्रकाश किरण न जो पथ प्रदर्शित किया है उसके आलोक म वमनस्य को विस्मृत कर राष्ट्र का नया निमाण करने की प्रेरणा देने म सजग श्रीमती विद्यावती का गीत द्रष्टव्य है—

लौट न जाय प्रकाश किरण खबरदार र
भूल जाओ आपस का वमनस्य रार
धो डालो अतर क सारे प्रतिकार
द्वेष और वर सब दुबाकर इस बार
दवपुत्र रचो एक नूतन ससार।
फिर न मिलगी यह तुम्हें गगा की धार।
लौट न जाय प्रकाश किरण खबरदार॥[2]

सावधान करन वाली नारी युद्ध क पश्चात् शान्ति की कामना करती है। युग परिवतन नवयुवको व नवयुवतियो पर निभर करता है। उनकी उमग

१ राष्ट्र कवयित्रियो की प्रतिनिधि रचनाए कुसुम कुमारी सिन्हा पृ २१
२ राष्ट्र कवयित्रियो की प्रतिनिधि रचनाए विद्यावती कोकिल पृ ६१

उनका उत्साह उल्लासपूर्ण होता है। नारी का संदेश नई पीढ़ी के लिए—

मन मंदिर मे सजी लगन का मूरत[1]
पर नही चढ़ाओ और नयन का पानी
युग बदल रहा है तुम्हे बदलना होगा
दे रही निमत्रण तुम को नई जवानी
बध रहा युग के शीश शांति का सेहरा।
गा रही धरा पर जग की तरुणाई है॥

प्राचीन सस्कृति को नारी विस्मृति के गहन गह्वर मे नही डाल सकती। धर्म के प्रति निष्ठा नारी का प्रबल अस्त्र है। पुनर्जन्म कर्म-काड आदि मे विश्वास करने वाली नारी प्राचीन भारत की गौरव-गाथा गाकर राष्ट्र के प्रति असीम श्रद्धा प्यार एव विश्वास को अभिव्यक्त करती है—

है जहाँ धर्म है विजय वही।[2]
यह मंत्र हमारे जीवन का॥
हम कर्म ज्ञान के ज्ञानी हैं,
कर्तव्यों के बलिदानी हैं,
हम हर जन्मों मे फल पाते
अपने ही दान दिये धन का
है जहाँ धर्म है विजय वही।
यह मंत्र हमारे जीवन का॥

गीतकार ने नारी उत्थान की कामना करते हुए विगत वीर नारियो को भाव सुमनाजलि अर्पित की है। राष्ट्रीय भावना का तीव्र आवेग का अनुगामी होने मे उन बलिदानी नारियो का स्मरण करते हुए—

माँ के गाढ़ना दूध की कीमत अदा करो[3]
सिर पर केसरिया कफन बाँध भूमो मचलो,
माताओ! बहनो!! दुर्गाचण्डी बनो आज
महिषासुर के मद का मर्दन करके निकलो,
चामुण्डा के मुण्डों की माल अधूरी है

---

१ श्रेष्ठ कवयित्रियों की प्रतिनिधि रचनाएँ स्व० श्याम सविता पृ ७१
२ श्रेष्ठ कवयित्रियों की माला रचनाएँ, सुमित्रा कुमारी सिन्हा पृ ११५
३ चलो सिपाही चलो डा० शिवमगल सिंह सुमन पृ ४६

बानी के कर का खप्पर अब भी रीता है,
जो हास हुमस से वरण मौत को करता है।
वह राष्ट्र अमर हो जाता युग-युग जीता है ।।

राष्ट्र की रक्षार्थ नवयुवक जब प्राणोत्सर्ग कर देता है तो वह वीर माँ के दूध की लाज रख लेता है। माँ के दूध की कीमत चुकाने के लिए नवयुवकों को प्रेरणा देने में तत्पर गीतकार सदैव देता है मरण का। नारियों को दुर्गा चण्डी बनने का उद्बोधन देता है। राष्ट्र का दुश्मन अन्य राष्ट्र महिषासुर है उसका दमन आवश्यक है। चामुण्डा के मुण्डों की माल की अपूर्णता तब समाप्त होगी जब दुश्मनों के शीश उसकी माला में गूंथ जायेंगे। राष्ट्र की अमरता युग युग जीवित रहेगी यदि राष्ट्रीय एकता सुदृढ हुई और राष्ट्र की रक्षार्थ नारियों का भी पूर्ण सहयोग मिलता। वीरता की प्रतीक दुर्गा माँ का स्मरण राष्ट्रीय भावना को तीव्रता प्रदान करता है। पद्मिनी के जौहर की गाथा इस युग में भी गाई जाती है। जब स्वतन्त्र भारत पर चीन ने आक्रमण किया तो गीतकार सजग हो उठा—

चीन नहीं है नाम तुम्हारा[1]
नाम पराई धरती छीन
भूल न शब्दों की समता
तुम हो चीन तो हम प्राचीन

सन्तों के सन्देश यहाँ तो वीरों के हैं धरोहर भी।
मीरा के हैं गीत यहाँ तो पद्मिनियों के जौहर भी।।

राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति नाना रूपों में हुई है। स्वतन्त्र भारत पुनः दूसरे राष्ट्र की आधीनता में परराष्ट्र द्वारा शासित हो यह भारतीय स्वीकार हो नहीं कर सकते। इसकी स्वतन्त्रता को अक्षय बनाने के लिए अतीत की गौरव गाथाएं याद दिलाकर प्रेरणा देते हैं शत्रु से लड़ने की। राष्ट्र का सामा वही हो एक इंच भूमि पर भी अन्य राष्ट्र का अधिकार न हो। इसके लिए दुश्मनों को ललकारते हुए झाँसी की रानी की वीरता का स्मरण करते हुए—

खून नत्र का आज माँगता[2]
फिर से हिन्दुस्तान है।

---

१ चलो सिपाही चलो भरत व्यास पृ ५७
२ वही मुरारि दीक्षित पृ ८५

मांसी से लक्ष्मी बाई ने,
दुश्मन को ललकारा ।

० ० ०

भारत-माँ का चीर हरण
क्या समझे तुम आसान है ?
खून शत्रु का मांगता
फिर से हिन्दुस्तान है ।

द्रौपदी का भरी सभा में चीर-हरण करने का प्रयत्न किया गया था। परन्तु वह विफल हुआ। इसी प्रकार भारत माँ के चीरहरण की तयारी शत्रु ने की है किन्तु वह प्रयत्न असफल होगा। भारत की विजय निश्चित है। भारत अपराजेय है। भारत को हस्तगत करना आसान नहीं है।

भारत की प्रत्येक नारी में साक्षात शक्ति स्वरूपा रणचण्डी एवं काली माँ निवास करती हैं। उसकी असीम शक्ति ही दुश्मनों के छक्के छुड़ा देती है। किन्तु चीनी दुश्मन अभी तक उस शक्ति से अपरिचित है। इसी कारण उन्होंने इस काली माँ के देश में घुसने की योजना बनाई है। परन्तु भारत की सजग दुर्गा चीनी दुश्मनों को ललकारती है—

माँ कह दो चीनी दुश्मन से भारत की दुर्गा जाग उठी है ?[1]
नहीं जानता क्या चीनी दुश्मन !!
भारत में रणचण्डी बसती
नहीं डरती धमकी पाकर।
भारत में काली है रहती ॥

स्वतंत्र भारत की नारी अबला नहीं रह गई है। उसकी विवशता अशक्तता का समय गया। जहाँ वह मूक पशु के समान सभी अत्याचारों को सहन कर लेती थी। सुकुमार गात की नारी सहनशील तो अब भी हैं परन्तु कर्त्तव्य के प्रति जागरूक एवं अधिकारों के प्रति सचेत है। भारतीय नारी की शक्ति अथाह समुद्र की तरह है। ज्वाला की चिंगारी प्रज्वलित रहती है शत्रु के लिए तो राष्ट्र समाज एवं परिवार के लिए नारी करुणामयी शीतल एवं सरिता है। सिंह की तरह निर्भीक वीर सपूतों को पैदा करने वाली नारी ने समाज में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया है। राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए अपने वीर पुत्रों की भेंट हंसते-हंसते दी है। राष्ट्र की रक्षार्थ पत्नि ने अपने सुहाग

१ चलो सिपाही चलो, उर्मिला गुप्ता पृ ६०

को माता ने अपने पुत्र को बहन ने अपने भाई को रोली चावल से टीका करके भारती उतारकर वीरता की प्ररणा देते हुए सीमा पर भेजा है। नारी शृंगार के योग्य ही नहीं है। वह युद्ध का शृंगार भी करती है—

> हम न अबला समझे कोई हम भारत की नारी हैं। [1]
> कोमल कोमल फूल नहीं हम ज्वाला हैं चिंगारी हैं।।
> तुम कहते हो नयन कोरे हैं मतवारे हैं
> हम कहती हैं उन नयनों में भरे हुए अंगारे हैं,
> कोयल हम न समझो हम सिंहों को जनने वाली हैं।
> हम न अबला समझे कोई हम भारत की नारी हैं।।

गीतकारों ने चिर-परिचित अमर एवं त्यागमयी नारियों का स्मरण करते हुए आधुनिक युग की नारी को उनके समकक्ष लाने का प्रयत्न किया है और कर रहे हैं—

> हम न अबला समझे कोई हम भारत की नारी हैं, [2]
> हम शकुंतला हैं सीता हैं हम झाँसी की रानी हैं
> हम लक्ष्मी हैं कमला हैं दुर्गा और भवानी हैं।
> वीर प्रताप शिवाजी से पुत्रों को जनने वाली हैं।
> हमें न अबला समझे कोई हम भारत की नारी हैं।

इस प्रकार हिन्दी-काव्य में नारी विभिन्न रूपों में चित्रित हुई है। राष्ट्रीय भावना युद्ध के समय राष्ट्र की रक्षा की प्रेरणा देती है जिससे बलिदान की भावना प्रमुख हो उठती है शान्ति के समय राष्ट्र की उन्नति की प्रयासी नव निर्माण की प्रेरणा देती है। राष्ट्र को शक्तिशाली एवं समृद्ध बनाने के लिए पुरुषों के साथ नारी का भी पूर्ण सहयोग आवश्यक है।

निष्कर्ष

प्राचीन युग की नारी और आज के युग की नारी उसका समाज में स्थान महत्व तथा सहयोग आदि का संक्षिप्त विवरण देखने के पश्चात् हम उन परिस्थितियों से अवगत होते हैं जो युगानुरूप, नारी के उत्थान पतन में परिलक्षित कराती हैं। प्राचीन युग में नारी का जो सम्मानपूर्ण स्थान था वह वैदिक युग के समाप्त होने के साथ ही अधःपतन पराकाष्ठा को पहुँचता

---

१ गीतभरा मल्हार मरतव्याम पृ ७६
२ वही

गया। प्राचीन युग मे आधुनिक युग तक नारी के विकास का क्रम उत्थान के पश्चात् पतन की ओर अग्रसर होता हुआ पुन करवट लेकर उत्थान की ओर अग्रसर हो रहा है। उत्थान क्रमश अध पतन के पश्चात् नारी को नवजागृति का सदेश देता है सन् अठारह सौ म। नवजागरण का सही अभियान प्रारम्भ हुआ था सन् ३६ म।

स्वत त्र भारत की नारी नव चेतना और नवजागति के स्वर पाकर नवस्फूर्तिमयी होगई। अधिकारो के प्रति एव कत्त य के प्रति सजग होगई। शिक्षा के उचित प्रभाव स आदश गहिणी आदश माँ एव देश कल्याण के प्रति सजग नारी समाज के सुधारने म सहयोगी एव उपयोगी सिद्ध हुई है। स्त्रियो का काय क्षेत्र परिवार तक ही सीमित नही रह गया है। परिवार स बाहर समाज के कल्याण द्वारा जन-कल्याण की भावना स अनुप्राणित नारी राष्ट्र के उत्थान म भी पूण सहयोग दे रही है। जीवन के प्रत्येक क्षत्र म नारी तत्परता स सक्रिय सहयोग देकर काय सलग्न है। स्वतन्त्रता म पूव की सभी कुरीतियो को समाप्त कर नई परम्परा बनाने म नई पीढी सजग है। बाल विवाह पर्दा-प्रथा दहेज प्रथा नारी अशिक्षा विधवा विवाह निषध आदि कु प्रथाओ का बहिष्कार कर सभी क्षेत्रो म अपना प्रभुत्व स्थापित कर रही है। शन शन विज्ञान एव कला के क्षत्र म भी नारी पूण अधिकार म सहयोग देकर विशिष्ट स्थान प्राप्त कर रही है।

तात्पय यह है कि नारी का प्रवश राजनीति धम शिक्षा एव स य सचालन आदि सभी क्षेत्रो म होगया है। नारी ने भी पूण स्वतन्त्रता का सदुपयोग किया है। विकास क्रम इसस स्पष्ट है कि आज की नारी प्रत्यक क्षेत्र म पदापण ही नही कर रही है अपितु अपने परिश्रम स अपनी प्रतिभा स वह नारी जाति का नाम रोशन कर रही है। नारी आज किस पद के अयोग्य समझी जा सकती है ? वह अच्छी डाक्टर, जज, वकील, शिक्षिका, प्राध्यापिका इन्जिनयर, लखिका, कवयित्री, नस, सदगहिणी एव समाज सरक्षिका सब कुछ है। भारत के प्रधानमन्त्री पद तक पहुँचने वाली सव प्रथम नारी हैं इन्दिरा गांधी जो राष्ट्र हित की कामना स अभिभूत राष्ट्र की रक्षा म तत्पर एकता सुरक्षा, शान्ति एव नव निर्माण का सन्देश प्रत्येक भारतीय को द रही हैं। भारत की नारी का भविष्य उज्जवल है। राष्ट्र का भविष्य भी नारी के सहयोग स अति उज्जवल है। नारी सदव प्रगति-पथ पर अग्रसर होती रहेगी और नव निर्माण म सक्रिय सहयोग देती रहेगी। आज की नारी स्वेपके द्र प्रति सजग है और शान्ति से परिवार म ही नहीं बठी है। उसके सीमित दायरे

स्वतन्त्रता के साथ उन्मुक्त हो परम्परा से हटकर नये उन्मुक्त परिवेश में जीने की प्रेरणा दे रहे हैं।

इस पथ का उद्देश्य नहीं है,
श्रान्त भवन में टिक रहना,
किन्तु पहुँचना उस सीमा तक।
जिसके आगे राह नहीं॥

—प्रसाद

११ | गीत-काव्य कला और शिल्प

गीत का स्वरूप—

गीत की परम्परा भारत के लिए नवीन नहीं है। गीत-काव्य का विधान लोक-गीतों के रूप में मिलता है। शनै शनै साहित्य में भी गीत-काव्य को स्थान मिला। लोक गीतों की परम्परा मौखिक रूप से जन-कण्ठों में ही पनपती रही। सर्व प्रथम गीतों का प्रयोग नृत्य एवं संगीत के क्षेत्र में किया गया। यद्यपि ऋग्वेद की ऋचाएँ भी सस्वर पढ़ी जाती थीं इस रूप में उन्हें ही गीत के उद्भव का स्रोत माना जाता है। किन्तु सामवेद की संगीतात्मक पंक्तियों को भी गीत-काव्य की संज्ञा नहीं दी जा सकती। वस्तुतः साहित्यिक गीतों की रचना का प्रारम्भ सर्वप्रथम प्राकृत या लोक भाषा में हुआ। अपभ्रंश के सिद्ध कवियों ने गीत-काव्य को भारतीय साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया। विभिन्न राग रागनियों में बंधे गीत इतिवृत्तात्मकता के स्थान पर भावानुभूतियों की अभिव्यक्ति हो अधिक प्रभावी रूप में करते दीख पड़ते हैं।

गीतों की परम्परा क्षेमेन्द्र जयदेव, विद्यापति एवं सूर आदि गीतकारों के द्वारा अखंड रूप से पोषित होती रही है। आधुनिक युग में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा यह धारा विकसित हुई और पाश्चात्य प्रभाव को ग्रहण कर छायावादी कवियों ने इसे अन्तर्मुखी बनाने का सफल प्रयास किया। किन्तु प्रगतिवादी कवियों के द्वारा बौद्धिकता एवं सामाजिकता का समावेश कर दिये जाने से इसमें गीत-काव्य के सम्पूर्ण लक्षण उपलब्ध नहीं होते। राष्ट्रीय भावना युक्त गीतों में गीत के प्रमुख तत्वों की उपलब्धि इस युग में भी होती है। प्रयोगवादी कवि गीतों की परम्परा से दूर होते जा रहे थे। परम्परा से अलग वे केवल प्रयोग में ही लीन थे। किन्तु राष्ट्रीय-भावना-पूर्ण गीतों में यहाँ भी शुद्ध साहित्यिक गीतों का सृजन हुआ है। नई कविता एवं अकविता के युग में भी हिन्दी की मधुर गीत-काव्य धारा का स्रोत सूखा नहीं है। राष्ट्र पर आये संकट के समय एकता सुरक्षा एवं बलिदान की भावना गीतों में व्यक्त होती है। प्रारम्भ से और अब तक गीतों की परम्परा का निर्वाह राष्ट्रीय

गीत के तत्व—

भारतीय एव पा चात्य विद्वानो द्वारा दी गई परिभाषाओं की परिधि म गीत के निम्नलिखित मुख्य तत्व प्राप्त होते हैं —

१ तीव्र अनुभूति
२ सगीतात्मकता
३ सरसता
४ सक्षिप्तता
५ भावो की अन्विति
६ सरस प्रवाहमयी कोमलकान्त पदावली
७ आत्माभिव्यजना
८ मानवीय भावना का रग
९ गति
१० सहज स्फुरित उद्गार

उपर्युक्त तत्वो से निर्मित पद्यमयी रचना गीत-काव्य कही जा सकती है। जब मानव के व्यक्तिगत सुख दुख भावावश म सगीतमय होकर कोमलकान्त पदावली के माध्यम से तीव्र अनुभूति के कारण भावो की अन्विति लिए सक्षिप्त आकार म अभिव्यक्त होते हैं तो वह मानवीय रग से भरपूर गतिमय हृदय के सहज स्फुरित उद्गार की अभिव्यजना के कारण सरस एव ताल लय युक्त सगीतमय होते है। हृदय के ये उद्गार जो क्षिप्र गति से मानस मथन के कारण जिह्वा पर नृत्य करने लगते हैं और मानव स्वयमेव गुनगुनाने लगता है यह प्रक्रिया आत्मानुभूतियो की सच्ची एव सहज अभिव्यजना होती है। गीतो म अस्वाभाविकता अथवा कृत्रिमता का स्थान नही होता। परिस्थितिवश जब सुख या दुख का आवेग चरम सीमा पर पहुँच जाता है तब मानव भावुकता म डूब बिना नही रहता। फलत तीव्र वेदना करुण रस पूर्ण एम गीतो के माध्यम से फूट पड़ती है जो पीडा द्वन्द्व आँसू और विषाद से भरपूर हृदय को हिला देने वाले क्रन्दन का सही प्रतिबिम्ब होता है। इसी प्रकार सुख के आवेग में हृदय उल्लास उन्माद मादकता और शान्ति का प्रतिबिम्ब मुखरित होता है। वस्तुत तीव्र भावानुभूति गीत के आवश्यक तत्व के रूप म स्वीकार की जानी चाहिए। इसके अभाव म गीत रचना उतनी सफलता से नही हो सकती। भावो की अन्विति भी इसके अभाव म सम्भव नही होती क्योकि भावों की अभिव्यजना सामयिक आवेश का स्पष्ट करता है अतएव गीत का आकार विस्तृत न होकर सक्षिप्त होता है।

भावों की विशृंखलता गीत में नहीं पाई जाती। गीत भावों की अन्विति के कारण गतिमय होता है। सर्वोत्कृष्ट गीतों में उपर्युक्त सभी तत्वों का समाहार रहता है।

गीत काव्य का वर्गीकरण—

सम्पूर्ण गीत-काव्य को मुख्यतः दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। (१) लोक गीत (२) साहित्यिक गीत। लोक गीत मौखिक होते हैं। इनकी मौखिक परम्परा पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है। घूम घूमकर मनुष्य इसकी प्रसिद्धि करते हैं।

पाश्चात्य विद्वानों ने गीतों का विभाजन इस प्रकार किया है। (१) चतुर्दशपदी (Sonnet) (२) सम्बोधन गीत (Ode) (३) शोकगीत (Elegy) (४) व्यंग्यगीत (Satire) (५) विचारात्मक गीत (Reflective) (६) पत्र-गीत (Epistle) (७) दार्शनिक एवं चिन्तनात्मक गीत (Meditative and Philosophical Lyrics) (८) वर्णनात्मक गीत (Descriptive) (९) नाट्य गीत (Dramatic Lyric) (१०) वीर गीत (Ballad) आदि।

हिन्दी में इनके अनुकरण पर अनेक गीतों की रचना हुई है। सॉनेट चौदह पंक्तियों का भावात्मक एवं संक्षिप्त होता है। प्रायः गाकर पढ़ा जाता है। हिन्दी में सम्बोधन गीतों का सृजन भी हुआ है। प्रसाद के किरण, पंत के आँसू, छाया, बापू के प्रति, अधकार तथा निराला के खण्डहर के प्रति, भिक्षुक और शेफालिका आदि प्रसिद्ध संबोधन गीत हैं। हिन्दी में शोक गीतों की रचना भी पर्याप्त मात्रा में हुई है। सूर के गीतों में उपालम्भ के रूप में व्यंग्य-गीत मिलते हैं। भारतेन्दु का 'देखी तुम्हारी काशी' एक सुन्दर व्यंग्य गीत है। सूर, तुलसी एवं कबीर आदि के गीतों में दार्शनिकता उपदेशात्मकता विचारात्मकता आदि के दर्शन होते हैं। बौद्ध साहित्य की थेर-गाथाओं में वैराग्य के प्रति विशेष प्रेम तथा उत्साह का परिचय प्राप्त होता है।

मेरा प्रतिपाद्य विषय वीर गीत (Ballad) या देश भक्ति सम्बन्धी गीतों तक ही सीमित है। अतएव उपर्युक्त विभाजन पर विस्तृत चर्चा न करके उनका परिचयात्मक विवरण ही प्रस्तुत किया है।

गीत का शिल्प विधान—

(१) भाव—गीत में भावातिरेक का आधिक्य रहता है। संगीत भावातिरेक का माध्यम है। भाव गीत की आत्मा है। मानव स्वभावतः एक कल्पनाशील प्राणी है जो कल्पना के अतिरिक्त जीवन और जगत् से विभिन्न

रूपों में अनेक अनुभूतियाँ प्राप्त करता है जिनसे उसका भाव-लोक समृद्ध होता रहता है। नाना विषयों के बोध का विधान होने पर ही उनसे सम्बन्ध रखने वाली इच्छा की अनेकरूपता के अनुसार अनुभूति के जो भिन्न भिन्न योग संगठित होते हैं वे भाव या मनोविकार कहलाते हैं।[1] 'मनुष्य के हृदय में बाह्य जगत की संवेदनाओं के कारण अनेक विकार उठते हैं जो परस्पर मिलकर 'भाव की सत्ता प्राप्त करते हैं।[2] इस प्रकार भाव का सम्बन्ध हृदय या अन्तरात्मा से है। हृदय की समस्त रागात्मक वृत्तियाँ उद्बुद्ध होकर जब सहज रूप में बाहर निकलने को व्याकुल होने लगती है तो गीत की सृष्टि होती है। मानवीय संवेदनाएँ का उत्कृष्ट रूप गान ही है। जहाँ भाव पर्वतीय झरने की भाँति तीव्र गति से उमड़कर गीतों के रूप में प्रवाहित होता है।

भावनाओं की स्थिति प्रत्येक मानव के हृदय में सहज रूप से होती है किन्तु उनकी अभिव्यक्ति सभी के वश की बात नहीं। जिसकी संवेदन शक्ति जितनी तीव्र होती है वह उतने ही घने रूप में सुख एवं दुःख का अनुभव करता है। जब यही तीव्र भावानुभूति गाथा के रूप में मानव के सम्मुख आती है तो सभी के लिए आनन्ददायी एवं रसास्वादन की वस्तु हो जाती है। भारतीय विचारकों ने भावों का वर्गीकरण दो रूपों में किया है—

(१) स्थायी भाव (२) संचारी या व्यभिचारी भाव।

स्थायी भावों की संख्या नौ और संचारी भावों की संख्या सामान्य रूप में तैंतीस मानी गई है।

स्थायी भाव प्रत्येक मनुष्य में सुषुप्तावस्था में रहते हैं। विभिन्न साहित्यिक विधाओं द्वारा ये भाव जागृत होते हैं और रसास्वादन कराते हैं। वे सब अनुभूतियाँ जिन्हें मानव अनुभूत करता है भावों का आलम्बन बनती हैं। परिस्थिति विशेष में भाव विशेष जागृत होता है और अस्थायी भावों की पुष्टि में संचारी भाव सहयोग देते हैं। संचारी भावों की अवस्थिति क्षणिक या अस्थायी होती है। चूँकि भावों की अभिव्यक्ति रसास्वादन में सम्पन्न होती है। अतः भाव और रस का घनिष्ठ सम्बन्ध माना जाना चाहिए। नौ रसों की कल्पना या उसका विधान भावों की नौ की संख्या के समान है (१) शृंगार (२) हास्य (३) करुण (४) रौद्र (५) वीर

---

[1] चिन्तामणि आ॰ रामचन्द्र शुक्ल 'भाव या मनोविकार' निबन्ध

[2] जीवन के तत्व और काव्य के सिद्धान्त श्री लक्ष्मीनारायण सुधांशु

(६) भयानक (७) बीभत्स (८) अद्भुत, और (६) शान्त।

हिंदी गीतकाव्य में शृंगार करुण हास्य एवं शांत रस की प्रधानता पाई जाती है। गीत की कोमलकांत पदावली के लिए उपयुक्त रस की योजना की जा सकती है। किन्तु राष्ट्र भक्तिपूर्ण गीतों के लिए वीर भाव एवं वीर रस होना चाहिए। सुप्त हृदय को जागृति की प्रेरणा देने के लिए वीर भावों की प्रधानता वाले गीतों की आवश्यकता है। राष्ट्र पर आये संकट को दूर करने के लिए तथा दुश्मनों को समाप्त करने युद्ध की विभीषिका के दृश्यांकन के लिए रौद्र, भयानक एवं बीभत्स भाव और रस से परिपूर्ण गीतों की रचना आवश्यक है। हिंसा का दमन करने के लिए शांत भाव की अपेक्षा की जा सकती है। राष्ट्र प्रेम को व्यक्त करने के लिए शृंगार एवं राष्ट्र के दलित-वर्ग को ऊंचा उठाने के लिए करुण रस पूर्ण गीतों की महत्ता भी स्वीकार की जानी चाहिए।

अस्तु हिन्दी गीतों की रचना सभी प्रकार के भावों को लेकर हुई है और होती रहेगी। राष्ट्रीय भावना पूर्ण गीतों की सृष्टि भी विभिन्न भावों एवं रसों को लेकर हुई है। प्रधानतः वीर भाव एवं वीर रसपूर्ण गीतों की मिलती है।

आकार—गीत में पद विन्यास एवं चरणों की समुचित योजना निश्चित नियम के अनुसार होती है। सर्वप्रथम एक पंक्ति की रचना जिसे टेक कहते हैं गीत को प्रारम्भ करती है। तत्पश्चात् प्रत्येक चरण की तुक अगले चरण से मेल खाती हुई होती है। टेक इन चरणों से छोटी होती है। परंतु आधुनिक युग में इस निश्चित पद विन्यास को इतना महत्व नहीं दिया गया है। टेक की पंक्ति छोटी या बड़ी भी हो सकती है। कहीं पहले एवं दूसरे चरण की तुक मिलती है कभी दूसरे और चौथे की तुक मिलती है तो कभी पहले दूसरे तीसरे की तुक मिलाकर टेक की पंक्ति की आवृत्ति होती है। कभी पहले दूसरे और चौथे चरण की तुक मिलती है तीसरे चरण की तुक नहीं मिलती। कुल मिलाकर इन सभी स्थितियों में भावों की अन्विति का ही ध्यान रखा जाता है। गीतों में भावों की अभिव्यक्ति में बाधा नहीं है। लय एवं तुकबंदी से पहले भावों का अनुशासन नये गीतकारों ने भी माना है। आधुनिक युग में गीतों की रचना शास्त्रीय राग रागनियों के आधार पर ही नहीं हुई है अपितु रुचिकर एवं लोकप्रिय धुनों का आधार भी ग्रहण किया गया है। पाश्चात्य संगीत का प्रभाव भी इन गीतों की रचना पर पर्याप्त रूप में पड़ा है। धुन मिलाकर गीतकार का आग्रह मधुर एवं कर्णप्रिय धुनों के लिए रहा है। अतएव संगीत का मिला-जुला प्रभाव,

नई धुनो के साथ गीता म व्याप्त रहा है। टेक का आवृत्ति मावों की सश्लिष्टता व उनकी अभिवित के लिए होती है। एक गीत म एक ही भाव प्रधान होता है। प्रत्यक गीत अपना अलग अस्तित्व लिए अपने म पूर्ण होता है। गीत म टक की लम्बाई चरण की लम्बाई स भी ज्यादा होता है तो कभी छोटी भी होती है।

बिम्ब-विधान—

सव प्रथम बिम्ब के सम्ब ध मे पाश्चात्य विद्वान् एजरा पाउण्ड के विचारो का उल्लेख किया जा सकता है। आचाय शुक्ल ने भी इस सम्बन्ध म विचार व्यक्त किय। डा नगेन्द्र ने तो बिम्ब पर अलग स अपन मौलिक विचार प्रस्तुत किए हैं। सुप्रसिद्ध अग्रज आलोचक सी० डे० लविस न बिम्ब पर विचार प्रकट करते हुए काव्य विकास की प्रक्रिया के साथ बिम्बो को अभिन्न रूप से सम्बद्ध बताया। वस्तुत काव्य एव बिम्ब का इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि बिम्ब के अभाव मे प्राणवान काव्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

जितन सशक्त बिम्बो का समावश काव्य मे होगा वह काव्य उतना ही समथ एव प्राणवान होगा। बिम्ब कल्पना निर्मित होते हैं। जिस कवि की कल्पना शक्ति जितनी प्रखर होगी उसके बिम्ब उतने ही समथ होग। कवि की दृष्टि जितनी व्यापक एव सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूप म भावो को पकडने म समथ होगी उसके बिम्बो का क्षेत्र उतना ही विशाल, तीव्र तथा समृद्ध होगा। सीमित परिधि म बिम्बो की सख्या भी सीमित होगी। कवि की तीव्र दृष्टि उपयुक्त बिम्ब रचना म समथ होती है।

बिम्ब' का शाब्दिक अथ है—प्रतिमा आकृति अथवा रूप आदि। पूव अनुभूतियो क प्रभाव के रूप म सचित ये मूत्त रूप या मानस प्रतिमाए ही बिम्ब कही जा सकती है तथा इन्हा के माध्यम से हमारे मस्तिष्क की अनेक शक्तियाँ—मुख्यत स्मृति और कल्पना—अपना काय सपादित करती हैं।[1] अपने सरलतम रूप म यह (बिम्ब) शब्दो क माध्यम स निर्मित एक चित्र है।[2] काव्य के क्षेत्र म गीतकार भी बहुत से विषयो का वणन इन बिम्बों क माध्यम म करते हैं। वह एस शब्दो का प्रयोग करते हैं जिससे उसक विषय का वसा ही बिम्ब पाठक क मस्तिष्क म प्रतिबिम्बित हो सक।

---

१ माडन एन्साइक्लोपीडिया आफ ब्रिटानिका श्री बी० एन० झा पृ० ३ २

२. पोयटिक इमज सी डी लविस पृ १८

इस प्रकार बिम्ब योजना के माध्यम से गीतकार की अनुभूति अधिक सजग एवं क्षिप्र गति से पाठक के मन तक प्रेषित होती है। काव्यात्मक बिम्ब एक ऐसा शब्द चित्र है, जो भाव या संवेग से अनुप्राणित होता है।"[1]

मनुष्य स्वभावतः घटना और वस्तु को बिम्ब रूप में ही ग्रहण करता है और उसी रूप को बिम्ब के माध्यम से सजीव से सजीव रूप में उपस्थित करता है। दर्पण में दृष्टिगत होने वाली छायाकृति या प्रतिछाया की भाँति ही सत्य का प्रतिबिम्ब काव्य में बिम्बित होता है। जो देखा जा चुका है उसी का प्रतिरूप 'बिम्ब' कहलाता है। किन्तु काव्यगत बिम्ब दर्पण की प्रतिच्छाया से भिन्न प्रकार का होता है। कारण कवि द्वारा निर्मित बिम्ब साधारण अनुकृति मात्र न होकर संवेदना का पुट लिए हुए होता है। वह कवि की प्रतिभा व इन्द्रियानुभूति का समन्वित रूप होता है जो दर्पण वाली छायाकृति से अधिक सजग, चेतन एवं मुखर होता है।

गीतों में तीव्र अनुभूति की अभिव्यंजना होती है इस कारण गीतों के बिम्ब भी अधिक प्राणवान होते हैं। कवि की सूक्ष्म एवं तीखी अन्तर्दृष्टि सब ओर से नानाजन करता है। दर्पण मात्र आकृति बिम्बित करने में समर्थ है परन्तु काव्यगत बिम्ब में स्वादेन्द्रिय, स्पर्शेन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय और श्रवणेन्द्रिय की अनुभूति भी उतनी ही सजगता से बिम्बित होती है, जितना मानव अनुभूत करता है।

कवि जगत् की प्रत्येक वस्तु के साथ सम्बन्ध जोड़कर उसको वाणी का नव परिधान पहनाकर उसका सजा-सँवरा उज्ज्वल व निखरा हुआ रूप बिम्बित करता है। कवि का सश्लिष्ट बिम्ब नाना प्रकार के भावों की उत्पत्ति में सहायक होता है। कवि मानव मन की समस्त वृत्तियों का विभिन्न अप्रस्तुतों के सहारे बिम्बांकन करता है। साधारण मानव जिसमें स्पन्दन नहीं देखता कवि अपनी प्रतिभा से उसमें सजीवता लाकर उसके सम्मुख अन्य वस्तुओं के सहारे स्पन्दनशील बनाकर प्रस्तुत करता है। कवि अपनी तूलिका के सहारे भूत एवं वर्तमान को चित्रित करता हुआ भविष्य की घटनाएं भी बिम्बांकित कर देता है। इसके अतिरिक्त प्राचीन घटनाओं एवं आख्यानों को अप्रस्तुत के माध्यम से वर्तमान में भी चित्रित करता है। कलाकार अपनी तूलिका से रेखाओं और रंगों के माध्यम से चित्रों में सजीव करता है। गीतकार शब्दों की रेखाओं से अपने बिम्बों का निर्माण करता है। श्री रामदहिन मिश्र ने बिम्ब का वर्गीकरण इस प्रकार प्रस्तुत किया है—

---

१ दी पायटिक पेटन, रोबिन स्केल्टन पृ ६०

(क) दृश्य बिम्ब (ख) वस्तु बिम्ब (ग) भाव बिम्ब (घ) अलङ्कार बिम्ब (ङ) सान्द्र बिम्ब (च) विवृत्त बिम्ब ।[1]

डा० हरद्वारालाल शर्मा ने काव्य सौन्दर्य के लिए पाँच प्रकार के बिम्बों का उल्लेख किया है—

(१) प्रतिबिम्बात्मक प्रतिमाएं (२) भावावत् प्रतिमाएं (३) प्रातिभासिक प्रतिमाएं (४) सच्ची प्रतिमाएं (५) सृजनात्मक प्रतिमाएं ।[2]

इस प्रकार विभिन्न रूपों में बिम्बों को वर्गीकृत करने का प्रयास किया गया है। हमारा उद्देश्य इन वर्गीकृत बिम्बों का औचित्य सिद्ध करना या विवेचन की समीक्षा करना नहीं है। काव्य में कितने ही प्रकार के बिम्बों का समावेश हुआ है, यह विस्तृत विषय है। गीतकाव्य में बिम्बों का समावेश हुआ है क्योंकि इससे पूर्व ही हमने काव्य एवं बिम्ब का घनिष्ठ सम्बन्ध दृष्टिगत किया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने बिम्ब विधान (रूप विधान) को तीन रूपों में विभक्त किया है।

(१) प्रत्यक्ष रूप विधान (२) स्मृति रूप विधान (३) कल्पित रूप विधान ।[3]

शुक्लजी की मान्यता है कि इन तीनों प्रकार के रूप विधानों में भावों को इस रूप में जागृत करने की शक्ति होती है कि वे रसकोटि में आ सकें।[4] पहले दो प्रकार के रूप विधानों द्वारा जागरित अनुभूति विशेष दशाओं में ही रसानुभूति की कोटि में आ पाती है।[5]

आधुनिक युग के विभिन्न वादों की भूमि में गीतों ने जन्म लिया है। नये गीतकार वर्तमान जीवन की विभिन्न मनःस्थितियों एवं विषमताओं का चित्रण करते रहे हैं अतएव उनकी बहुमुखी कल्पना ने बिम्बों का चित्रण भी बहुलता से किया है। बिम्बों की वास्तविक सार्थकता भाव को आलोकित करने वस्तु को प्रभावपूर्ण ढंग से उद्घाटित करने तथा वस्तु के साथ पूर्णतः अपना सामंजस्य बिठा लेने में है न कि अनावश्यक नवीनता उत्पन्न करने

---

१ काव्य में अप्रस्तुत योजना रामदहिन मिश्र पृ० ८१

२ समालोचक जून १९५८ पृ० १८

३ चिन्तामणि प्रथम भाग आ० रामचन्द्र शुक्ल पृ० ०

४ वही पृ० २३०

५ वही पृ० २३

उनकी भीड खडी करना अथवा मनोवैज्ञानिक उपायो द्वारा उनमे चमत्कार की सृष्टि करने मे है ।[1]

राष्ट्रीय भावना-युक्त गीतो का बिम्ब विधान पौराणिक घटनाओं के अधिक निकट है । राष्ट्र की सस्कृति पर गौरव राष्ट्रोत्थान की चेतना राष्ट्रोद्धारको का गुणगान देश की प्रकृति से प्रेम सुरक्षा के लिए उद्बोधन और बलिदान आदि भावनाओ के गीतो म प्रयुक्त ऐतिहासिक तथ्यो के सदभ म पुनर्जीवित करने के लिए तत्कालीन घटनाओं पर या प्राचीन आख्याना पर निभर रहना होता है । अतएव युगानुरूप बिम्ब विधान परिस्थिति विशेष म हुआ है । झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई सुभाषच द्र बोस या महात्मा गाधी का नाम गीत म आते ही उनका एक अस्पष्ट चित्र उपस्थित हो जाता है । प्रकृति प्रदत्त बिम्ब अधिक नसर्गिक एव सशक्त रूप म अकित हुए है । राष्ट्रीय भावना युक्त गीलो के बिम्ब मांसल एव वासनायुक्त नही है अतएव अधिक सश्लिष्ट एव स्पष्ट नही हैं ।

मानव की मनोवृत्ति सहज ही सौ दय की ओर आकर्षित होती है और उसम रुचि लती है । देशभक्तिपूर्ण गीतो म निर्माण का सौदय होता ह युगीन विषमताओ एव दयनीय परिस्थितियो का चित्रण होता है सामाजिक विशृ खलताओ का चित्र होता है समस्याओ का चित्रण होता है । मानवीकरण की बाह्य रूप सौदय को एसे गीतों म स्थान नही । इतनी जटिलताओ विषादों एव असतुष्टि स पूर्ण भावो की अभिव्यक्ति वाले गीता म सवत्र अभिधात्मक एव अस्पष्ट क्षीण बिम्ब के दशन होते हैं । सस्कृति पर गौरव करने वाले गीतों के बिम्ब अपेक्षाकृत अधिक सजीव एव स्पष्ट देख जा सकते हैं ।

प्रतीक विधान—

बिम्ब अपेक्षाकृत अधिक स्वच्छ द (आर्बिट्रेरी) और नाना अथ व्यजक होते हैं जबकि 'प्रतीक' नियत और अचूक रूप से एकाथ यजक होते हैं ।[2] श्री रामचद्र वर्मा ने प्रामाणिक (शब्द) कोष म 'प्रतीक' शब्द के अथ दिए हैं—चिन्ह लक्षण निशान आदि । जसे प्रत्यक राष्ट्र की ध्वजा पर उसका चिन्ह अकित होता है । समाज क विभिन्न दलो के परस्पर विभिन्नता लिए हुए चिन्ह विशेष होते हैं, जिनके कारण परिचय प्राप्त करने

---

१ नया हिन्दी काव्य डॉ० शिवकुमार मिश्र पृ० ३४६
२ कल्पना और छायावाद केदारनाथसिंह पृ ६३

म सुविधा होती है। इस प्रकार गौरव सूचक कोई आकृति विशेष रग अथवा चिह्न भी प्रतीक कहे जा सकते हैं यथा अशोक की लाट तिरगा पताका आदि को देखकर ही इन वस्तुओं को भारत राष्ट्र का प्रतीक मान लिया जाता है। ये प्रतीक किसी अन्य राष्ट्र के नही हो सकते। अन्य राष्ट्रों के प्रतीक भारत से सर्वथा भिन्न होंगे। डाक टिकट पर व्यक्ति विशेष की आकृति, देश विशेष की प्रतीक है। मुद्राओं पर अंकित किसी भी प्रकार की छाप देश विशेष की ओर इंगित करती है। भारत की मुद्रा अमरिका की मुद्रा नही हो सकती। इसी प्रकार भाषा का प्रत्येक शब्द प्रतीक रूप में है। हमारे यहा पृथ्वी शब्द से जो अर्थ ध्वनित होता है आवश्यक नही कि दूसरे देश भी उसे उसी नाम से ही सम्बोधित करें। इस प्रकार प्रत्येक राष्ट्र की भाषा के अपने अर्थ या प्रतीक होते हैं। परन्तु प्रत्येक प्रचलित शब्द को साहित्य में प्रतीक नही माना जा सकता। प्रतीक लक्षणा अथवा व्यजना द्वारा अर्थ ध्वनित करता है। अभिधेय अर्थ के लिए प्रतीक की आवश्यकता नही। प्रतीक मुख्य रूप से सूक्ष्म भावों को स्थूल रूप में प्रस्तुत करने में सहायक होते हैं। यो तो प्रतीक शब्द अत्यधिक व्यापक है और उसका प्रयोग तर्क शास्त्र विज्ञान गणित मनोविज्ञान ज्योतिष सभी में बहुलता से होता है परन्तु यहाँ हमारा तात्पर्य केवल उन्ही प्रतीकों से है[1] डा० रामअवध द्विवेदी के शब्दों में जिन्हे हम अनुभव अथवा अनुभूति की अवस्था विशेष का शाब्दिक प्रतिरूप कह सकते हैं।[2]

प्रतीकों को निम्नांकित तीन रूपों में विभाजित किया जा सकता है (१) परम्परागत प्रतीक (२) व्यक्तिगत प्रतीक (३) प्राकृतिक प्रतीक।

परम्परागत प्रतीक भूतकाल से चलते आ रहे हैं। इनके अर्थ प्रयोग बाहुल्य से घिसे नहीं हैं बदले नहीं हैं बल्कि उन्हा पुरानी विशेषताओं या अर्थ विशेषों को लेकर जीवित है। सतों की रचनाओं में ऐसे प्रतीक उपलब्ध होते हैं। राष्ट्र द्वारा राष्ट्र के लिए स्वीकृत प्रतीक मन्दिरों एव गिरिजाघरों पर अंकित प्रतीक सर्वस्वीकृत होने के कारण अधिक सरल एव ग्राह्य है। व्यक्तिगत प्रतीक के सम्बन्ध में कवि को स्वय की अनुभूति के प्रतीक बनाने की स्वतन्त्रता होती है। कवि की प्रखर कल्पना शक्ति पर ऐसे प्रतीकों की रचना होती है। प्राकृतिक प्रतीकों की सृष्टि प्राकृतिक उपकरणों को

---

१ नया हिन्दी काव्य डा शिवकुमार मिश्र पृ ३८६

२. परिषद् पत्रिका आलोचना जुलाई १९५७ काव्य में प्रतीक विधान पृ २५

प्रतीकत्व प्रदान करके होती है। इस प्रकार की व्यवस्था मे नदी पवत सुमन इत्यादि का एक साकेतिक सूक्ष्म अथ रहता है। इस कोटि के प्रतीक सर्वाधिक ग्राह्य होते हैं।

राष्ट्रीय भावना पूण गीतो म प्रतीको का प्रयोग प्रचुरता से हुआ है। परम्परागत प्रतीको के माध्यम से गीतो म एतिहासिक सत्य एव राष्ट्रीय महत्व को प्रदर्शित किया गया है।

भाषा—

आत्माभिव्यक्ति की आकाक्षा मानव म सहज रूप से पाई जाती है। भाव भावना एव विचार को अभिव्यक्त करने का माध्यम है—भाषा। अपने भावो को दूसर तक पहुँचाने की इच्छा ही समस्त भाषा को जन्म देती है। यही काव्य की प्रेषणीयता है। भावो को शब्दाकार रूप म अभिव्यजित करना भाषा का ही काय है। विचार एव भाव भाषा का परिधान पहनकर मूर्तिमान हो समाज के सम्मुख उपस्थित होत हैं। भाषा की श्रेष्ठता शब्दो के उचित चयन पर ही निभर करती है। उचित शब्द चयन शब्द-संस्कार, शब्द प्रयोग से भाषा का सौदय द्विगुणित होता है। भाषा द्वारा ही भाव एव विचार स्थायित्व पाते है। उत्कृष्ट कोटि के काव्य ग्रथो की भाषा भाव की अनुगामिनी रही है। भाषा का सुसस्कृत प्रौढ एव परिष्कृत रूप ही भारतीय वाङ्मय को शक्ति प्रदान करता है। प्रत्येक युग म भाषा का रूप परिवर्तित होता रहा है। भाषा का निर्माण करने म साहित्यकार का योगदान कम नही होता। भाषा के द्वारा ही भावो की तीव्रता तथा प्रेषणीयता प्राप्त होती है। अत भाषा का निर्दोष होना आवश्यक है। व्याकरण की दृष्टि स भाषा सही हो त्रुटिपूण न हो, अश्लीलत्व दोष स मुक्त हो, यही भाषा काव्य के लिए स्वीकरणीय होती है।

गीत-काव्य की भाषा—

गीत-काव्य का उद्भव विकास तथा उसकी परम्परा पर इससे पूव विचार किया जा चुका है अतएव पुनरावृत्ति न करके क्रमश युगानुरूप गीतो की भाषा का विवरण प्रस्तुत करना ही पर्याप्त होगा। यदि सामवेद की ऋचाओ से गीत काव्य का उद्भव स्वीकार करें तो निश्चय ही उस काव्य की भाषा सस्कृत का श्रेष्ठ स्वरूप लिए परिष्कृत एव परिमार्जित रूप मे व्यक्त हुई है। कालिदास के "मालविकाग्निमित्रम्' की नायिका नृत्य गान प्रतियोगिता म 'चतुष्पदिका' गाती है। उपयुक्त गीत की भाषा प्राकृत या तत्कालीन लोक भाषा है। प्रारम्भ म जन-साधारण तब ही गीत का प्रचलन

था। परन्तु भारतीय साहित्य में गीत काव्य को स्थान देने का श्रेय अपभ्रंश के सिद्ध कवियों को है। उन्होंने अशिक्षित होने पर भी जन साधारण की बोलचाल की भाषा को अपनाया। सिद्ध कवियों की गीतियां चर्यापदों के नाम से प्रसिद्ध हैं। राग रागनियों में बंधे ये चर्या-पद अपभ्रंश की बोलचाल की भाषा में हैं। चूंकि गीत का सीधा सम्बन्ध मानव के हृदय से उसकी रागात्मक वृत्ति से होता है इसलिए गीतों का प्रचलित जन भाषा के रूप में सृजन अधिक सफल होता है।

अपभ्रंश के कवियों से प्रभावित गीतकार भागवतकार क्षेमेन्द्र एवं जयदेव ने इस परम्परा को निभाया और संस्कृत में पद रचना (या गीतकाव्य की रचना) की। भागवतकार ने अपने ग्रन्थ के दशम-स्कन्ध में गोपियों के विरह प्रसंग में गीत काव्य का सृजन किया। श्री क्षेमेन्द्र ने दशावतार चरित' में कृष्णावतार प्रसंग में एक सरस गीत की रचना की जिसमें टेक का प्रयोग भी हुआ। तत्पश्चात् जयदेव का गीत गोविन्द कोमल मधुर शब्दावली एवं संगीतात्मकता के कारण अत्यन्त लोकप्रिय हुआ। इनके पश्चात् संस्कृत की काव्य-माधुरी को लोकभाषा मथिली या हिंदी में प्रवाहित करने का श्रेय विद्यापति को है। संगीत के स्वरों का विद्यापति को पूर्ण ज्ञान था। लोक भाषा मथिली में गीत रचना करने के लिए उन्होंने कोमल एवं मधुर वर्ण योजनापूर्ण भाषा का विधान किया। भाव संगीत एवं भाषा का समन्वय उनके गीतों की लोकप्रियता का प्रमुख कारण है। मथिली गीतों की परम्परा १५वीं शती से लेकर बीसवीं शती तक अखण्ड रूप में प्रवाहित होती रही। मथिली के सरस गीतों का प्रचार व्यापकता के साथ हुआ। बंगाल बिहार उड़ीसा आसाम आदि प्रदेशों में भी मथिली लोकगीतों का स्वर प्रवाहित हुआ। श्री चैतन्य के अनुयायी वृन्दावन में आये तो इन गीतों का प्रचार ब्रज प्रदेश में भी हुआ। हिन्दी के कृष्ण भक्त कवियों के पद ब्रजभाषा में रचे गये। सूर के गीत ब्रजभाषा में सृजित हुए। ब्रजभाषा का लालित्य एवं माधुर्य इन गीतों में स्पष्ट हुआ। स्वर भक्ति-युग के सन्त कवियों ने अशिक्षा उपदेशों की बहुलता साम्प्रदायिक दृष्टिकोण की संकीर्णता का खण्डन करने के कारण जिस भाषा को अपनाया उसमें सरसता सरलता एवं स्वाभाविकता का अभाव था।

कबीर की भाषा को कुछ विद्वानों ने सधुक्कड़ी भाषा कहा है। जन-जागरण का सन्देश निहित होने के कारण इस युग के गीत या पदों में भावों की तीव्रता तो अवश्य थी किन्तु अनेक प्रचलित भाषाओं के शब्दों का मिश्रण भी उसमें हो गया। जन-साधारण तक पहुँचाने के लिए बोलचाल

की भाषा के शब्दों को संत काव्य में स्थान दिया गया। तुलसी ने अवधी भाषा में गीता की रचना की।

रीतिकाल की गीत परम्परा में नये स्त्रोतों का प्रस्फुटन नहीं मिलता है। इस काल में नवीनता के प्रति आकर्षण होने के कारण कवित्त सवैया पद्धति में काव्य रचना हुई। सुन्दरदास, मलूकदास, अक्षरअनन्य ध्रुवदास आदि रीति-काल के कवि हैं। मथिली कृष्ण भक्त और संत कवियों द्वारा गीत की धारा मंद गति से प्रवाहित होती रही।

आधुनिक युग में तो गीत धारा के स्रोत अनेक रूपों में प्रवाहित हुए। गीतों का सृजन नये युग के नये परिवेश में नयी भाषा के साथ हुआ। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने पूर्ववर्ती कवियों के अनुकरण पर ही कवित्त-सवैयों में भक्ति-भावना पूर्ण पदों की रचना की। नवीनता का समावेश इस धारा में नहीं हुआ। छायावादी कवियों की धारा पाश्चात्य प्रभाव को लेकर प्रवहमान हुई। छायावादी गीतकारों का दृष्टिकोण वस्तुपरक न होकर भाव-परक था। परम्परागत राधा-कृष्ण एवं राम सीता का आलम्बन छोड़कर वैयक्तिक भावानुभूतियों का प्रकाशन इस धारा के कवियों ने विशेष रूप से किया। गीतकाव्य के सभी तत्व तो इस धारा के गीतकारों के गीतों में उपलब्ध होते ही हैं साथ ही भाषा का माधुर्य एवं उसकी सरसता के भी दर्शन मिलते हैं। इस युग के कवियों ने खड़ी बोली हिन्दी का परिष्कृत एवं परिमार्जित रूप अपनाया। भाषा के इस वैशिष्ट्य का कारण (जन-साधारण की बोलचाल की भाषा को अधिक सुसंस्कृत रूप में प्रस्तुत करना रहा है। इस युग के गीतकारों के गीतों का भाषागत वैशिष्ट्य नये एवं परिवर्तित दृष्टिकोण का परिचय प्रस्तुत करता है। भाषा का सरल, सहज एवं स्वाभाविक रूप गीतकारों ने स्वीकार किया। भाषा का संस्कार नये आवरण से वेष्टित होकर सम्पन्न हुआ। जन साधारण से सीधा सम्बन्ध स्थापित करने की चेष्टा में प्रत्येक कवि ने अपनी रुचि के शब्दों को अपनाकर भाषा का सरलतम रूप प्रस्तुत करते हुए नया संस्कार किया।

भाषा का कृत्रिम आवरण से आवेष्टित अस्पष्ट एवं आलंकारिक रूप इस युग के कवियों ने नहीं अपनाया। अत्यधिक स्पष्ट सीधी एवं अनलंकृत भाषा में गीतों की रचना करना ही गीतकार का प्रमुख ध्येय रहा। गीतों का आस्वादन उसकी स्पष्ट भाषा के द्वारा ही सम्भव होता है। केवल वर्ग विशेष की उच्च संस्कृत गर्भित भाषा वर्ग विशेष को ही रसास्वादन कराने में समर्थ

होती है। जन-साधारण की भावभूमि से दूर गीतों की रचना करना इस युग के गीतकारो का उद्देश्य नही था।

आगे चलकर समाजपरक मान्यताओ के आधार पर भाषा सम्बन्धी आदर्शों का निरूपण प्रगतिवादी कवियों ने किया। भाव पक्ष को प्रगतिवादी कवियो ने मुख्य माना और भाषा पक्ष को गौण। भाषा को ध्यान म रखकर काव्य-सृजन नही हुआ अपितु भावो एव विचारों को उचित ढग स प्रस्तुत करने के लिए व्यवहृत भाषा का प्रयोग किया गया। प्रगतिवादी कवि किसी भी प्रकार की भाषा के प्रयोग को अवाछनीय नहीं मानते। वस्तुत काव्य का मुख्य उद्देश्य पाठको को रसास्वादन कराना एव उसके अभिप्रेत अर्थ स अवगत कराना तथा गीतो म निहित सदेश एव उद्देश्य पाठकों तक सही रूप म पहुँचाना है। इस रूप म इसकी प्रेषणीयता का आधार सफल सबल तथा सरल भाषा का प्रयोग है। जन-साधारण को अधिक से अधिक प्रभावित कर अभिप्रेत अर्थ स अवगत कराना इस युग क गीतकारों का उद्देश्य रहा। भाषा का सबसे समृद्ध रूप जन-साधारण की बोलिया मे निहित होता है ऐसी इस युग के कवियो की मान्यता थी। युग की परिस्थितिया समस्याओ एव परिवतनो से अधिक से अधिक मात्रा म जन-साधारण को परिचित कराने के लिए सबल जन-बोली की भाषा म काव्य रचना आवश्यक थी। अत इस युग के गीत-काव्य म कोमल एव मधुर शब्दो का सग्रह मात्र नही मिलता अपितु प्रतिक्रिया-स्वरूप कटु एव परुष वर्णों का विधान भी किया गया। साथ ही तत्सम शब्द प्रधान और गम्भीर भाषा के रूप के अतिरिक्त ग्रामीण और साधारण बोलचाल के शब्दो का प्रयोग करके काव्य म आचलिकता को भी सूचित किया गया। *एसी भाषा वातावरण की सजीवता लिए अधिक आवश्यक रूप म आई।* कहा-कही शब्दो की तोड-मरोड तथा व्याकरण के नियमो की अवहेलना एव तत्सम शब्द बहुलता के कारण भाषा अधिक बोझिल बन गई।

इतना तो स्वीकार करना ही पडेगा कि चाहे छायावादी धारा के कवि हो या प्रगतिवादी अथवा प्रयोगवादी धारा के प्रवर्त्तक हों उन्होने पुरानी भाषा को नय युग की भूमिका म अपर्याप्त मानकर नवीन शब्दो का सधान किया। घिस-पिटे अर्थहीन शब्दों के स्थान पर नय अर्थयुक्त शब्दो का स्थान लिया। पुराने शब्दों का नया सस्कार करके भाषा म ताजगी एव स्वस्थता लाने का श्रेय आधुनिक युग क कवियो का ही है। उनकी सूक्ष्म दृष्टि ने सीमित परिधि को स्वीकार नही किया बल्कि नय त्यागरो म भी प्रवेश किया और विशाल क्षेत्र स शब्दों का चयन किया। विश्व का कोई

भी क्षेत्र उनकी दृष्टि से नहीं बच सका। मनोविज्ञान विज्ञान दर्शन, समाज राजनीति ग्राम एवं शहर सभी स्थानों में प्रयुक्त शब्दावली का ग्रहण कर उन्होंने शब्द-कोष को समृद्ध किया। यद्यपि नये प्रयोगों में नये शब्दों के चमत्कार पूर्ण समावेश ने काव्य की भाषा का एक उच्च स्तर स्थापित नहीं किया। अभिनव के आकर्षण में बधे कवियों ने शब्द-कोष को समृद्ध किया। 'हिन्दी, अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं के शब्दों की खिचड़ी ने उसे काव्यत्व से रहित करके ही सम्मुख आने दिया है।"[1]

नवीन गीतकारों की भाषा भी सरलता, स्पष्टता तथा सीधेपन का आकर्षण लिए हुए ही अपने दर्शन देती है। × × × जनपदीय और ग्रामीण शब्दों का बहुधा ही उत्पन्न हो जाने वाला सौंदर्य इनकी भाषा की भी विशेषता है। व्याकरण सम्बन्धी अनेकानेक दोष भी इनकी भाषा में प्राप्त होते हैं जिसका प्रधान कारण संगीत तथा तुक संगति के लिए की गई शब्दों की तोड़ मरोड़ है परन्तु इस प्रवृत्ति के सूचक कुछ कवि विशेष ही हैं सारे गीतकार नहीं। कुल मिलाकर नई गीत कविता की भाषा आकर्षक और ग्राह्य है × × × इस युग की भाषा काव्य सौंदर्य और काव्योत्कर्ष की दृष्टि से भले ही पूर्वयुगीन भाषा से श्रेष्ठ न हो परन्तु जहाँ तक उसके फैलाव, प्रसार और समृद्धि का प्रश्न है वह किसी प्रकार भी कम नहीं कही जा सकती।'[2]

स्वतन्त्रता के पश्चात् सृजित राष्ट्रीय भावना युक्त गीतों की भाषा ओजपूर्ण है। जिसमें परुष-वर्ण योजना की प्रधानता है। केवल कोमलता इन गीतों का उद्देश्य नहीं।

वर्ण-योजना—

भारतीय आचार्यों ने मुख्य रूप से निम्नांकित तीन गुणों को मान्यता दी है—माधुर्य ओज और प्रसाद। भरतमुनि ने काव्यार्थ के दस गुण माने हैं, किन्तु प्रमुख रूप से तीन ही गुण माने गये हैं।

आदर्श वर्ण-योजना के मानदण्ड—

काव्य रचना में वर्ण-योजना का बड़ा महत्व होता है। शास्त्रीय दृष्टि से अभिव्यंजना के इस तत्व का अन्तर्भाव वृत्तियों अनुप्रास तथा वर्ण वक्रता में हो जाता है। इन्हीं तीनों प्रसंगों का विवेचन करते समय अनेक

१ नया हिन्दी काव्य डॉ० शिवकुमार मिश्र पृ, ३५७
२ वही पृ ३५८

आचार्यों ने वर्ण योजना में गुण-दोषों का निर्देश किया है तथा काव्य में आदर्श वर्ण योजना के कुछ मापदण्ड बनाये हैं। आचार्य कुन्तक ने वर्ण विन्यास-वक्रता के प्रसग में वर्ण-योजना सम्बन्धी जो मानदण्ड निर्धारित किए हैं वे इस प्रकार है — वर्ण योजना सदा प्रस्तुत विषय के अनुकूल होनी चाहिए। उसका प्रयोग केवल वर्ण-साम्य के व्यसन मात्र के कारण होना चाहिए क्योंकि औचित्य के अभाव में प्रतिपाद्य का रूप विकृत हो जाता है। वर्ण योजना में आग्रह की अति नहीं होना चाहिए और न उसमें असुन्दर वर्णों का प्रयोग होना चाहिए। प्रसाद गुण की रक्षा वर्ण-योजना का प्रथम उद्देश्य होना चाहिए। श्रुति पेशलता तथा प्रतिपाद्य की अनुकूलता वर्ण योजना के सब प्रमुख गुण हैं। [१]

१ माधुर्य गुण—

पदों की मधुरता जब विदग्धता या विचित्रता का आभास देती हुई रचना को *सौन्दर्य तथा कामनता प्रदान कर आनन्द का उद्रेक करती है* तब उसे माधुर्य गुण कहते हैं।[२] माधुर्य गुण के अभिव्यजक में विश्वनाथ ने जो वर्ण लिए हैं उनमें ट ठ ड ढ को छोड़कर क से म तक के समी वर्ण आ जाते हैं जो अपने अपने वर्ग के अन्त्य वर्ग से मिलकर श्रुति मधुर ध्वनि की सृष्टि किया करते हैं। इनके अतिरिक्त अन्य वर्ण से असयुक्त रेफ और ण कार भी सम्मिलित है। ये वर्ण वैदर्भी रीति के निमित्त है अत असमस्त या अल्प समासवती रचना तथा मधुर पद योजना के भी निमित्त [३] माने जा सकते हैं। माधुर्य वह गुण है जिसके द्वारा अन्तकरण आनन्द से द्रवीभूत हो जाये। इस गुण के उत्कर्ष में ट ठ ड ढ को छोड़कर क से म' तक के वर्ण ङ म ण न म से युक्त वर्ण ह्रस्व र और ण आदि का प्रयोग अधिक होता है। समास का प्राय अभाव होता है अथवा अल्प समास के पद तथा कोमल और मधुर शब्दावली का व्यवहार किया जाता है।[४] इन सबसे माधुर्य गुण के उत्कर्ष में सहायता मिलती है। कटु वर्णों का प्रयोग बहुत ही विरल होता है। क वर्ग च वर्ग त वर्ग और प' वर्ग तथा पचमाक्षरों की आवृत्ति ही अधिकतर की जाती है।

---

१ ब्रजभाषा के कृष्ण भक्ति-काव्य में अभिव्यजना शिल्प डा० सावित्री सिन्हा पृ ११५

२ साहित्यशास्त्र के सिद्धान्त सरोजिनी मिश्रा पृ ६३०

साहित्य-दर्पण विश्वनाथ पृ ८०१

४ तुलसीदास की भाषा डा० देवकीनन्दन पृ २६६

२ प्रसाद गुण—

प्रसाद गुण के सम्बन्ध में मम्मट ने लिखा है— प्रसादोऽसौ सर्वत्र विहित स्थिति' अर्थात् प्रसाद गुण सब रसों और रचनाओं में विद्यमान रहता है। सामान्य रूप से प्रसाद गुण रीति का एकमात्र आधार माना गया है। प्रसाद गुण के द्वारा ही काव्य के श्रवणमात्र से उसका अभीष्ट अर्थ हृदयगम हो जाता है। सूखे इंधन में आग जैसे शीघ्र जल उठती है, वैसे ही जो गुण चित्त में शीघ्र व्याप्त हो जाता है अर्थात् रचना का उद्बोध करा देता है वह प्रसाद गुण है। श्रवणमात्र से अर्थ की प्रतीति कराने वाले सरल और सुबोध शब्द प्रसाद गुण के व्यंजक हैं।[2] सरल समास रहित ऋजु पदावली इस शैली की विशेषता होती है। इसमें न तो मधुरावृत्ति की मसृणता होती है और न परुषावृत्ति की कटुता। भाव और अभिव्यंजना की स्वाभाविकता तथा अकृत्रिमता इस वृत्ति का प्रधान गुण है। सरल सुबोध और अति प्रचलित शब्दों का प्रयोग इनका ध्येय होता है।[3]

३ ओज गुण—

ओज गुण चित्त को स्फूर्ति प्रदान करनेवाला होता है। ओज गुण वह गुण है जिसमें चित्त में स्फूर्ति आ जाय और मन में एक तेजस्विता का भाव भर जाय।[4] भाषा की योजना की दृष्टि से इसके उत्कर्ष के लिए द्वित्व वर्णों संयुक्त वर्णों और ट, ठ, ड, ढ आदि वर्णों का अधिक प्रयोग तथा समासाधिक्य आदि सहायक होते हैं।

इस प्रकार माधुर्य, प्रसाद एवं ओज गुणों के आधार पर सुकुमार कोमल एवं परुष वर्ण की योजना की जाती है। सामान्यतः गीत के लिए सुकुमार वर्ण योजना (माधुर्य गुण पूरित) का विधान किया गया है। माधुर्य गुण के कारण ही जयदेव एवं विद्यापति के गीत इतने लोकप्रिय हुए। प्रसाद गुण तो काव्य में सर्वत्र पाया जाता है। सुकुमार एवं कोमल वर्ण योजना गाने के लिए उपयुक्त है किन्तु राष्ट्रीय भावनापूर्ण गीतों में बलिदान की प्रेरणा देने वाले युद्ध सम्बन्धी प्रयाण-गीत आदि में ओजगुण तथा परुषवर्ण की प्रधानता होती है। गीता में माधुर्य अवश्य नहीं रहता किन्तु

१ साहित्य शास्त्र के सिद्धान्त पृ ६३९

२ काव्य-दर्पण पृ ३१४

३ ब्रजभाषा के कृष्णभक्ति-काव्य में अभिव्यंजना शिल्प पृ ११८

४ काव्य-दर्पण रामदहिन मिश्र पृ ३१३

ऐसे गीतो में ओज विद्यमान रहता है। सुरक्षा के लिए उद्बोधन देने वाले गीतो में जब तक तलवार नहीं होगी गीत प्रेरणास्पद नहीं होंगे। गीत के भाव पर वर्ण-योजना निश्चित की जाती है। भावों की अन्विति के लिए अनुकूल वर्ण-योजना आवश्यक है। भाव-साम्य के आधार पर वर्णों का सामंजस्य भी आवश्यक है। एकता के लिए संगठन की आवाज ओजपूर्ण गीतो की रचना मे सहयोग देती है। वीरभाव की अभिव्यक्ति के लिए प्रसाद *गुण एवं ओज गुण दोनों का होना आवश्यक है।*

युद्ध-सम्बन्धी गीतों में परुषवर्ण योजना उपलब्ध होती है तो राष्ट्र निर्माण एवं विजय सम्बन्धी गीतो मे प्रसाद एवं माधुर्य गुण के कारण सुकुमार वर्ण योजना का विधान भी देखने को मिलता है। अस्तु राष्ट्रीय भावना सम्बन्धी गीतो में तीनों गुण माधुर्य, प्रसाद एवं ओज पाये जाते हैं। युद्ध-काल एवं शांति-काल में इनका वर्ण विधान भावों के अनुरूप किया जाता है। द्वित्व वर्ण योजना या संयुक्त वर्णों की आवृत्ति आधुनिक युग में युद्ध सम्बन्धी गीतो के लिए कोई आवश्यक नही है क्योंकि आधुनिक युग में पूर्व युगों की तरह विभिन्न अस्त्र शस्त्रो को लेकर युद्ध भूमि में वीरता दिखाने का अवसर तो प्राप्त होता नहीं है जहां तलवारें भाले बरछी कृपाण आदि शस्त्रों की झंकार सुनाई दे। शारीरिक वीरता का आधुनिक युद्धों मे उतना महत्त्व नही है जितना बुद्धि चातुर्य एवं हृदय के उत्साह का। महाराणा प्रताप की वीरता की तुलना आधुनिक युग के पैटन-टैंक या सेवर जेट विमान चालक की वीरता से की जाय तो बहुत ही असमानता दृष्टिगोचर होगी। पहले हजारों व्यक्तियों का संहार करने के लिए उनसे अलग अलग युद्ध करना पड़ता था। आधुनिक युग के उन्नत विज्ञान ने नये अस्त्र शस्त्रों का निर्माण करके हजारों क्या लाखो व्यक्तियों का संहार करने के लिए एटम बम आदि बनाये हैं जिनके द्वारा बहुत कम समय में युद्ध भूमि में प्राय बिना ही विनाश किया जा सकता है। युद्ध की वीरता बन्दूकों एवं मशीनगनों की भयानकता की आवाज में घुलमिल गई है। जिनको आधुनिक युद्ध अस्त्रों का प्रयोग आता है एवं उनका संचालन बुद्धि-चातुर्य के द्वारा कर सकते हैं वही वास्तव में वीर सैनिक हैं। शारीरिक *शक्ति का महत्त्व इन युद्धों में नगण्य-सा रह गया है। यही कारण है कि* ओजपूर्ण गीतों में भी ऐसे स्वरों का संधान नहीं मिलता जिनमें युद्ध के बाजों की ध्वनि सम्मिलित हो तलवारों की झनक सम्मिलित हो। राष्ट्रीय अभिमान के लिए एकता आवश्यक है और राष्ट्र की प्रगति के लिए निर्माण। इन भावनाओं की अभिव्यक्ति में मारकाट के दृश्य नहीं हैं। दृश्या-

नुरूप भावों का चित्र अंकित करने के लिए गीतकार युद्ध भूमि में नहीं जाता। जागृति चेतना, स्फूर्ति, सक्रियता एवं ललकार के स्वर राष्ट्रीय गीतों में मिलते हैं जिनमें प्रसाद एवं ओज दोनों ही गुणों की अभिव्यक्ति स्पष्ट देखी जा सकती है। वर्ण योजना भी तदनुरूप पाई जाती है।

छंद विधान—

भावमयी भाषा में जो स्वाभाविक गति आती है छंद उसी का बाहरी आकार है, *छन्द भाषा को भावों के अनुकूल बनाकर उसमें एक विशेष* ग्राह्यता उत्पन्न कर देते हैं। 'संसार का काव्य साहित्य एक बड़ी मात्रा में छंदोबद्ध है और वे छन्द संगीत शास्त्र के अनुसार निर्मित हैं। पश्चिम में अब तक कविता का अन्याय सम्बन्ध माना जाता है।[1] छन्द का बंधन स्वीकार करने से विशेषतः छन्दों की रूढ़ि जड़ित परम्परा को काव्य पर आधिपत्य करने देने से कविता की भावाभिव्यंजना में अनेक बार बाधाएँ उपस्थित होती हैं। कभी कभी ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है जब शब्द कविता और स्वर (संगीत) में विरोध उत्पन्न हो जाता है। ऐसी अवस्था में संगीत के नियमों को शिथिल कर देना उचित होगा क्योंकि कविता 'कला' शब्द को जितना महत्व दे सकती है, स्वरों को उतना नहीं। कविता का प्राथमिक आधार शब्द है।[2] परन्तु मन के आवेग का संगीतमय भाषा में व्यक्त करने से जो लालित्य आता है वह छन्दमुक्त काव्य में नहीं। यदि छन्द में रस के अनुकूल गुण हों उचित संतुलन हो तो भाषा अत्यन्त सुंदर तथा चमत्कार पूर्ण हो जाती है। रागों या वर्ण स्वरूप मनोवृत्तियों की सृष्टि के साथ उचित सामंजस्य स्थापित करके कविता मानव-जीवन से व्यापकत्व की अनुभूति उत्पन्न करने का प्रयास करती है। यदि छंद के अनुरूप काव्य में स्वरों का आरोह-अवरोह न हुआ तो नाद सौन्दर्य में कमी आ जायगी।

कवि की लेखनी में ही वह शक्ति है कि मानव के अंतःकरण में विद्यमान रागात्मक अंश की सृष्टि के तट पर ले जाकर विभिन्न वस्तुओं का सौन्दर्य-दर्शन कराये और झरनों का कल कल नाद पत्तों की मर्मरध्वनि पवन के संगीत से अवगत कराये। शब्दों का उचित संगठन ही छन्द है जिसमें लय गति तुक आदि के कारण मनोहरता और मधुरता बढ़ जाती है। नाद युक्त छंद में ही वह क्षमता होती है कि मानव मात्र के हृदय में आनन्द का

१ साहित्यालोचन श्यामसुन्दरदास पृ ७६
२ वही ७७

उद्रेक होता है। 'कविता हमारे प्राणो का सगीत है छन्द हृत्स्पन्दन। कविता का स्वभाव ही छन्द म लयमान होना है।'[1] छन्द विहीन कविता की कल्पना भारतीय तो क्या पाश्चात्य देशो म भी नहीं की जा सकती उसी प्रकार लय विहीन छन्द की कल्पना भी नही की जा सकती। आधुनिक युग की नई पीढी यद्यपि अतुकात छन्द (Blank Verse) की ओर तीव्र गति स बढ रही है और अन्त्यानुप्रास तथा अतिनियमबद्धता स मुक्त स्वच्छन्द छन्द की रचना म सलग्न है तथापि गीतो म वर्णिक तथा मात्रिक दोनो ही प्रकार के छन्दो का प्रयोग यति गति लय से युक्त परम्पराबध्द रूप म हुआ है। गीतो म तुकबन्दी होती है। गीत चू कि गेय होते है सगीत का विधान होने के कारण मुक्त-छन्द म इसकी रचना नही की जाती है। टेक और उसकी पुनरावृत्ति कई गीतो म परम्परावद्ध नही है। गीत की टेक चरणो स कम मात्रा की होती थी। किन्तु आधुनिक युग म प्रथम दो चरण दीर्घ और चार चरण लघु या प्रथम दो चरणदीर्घ व अन्य दो या चार चरण लघु भी मिलते हैं। अतिम चरणो की प्रथम चरण स तुक लय यति गति भी मिलती हुई देखी जा सकती है। इस प्रकार राष्ट्रीय भावना पूर्ण गीत भी परम्परागत छन्द स अशत परिवर्तित रूप म सृजित हुए हैं।

उदात्त तत्व और राष्ट्रीय भावना—

उदात्त तत्त्व के सम्बन्ध म सामान्यत गम्भीरता महिमा प्रभविष्णुता आदि की कल्पना की जाती है। उदात्त तत्व प्रिय और आकर्षक होने की अपेक्षा भय विस्मय श्रद्धा आदि का कारण समझा जाता है। उदात्त अपनी महानता के कारण हम अपन स भिन्न जान पडता है। इस भेद म कारण ही वह भय उत्पन्न करता है जो उदात्त के प्रति हमारी श्रद्धा का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। उदात्त से अभिप्राय अग्रेजी के सब्लाइम (Sublime) स है। उदात्त के सम्बन्ध म लोजाइनस का मत यह है कि जहाँ तक विषय वस्तु का सबध है वह अनन्त विस्तार वाली हो तथा उसम असाधारण शक्ति वेग अलौकिक ऐश्वर्य तथा उत्कर्ष प्रभावक्षमता हो और उसके लिए उन्होंने प्रतिभा तथा महान कवियो के ग्रन्थो का अनुशीलन आवश्यक माना है।

१ मन्द गिर सुन्दरम् डा० रामानन्द तिवारी भाग २ पृ १०२०

शब्दकोष के अनुसार उदात्त (Sublime) का अर्थ है—ऊँचा उन्नत ऊपर उठा हुआ महान आदि।[1] विभिन्न विद्वानों द्वारा दिए गये उदात्त के निम्नलिखित अर्थ उपलब्ध होते है—

काण्ट के अनुसार—अद्वितीय महानता[2]

हीगल के अनुसार—अध्यात्म तत्त्व (Transcedent)

जाज सान्तायन के अनुसार निर्वेद की कल्पनात्मक अनुभूति। यह ठीक है कि उदात्त की अनुभूति त्रास या आतंक (Terror) में होती है किन्तु स्वयं त्रास या आतंक उदात्त नहीं है।[3] बर्क के अनुसार—करुणामिश्रित भय की भावना उद्दीप्त करनेवाली घटना उदात्त है। ब्रैडले शक्ति की अभिव्यंजना में उदात्त की स्थिति मानते हैं। लौंजाइनस के अनुसार[4] औदात्य = आत्मा की महानता—विचारों की महानता—भाषा की महानता।

उदात्त गम्भीर और महान होता है। वह अपनी महत्ता के कारण हमें प्रभावित ही नहीं करता, वरन् एक प्रकार से अपनी महत्ता की तुलना में हमारी तुच्छता का उद्घाटित करता है इस प्रकार उदात्त शब्द के अर्थ एवं तत्त्व द्वारा हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि उदात्त के लिए गम्भीरता अनन्तता, विशालता असाधारणशक्ति वेग अलौकिक ऐश्वर्य उत्कट प्रभाव क्षमता अद्वितीय महानता आदि आवश्यक गुण है तथा इनका भय श्रद्धा, प्रीति तथा विस्मय आदि भावों से सम्बन्ध है।

राष्ट्रीय भावना चूँकि देश के प्रति श्रद्धा के भावों से प्रेरित होती है, इसमें राष्ट्र की सम्पत्ति प्रकृति एवं संस्कृति के प्रति गौरव के भाव उत्पन्न होते हैं। अतएव श्रद्धा एवं प्रीति के भाव उदात्त की पृष्ठभूमि पर आधारित होते हैं। इसलिए राष्ट्र के प्रति प्रीति श्रद्धा एवं गौरव की भावना उदात्त पूर्ण होती है। उदात्त की गम्भीरता एवं महानता राष्ट्रीय भावना पूर्ण गीतों में स्पष्ट रूप से अंकित हुई है। जब 'व्यष्टि' के लाभ से अधिक बड़ा समष्टिगत लाभ समझा जाता है व्यष्टि की अपेक्षा समष्टि के हित को ऊँचा माना जाता है तब भावों की महानता की

---

१ आक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी

२ Critic of Judgement Page 86 88

३ Sense of Beauty George Santayna Page 178 180

४ साहित्य विज्ञान डॉ० गणपति चन्द्र गुप्त पृ ५२

उपेक्षा नही की जा सकती। राष्ट्रीय मावना चू कि समष्टि' के कल्याण निमाण प्रगति एव समद्धि क व्यापक दृष्टिकोण को लिए हुए मानवतावाद की सम थक होती है अत उसकी विशालता गम्भीरता एव महानता उदात्त का पोषक है। व्यक्तिगत स्वार्थों की उपेक्षा करके व्यक्ति समाज स भी अधिक व्यापक विशाल राष्ट्र के स्वार्थ की पूर्ति करता है। राष्ट्र के लिए प्राणोत्सग करने म भी सकोच नही करता है। दुश्मनो को मार मगाने के लिए सीमा की रक्षा के लिए हसते हसते बलिवेदी पर चढ़ जाता है। ऐसा आत्मा की उच्चता या उदात्त मावना के कारण सभव होता है। अतएव राष्ट्रीय भावना उदात्त की उच्च मावभूमि पर प्रतिष्ठित हुई है।

१२ | उपसंहार

प्रस्तुत निबंध की रचना करते समय तीन विशिष्ट बिन्दुओं का आधार ग्रहण किया गया—

(१) समय (२) साहित्य की विभिन्न विधाओं में गीत काव्य, (३) गीत-काव्य के सन्दर्भ में व्यक्त भावनाओं का व्यापक स्वरूप।

प्रस्तुत विषय स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् हिन्दी में लिखे गये गीत काव्य के अध्ययन तक सीमित था। सन् १९४७ में स्वतन्त्रता प्राप्ति से अब तक लगभग बीस वर्षों में हिन्दी में गीत-काव्यों का जिस रूप में प्रणयन किया गया तथा विकास के सन्दर्भ में शैली एवं शिल्पगत जो नवीन दिशा बिन्दु उपलब्ध हुए उन्हीं का अध्ययन इसका आधार बनाया गया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हुई विविध रूपों प्रगति का प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा फलतः हिन्दी में विभिन्न विधाओं का जन्म हुआ। सृजन के क्षेत्र में नये-नये प्रयोग किये गये। गद्य की ही भाँति हिन्दी-काव्य ने भी विकास के अनेक नये आयाम प्राप्त कर नये सृजन के बहुरंगी स्वप्न देखे हैं। इसमें भी गीत-काव्य में हुई प्रगति विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिसने मुझे प्रभावित किया। यही कारण है कि प्रस्तुत शोध निबन्ध का विषय सम्पूर्ण हिन्दी काव्य न बनाकर उसकी विधा विशेष अर्थात् गीत-काव्य की प्रगति और प्रणयन को बनाया गया है।

स्वाधीनता के पश्चात् भारतीय वाङ्मय में भिन्न भिन्न भावनाओं का स्वरूप विभिन्न रूपों में चित्रित किया गया। भावों की अभिव्यक्ति गीत काव्य में जिन रूपों में सम्भव हुई, उनके सम्यक अध्ययन से गीत-काव्य के रूप और शिल्प विधान का क्रमिक विकास स्पष्ट होता है परन्तु प्रस्तुत अध्ययन में गीत काव्य की समस्त दिशाओं को समेट लेना न तो सम्भव ही था और न ही वह मुझे अभिप्रेत था। अतः मैंने विषय का अध्ययन गीत-काव्य में राष्ट्रीय भावनाओं के अनुशीलन तक ही सीमित रखा।

उपरोक्त तीनो दृष्टि बिन्दुओ म आबद्ध विवचन विस्तार की अपेक्षा गम्भीरता ही अधिक चाहता था। विषय की इस अन्तर्दृष्टि की आवश्यकता को अनुभव कर विषय प्रवश के अन्तगत गीत-काव्य का सक्षिप्त परिचयात्मक रूप प्रस्तुत किया गया है।

प्रथम अध्याय म राष्ट्र का अथ, राष्ट्रीय भावना की परिभाषा तत्त्व सीमा उसका उद्भव विकास और परम्परा पर विचार किया गया। इसके अतिरिक्त स्वतन्त्रता से पूव समस्त हिन्दी काव्य म राष्ट्रीय भावना की स्थिति का भी सिंहावलोकन करने का प्रयास किया है। परिणामस्वरूप स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् हिन्दी गीत काव्य म राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति के अनुशीलन एव विवचन के लिए पृष्ठ भूमि एव अध्ययन दृष्टि प्राप्त हो सकी है।

राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति केवल आधुनिक युग मे ही हुई हो एसा बात नही है। वास्तव म इसकी अवस्थिति प्रारम्भ से ही किसी न किसी रूप म देखी जा सकता है। जहा तक राष्ट्रीयता के भावनात्मक आधार का प्रश्न है वह हम सवत्र एक ही रूप म मिलता है। यह दूसरी बात है कि युगानुरूप राष्ट्रीयता क रूप बदलते रहे हैं। कहन का अथ यही है कि राष्ट्रीयता के सदम म राष्ट्र हित अथवा राष्ट्र समृद्धि की कामना प्रत्यक युग और प्रत्यक दश म समान रही है। हा समयानुसार राष्ट्र हित अथवा राष्ट्र समृद्धि क लिए किय जाने वाल प्रयत्नो का रूप बदला है। य प्रयत्न कई रूपो म होते हैं— भावनात्मक एकता जातिगत एकता और धार्मिक एकता म वह शक्ति निहित है जो विदेशी शासको के अन्याय स बचाकर राष्ट्र की समृद्धि और उसक हितो को स्वतन्त्र बनाय रख सकती है। यही राष्ट्रीय भावना का मूल रूप है। स्वतन्त्रता क पश्चात् राष्ट्र का प्रगति के प्रयत्न होन लग हैं। एसी स्थिति में राष्ट्रीयता अपने राष्ट्र की सुरक्षा एव समृद्धि क लिए किय जान वाल शान्ति पूर्ण प्रयासो मे निहित होती है। कहना न होगा कि इस अन्त राष्ट्रीय स्तर पर व्यवहृत करन क लिए राष्ट्रीय भावना की सकीर्ण परिधि स बाहर निकालना होगा। भारत सदव हा मानवता का उपासक रहा है। आज भी वह उसी उदात्त भावभूमि पर प्रतिष्ठित मानवतावादी राष्ट्रीय भावना क पक्ष म है।

हमारा विरोध अग्रजो स नही वरन् उनकी शासन-नीति स था। भारतीय अपने ही देश म दास बनकर कायरता पूवक अमानुषिक अन्यायो को सहन करते रहें यह कदापि सम्भव नही था और न ही इस मानवतावादी दृष्टि स उचित

कहा जा सकता है। हमारा विरोध बुराइयों से था दूर लोगों से नहीं। यही कारण है कि भारत में जब जब भी विदेशी शक्तियों ने प्रवेश किया वे घुल मिलकर सब भारतीयता के रंग में रंग गए। विरोध जाति विशेष से नहीं उनकी दमन नीति से होता है। भारत भी इसी आधार पर स्वतन्त्रता पाने को व्याकुल था। भारतीय संगठित हुए और भारत को स्वतन्त्र कराने के प्रयास किए जाने लगे। अन्तत भारत स्वतन्त्र होकर ही रहा।

भारत विश्व के प्राचीनतम राष्ट्रों में से एक है। उसकी विशालता और अनन्तता वर्षों पुरानी है। भूमि एवं निवासियों के बिना राष्ट्र की कल्पना ही सम्भव नहीं होती। अत राष्ट्र के महत्वपूर्ण उपकरण हैं—भूमि भूमिवासी-जन और जन संस्कृति इस दृष्टि से राष्ट्र है भारतवर्ष भूमि है भारत की और भूमिवासी हैं भारतीय। यहाँ की सभ्यता और संस्कृति कोई छिपी हुई वस्तु नहीं है। इसकी शस्य श्यामला भूमि जब-जब बाह्य आक्रमणकारियों से पदाक्रान्त हुई आर्त्त स्वर में भारत भूमि ने अपनी रक्षा के लिए राष्ट्रवासियों का आह्वान किया।

भारतीय सपूतों से मातृभूमि भारत का रुदन एवं करुण क्रन्दन देखा न गया। वे माँ की लाज बचाने हेतु संगठित हो दौड़ पड़े और विदेशियों से, अन्यायियों से आततायियों से जी खोलकर लोहा लिया। वीर भारतीयों ने राष्ट्रीय संकट का निराकरण करने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाने में तनिक भी संकोच नहीं किया। सम्भरण-काल में भारतीयों का संगठन ओज-पूर्ण उत्साह सजगता चेतनता शीलता तथा जागृति सचमुच प्रशंसा के योग्य थी जिसके मूल में राष्ट्र के प्रति गहरी निष्ठा का दृढ़ भावनात्मक आधार था जिसे प्रदर्शन की तनिक भी अपेक्षा नहीं थी। कहना न होगा कि इस निष्ठा के पीछे सच्चा उत्साह आत्मबल विश्वास, एवं राष्ट्र को स्वाधीन बनाये रखने का सुनहला स्वप्न पूर्ण हो गया तो जैसे स्वातन्त्र्य युद्ध की समाप्ति ही हो गई। स्वातन्त्र्य युद्ध में निहित जागृति की चिनगारी मानो बुझ ही गई। ऐसी स्थिति में राष्ट्रीय भावनाओं की तीव्रता में शिथिलता आ जाना स्वाभाविक हो होता है। इस रूप में स्वातन्त्र्य युद्ध के उपरान्त उस निष्ठा का उद्देश्य एवं अभिप्राय लुप्त हो गए अथवा वो उन्हें विस्मृत कर दिए गये।

स्वातन्त्र्य-युद्ध की उपरान्त पृष्ठभूमि की व्यापकता सीमित बनकर रह गई। फलत स्वाधीनता का रूप भी संकीर्ण आधार पर ग्रहण किया जाने लगा। अर्थात् अंग्रेजों से आजादी एवं उनके अन्यायों से मुक्ति प्राप्त

करना। देश की विच्छिन्न भाव धारा को संगठित करने के प्रयास हुए पर राष्ट्रीयता के इस सक्रमण अवस्था में आशानुकूल सफलता प्राप्त न हो सकी। जिस क्षिप्रगति से क्रांति की लहर उठी थी स्वाधीनता के पश्चात् वह उतनी ही शीघ्र शान्त व गम्भीर हो गई। उसके सन्दर्भ में अनेक प्रगति बिन्दु उपलब्ध न किये जा सके। अस्पृश्यता निवारण साम्प्रदायिकता की समाप्ति जाति-गत भेदभाव का निराकरण आर्थिक समानता शिक्षा प्रचार आदि स्वाधीनता के अन्तर्गत राष्ट्रीय भावना की प्रगति के अगले सोपान थे। इन सोपानों को पार किये बिना राष्ट्र की प्रगति राष्ट्र की सुरक्षा यहा तक कि स्वतन्त्र एवं समृद्ध राष्ट्र की कल्पना भी नही की जा सकती थी।

स्वाधीनता प्राप्त कर लेने के पश्चात् राष्ट्र की प्रगति एवं समृद्धि के क्रम को बनाये रखने के लिए आवश्यकता थी नव निर्माण की नये मूल्यो की। परन्तु जिन मूल्यो की स्थापना होनी चाहिये वह सम्भव नही हो सकी क्योंकि वे नये चेतनाशील मूल्य स्वाधीनता के लिए युद्ध करने के पश्चात् व्याप्त शिथिलता के कारण विस्मृति के गहन तिमिर में खो गये। कारण स्पष्ट है—क्रान्ति के लिए स्फुरित चेतना और नवीन मूल्यो के प्रति आसक्ति तात्कालिक थी। अर्थात् उसका उद्देश्य केवल स्वाधीनता प्राप्त कर लेना ही था। परन्तु स्वाधीनता क्या मात्र देश की ही अथवा राजनीतिक दृष्टि से ही प्राप्त कर लेना था? वस्तुत इस प्रश्न पर व्यापक दृष्टि से उस समय विचार नही किया गया। सच बात तो यह है कि राजनीतिक दृष्टि से स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने के उपरान्त भी उस शक्ति का नव निर्माण के लिए नई व्यवस्था के लिए भी उतनी ही तीव्रता एवं निष्ठा के साथ प्रयोग किया जाना चाहिए था। किन्तु दुर्भाग्यवश ऊंच पद के प्रलोभन सत्ताधिकारियों के लिए प्रमुख हो गये। स्वार्थ का समावेश होते ही देश की दुर्दशा का चित्र पूर्ववत बना रहा। उसमें परिवर्तन न लाया जा सका। भारतीयों की शोचनीय स्थिति में जो परिवर्तन होना चाहिये था वह न हो सका।

यद्यपि आज स्वतन्त्र भारत में निर्माण प्रयत्न हो रहा है परिवर्तन भी हो रहा है नवीन मूल्यो का स्फुरण भी हो रहा है किन्तु केवल सुविधा प्राप्त वर्गों में ही। सर्व-साधारण की निरन्तर उपेक्षा की जा रही है। इस उपेक्षा के प्रति यदि शीघ्र ही समुचित ध्यान न दिया गया तो देश पुन अन्धकारमय हो उठेगा और नवीन चेतना मूल्यो का स्वर्णिम प्रकाश पुन

अंधकूप म दब जायेगा। अत हमे सकट से मुक्ति पाने के लिए आवश्यकता है नव निर्माण की प्रतिमा का स्वागत करने की, पक्षपात रहित न्याय की, रिश्वत की प्रथा को बन्द करने की, जातिवाद के खण्डन की, वग विभेद के निराकरण की और सदव राष्ट्र की सुरक्षा के लिए निष्ठापूवक सभी स्वार्थों स ऊपर उठकर सजग रहने की। प्राय जब सकट आता है तभी राष्ट्र सुरक्षा प्रहरी सजग होत हैं। एसे समय म गीतकार का भी कुछ कत्त य हो जाता है। वह जागृति के सुरक्षा के गीता द्वारा जागरण का आह्वान करता है। युद्ध एव शक्ति सचयन की आवश्यकता का भी ध्यान आता है। सच तो यह है कि राष्ट्र चाहे सकट मे हो या न हो सुरक्षित रहे। सीमा पर तनात प्रहरी सजग एव सक्रिय रहें। स य-व्यवस्था समुचित एव सुचारु रूप से सक्रिय बनी रहे। प्रणय-गीतों के साथ-साथ साहित्यिक क्षेत्र म राष्ट्रीय भावना स ओत-प्रोत गीता की रचना भी आवश्यक है। सदव राष्ट्र सवा म तत्पर सजग चेतन एव सक्रिय होकर ही हम राष्ट्र का रक्षा करने म समथ होगे। राष्ट्र की प्रगति सही अर्थों मे तभी सम्भव होगी जब नये मूल्यो को स्थापित कर प्रत्येक नागरिक की उन्नति का आर्थिक-विकास का समुचित ध्यान रखा जाए। प्रत्येक राष्ट्रवासी का सच्च हृदय से यही नारा होना चाहिये—राष्ट्र अपराजेय है, राष्ट्रीयता सर्वोपरि है जिसकी सुरक्षा के लिए बडे से बडे स्वार्थों का भी त्याग किया जा सकता है। यदि राष्ट्रवासी इस भावना के मूल म निहित निष्ठा की तीव्रता को सम्यक रूप म ग्रहण करें तो राष्ट्रीयता की असुरक्षा का प्रश्न ही नही उठ सकेगा और न ही राष्ट्रीयता की विभिन्न परिभाषाओं और आदर्शों की दुहाई देना ही आवश्यक होगा।

गीत काव्य हिन्दी का य की एक सशक्त विधा है। वीरगाथा काल से अब तक हिन्दी के सभी महान् कवियो ने इसे अपने भावा की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है। भक्ति शृगार आदि वयक्तिक भावनाओ की अभिव्यक्ति क लिए ही नहा वल्कि सांस्कृतिक और राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्ति क लिए भी यह विधा एक सशक्त माध्यम रही है। स्वाधीनता से पूव राष्ट्रीय भावनाओ की अभिव्यक्ति के लिए हिन्दी-कवियो ने गीत काव्य को एक लोकप्रिय विधा के रूप म स्वीकार किया। छायावाद रहस्यवाद और प्रगतिवाद को भी इस विधा का आश्रय लेना पडा था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् जब हिन्दी-काव्य प्रयोगवाद और नई कविता की नई भाव भूमियों पर अग्रसर हुआ तो इसी विधा ने राष्ट्रीय भावनाओं

के माध्यम स सावजनिक जावन का वाणी ने
नवीन दिशाएं प्रदान की।

इस समय देश के सामने निमाण एव
उपस्थित हैं। यह समस्याए दूसरे रूप म रा
समस्याए है, क्योंकि यह भावना विकसित
पू जीपति सर्वोदय भूमि वितरण आदि वि
हत हो जाएगी। गांधीजी का हृदय-परिवत
देश की चेतना की अनुभूति गीतो के मा
हो सकती है।

हमने स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी-गीत-काव्य
रूपो म देखने की चष्टा की तथा पाया
क स्वर क करने
राष्ट्र
किया। २५
यदि उन्ह हिन्दी क
प्रयोगवाद और नई क
सहारा नकर हिन्दी-काव्य
किन्तु हिन्दी गीत-काव्य ने
दिया। देश के लिए प्राण यो
का हिन्दी गीतकारो न विभिन्न
का विषय बनाकर जीवन की
प्रतिष्ठित किया।

हिन्दी गीत-काव्य न र
लिए अपनी विस्तृत परिधि म स्व
रा सम्मिलित प्रयास नव निर्माण क
राष्ट्रीय भावना का नकर हिन्दी गीतकार
अग्रसर हुआ। राष्ट्र निमाण क लिए
जीवन में प्राप्त थी राष्ट्रीय भावना क रूप
प्रतिबिम्ब ही अकित नहीं हुआ वरन् उसमे
की प्रस्फुटित हुआ। हिन्दी गीतकारो न नव नि
का गुणगान भी किया और उसका ही नतृत्व
प्रदान का।

वीरगाथा काल से लेकर आधुनिक काल तक हिन्दी काव्य का विकास एक बहुत विस्तृत सांस्कृतिक परिवेश में हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् प्रयोगवाद, नई कविता एवं अकविता के रूप में विकसित होने वाला हिन्दी काव्य उस सांस्कृतिक गौरव को बनाये न रख सका और उससे दूर—दूर होता चला गया। किन्तु हिन्दी गीत काव्य ने राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति के माध्यम से राष्ट्रीय संस्कृति के गौरव को अक्षुण्ण रखकर देश की भाव-सम्पत्ति को समृद्धि प्रदान की। राष्ट्र की चेतनामयी वाणी को सम्मानित करने के लिए हिन्दी के गीतकारों ने राष्ट्र भाषा के प्रति आत्मीयता और अनुराग प्रकट किया। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बिखरे हुए अपार प्राकृतिक वैभव मन्दिरों, भवनों आदि के रूप में पाई जाने वाली निधि को उन्होंने राष्ट्रीय गौरव का आधार बनाया। स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी गीतों में हम भारतीय जीवन और प्रकृति का कितना अनुराग पूर्ण और उल्लास चित्रण मिलता है, यह हम प्रस्तुत निबंध के प्रकरणों में देख आए हैं। वर्गतिक्तता की सवाएं भाव भूमि से उठकर हिन्दी-गीतकारों की राष्ट्रीय भावना ने स्वाभिमान की अनुभूति को वाणी दी और समाज जनता के प्रति सहानुभूति के भाव जागृत किए। यानी दिया से देश में साम्प्रदायिकता का जो विष फैलता जा रहा था स्वाधीनता-संग्राम के दिनों में हिन्दी कविता ने उसे अमृत बनाने का मनोरथ प्रयत्न किया किन्तु वह सफल नहीं हो सका। हमने देखा कि जिस समय स्वतंत्रता के प्रति जन जीवन में अनुकूल परिस्थितियां पनप रही थी, उसी समय उस विष का कलश अचानक फूटकर राष्ट्र के विशाल अंचल में फैल गया और सम्पूर्ण देश स्वाधीनता के गीत गान-गाते विष दुग्ध हो करुण स्वर में आलताप कर उठा। गांधी जी ने शिव बनकर उस विष का पान किया फिर भी वह विष समाप्त नहीं हो सका। प्रयोगवाद नई कविता और अकविता ने उसकी उपेक्षा करके वर्गतिक्तता के धरातल को मुखर किया किन्तु हिन्दी गीत काव्य ने उस विष पर भी कड़ी आंख रखा और राष्ट्रीय भावना के माध्यम से उसका अन्त करने का सराहनीय प्रयास किया। हम देख चुके हैं कि सशक्त स्वरों में हिन्दी गीतकार साम्प्रदायिकता का विरोध करते हुए सम्पूर्ण राष्ट्र की अखण्डता एवं एकता के भाव जागृत करते रहे। जिन्हें हम गीत काव्य की आधुनिक भारतीय जीवन के लिए अमृतरूपिणी देन मान सकते हैं।

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी गीत-काव्य में राष्ट्रीय भावना की धारा ने पूर्वोक्त प्रवृत्तियों के रूप में प्रवाहित होकर हिन्दी काव्य को जीवन के निकट पहुंचाने का सर्वोपरि महत्वपूर्ण कार्य किया। उसने राष्ट्र और उसकी सुरक्षा के लिए जन हृदय में अद्भुत स्फूर्ति उत्पन्न की। भारतवर्ष के अतिरिक्त —

के माध्यम से सांस्कृतिक जागरण का [illegible] । इन प्रोग्रामों ने हिन्दी और नवीन दिशाएँ प्रदान की।

स्वतंत्र देश के सामने निर्माण एवं समृद्धि की अनेक समस्याएँ उपस्थित हैं। यह समस्याएं दूसरे रूप में राष्ट्रीयता के निर्माण की ही समस्याएं हैं क्योंकि यदि भावना विकसित होती है तो किसान मजदूर पूँजीपति सर्वोदय भूमि वितरण आदि विभिन्न रूप समस्याएँ स्वतः हल हो जाएँगी। गांधीजी का हृदय-परिवर्तन वाला स्वप्न पूरा होगा। देश की चेतना की अनुभूति गीतों के माध्यम से सुगमता से अभिव्यक्त हो सकता है।

हमने स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी-गीत-काव्य में राष्ट्रीय भावना को विभिन्न रूपों में देखने की चेष्टा की तथा पाया कि हिन्दी गीतकारों ने राष्ट्रीयता के स्वर को उदात्तमयता वाणी प्रदान करने में कम योगदान नहीं दिया है। राष्ट्रध्वज की वन्दना करके उन्होंने देश के समष्टि भाव को अभिव्यक्त किया। स्वाधीनता के लिए जिन लोगों ने त्याग और बलिदान किया था यदि उन्हें हिन्दी-काव्य भुला देता तो वह जन-जीवन से दूर हो जाता। प्रयोगवाद और नई कविता ने वैयक्तिक कुण्ठाओं और नये-नये प्रयोगों का सहारा लेकर हिन्दी-काव्य को इस उत्तरदायित्व से वंचित कर दिया था। किन्तु हिन्दी गीत-काव्य ने उसे फिर भी जन-जीवन से असम्बद्ध नहीं होने दिया। देश के लिए प्राण न्यौछावर करने वाले व्यक्तियों और समाजोद्धारकों का हिन्दी गीतकारों ने विभिन्न प्रकार से गुणगान किया और उन्हें काव्य का विषय बनाकर जीवन की उल्लासमयी उन्नत भाव भूमियों पर सहज प्रतिष्ठित किया।

हिन्दी गीत-काव्य ने राष्ट्रीय भावना को राष्ट्रोत्थान की चेतना के लिए अपनी विस्तृत परिधि में स्वीकार किया। देश की जनता और शासन का सम्मिलित प्रयत्न नव निर्माण की जिस दिशा में अग्रसर हो रहा था राष्ट्रीय भावना को लेकर हिन्दी गीतकार भी उसके समानान्तर उसी दिशा में अग्रसर हुआ। राष्ट्र निर्माण के लिए नव चेतना की जो नई लहर भारतीय जीवन में आई थी राष्ट्रीय भावना के रूप में हिन्दी गीत-काव्य में उसका केवल प्रतिबिम्ब ही अंकित नहीं हुआ वरन् उसके साथ नई सम्भावनाओं का प्रकाश भी प्रस्फुटित हुआ। हिन्दी गीतकारों ने नव-निर्माण में रत जन श्रम की महत्ता का गुणगान भी किया और उनका ही नेतृत्व करके नव-निर्माण की प्रेरणा प्रदान की।

वीरगाथा काल से लेकर आधुनिक काल तक हिन्दी काव्य का विकास एक बहुत विस्तृत सांस्कृतिक परिवेश में हुआ। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् प्रयोगवाद, नई कविता एवं अकविता के रूप में विकसित होने वाला हिन्दी काव्य उस सांस्कृतिक गौरव को बनाये न रख सका और उससे दूर—दूर होता चला गया। किन्तु हिन्दी-गीत काव्य ने राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति के माध्यम से राष्ट्रीय संस्कृति के गौरव को अक्षुण्ण रखकर देश की भाव-सम्पत्ति को समृद्धि प्रदान की। राष्ट्र की चेतनामयी वाणी का सम्मानित करने के लिए हिन्दी के गीतकारों ने राष्ट्र भाषा के प्रति आत्मीयता और अनुराग प्रकट किया। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बिखरे हुए अपार प्राकृतिक वैभव मन्दिरों भवनों आदि के रूप में पाई जाने वाली निधि को उसने राष्ट्रीय गौरव का आधार बनाया। स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी गीतों में हम भारतीय जीवन और प्रकृति का कितना अनुराग पूर्ण और उदात्त चित्रण मिलता है यह हम प्रस्तुत निबंध के प्रकरणों में देख आए हैं। वैयक्तिकता की संकीर्ण भाव-भूमि से ऊपर उठकर हिन्दी-गीतकारों की राष्ट्रीय भावना ने देशाभिमान की अनुभूति को वाणी दी और समाज जनता के प्रति सहानुभूति के भाव जागृत किए। शताब्दियों से देश में साम्प्रदायिकता का जो विष फैलता जा रहा था स्वाधीनता-संग्राम के दिनों में हिन्दी कवियों ने उसे अमृत बनाने का भगीरथ प्रयत्न किया किन्तु वह सफल नहीं हो सका। हमने देखा कि जिस समय स्वतन्त्रता के प्रति जन जीवन में अनुकूल परिस्थितियाँ पनप रही थीं उसी समय उस विष का कलश अचानक फूटकर राष्ट्र के विशाल क्षेत्र में फैल गया और सम्पूर्ण देश स्वाधीनता के गीत गाते-गाते विष दग्ध हो करुण स्वर में आर्तनाद कर उठा। गाँधी जी ने शिव बनकर उस विष का पान किया फिर भी वह विष समाप्त नहीं हो सका। प्रयोगवाद नई कविता और अकविता ने उसकी उपेक्षा करके वैयक्तिकता के धरातल पर मुखर किया किन्तु हिन्दी गीत-काव्य ने उस विष पर भी दृष्टि और रखकर और राष्ट्रीय भावना के माध्यम से उसका अन्त करने का सराहनीय प्रयास किया। हम देख चुके हैं कि सशक्त स्वरों में हिन्दी गीतकार साम्प्रदायिकता का विरोध करते हुए सम्पूर्ण राष्ट्र की अखण्डता एवं एकता के भाव जाग्रत करते रहे हैं जिससे हम गीत काव्य को आधुनिक भारतीय जीवन के लिए अमृतदायिनी देन मान सकते हैं।

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी गीत काव्य में राष्ट्रीय भावना की धारा ने पूर्वोक्त प्रवृत्तियों के रूप में प्रवाहित होकर हिन्दी-काव्य को जीवन के निकट पहुँचाने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य किया। उसने राष्ट्र और उसकी सुरक्षा के लिए जन हृदय में अद्भुत स्फूर्ति उत्पन्न की। भारतवर्ष के शताब्दियों से जीवन आन-

वाने शौय-दोपो को नई आभा म आलोकित किया । लोगो म बलिदान के भाव जगाकर सावजनिक जीवन के प्रति व्यक्ति के उत्तरदायित्व का स्पष्ट किया । इतना ही नही हिन्दी गीत-काव्य ने राष्ट्रीय भावना के माध्यम स राष्ट्र-द्व पियो की निन्दा करके असामाजिक तत्वो का बहिष्कार भी किया । अपने अध्ययन म हम देख चुके हैं कि जिस समय भारतवष पर चीन का आक्रमण हुआ उस समय भी हिन्दी-गीत काव्य ने राष्ट्र का साथ नहा छोडा । हिन्दी गीत कारो ने अपने ओजस्वी स्वरो म राष्ट्र रक्षा के लिए उद्बोधन के गीत गाए और अब तक उनकी वाणी राष्ट्रीय भावना के ओजस्वी स्वरो को दसो दिशाओ म गु जित कर रही है । आगे भी पाकिस्तानियो के विरुद्ध आवाज उठाकर बलिदान की प्रेरणा देने म गीत काव्य का सहयोग उतना ही रहा । समय समय पर सामयिक आवेग की अभिव्यञ्जना होती रही है और होता रहेगी । सकट दूर होने पर राष्ट्र निर्माण के गीत गू जते हैं और गू जते रहेगे ।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् रचित हिन्दी गीत काव्य की सवाधिक सशक्त प्रवृत्ति राष्ट्रीय भावना है । इसी प्रवृत्ति ने हिन्दी-काव्य को नवीन युग बोध एव समृद्ध चेतना मूल्य प्रदान किए हैं । साथ ही जीवन के साथ माने जाने वाले उसके सहज सम्बन्धो को भी अभिव्यक्त किया है । यदि यह सत्य है कि साहित्य जीवन का प्रतिबिम्ब होता है तो हम निर्विवाद रूप से यह स्वीकार करना पडेगा कि गीतकारो ने स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी गीत-काव्य में राष्ट्रीय भावना की विशद अभिव्यक्ति करके इस कथन की पुष्टि ही की है । आज हिन्दी काव्य म नई कविता के सन्दभ म नये नये प्रयोगो का स्वर मुखर होता जा रहा है । वस्तुत यह तयारी का युग है । हर प्रकार से प्रयोगवादी कवि प्रयोगों के द्वारा देश को सच्ची राष्ट्रीयता के लिए समुचित भूमियाँ तयार कर रहे हैं । अकविता ठोस कविता सचेतन कविता एव दिक कविता आदि मे समाज के निम्न स्तर के विविधरूपा चित्र चित्रित किये जाते हैं जिससे समाज क गलित दलित जगत की विवशता विषमता एव घुटन का सही परिचय जन सामान्य का होता है । जीवन के इन कटु रूपो की सत्य अभि व्यक्ति क द्वारा निम्न वग की ओर सकेत करके कवि समाजोद्धारको का ध्यान इस ओर आकर्षित करने का प्रयास करता है जिससे उनका भी उद्धार किया जा सके और उन्हे भी स्वस्थ बनाकर अपनाया जा सके । यद्यपि वयक्तिक कुण्ठाओ की अभिव्यक्ति के स्वर भी आधुनिक काव्य मे अत्यधिक मात्रा म मिलते हैं किन्तु राष्ट्र के प्रति भी कवि की जागरूकता कम नही है ।

राष्ट्रीय भावनायुक्त गीता का काय राष्ट्रीय चेतना को प्रबुद्ध करना उसकी सात्विक गति म त्वरा (Rapidity) उत्पन्न करना तथा सम्पूर्ण समाज व युगीन मूल्या का समाहार करना है। वस्तुत राष्ट्रीय भावनायुक्त गीता म आवश्यकता इस बात की है कि इसका आधार विशुद्ध मानवीय हो जो वग, जाति धम आदि से परे कमवाद एव मानवता का सन्देश देता हुआ कल्याणकारी माग प्रशस्त कर। राष्ट्रीय भावनायुक्त गीत प्रेम सौहार्द्र एव भ्रातृत्व के तानो बाना म विश्व-जनीनता को प्राप्त करन म समय होन चाहिये। यहा इतना ध्यान रखना आवश्यक है कि सभी प्रकार की छाया ग्रहण करते हुए भी मानवता का सन्देश देते हुए भी भारतीयता का लोप न होने पाए। 'भारत नाम स आध्यात्मिक तपस्या, बलिदान शक्ति शौय, परमाथ और पुरुषाथ आदि जो भा भाव यन्जित होत हैं, व ही गीत हमारे राष्ट्रीय भावनायुक्त गीता की श्रेणी म आत हैं। राष्ट्रीय भावनायुक्त गीता म समक्ष दो बातें स्पष्ट हैं—

१ मानव की अतव्यापिनी रागात्मक परिधि

२ भू-भाग स पृथक हुए राष्ट्रों का परस्पर सम्पक

इस क्षेत्र म देश काल का व्यवधान नगण्य हो जाता है। राष्ट्रीय भावनायुक्त गीत राष्ट्रीयता की सकुचित सीमा स निरन्तर विस्तृत राष्ट्रीय क्षेत्र म रूप म विकसित होत हैं। देशभक्ति राष्ट्रीयता का सनातन स्वरूप है और राष्ट्रवाद उसका प्रगतिशील रूप। राष्ट्रीय भावना इन दो अमूत स्वरूपो की समन्विति एव पुजीभूत करने वाली इकाई है।

अब प्रश्न यह उठता है कि नव गीत प्रवाह किस दिशा की ओर प्रयत्नशील है? गीतकारा के अधिकाश दृष्टिकोणा म प्रगतिशीलता देखी जा सकती है। नय गीतकार मानवता के समथक हैं तथापि राष्ट्रीय भावना का पोषण करन म व प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप म योगदान कर रहे हैं। वस्तुत मानवतावादी भावना का प्रसार करके आज का गीतकार समस्त देशवासियो को सजग कर देना चाहता है। सकीण राष्ट्रीय भावनायुक्त गीता की आयु अल्प है। व्यष्टि' की भावना छोड समष्टि की उच्च भूमि पर प्रतिष्ठित मानवतावाद की भावना को अपनाने वाला हिन्दी-गीत-काव्य का स्वर आज ऊचा है।

शास्त्री जी का दिया हुआ मन्त्र जय जवान जय किसान कितना साथक एव उपयोगी मन्त्र है यह इसमें निहित भावा स पूणत स्पष्ट है। राष्ट्र की सुरक्षा क लिए आवश्यक है जवान और उसक भरण-पोषण के लिए

आवश्यक है—गीतकार ! कृषक के अथक परिश्रम से धरती हरी भरी होगी अन्न की कमी न रहेगी। अन्न की कमी न होगी तो हम विदेशों पर अन्न के लिए आश्रित नहीं रहना होगा। खाद्य-समस्या हल हो जाएगी तो सीमा पर तैनात हर जवान भारत का उपजाऊ भूमि का पौष्टिक अन्न खाकर अधिक शक्तिशाली होगा। शक्ति ही राष्ट्र की रक्षा करने वाली प्रमुख सहायिका होती है। इन्हीं दो बड़ी शक्तियों पर राष्ट्र की स्वतन्त्रता निर्भर है। राष्ट्रीयता की रक्षा करने वाली इन सभी शक्तियों को जागृति का उद्बोधन देने का कार्य करता है—गीतकार।

भारत का प्रगति एवं समृद्धि राष्ट्र की नई पीढ़ी से अपेक्षित निर्माण परिश्रम एवं सुरक्षा के आश्वासन की आशा रखती है। भारत के भविष्य की उज्ज्वलता आज की पीढ़ी के नवयुवकों पर तो निर्भर करती ही है साथ ही आने वाली पीढ़ी की सशक्तता पर भी आधारित है। इसके लिए आवश्यक है कि बालकों के समुचित विकास पर ध्यान दिया जाय। बालकों के व्यक्तित्व का उचित विकास माता पिता एवं शिक्षकों द्वारा सम्भव है। जन्म जात संस्कार और उपयुक्त वातावरण दोनों ही बालक के स्वतन्त्र एवं सुदृढ़ व्यक्तित्व के विकास में उपयोगी होते है। माता पिता अपने बालकों के प्रति समुचित ध्यान देकर उनके निर्भीक व्यक्तित्व का विकास करें। शिक्षकगण राष्ट्र के प्रति उन्हें कर्त्तव्य की भावना से अनुप्राणित करें। वीर पुरुषों की कहानियाँ और जीवनियाँ सुनाकर उनके राष्ट्र प्रेम को विकसित करें। प्रारम्भिक शिक्षा का यही प्रभाव आगे जाकर राष्ट्रीय भावना का समुचित विकास करने में सहायक होगा। गीतकारों ने बाल मनोवृत्ति का अध्ययन करके ऐसे गीतों की रचना की है जिसमें बालकों का राष्ट्र की रक्षा के लिए उत्साह दुश्मनों को मार भगाने के लिए बन्दूक उठाने का आग्रह उनके वीर कृत्यों की ओर संकेत करता है। बालकों की यही भावना पूर्ण विकास पाकर राष्ट्र के प्रति उनके उत्तरदायित्वों से परिचित कराते हुए उन्हें अधिक शक्तिशाली बनाती है।

स्वतन्त्रता से पूर्व नारी की सामाजिक स्थिति में आने वाले उतार चढ़ावों का उल्लेख पिछले पृष्ठों में किया जा चुका है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् पुरुषों ने सम्मानयुक्त स्थान नारी को देकर पर्याप्त महत्त्व दिया है। नारी ने सभी क्षेत्रों में स्वतन्त्रतापूर्वक प्रवेश भी किया है और सफलता भी पाई है। नारी निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर हो रही है। स्वतन्त्रता से पूर्व नारी की जो दयनीय स्थिति थी उससे उसका उद्धार हो चुका है। पहले की अबला नारी अब सबला बन चुकी है। उसकी भृकुटि तनाए विश्रृंखल

नित हो चुकी हैं। उसे अब दासता से मुक्ति मिल गई है। कहना न होगा कि नारी का सहयोग राष्ट्र के निर्माण में अत्यंत आवश्यक है। क्योंकि नारी ही राष्ट्र के कर्णधारों की जननी है परिवार की रक्षक है समाज सुधारक है और है राष्ट्र के कल्याण की चिंतक। भारत में नारी की उपेक्षा और हीनावस्था के साथ देश की दुर्गति भी कम नहीं हुई है। वस्तुतः नारी का सहयोग आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। नारी ही जननी है और उसके सम्मान की रक्षा, भारत मां के सम्मान की रक्षा है। नारी ही पुरुष की प्रेरणा है। नारी का सम्मान और सहयोग ही राष्ट्र को उन्नति के शिखर तक ले जा सकता है। यही कारण है कि आधुनिक युग में पुरुष के समान ही नारी को भी अधिकार प्राप्त हो गये हैं। नारी का विश्राम रहित सहयोग राष्ट्र की समृद्धि में निश्चित रूप से सहायक होगा।

अंतिम प्रकरण में गीत काव्य और उसके शिल्प विधान पर विचार किया गया है। यद्यपि गीत का उद्भव वेदों की ऋचाओं से माना जाता है, किंतु उसका सही स्वरूप सर्वप्रथम कालिदास के चर्चरी चतुष्पदी (नृत्य गान) में मिलता है। भारत में गीतों का प्रचलन लोक प्रिय विधा के रूप में रहा है। मनुष्य सुख में हो या दुख में बिना गाये नहीं रह सकता। हृदय का यही रागात्मक तत्त्व गीतों के रूप में प्रवाहित होता रहा है। साधारणतः गीतों की भाषा जन भाषा रही है। गीतों का प्रचलन हम आज भी उतने ही उत्साह में पाते हैं, जितना आरम्भ में था। ग्रामीण खेतों की ओर जाते हुए गुनगुनाते हैं परिश्रम करते समय भी वे उत्साह से भरपूर गीत गाते हैं अथवा विभिन्न लयात्मक स्वरों का आह्वान करते हैं ग्रामीण युवतियाँ चक्की चलाते हुए पानी भरते हुए तीज-त्योहारों पर सभी पर्वों पर उत्साह में गीत गाती हैं। मानो गीत के संगीत में उनकी थकान खो जाती है उनका परिश्रम हल्का हो जाता है।

गीतों की परम्परा क्रमशः उत्थान एवं पतन की विभिन्न भूमियों का स्पर्श करते हुए प्रवहमान बनी रही है अवरुद्ध कभी नहीं हुई। लोक गीतों में तो इसकी परम्परा अक्षुण्ण रही है। साहित्यिक भूमि में आधुनिक युग में गीतों की धारा बराबर चल रही है। तारसप्तक, प्रयोगवाद नई कविता एवं अकविता जैसी विधाओं का जन्म जिस गति से हो रहा है उसकी तुलना में गीतों की रचना अनिश्चित भविष्य के मार्ग पर है। फिर भी गीत सृजन बन्द नहीं हुआ है। सिनेमा के प्रचलन के कारण गीतों की ओर प्रियता बनी ही जा रही है। साहित्यिक भाव भूमि में गीतों का सृजन कम हो कम हो रहा है मुक्त छन्द की परम्परा विकसित हो गई है। व्यक्तिगत कुंठाओं से ग्रस्त युगीन समस्याओं में उनके अभिनव विधा की ओर तीव्र गति से आकर्षित कवि भले

ही प्रयाग म नीा है किन्तु ाता हा हुए भी मानत-मन इस रागात्मक प्रवृति की सहजता स हट नहा सका है।

गीता का शिल्प विधान परम्परागत स्वरूप लिय हुए ही विकसित नहा हा रहा है। युग म प्रभावित इसक शिल्प विधान म भी नवीनता के दशन हात ह।

राष्ट्रीय भावना पूण गातो के शिल्प विधान को नय युग एव नय परिवेश का नई मान्यताओ के साथ दखना आवश्यक है। भारतीय साहित्य पाश्चात्य साहित्य धारा से प्रभावित हुआ है और प्रभाव को ग्रहण करते हुए नये विधान क साथ काव्य भूमि म प्रविष्ट हुआ है। गीत-काव्य पर भी उसका प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित हाता है। नय युग क नय मान दण्डा के साथ हम पुराने मान दण्डा का उपेक्षा करके भी नही चल सकते। युग परिवतन के साथ मान्यताए और मूल्य भी परिवर्तित हाकर आग बढ़ते हैं। किन्तु, यह आवश्यक नही कि पुराना सब कुछ त्याज्य एव उपेक्षित है और नया सब कुछ ग्राह्य एव अपेक्षित है। वस्तुत परम्पराए ही आग चलकर प्रयागा क लिए सुदृढ आधार भूमि का काय करती हैं जिसके अभाव म प्रयागा का अस्तित्व सुरक्षित नहा रह पाता। परम्परा और प्रयोग म समुचित सन्तुलन स ही विकास का माग प्रशस्त किया जा सकता है। इसी सदभ म मैंने गीत काव्य के शिल्प विधान का नयी और पुरानी मान्यताओ के आधार पर विवेचन किया। पुरानी मान्यताआ के समथका को इसम बहुत त्रुटियाँ मिलेंगी और नई मान्यताआ क समथका का न्यूनता दिखाई देगी। वस्तुत मेरा दृष्टिकोण केवल राष्ट्रीय भावना के शिल्प विधान का विवेचन करना ही रहा है। अत गीत काव्य के समग्र कलेवर को समझने का प्रयास मैंने नही किया है।

भाव के अतगत राष्ट्रीय भावना को वीर भाव के सीमित दृष्टिकोण से नही देखा जा सकता। राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति को मैंने चार वर्गों मे विभक्त करते हुए उसका विवेचन प्रस्तुत किया है। उन वर्गों के अतगत अन्य उपवर्गों का विधान भी हुआ है। उन सभी म केवल वीर भाव का समावेश नही हो सकता। राष्ट्रीय भावना पूण गीता म अन्य भावा का समावेश भी हुआ है। वीर भाव राष्ट्र क सकट के समय ही प्रमुख रूप स अभिव्यक्ति पाता है शाति काल म नहा। इसी कारण राष्ट्रीय भावना की सीमा म अन्य भावा का समावश भी उतना ही सहज एव आवश्यक है जितना वीर भाव का। सभी रसा का युगानुरूप गौण या प्रमुख रूप म रसास्वादन किया जाता है। चीनी-आक्रमण क समय जब कवि सम्मेलन म हास्य की निम्नाकित पक्तियाँ

सुनाई गई तो वीररस का आस्वादन करने वाले श्रोता एवं ओज पूर्ण स्वर से कविता पाठ करने वाले कवि भी हँस पड़े—

चीनियों के पास पायजामा तो
है नहीं, कहते हैं कि नेफा लेंगे।

शत्रु को हतोत्साहित करने के लिये व्यंग्य बाण भी चलाए जाते हैं। हास्यरस के संदर्भ में ऊपर कही हुई पंक्तियाँ ऐसा ही व्यंग्य प्रस्तुत करती है। कहना न होगा कि इसके मूल में भी किसी न किसी रूप में राष्ट्र के पक्ष की पुष्टि का ही प्रयास मिलता है।

बिम्ब के प्रथम प्रवर्तक के रूप में पाश्चात्य विद्वान एजरा पाउण्ड का उल्लेख किया जाता है। आधुनिक युग में बिम्बों का पर्याप्त प्रयोग हुआ है और बिम्ब विधान को काव्य के अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार किया गया है। सशक्त बिम्बों के समावेश से ही समर्थ काव्य का प्रणयन सम्भव हो पाता है। काव्य की समग्रता के लिए कवि को कितने ही उपकरण जुटाने पड़ते हैं। किन्तु सभी प्रत्यक्ष एवं परोक्ष उपकरणों को कवि अपनी रुचि के अनुसार अपनी कल्पना के अनुसार काव्य में संजोता है। बिम्ब के कई भेद किये गए हैं। राष्ट्रीय भावना युक्त गीतों का बिम्ब विधान पौराणिक घटनाओं के अति निकट है। ऐसे गीतों में संश्लिष्ट भासित एवं वासनायुक्त बिम्बों का अभाव रहता है। यहाँ अभिधात्मक बिम्ब विधान का प्राचुर्य मिलता है। प्रातिभासिक बिम्बों की योजना भी दृष्टिगत होती है।

राष्ट्रीय भावनापूर्ण गीतों की भाषा में कहीं कहीं उर्दू के शब्दों के साथ ही साथ तत्सम शब्दों का प्रयोग भी मिलता है तथा यत्र-तत्र प्रान्तीय शब्दों का प्रयोग गीतोंकी मधुरता को अधिक आकर्षक एवं सहज बना देता है। परुष वर्णों का प्रयोग भावों के अनुरूप विभिन्न रूपों में हुआ है। किन्तु इससे गीतों का माधुर्य समाप्त नहीं हो सका है। भावानुरूप गीत की भाषा अधिक ग्राह्य एवं आकर्षक प्रतीत होती है। केवल सुकुमार वर्ण योजना में ही माधुर्य निहित नहीं होता। राष्ट्रीय भावनायुक्त गीतों में ओज माधुर्य और प्रसाद—तीनों ही गुणों में से प्रसाद एवं ओज गुण का प्राचुर्य मिलता है।

राष्ट्रीय भावनापूर्ण गीतों का छन्द विधान भी परम्परायुक्त नहीं है और परम्परामुक्त भी नहीं। गीतों में तुक लय ताल यति गति और मात्रा के कारण ही संगीतात्मकता का समावेश सम्भव होता है। इसी कारण इन सब का गीतों में होना आवश्यक है। किन्तु इनका विधान

गीता के आधार एवं मान्यताओं पर निर्भर होता है। इसकी प्रवृत्ति का अनुसरण इस गीता में ज्यों का त्यों किया गया है। भावाभिव्यक्ति की अभिव्यक्ति के साथ प्रथम दो पंक्तियों का आवृत्ति अन्य चार चरणों के पश्चात् भी का गई है और कभी कभी चार चरण रचना के पश्चात् एक या दो शब्द समूह पर अवरोध समाप्त कर दिया जाता है। इस प्रकार परम्परागत छन्द विधान से अलग परिवर्तित रूप में राष्ट्रीय भावना पूर्ण गीता का सृजन हुआ है।

मानव मात्र का कल्याण करने की कामना भारतीयों में प्रारम्भ से रही है। भारत की स्वतन्त्रता के समय जब हिन्दू मुस्लिम भाई भाई का नारा जातीय विरोध के कारण मन्द पड़ गया तो देश का विभाजन हुआ। भारत जैसे राष्ट्र की विभक्ति यद्यपि पतन की सूचक थी किन्तु भारतीय नागरिक मुसलमानों का अलग राष्ट्र बनाने की अनुमति देने के लिए तैयार हो गए। साम्प्रदायिक दंगे अवश्य हुए किन्तु गृहयुद्ध न हो सका। हिंसा के विरोधी गाँधी ने अहिंसा जैसे अस्त्र का प्रयोगकर मानवता का संदेश दिया। बर्बरता अत्याचार एवं अन्याय का विरोध करते हुए अहिंसा का उपदेश दिया। भारत में स्थापित चारों धामों की यात्रा धार्मिक एकता की भावना के साथ ही साथ भावात्मक एकता का सन्देश भी देता है। यह भावना सभी के प्रति उदार मानवता की भावना है, जहाँ जाति वर्ण और वर्ग भेद नगण्य हो जाते हैं। इस भावना की ऊँचाई और गहराई को समझने के लिए उपयुक्त मातृ भूमि का आवश्यकता है। कहना न होगा कि इस उच्च एवं महान् मातृ भूमि के दर्शन हम राष्ट्रीयता में ही उपलब्ध हो सकते हैं।

राष्ट्रीयता की भावना महान् एवं गरिमामयी है। जबतक संकीर्ण राष्ट्रीय भावना की परिधि से निकलकर अन्तर्राष्ट्रीय भावना की कामना जागृत की न जाएगी तब तक एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर आक्रमण करता रहेगा संहार होगा विनाश ताण्डव नृत्य करेगा और एक राष्ट्र के विनाश पर दूसरे राष्ट्र की प्रगति निर्भर होगी। किन्तु यह भावना सम्पूर्ण विश्व के विनाश की भावना है। जो राष्ट्र अधिक समृद्ध होगा अपने से निर्बल राष्ट्र का शासक बनने की कामना करेगा फलतः अन्य राष्ट्रों को पनपने का अवसर नहीं मिल सकेगा और मानव संहार एवं व्यक्तिवाद की अराजकता में वृद्धि होती ही जायगी। अमरिका वियतनाम युद्ध चीन भारत युद्ध भारत पाक युद्ध और अरब इसरायल युद्ध क्या है? केवल भूमि की प्राप्ति के लिए स्वयं को शासक घोषित करने के लिए अपने राष्ट्र की स्वार्थपूर्ण समृद्धि

के लिए विजयी होने के लिए इतना रक्त पात होना है। मानव को बलिदान देना पड़ता है—आखिर प्राप्त क्या होता है ? केवल क्षणिक अह की तुष्टि ! यह आवश्यक है कि मानव सहार को रोकने के लिए एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के प्रति भ्रातृ भाव रखे ताकि सौहार्द्र पूर्ण भावना से दूसरे राष्ट्र को भी पनपने का अवसर मिल सके।

राष्ट्र की प्रगति एव समृद्धि राष्ट्र के विस्तार पर निर्भर नहीं करती। उसी राष्ट्र के व्यक्ति सबसे अधिक सुखी हो सकते हैं जहाँ सब प्रकार के साधनो से युक्त राष्ट्र विकास के नये आयामो को पार करता हुआ प्रगति एव समृद्धि की सही दिशा की ओर पूर्ण शक्ति से उन्मुख हो। राष्ट्रीय भावना की तीव्रता और उसकी चरम परिणति मानवतावादी भावना में निहित होना आवश्यक है। जहा मानवमात्र के कल्याण की कामना हो मानव सहार निषिद्ध हो, वही मानवता की रक्षक इस भावना की भाव-भूमि उदात्त की गरिमा को स्पर्श करती है। अतएव राष्ट्रीय भावना की मानवतावादी उदात्त भाव-भूमि पर प्रतिष्ठा होनी चाहिए। तभी जन-कल्याण और लोक-कल्याण की महती भावनाए आदर्श के सहज परिवेश में सफलतापूर्वक व्यवहृत हो सकती हैं।

●●

आधार ग्रंथो की सूची

	पुस्तक	रचयिता
१	चिदम्बरा	सुमित्रान न पत
२	राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त	डा मन्नूलचन्द्र कपूर
३	हिन्दी कविता म युगान्तर	डा० सुधान्द्र
४	राष्ट्र भाषा रजत जयन्ती ग्रन्थ	(प्रकाशक) राष्ट्र भाषा पुस्तक मन्दिर
५	छायावाद-युग	शम्भूनाथसिंह
६	नया हिन्दी-काव्य	डा० शिवकुमार मिश्र
७	विश्व इतिहास का झलक	प० जवाहरलाल नहरू अनुवादक चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय
८	धरती के बोल	जयनाथ नलिन
९	हिमालय के आँसू	आनन्द मिश्र
१०	जय घाव	डा० रामगोपाल शमा दिनेश
११	सघर्षो के राहा	'
१२	नवीना	गगाप्रसाद पाण्डेय
१३	गौरव गान	डा रामगोपाल शमा दिनेश
१४	जलते तारे	रघुवीर शरण मित्र
१५	धार के इधर उधर	बच्चन
१६	चाद इतना हसा	शकुन्तला सिरोठिया
१७	विराम चिन्ह	अचल
१८	उमग	मेघराज वर्मा मुकुल'
१९	भूमि के भगवान	रघुवीरशरण मित्र
२	शिला पख चमकीले	गिरिजा कुमार माथुर
२१	रक्त चन्दन	नरेन्द्र शर्मा
२२	स्कन्द गुप्त	जयशकर प्रसाद
२	भारत भारती	श्री मथिलीशरण गुप्त
२४	यशोधरा	
२५	चन्द्रगुप्त	जयशकर प्रसाद

२६	मधु की रात और जिन्दगी	
२७	कणिका	चिरजीत
२८	नील कुसुम	शकर लाल माहेश्वरी
२९	हिन्दी की सद्धान्तिक समीक्षा	दिनकर
३०	वाणी	डा० रामाधार शर्मा
३१	जलती रहे मशाल	पतजी
३२	त्रिभगिमा	डा० दिनेश
३३	सर्वोदय के गीत	वच्चन
३४	नई पीढी नई राह	डा० दिनेश
३५	आरती और अगार	रामकुमार चतुर्वेदी
३६	मनवन्तर	वच्चन
३७	गोनम	श्री शम्भूदयाल सक्सेना
८	शातिलोक	वीरेन्द्र मिश्र
३९	भूमि की अनुभूति	सम्पादक गोपालकृष्ण कौल
४०	अधूर गीत	जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द
४१	बलिपथ के गीत	हरीश मादानी
४२	आज के लोक प्रिय कवि सुमित्रानन्दन पत	जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द'
४३	दूसरा तार सप्तक	वच्चन
४४	नील कुसुम	सपादक अज्ञेय
४५	कपट का सीना फाडो रे	रामधारीसिंह 'दिनकर
४६	हिमप्रिया	प्र० पश्चिम रेल्वे शाखा अजमर
४७	मथाथ की कल्पना	डा० दिनेश
४८	५५ की श्रेष्ठ कविताएँ	उदयशकर भट्ट
४९	कविताएँ १९५४	सपादक रमाकान्त
५०	राजधानी के कवि	सपादक अजीत कुमार एव देवीशकर अवस्थी
५१	आज के लोकप्रिय कवि माखनलाल चतुर्वेदी	सपादक गोपालकृष्ण कौल एव रामावतार त्यागी
५२	भारतीय कविता १९५३	हरिकृष्ण प्रेमी
५३	रूप तरग	भू० ले० जवाहर लाल नेहरू
५४	आज के लोकप्रिय कवि रामेश्वर शुक्ल अचल	डा० रामविलास शर्मा
		पदमसिंह शर्मा कमलेश

५५	माता	श्री ज वन प्रका न जोशी
५६	रात अधेरी सागर गहरा	*प्रसाद नागर
५७	सप्तकिरण	न॰ चतुर्वेदी
५८	सभी महक उठे	रामावतार त्यागी
५९	वतन हमारा	श्रीकृष्ण सरस
६०	जागृत भारत	चन्द्रधर मिश्र
६१	भारतीय जवानों की वीर गाथाए	श्री वासुदेव नारायण भालोत
६२	जय जवान जय किसान	श्यामलाल मधुप'
६३	हमारे रण बाँकुरे	गिरिराज शरण अग्रवाल
६४	परमवीर भारत	श्याम लाल मधुप'
६५	जननी जन्म भूमि	गुरुशरण
६६	बाल-वार्षिकी	सम्पादक जगदीश माथुर
७	गीति-काव्य का विकास	लालधर त्रिपाठी प्रवासी'
६८	मनोविज्ञान और शिक्षा	डा॰ सरयूप्रसाद चौबे
६९	मथिलीशरण गुप्त व्यक्तित्व और काव्य	डा॰ कमला कान्त पाठक
७०	हिन्दी काव्य म प्रकृति चित्रण	डा॰ किरण कुमारी गुप्ता
७१	प्रतिनिधि आलोचक	मोहनलाल व सुरेशचन्द्र गुप्त
७२	सामान्य मनोविज्ञान	डा सीताराम जायसवाल, श्री रामेश्वर प्रसाद गुप्त
७३	विकासात्मक मनोविज्ञान	एम॰ पी॰ जायसवाल
७४	गुप्त जी की काव्य साधना	डा उमाकान्त
७५	हिन्दी साहित्य और उसकी प्रमुख प्रवृतियाँ	डा॰ गोविन्दराम शर्मा
७६	हिन्दी क आधुनिक महाकाव्य	डा गोविन्दराम शर्मा
७७	राष्ट्रीयता और समाजवाद	आचाय नरेन्द्रदेव
७८	आधुनिक हिन्दी कविता म प्रेम और सौन्दर्य	डा॰ रामश्वरलाल खण्डेलवाल
७९	चिन्तामणि	आचाय रामचन्द्र शुक्ल
८०	जीवन क तत्त्व और काव्य के सिद्धान्त	श्री लक्ष्मीनारायण सुधांशु
८१	मॉडन एज्यूकेशन साइकालाजी	श्री बी॰ एन॰ झा॰
८२	पोयटिक इमेज	सी डी॰ लविस
८३	दी पोयटिक पटन	राबिन स्केलटन
८४	दी आर्ट आफ ड्रामा	रोनाल्ड पीकाक

८५	काव्य में अप्रस्तुत-योजना	श्री रामदहिन मिश्र
८६	कल्पना और छायावाद	केदारनाथसिंह
८७	व्रज भाषा के कृष्ण भक्ति-काव्य में अभिव्यंजना-शिल्प	डा० सावित्री सिन्हा
८८	तुलसीदास की भाषा	डा० देवकीनन्दन
८९	काव्य-दर्पण	रामदहिन मिश्र
९०	साहित्यालोचन	श्यामसुन्दरदास
९१	पल्लव	सुमित्रानन्दन पंत
९२	सत्य शिव सुन्दरम्	डा० रामानन्द तिवारी
९३	साहित्य विधान	डा० गणपतिचन्द्र गुप्त
९४	सेंस आफ ब्यूटी	जाज सान्त्यायन
९५	गीति काव्य	रामखेलावन पाण्डेय
९६	आधुनिक हिन्दी कविता में विषय और शैली	डा० रांगेय राघव
९७	साहित्य शास्त्र के सिद्धान्त	सरोजिनी मिश्रा
९८	प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ	डा० रामविलास शर्मा
९९	हिन्दी गीति-काव्य	श्री ओम प्रकाश अग्रवाल
१००	हिन्दी साहित्य और विभिन्नवाद	रामजीलाल सधौतिया
१०१	आधुनिक हिन्दी-कविता सिद्धान्त और समीक्षा	डा० विश्म्भर नाथ उपाध्याय
१ २	सांस्कृतिक परम्परा और साहित्य	तारकनाथ बाली
१०३	हिन्दी मुक्तक काव्य का विकास	जितेन्द्र पाठक
१०४	आधुनिक साहित्य	नन्ददुलारे वाजपेयी
१०५	जीवन के तत्व और काव्य के सिद्धान्त	लक्ष्मीनारायण सुधांशु
१०६	स्वाधीनता और राष्ट्रीय साहित्य	डा० राम विलास शर्मा
१०७	आधुनिक हिन्दी-काव्य में परम्परा तथा प्रयोग	डा० गोपालदत्त सारस्वत
१०८	आधुनिक हिन्दी की स्वच्छन्द धारा	त्रिभुवनसिंह गुप्त
१०९	रामधारीसिंह दिनकर	मन्मथनाथ
११०	आधुनिक गीति-काव्य	सच्चिदानन्द तिवारी
१११	हिन्दी-काव्य की अन्तश्चेतना	प्रो० राजाराम रस्तोगी
११२	हिन्दी साहित्यानुशीलन	सत्यकाम वर्मा
११३	हिन्दी नीति-काव्य	डा० भोलानाथ तिवारी

११४	चलो सिपाही चलो	सं० अमरनाथ शर्मा
११५	गीत भरा संसार	भरत व्यास
११६	श्रेष्ठ कवयित्रियों की प्रतिनिधि रचनाएँ	सं० स्नेही नई दिल्ली

पत्रिकाएँ

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान
२ जीवन-साहित्य
३ योजना
४ धर्मयुग
५ मधुमती
६ समाज-कल्याण
७ रसवन्ती
८ कादम्बिनी
९ विशाल भारत
१० ज्ञानोदय
११ आलोचना
१२ सम्पदा
१३ समालोचक
१४ पराग
१५ नन्दन

●●●